विश्व के प्रमुख खेल और खिलाड़ी

योगराज थानी

राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, दिल्ली

प्रस्तुत पुस्तक भारत सरकार की 'प्रकाशकों के सहयोग से हिन्दी में लोकप्रिय पुस्तकों के लेखन अनुवाद और प्रकाशन की योजना' के अन्तर्गत प्रकाशित की गई है और प्रकाशक द्वारा इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में प्रकाशित पुस्तक की 2000 प्रतियों में से भारत सरकार ने 667 प्रतियां की खरीद की है। इस पुस्तक के लेखक श्री योगराज थानी हैं।

पुनरीक्षक डा० नरोत्तम पुरी

प्रथम संस्करण 1980 @ योगराज थानी

VISHWA KE PRAMUKH KHEL AUR KHILADI (Sports) by Yograj Thani

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा मे विभिन्न प्रकार का ज्ञानवर्द्धक साहित्य उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार द्वारा पुस्तक प्रकाशन सम्बन्धी अनेक योजनाए कार्यान्वित की जा रही हैं।

शिक्षा तथा समाज-कल्याण मत्रालय के तत्त्वावधान मे केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय मे प्रकाशको के सहयोग से हिन्दी मे पुस्तको के लेखन, अनुवाद और प्रकाशन की योजना सन् 1961 से चल रही है। अद्यतन ज्ञान-विज्ञान का जन सामान्य मे प्रचार प्रसार, राष्ट्रीय एकता, धर्मनिरपेक्षता तथा मानवता का उद्बोधन और हिन्दीतर भाषाओ के साहित्य को रोचक तथा लोकप्रिय हिन्दी भाषा मे सुलभ कराना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। इन पुस्तको मे वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली का प्रयोग किया जाता है और योजना मे स्वीकृत पुस्तको को अधिक से अधिक पाठको को सुलभ कराने के विचार से विक्रय-मूल्य कम रखा जाता है। प्रकाशित पुस्तक म अभिव्यक्त विचार लेखक के ही होते हैं।

'विश्व के प्रमुख खेल और खिलाडी' पुस्तक के लेखक श्री योगराज थानी हैं। प्रस्तुत पुस्तक मे खेलो और खिलाडियो के सम्बन्ध मे रोचक शैली मे अद्यतन जानकारी प्रस्तुत की गई है। आशा है कि खेलो मे रुचि रखने वाले पाठको के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध होगी।

निदेशक
केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

आत्मनिवेदन

खेलकूद का क्षेत्र बहुत विविध, व्यापक और विस्तृत है। इसमे तेलमालिश, दड बैठक, पतगबाजी, घोडा दौड, बैलगाडी दौड, नट कला आदि देशी और लोकप्रिय खेलो की सख्या इतनी अधिक है कि उसकी ठीक मे गिनती कर पाना मुश्किल (बल्कि असम्भव) है—फिर यह कहना कि पुस्तक मे आपको हर खेल और खिलाडी के बारे मे सब कुछ मिल जाएगा, एकदम खोखला दावा करना होगा।

हर व्यक्ति की रुचि और दिलचस्पी अलग-अलग होती है। कोई किसी एक खेल का शौकीन है तो कोई दूसरे का। यदि एक ही खेल को लें तो एक की रुचि इसके इतिहास मे होगी, दूसरे की नियमो और उपनियमो मे और तीसरे की रिकाड तथा आकडो मे।

अब रिकाड और आकडो के पक्ष को ही लीजिए। कुछ खेल तो ऐसे होते हैं जिनमे रिकाड और आकडे इतनी तेजी के साथ बदलते हैं कि पुस्तक के प्रकाशित होने तक उसमे इतना कुछ बदल जाता है कि नई पुस्तक भी पाठको को पुरानी लगने लगती है। लेकिन इसका यह मतलब तो नही कि इस आलोचना के भय से कोई बडा काम ही न किया जाए।

यह कोई बहुत बडा काम नही है। हा, इतना जरूर कह सकता हू कि हिन्दी भाषा मे यह अपने ढग का पहला काय है। (अपने आप इसे अनूठा कैसे कहू, हो सकता है कि कुछ पाठको को यह अनूठा काय प्रतीत हो) हा, यदि आप अग्रेजी की बडी-बडी पोथियो के साथ इसकी तुलना करेंगे तो इसका पलडा हमेशा हल्का ही जान पडेगा और इसके कारण भी हैं।

इस युग को विशेषज्ञता का (या विशेष योग्यता का) युग कहा जाता है। एक व्यक्ति खेल के हर पक्ष पर अधिकारपूवक लिखने का दावा भी कैसे कर सकता है। विदेशा म जान आलट, जिम्स स्वाटन या (स्व०) सर नेविल काडस यदि क्रिकेट पर लिखते रहे तो आजीवन क्रिकेट पर ही लिखते रहे। ब्रायन ग्रेनविल और जान रैफर्टी आजीवन फुटबाल पर पट्रिक राउली हाकी पर और जान रोडा एथलेटिक पर ही लिखते रहे, लेकिन हिन्दी या अय भारतीय भाषाओ म ऐसी बात नही है। यहा आज एक खेल समीक्षक को यदि क्रिकेट पर लिखना पडता है तो कल उसीको कबड्डी की रपट या टिप्पणी भी तयार करनी पडती है। लेकिन साधनाओ और सुविधाओ के

अभाव म हिन्दी या अय भाषाओ म बहुत काय हो रहा है और यदि प्रगति की गति यही रही तो वह दिन दूर नही जब कुछ ही वर्षों म हम इस क्षेत्र म (यानी खेलकूद साहित्य) भी दूसरे देशो के साथ कम से कम होड तो ले ही सकेंगे।

इस पुस्तक म आपको सब कुछ मिल जाएगा ऐसा दावा नही करता, इस पर भी इतना तो कह ही सकता हू कि आपको इसमे बहुत कुछ मिल जाएगा।

यह भी सही है कि एक व्यक्ति का साधन एक प्रतिष्ठान के साधन से कम होता है लेकिन एक व्यक्ति की लगन एक प्रतिष्ठान से कम हो यह जरूरी नही। खेलकूद के क्षेत्र मे इस तरह का काम किसी बडे सरकारी प्रतिष्ठान द्वारा प्रसिद्ध खेल समीक्षको के सहयोग से होना चाहिए था, लेकिन न मालूम क्यो लिखने के नाम पर रचनात्मक साहित्य को ही साहित्य मान लिया गया है और समाज के लिए उपयोगी, स्वस्थ साहित्य रचना की ओर बहुत कम ध्यान गया है।

इसपर भी अपनी नाममात्र की साधना, लगन और सीमित साधना के रहते जो कुछ कर सका हू आपके सामने प्रस्तुत है। पाठको को इसम यदि कही कुछ अभाव खटके तो मुझे नि सकोच सूचना दें, उसका मैं स्वागत करूगा।

—योगराज थानी
खेलकूद सम्पादक (दिनमान)

विषय-सूची

अ

अधाल्कर, जी०—हैवी वेट वग के जी० अधाल्कर के पूरे परिवार का कुश्ती से पुराना और गहरा नाता है। महाराष्ट्र के कृषक परिवार मे जन्मे अधाल्कार को कुश्ती से विशेष लगाव रहा है। 1960 म वम्बई म हुई कुश्ती प्रतियोगिताओ मे उन्ह 'हिन्द केसरी' बनने का गौरव प्राप्त हुआ। उसके बाद तो उन्होने कुश्ती की दूसरी शैलियो (फ्री स्टाइल और ग्रीको रोमन) मे भी अपने नाम के झडे गाड दिए। जकार्ता मे हुए एशियाई खेलो म उन्होने फ्री-स्टाइल और ग्रीको-रोमन दोनो ढग की कुश्तियो मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। जिसमे उन्होने ग्रीको-रोमन मे स्वण पदक और फ्री स्टाइल मे रजत पदक प्राप्त किया।

अजमेरसिंह—200 मीटर और 400 मीटर के फासले की दौडो मे पजाव के अजमेरसिह ने, जो पजाब विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर हैं, विशेष सफलता प्राप्त की है। एक बार पटियाला प्रशिक्षण शिविर मे जब उन्होने 200 मीटर फासले को 21 2 सैकिंड मे और 300 मीटर फासलो को 33 1 सैकिंड मे पूरा किया तो उनके प्रशिक्षको ने इनके इस प्रदशन से प्रभावित होकर यह कहा था कि भारत को एक दूसरा मिल्खासिह मिल गया है,। 1964 जुलाई मे उन्होने जमनी का दौरा किया। इसके बाद 1964 मे तोक्यो मे हुए ओलम्पिक खेलो मे इन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। मद्रास मे जनवरी 1968 मे हुई 23वी राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता मे उन्होंने पजाब की एथलेटिक टीम का नेतत्व भी किया था। 1970 मे बैंकाक मे हुए छठे एशियाई खेलो मे उन्होंने भारत का नेतृत्व किया, लेकिन वह वहा काफी देर से पहुचे जिस कारण उन्हें अभ्यास का मौका नही मिल सका।

अजीत वाडेकर—बाए हाथ से खेलनेवाले अजीत वाडेकर भारत के मशहूर बल्लेबाज हैं। 1971 मे जिस भारतीय क्रिकेट टीम ने वेस्टइडीज का दौरा किया और वहा ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की, वाडेकर उस टीम के पहली बार कप्तान नियुक्त किए गए थे। उनके नेतृत्व मे भारतीय टीम ने इतिहास मे पहल बार भारत वेस्टइडीज टेस्ट शृखला जीती। उसके बाद उन्होंने इग्लैंड जाने वाली भारतीय टीम का भी नेतृत्व किया।

अजीत वाडेकर का जन्म 1 अप्रैल, 1941 को बम्बई मे हुआ। 1958 मे वह पहली बार प्रकाश मे आए जब उन्होंने अन्तर विश्वविद्यालय मे दिल्ली विश्वविद्यालय के खिलाफ 351 मिनट मे 324 रन बनाए और अन्त तक आउट नहीं हुए।

17 जनवरी, 1967 का उनके जीवन में विशेष महत्त्व है। यह उनके जीवन

था वह ऐतिहासिक दिन था जिसने उन्हें भारतीय टीम में स्थाई स्थान दिला दिया। हालांकि इससे पहले वह वेस्टइंडीज के विरुद्ध बम्बई टेस्ट में, जो उनके जीवन का पहला टेस्ट मैच था, खेल चुके थे, लेकिन 17 जनवरी, 1967 को जब वह मद्रास के चेपाक मैदान में बल्लेबाजी के लिए उतरे तो भारत का बिना किसी स्कोर के एक विकेट गिर चुका था। लेकिन इस प्रतिकूल परिस्थिति में भी उन्होंने जिस आत्म विश्वास का परिचय दिया उससे वेस्टइंडीज के गेंदबाजों के छक्के छूट गए। और इस प्रकार उनकी गिनती दुनिया के चोटी के गजब के बल्लेबाजों में की जाने लगी।

टेस्ट मैचों में वाडेकर की बल्लेबाजी का प्रदर्शन

देश	टेस्ट	पारी	आउट नहीं	रन संख्या	सर्वाधिक रन संख्या	औसत
इंग्लैंड	14	28	1	838	91	31 11
आस्ट्रेलिया	9	18	1	548	99	32 23
वेस्टइंडीज	7	11	0	230	67	20 90
न्यूजीलैंड	7	14	1	497	143	38 23
कुल	37	71	3	2113	143	31 07

1974 में इंग्लैंड में भारतीय टीम का प्रदर्शन बहुत निराशाजनक रहा और भारत तीनों टेस्ट में बुरी तरह से हार गया। उनके नेतृत्व में भारत ने कुल मिलाकर 16 टेस्ट मैच खेले जिनमें से भारत ने 4 जीते, 4 हारे और 8 बराबर रहे। कुल मिलाकर उन्होंने 37 टेस्ट (71 पारियां) खेले और 31 07 की औसत से टेस्ट मैचों में कुल जमा 2113 रन बनाए। 1967 68 में न्यूजीलैंड के विरुद्ध उन्होंने एक पारी में 143 रन बनाए। यही उनके जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन और एकमात्र शतक था। हां, रणजी ट्राफी मैचों में वह 4,000 से अधिक रन बना चुके हैं और 1966 में मैसूर के विरुद्ध खेलते हुए उन्होंने 326 रन बनाए थे। दिलीप ट्राफी मैचों में उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 229 रन था।

वाडेकर ने 17 वर्ष की उम्र से ही क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया था। पहले वह अन्तर विश्वविद्यालय मैचों में खेलते रहे और 1959 में उन्होंने पहली बार रणजी प्रतियोगिता में भाग लिया। 1966-67 में जब गैरी सोबर्स के नेतृत्व में वेस्टइंडीज की टीम ने भारत का दौरा किया तब उन्हें पहली बार भारतीय टीम में शामिल किया गया। हालांकि तब तीन टेस्ट मैचों की उस

शृखला म वह ज्यादा रन बटोरने मे सफल नही हो सके, लेकिन मद्रास म खेले गए आखिरी टैस्ट मे उन्होने 67 रन बनाए और इस प्रकार 1967 मे इग्लैड का दौरा करने वाली भारतीय टीम म उन्ह शामिल कर लिया गया। वहा उनका प्रदशन सतोषजनक रहा और उसके बाद 1967 68 म आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड का दौरा करने वाली भारतीय टीम म भी उन्हे शामिल किया गया। वलिगटन (न्यूजीलैंड) म खेले गए टेस्ट म उन्होने अपना पहला और अन्तिम शतक (143) बनाया, लेकिन इसस पहले आस्ट्रेलिया के विरुद्ध मेलबोन मे खेले गए दूसरे टेस्ट वह 99 रनो पर आउट हो गए और इस प्रकार वह केवल एक रन स शतक का गौरव प्राप्त करने से वचित रह गए।

1968 म उन्ह अजुन पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

अजुन पुरस्कार—वष के सवश्रेष्ठ खिलाडियो को 'अर्जुन पुरस्कार' से अलकृत करने की प्रथा का शुभारम्भ 1961 मे किया गया था। इन पुरस्कारो का उद्देश्य खिलाडियो को पुरस्कृत कर उन्हे खेलकूद के प्रति और उत्साहित करना था। लेकिन जिस उद्देश्य से इन पुरस्कारो की घोषणा की गई थी उसकी पूर्ति नही हो रही है। अजुन पुरस्कार प्राप्त खिलाडियो की सूची दिन व दिन लम्बी होती जा रही है और भारतीय खेलकूद का स्तर दिन व दिन गिरता जा रहा है। 1961 मे 19 खिलाडियो को 1962 मे 9 खिलाडियो को और उसके बाद तीन वर्षों तक 7 7 खिलाडियों को अजुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1965 के भारतीय एवरेस्ट विजेता दल को भी अजुन पुरस्कार से अलकृत किया गया।

पूरे महाभारत युग म एक ही अजुन था लेकिन आज भारतीय खेलकूद जगत म अजुनो की कमी नही है। उस एक अर्जुन ने पूरे महाभारत युद्ध पर विजय प्राप्त की थी और आज भारत म इतने अर्जुन होते हुए भी विजयश्री को दुनिया के दूसरे देश भगा ले जाते हैं और भारत के इतने सारे अर्जुन उपाधियो के इस जगत म खामोश खडे देखते रह जाते है। हर साल भारत के कुछ चोटी के खिलाडियो को (उनके खेल प्रदशनो के आधार पर) अर्जुन पुरस्कार देने की प्रथा का शुभारम्भ इस उद्देश्य से किया गया कि इससे भारतीय खेलकूद के स्तर म सुधार होगा लेकिन आधुनिक अर्जुनो की सख्या ज्यो ज्यो बढती जा रही है भारतीय खेलकूद का स्तर त्यो त्यो गिरता जा रहा है। 1976 तक 224 खिलाडी इस पुरस्कार से अलकृत हो चुके थे।

अर्जुन पुरस्कार प्राप्त खिलाड़ियों के नाम इस प्रकार हैं—

1961

1 कुमारी एन० लुम्स्डेन (महिला हाकी)
2 गुरबचन सिंह (एथलेटिक्स)
3 सरबजीत सिंह (बास्केट बाल)
4 नन्दू नाटेकर (बैडमिंटन)
5 रामनाथन कृष्णन (लान टेनिस)
6 एल० डी० साऊजा (मुक्केबाजी)
7 पी० के० बनर्जी (फुटबाल)
8 पी० जी० सेठी (गोल्फ)
9 महाराजा कर्णीसिंह (बीकानेर के महाराजा) (निशानेबाजी)
10 बजरंगी प्रसाद (तराकी)
11 जयन्त सी० वोहरा (टेबल टेनिस)
12 ए० पालनीसामी (वालीबाल)
13 ए० एन० घोष (भारोत्तोलन)
14 सलीम दुर्रानी (क्रिकेट)
15 मनुअल एरोन (शतरंज)
16 के० एस० जैन (स्क्वैश)
17 महाराजा प्राणसिंह (पोलो)
18 पृथ्वीपाल सिंह (हाकी)
19 श्यामलाल (जिम्नास्टिक)

1962

1 तरलोकसिंह (एथलेटिक्स)
2 विल्सन जोन्स (बिलियर्ड)
3 मीना शाह (बैडमिन्टन)
4 पदम बहादुर मल (मुक्केबाजी)
5 टी० बलराम (फुटबाल)
6 नरेश कुमार (लान टेनिस)
7 नपजीत सिंह (वालीबाल)
8 एस० के० दास (भारोत्तोलन)
9 मालवा (कुश्ती)

1963

1 अमोलसिंह मलिक (गोल्फ)
2 मेजर ठाकुर कृष्ण सिंह (पोलो)
3 जी० अधालकर (कुश्ती)
4 कुमारी स्टीफी डिसूजा (एथलेटिक)
5 चूनी गोस्वामी (फुटबाल)
6 ईश्वर राव (भारोत्तोलन)
7 चरणजीतसिंह (हाकी)

1964

1 शंकर लक्ष्मण (हाकी)
2 मक्खन सिंह (एथलेटिक)
3 विशम्भर सिंह (कुश्ती)
4 राव राजा हनूतसिंह (पोलो)
5 मंसूर अली खां उर्फ नवाब पटौदी (क्रिकेट)
6 जरनैलसिंह (फुटबाल)
7 गौतम दीवान (टेबल टेनिस)

1965

1 केनेथ पावल (एथलेटिक)
2 दिनेश खन्ना (बैडमिंटन)
3 विजय मंजरेकर (क्रिकेट)
4 अरुणलाल घोष (फुटबाल)
5 कुमारी एलवेरा ब्रिटो (हाकी)
6 बलबीर सिंह (भारोत्तोलन)
7 उधमसिंह (हाकी)

अर्जुन पुरस्कार से अलंकृत भारतीय एवरेस्ट अभियान दल

लेफ्ट० कमा० एम० एस० कोहली, श्री गुरदयाल सिंह, मेजर मुल्कराज, श्री एच० सी० एस० रावत, कैप्टेन एच० एस० अहलुवालिया, कैप्टेन ए० एस० चीमा, श्री नवग गोम्बू, श्री अग कामी कैप्टेन ए० के० चक्रवर्ती, श्री जी० एस० भगू, लेफ्ट० बी० एन० राणा मेजर एन० कुमार, श्री सी० पी० वोहरा, श्री सोनाम ग्यात्सो, श्री सोनामवाग्याल,

कैप्टन एच० वी० बहुगुणा, स्वर्गीय कैप्टन वी० पी० सिंह, कैप्टेन जे० सी० जोशी, डा० डी० वी० तेलंग और हवलदार सी० बालकृष्णन।

1966

1	अजमेर सिंह	(एथलेटिक)
2	बी० एस० बरुआ	(एथलेटिक)
3	चन्दू बार्डे	(क्रिकेट)
4	यूसफ खान	(फुटबाल)
5	वी० जे० पीटर	(हाकी)
6	गुरबख्श सिंह	(हाकी)
7	कुमारी सुनीता पुरी	(महिला हाकी)
8	जयदीप मुखर्जी	(लान टेनिस)
9	कुमारी रीमा दत्त	(तैराकी)
10	कुमारी उषा सुन्दरराज	(टेबल टेनिस)
11	मोहन लाल घोष	(भारोत्तोलन)
12	भीम सिंह	(कुश्ती)
13	हवा सिंह	(मुक्केबाजी)
14	पी० जी० सेठी	(गोल्फ)

1967

1	महिन्दर लाल	(हाकी)
2	हरमिन्दर सिंह	(हाकी)
3.	जगजीत सिंह	(हाकी)
4.	प्रवीण कुमार	(एथलेटिक)
5.	भीमसिंह	(एथलेटिक)
6	अजीत वाडेकर	(क्रिकेट)
7.	सुनीराम	(बास्केट बाल)
8.	पी० तगराज	(फुटबाल)
9	राजकुमार पीताम्बर	(गोल्फ)
10.	अरुण शाह	(तैराकी)
11.	एफ० सोनावाला	(टेबल टेनिस)
12.	प्रेमजीत लाल	(लान टेनिस)
13	सुरेश गोयल	(बैडमिंटन)
14.	मान सिंह/गैबरियल	(भारोत्तोलन)

15 मुख्तियार सिंह

1968

1	जोगिन्दर सिंह	(एथलेटिक)
2	कुमारी मनजीत वालिया	(एथलेटिक)
3	बलबीरसिंह (सेना)	(हाकी)
4	ई० ए० एस० प्रसन्ना	(क्रिकेट)
5	नायब सूबदार गुरदयाल सिंह	(बास्केट बाल)
6	डेनिस स्वामी	(मुक्केबाजी)
7	राजकुमारी राज्यश्री	(निशानेबाज़ी)

1969

1	मास्टर चन्दगीराम	(भारतीय ढंग की कुश्ती)
2	बिशनसिंह बेदी	(क्रिकेट)
3	राजकुमारी भुवनश्वरी	(निशानबाज़ी)
4	हरनेक सिंह	(एथलेटिक)
5	दीपू घोष	(बैडमिंटन)
6	हरिदत्त	(बास्केट बाल)
7,	इन्दर सिंह	(फुटबाल)
8	वैद्यनाथ	(तैराकी)
9	अनिल नैयर	(स्ववेश)
10	मीर कासिम अली	(टेबल टेनिस)

1970

1	मोहिन्दर सिंह गिल	(एथलेटिक)
2	लाभ सिंह	(एथलेटिक)
3	श्रीमती दमयती ताबे	(बैडमिंटन)
4	अब्बास मोतसिर	(बास्केट बाल)
5	माइकेल फरेरा	(बिलियड)
6	दिलीप सरदेसाई	(क्रिकेट)
7	सईद नईमुद्दीन	(फुटबाल)
8	गुडालूर जगन्नाथ	(टेबल टेनिस)
9	अजीतपाल सिंह	(हाकी)
10	अरुणकुमार दास	(भारोत्तोलन)

11. सुदेश कुमार (कुश्ती)
12. सोली बाटलीवाला (नौका विहार)

1971

1 एडवर्ड सिक्वेरा (एथलेटिक्स)
2 कुमारी शोभामूर्ति (बैडमिंटन)
3 मनमोहन सिंह (बास्केट बाल)
4 हवल० एम० वेनू (मुक्केबाजी)
5 एस० वेंकटराघवन (क्रिकेट)
6 चन्द्रशेखर प्रसाद (फुटबाल)
7 पी० कृष्णमूर्ति (हाकी)
8 कुमारी अचला (खो-खो)
9 भीमसिंह (निशानेबाजी)
10 कुमारी एम० कुट्टीचाजमैन (टेबल टेनिस)
11 भवर सिंह (तैराकी)
12 श्याम लाल (भारोत्तोलन)

1972

1 विजयसिंह चौहान (एथलेटिक्स)
2 प्रकाश पादुकोने (बैडमिंटन)
3 कु० जयम्मा श्रीनिवासन (बाल बैडमिंटन)
4 सतीशकुमार मोहन (बिलियर्ड)
5 हव० नारायणन (मुक्केबाजी)
6 बी० एस० चन्द्रशेखर (क्रिकेट)
7 एकनाथ सोल्कर (क्रिकेट)
8 श्रीमती अजनि एन० देसाई (गोल्फ)
9 माइकेल किंडो (हाकी)
10 सदानन्द महादेव शेटये (कबड्डी)
11 उदयन चिनूभाई (निशानेबाजी)
12 बलवंत सिंह (वाली बाल)
13 अनिलकुमार मंडल (भारोत्तोलन)
14. प्रेमनाथ (कुश्ती)

1973

1	हवलदार श्री रामसिंह	(खेल-कूद)
2	ए० करीम	(बाल बैडमिंटन)
3	सुरेन्द्र कुमार कटारिया	(बास्केट बाल)
4	श्याम श्राफ	(बिलियर्ड्स)
5	हवलदार महताब सिंह	(मुक्केबाज़ी)
6	दफेदार खान मोहम्मद खान	(घुड़सवारी)
7	मगनसिंह राज्वी	(फुटबाल)
8	विक्रमजीत सिंह	(गोल्फ)
9	एम० पी० गणेश	(हाकी) पुरुष
10.	डा० (कुमारी) ओटीलिया मस्क्रीनाज	(हाकी) महिला
11.	भोलानाथ गुइन	(कबड्डी)
12	कुमारी भावना हसमुखलाल पारीख	(खो-खो)
13	धनवीर (टिंगू) खटाऊ	(तैराकी)
14	नीरज रामकृष्ण बजाज	(टेबल टेनिस)
15	जी० मुलिनी रेड्डी	(वाली बाल) महिला
16	जी० जगरूप सिंह	(कुश्ती)
17.	अफसर हुसैन	(नौका-बिहार)

1974

1	थदथुवीला योहानन	(एथलेटिक)
2	शिवनाथ सिंह राजपूत	(एथलेटिक)
3	रमण घोष	(बैडमिंटन)
4	अनिल कुमार पुंज	(बास्केट बाल)
5	कुमारी अजीन्द्र कौर	(हाकी) महिला
6	अशोक कुमार	(हाकी) पुरुष
7	कुमारी नीलिमा चन्द्रकान्त सरोलकर	(खो-खो)
8	विजय अमृतराज	(लान टेनिस)
9	कुमारी मंजरी भार्गव	(तैराकी) गोताखोरी
10	अविनाश बी० सारंग	(तैराकी) लम्बी दूरी
11	एम० श्याम सुन्दर राव	(वाली बाल)
12	एस० वैल्लईस्वामी	(भारोत्तोलन)
13	सतपाल	(कुश्ती)
14	अजन भट्टाचार्जी (गूंगे एव बहरे)	(क्रिकेट)

1975

1	हरिचंद	(एथलेटिक)
2	कुमारी वी० अनुसुइया बाई	(एथलेटिक)
3	देवेन्द्र अहूजा	(बैडमिंटन)
4	एल० ए० इकबाल	(बाल बैडमिंटन)
5	सुनील गावस्कर	(क्रिकेट)
6	हनुमान सिंह	(बास्केट बाल)
7	अमर सिंह	(साईक्लिंग)
8	एम० के० जमशेद	(गोल्फ)
9	बी० पी० गोविन्दा	(हाकी)
10	कुमारी रूपा सैनी	(महिला हाकी)
11	एम० देवनाथ	(जिम्नास्टिक)
12	कुमारी उषा बसंत नागरकर	(खो-खो)
13	श्रीरंग जनार्दन इनामदार	(खो खो)
14	मेजर वी० पी० सिंह	(पोलो)
15	रणवीर सिंह	(वाली बाल)
16	कुमारी के० सी० इलामा	(वाली बाल)
17.	दलबीर सिंह	(भारोत्तोलन)
18	एम० एस० राणा	(तैराकी)
19	कुमारी समिता देसाई	(तैराकी)

1976

1	कुमारी शांता रंगास्वामी	(क्रिकेट महिला)
2	कुमारी अमी छिया	(बैडमिंटन)
3	कुमारी गीता जुत्शी	(एथलटिक)
4	कुमारी शैलजा सलोखे	(टेबल टेनिस)
5	बहादुर सिंह	(एथलेटिक)
6	डी० एस० रामचन्द्र	(खो खो)
7	ए० सैम क्रिस्ट दास	(बाल बैडमिंटन)
8	एच० एस० सोधी	(इक्वीस्टेरियन)
9	जिमी जार्ज	(वाली बाल)
10	एस० के० बालामुरुगनदम्	(भारोत्तोलन)

1977-78

1	सतीश कुमार	(एथलेटिक्स)
2	जी० आर० विश्वनाथ	(क्रिकेट)
3	हरचरण सिंह	(हाकी)
4	कुमारी कवल ठाकुर सिंह	(बैडमिंटन)
5	टी० विजयराघवन	(बास्केट बाल)
6	बी० एस० थापा	(मुक्केबाजी)
7	श्रीमती सीता राउली	(गोल्फ)
8	कुमारी लोरेनी लूना फरनांडिस	(हाकी)
9	एस० तमिल सेल्वान	(भारोत्तोलन)
10	एम० रामन राव	(वाली बाल)

अनुसुइया बाई—भारतीय महिला एथलेटिक्स म आज अनुसुइया बाई जिन ऊचाइयों पर है, उसके आस-पास भी कोई दूसरी महिला एथलीट नही।

अनुसुइया बाई को यदि विलक्षण एथलीट माना जाए तो यह उसके प्रति न्याय ही होगा क्योंकि वह कई क्षेत्रों मे राष्ट्रीय चैम्पियन है। 100 मीटर का 12 सेकड का उसन राष्ट्रीय रिकाड स्थापित कर रखा है।

उसन न केवल एक धाविका के रूप मे ही ख्याति अर्जित कर रखी है, बल्कि शाट पुट और डिस्कस थ्रो म भी उसका जवाब नही। कही भी विजय की मजिल पाना उसके लिए कठिन नही होता।

सियोल (दक्षिणी कोरिया) 1975 मे सम्पन्न द्वितीय एशियाई एथलेटिक्स मे यद्यपि अनुसुइया को असफलता हाथ लगी, डिस्कस थ्रो मे जहा उसे छठा स्थान मिला, वही 100 मीटर की दौड मे 12 3 सेकड से पाचवा स्थान मिला। पर अनुसुइया अतर्राष्ट्रीय ट्रैक पर पहली बार दौडी थी। इस दृष्टि से देखा जाए तो उसकी उपलब्धि कम नही थी। इसी वष अनुसुइया ने मनीला मे आयोजित आमत्रण एशियाई एथलेटिक्स मे डिस्कस थ्रो मे रजत पदक और शाट पुट व 100 मीटर की दौड मे कास्य पदक हासिल किया। वहा उसने 100 मीटर की दूरी 12 1 सेकड मे तय की। 1975 की राष्ट्रीय एथलेटिक्स मे अनुसुइया ने 12 सेकड मे दूरी तय की। भारतीय जमीन पर यह सबसे कम समय था और इस तरह वह भारत की सबसे तेज महिला कहलाई। 1974 के एशियाई खेलो म डिस्कस मे अनुसुइया को छठा स्थान मिला। भले ही वह पिछड गई, लेकिन उसने 45 96 मीटर फेंककर भारत का नया राष्ट्रीय रिकाड बनाया। इसके बाद भारत-श्रीलका एथलेटिक्स मे अनुसुइया ने शाट पुट और डिस्कस थ्रो दोनो प्रतियोगिताओ मे स्वण पदक झटके।

अनुसुइया बाई को 1975 मे अर्जुन पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

अनिल नायर—अनिल नायर ने, जिनका जन्म 13 अक्तूबर, 1946 को हुआ था, स्क्वैश रैकेट म 1964 और 1967 मे भारतीय राष्ट्रीय जूनियर टाइटल और पुरुषो का टाइटल जीता। उन्होने डिस्ट्रिल कप लन्दन 1965 म जूनियर टाइटल भी जीता। वह 1967 और 1968 के दौरान अमेरिका म जीतनेवाली अन्तर विश्वविद्यालय टीम के कप्तान थे और उन्होने इन दोना वर्षों मे अन्तर विश्व विद्यालय वैयक्तिक टाइटल यू० एस० ए० (अमेरिका) प्राप्त किया। उन्होंने 1968 मे अमेरिकन राष्ट्रीय स्क्वैश रैकेट चैम्पियनशिप भी जीती। 1969 मे हारवर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका ने नायर को उनकी सत्यनिष्ठा, साहस, नेतत्व और दौड-कूद योग्यता के लिए बिंघम पुरस्कार प्रदान किया।

अबेबे बिकिला—इथोपिया का अबेबे बिकिला दुनिया का ऐसा पहला इनसान रहा है जिसने मैराथन दौड (यह दौड 26 मील 385 गज लम्बी होती है) को दोबारा जीतकर खेल कूद के इतिहास म अपना नाम का एक नया अध्याय जोड दिया। अब तक कोई भी खिलाडी इस दौड को जो दुनिया की सबसे जटिल और सबसे लम्बी दौड मानी जाती है, दूसरी बार नही जीत सका है।

बिकिला इथोपिया सम्राट के अग रक्षक दल के सदस्य थे। उन्होंने 1960 और 1964 की दोनो ओलम्पिक प्रतियोगिताओं मे मैराथन दौड म स्वर्ण पदक प्राप्त किया। पाच फुट दस इच लम्बे बिकिला इथोपिया के लौहपुरुष माने जाते थे। इथोपिया की जनता म बिकिला का महत्त्व उतना ही है जितना कि वहा के बादशाह हेले सेलासी का है। अग रक्षक के राजसी ठाठ म जब बिकिला वहा के बाजारो म घूमते थे तो वहा की जनता उनके दर्शनो के लिए उमड पडती थी।

बिकिला का जन्म एक साधारण किसान परिवार मे हुआ। किन्तु अपनी साधना और तपस्या से उन्होने वह स्थान प्राप्त कर लिया जो दुनिया के बहुत कम खिलाडियो को प्राप्त होता है।

मक्सिको ओलम्पिक खेलो मे वह तीसरी बार मैराथन दौड जीतने के इरादे से वहां पहुचे थे। लेकिन वहा उनकी यह मुराद पूरी नही हो सकी और उनके ही देशवासी, मित्र और साथी 35 वर्षीय मामो वाल्दे ने मैराथन दौड म स्वर्ण पदक प्राप्त किया। मामो वाल्दे ने जीत के बाद कहा था कि अबेबे बिकिला द्वारा दौड पूरी न कर पाने का कारण यह था कि वह पिछले चार दिनो से अस्वस्थ रहे थे और अपने पूरे फार्म म नही आ सके थे। बिकिला ने 10 किलोमीटर (लगभग 6 मील) बाद ही भागना बन्द कर दिया था। मार्च 1969 म वह एक भयकर कार दुर्घटना म घायल होने पर अपग हो गए। सन् 1968 म उनकी मृत्यु हो गई। उनकी शव यात्रा म लगभग 65 हजार लोग उपस्थित थे।

अमरसिंह—भारतीय क्रिकेट टीम का विश्लेषण करते समय आज अक्सर यह कहा जाता है कि हमारे पास तेज गेंददाज (फास्ट बालर) नही है। लेकिन आज से 45 साल पहले भारत के पास तेज गेंददाजो की एक ऐसी जोडी थी जिसकी तुलना दुनिया के सवश्रेष्ठ तेज गेंददाजो के साथ की जा सकती थी। 1932 मे जिस भारतीय टीम ने इग्लैंड का दौरा किया उसमे अमरसिंह भारतीय टीम के महत्त्वपूर्ण सदस्य थे। इग्लैंड म उनका प्रदशन देखकर लोगो ने यहा तक कहा था कि पहले विश्वयुद्ध के बाद अमरसिंह जैसा चतुर और तेज बालर दूसरा नही हुआ।

विस्डन (जिसे क्रिकेट का सबसे बडा सन्दभ ग्रन्थ माना जाता है) मे भी कहा गया है—'जहा तक प्रवीणता का प्रश्न है अमरसिंह भारतीय क्रिकेट टीम मे सबसे अच्छे बालर हैं।' 1932 के पहले टेस्ट मैच मे, जो भारत द्वारा इग्लैंड के विरुद्ध खेला गया पहला टेस्ट मैच था, पहली पारी म उन्होने सतत रूप से जैसी अचूक और आक्रमणकारी गेंददाजी की वैसी तेज गेंददाजी इग्लैंड मे काफी दिनो से देखी नही गई। 1932 से 1940 तक अमरसिंह भारत के तेज गेंददाज माने जाते रहे। लेकिन 30 वष की उम्र मे ही उनकी असामयिक मृत्यु हो गई।

अमरनाथ (महेन्द्र)—जन्म 24 मई, 1951। बडे भाई सुरेन्द्र की तरह कानपुर मे जन्मा महेन्द्र अमरनाथ का मझला पुत्र है। दाए हाथ का आलराउन्डर है और इस दिशा मे सुविख्यात पिता के पदचिह्नो पर चल रहा है। बल्लेबाजी मे कई अवसरो पर असाधारण जीवट का प्रदशन और मीडियम पेस गेंदबाजी म कई बार उपयोगी कौशल का प्रदशन। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध पिछली शृखला मे गेंद-बल्ले दोनो से श्रेष्ठ प्रदशन। लीग क्रिकेट का पर्याप्त अनुभव। टैस्ट क्रिकेट मे एक हजार से अधिक रन बनाने का गौरव।

अमरनाथ (सुरेन्द्र)—जन्म 30 दिसम्बर, 1948। भूतपूर्व भारतीय कप्तान लाला अमरनाथ का ज्येष्ठ पुत्र सुरेन्द्र अमरनाथ बाए हाथ का आकषक और आक्रामक बल्लेबाज है। पिता की तरह जीवन के पहले टेस्ट म शतक बनाने का गौरव प्राप्त। विकेट से दूर अच्छी फील्डिग करता है। रणजी ट्राफी मे पहले पजाब और अब दिल्ली की ओर से खेलता है। इग्लैंड मे लीग क्रिकेट का अनुभव। पिछली आस्ट्रेलिया यात्रा मे चोट के कारण किसी टेस्ट मे नही खेल सका। अब तक इग्लैंड न्यूजीलड और वेस्टइडीज के विरुद्ध 7 टेस्ट खेले हैं।

अरुणलाल घोष—अरुणलाल घोष की गिनती भारत के चोटी के इने-गिने फुटबाल खिलाडियो मे की जा सकती है। अरुणलाल घोष ने 1965 की मर्डेका फुटबाल प्रतियोगिता मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। भारत का दौरा करने वाली सोवियत सघ की टीम के विरुद्ध उन्होंने दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई और मद्रास के मैचो मे हिस्सा लिया। दिल्ली के मैच मे तो यह भारतीय टीम के कप्तान

भी रहे। 1960 की रोम ओलम्पिक प्रतियोगिता म भी इन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। उसके बाद वह प्राय सभी अन्तर्राष्ट्रीय मैचों म भारतीय टीम के सदस्य रहे। ये प्रतिरक्षात्मक खेल के उस्ताद माने जात रहे।

असलम शेर खा—भारत के मशहूर राइट, फुल बैक और पेनल्टी कानर के दक्ष असलम शेर खा का जन्म 15 जुलाई, 1953 को हुआ और विक्रम विश्व विद्यालय से उन्होने बी० ए० की परीक्षा पास की। 1975 म जिस भारतीय टीम ने विश्व कप जीतने का गौरव प्राप्त किया था उसमे उन्होने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस ऐतिहासिक विजय के बाद उन्होन कहा था—' मेरे वालिद मरहूम अहमद शेर खा 1936 म भारतीय टीम म थे, जिसने बर्लिन आलम्पिक म स्वर्ण पदक जीता था। 1967 मे उनका इन्तकाल हो गया। मैंने बचपन मे भोपाल के अपने गली मुहल्लो म हाकी खेलनी शुरू की। उस समय भी, जैसे खाना-पीना जरूरी होता है वैसे ही हाकी मेरे लिए थी। मैं घर मे अकेला ही लडका हू मा बाप का। मा घबराती थी कि सडक पर खेलता है मोटर वगैरह न आ जाए, लेकिन वालिद कहते थे, इसकी हड्डी बनने का यही वक्त है, अभी जो सीख गया, सो सीख गया, नही तो देरी हो जाएगी।

" सबसे पहले मैं नेहरू हाकी म खेला था 1969 मे, और तब पहली बार मुझे महसूस हुआ कि अच्छा खेल लोगो को आकर्षित कर सकता है। मैंने कभी मेहनत करने मे कोताही नही की। मेरी एक ही इच्छा थी अपने वालिद की तरह ऊचे दरजे की हाकी मैं भी खेलू, वतन के लिए जीत हासिल करू, अल्लाह ताला ने वह ख्वाहिश पूरी कर दी।

मेरा भी यही मानना है कि हमे हिन्दुस्तानी ढग की हाकी खेलनी चाहिए, उसीम फायदा भी है। जहा तक मेरा सवाल है, मुझे हाकी म परेशानी इसलिए भी नही आई क्योकि मेरा तो यह घर का खेल है।"

आ

आई० एफ० ए० शील्ड—फुटबाल के क्षेत्र मे आई० एफ० ए० शील्ड का अपना एक एतिहासिक महत्त्व है। इस प्रतियोगिता की शुरुआत 1893 मे कलकत्ता मे हुई थी। 1911 म पहली बार मोहन बागान ने इस शील्ड पर कब्जा किया था। स्वाधीनता सग्राम के इतिहास मे इस जीत का अपना एक विशिष्ट स्थान है। नगे पाव मैदान म उतरनेवाले देशभक्त भारतीय खिलाडियो द्वारा सूट बूट से लैस अग्रेज खिलाडियों को हराना कोई कम महत्त्व की बात नही थी। इसीलिए

यह कहा जाता है कि स्वाधीनता सग्राम मे मोहन बागान क्लब का भी महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मैच के दूसरे दिन रविवार को लोग हजारो की सख्या मे आई० एफ० ए० शील्ड का दर्शन करने के लिए पहुचे। मुसलमानो ने भी मोहन बागान के इन खिलाडियो का खुले दिल से स्वागत किया और कहा—'यह प्रसन्नता विश्वव्यापी थी।' मुस्लिम स्पोर्टिंग क्लब के सदस्य खुशी के मारे पागल हो उठे थे और जमीन पर लोट पोट होते हुए उन्होने एकस्वर से कहा था—'आज हमारे हिन्दू भाइयो की जीत हुई है।" स्टेटसमैन ने कहा—"आनेवाली पीढी पर इस जीत का अच्छा प्रभाव पडेगा।" 1977 मे भी इस शील्ड पर मोहन बागान ने अपना अधिकार जमाया था। 1978 मे इसमे सोवियत सघ की सुपर लीग टीम अरारत इरेवान ने भी भाग लिया था। फाइनल मे मोहन बागान और अरारत इरेवान के बीच मुकाबला 2-2 से बराबर रहा। स्वाधीनता के बाद यह पहला अवसर था जब किसी विदेशी टीम को सयुक्त विजेता के रूप मे छ महीने तक ट्राफी अपने पास रखने का गौरव प्राप्त हुआ।

आबिद अली—आबिद अली का जन्म 21 जुलाई, 1947 को हुआ। वह अब तक 17 टैस्ट मैचो मे भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके है। राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ म वह हैदराबाद तथा दक्षिण क्षेत्र की ओर से खेलते है। 1971 मे इग्लैंड का दौरा करनेवाली भारतीय टीम मे भी उन्हे शामिल किया गया। तब तक वह 17 टेस्ट मैचो मे 649 रन बना चुके थे। टेस्ट मैचो मे उनका सर्वोच्च स्कोर 81 है। वे 1949 रन देकर कुल 32 विकेट ले चुके हैं। वे अत्यन्त निकट से फील्डिंग करते हैं। 1968 69 मे उन्होने आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड का तथा हाल ही मे वेस्टइडीज का भी दौरा किया था।

आरती साहा—आरती साहा भारत की एकमात्र ऐसी महिला तैराक हैं जिन्होने इग्लिश चैनल पार करके अपना तथा अपने देश का गौरव बढाया है। इग्लिश चैनल फ्रास तथा इग्लैंड के बीच के समुद्र को कहते है। वैसे तो इस सागर की दूरी 21 मील है, मगर जब कभी कोई तैराक इसकी अशान्त लहरो मे घिर जाता है तो उसके लिए यही फासला और भी लम्बा और कष्टप्रद हो जाता है।

आरती साहा (विवाह के बाद इनका नाम आरती गुप्ता हो गया है) ने इग्लिश चैनल को पार करके सचमुच एक ऐसा साहसपूर्ण काय किया है जिससे भारतीय महिलाए प्रेरणा ग्रहण कर सकती हैं। आरती साहा को बचपन से ही तैरने का बेहद शौक था। जब वह केवल दो वष की ही थीं कि उनकी मा चल बसी। उनके पिता ने उन्हें बडे लाड-प्यार से पाला। बचपन से ही आरती साहा को इग्लिश चैनल पार करने की धुन सवार हो गई थी। पहले प्रयास मे उन्हें

सफलता नही मिली। मगर उन्होने भी हिम्मत नही हारी और 29 सितम्बर, 1959 को दूसरे प्रयास मे इग्लिश चैनल पार करके ही दम लिया। उन्होने इस सागर को 16 घटे और 20 मिनट म पार किया।

आसिफ इकबाल, रजवी—जन्म 6 जून, 1943। भारतीय खिलाड़ी गुलाम अहमद का भतीजा। आजकल कैंट काउटी का कप्तान। 1967 के ओवल टेस्ट में पाकिस्तान का स्कोर 8 विकेट पर 65 रन था, तब इतखाब के साथ नवें विकेट के लिए 190 रन (टेस्ट रिकाड) बनाए। 45 टेस्टो में 2748 रन, 50 विकेट।

इ

इफ्तेखार अली खा (नवाब पटौदी—स्वर्गीय)—1932 का वष भारतीय क्रिकेट के इतिहास म एक विशेष महत्त्व रखता है। इसी वष भारत ने सवप्रथम 'अधिकृत' टेस्ट खेला और इसी वष विस्डन ने दो भारतीय क्रिकेट खिलाड़िया को सम्मानित किया। इनम से एक थे स्वर्गीय नवाब पटौदी और दूसरे थे सी०के० नायडू।

नवाब पटौदी (इफ्तेखार अली खा) ने अपने विद्यार्थी जीवन म ही क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया था। पटौदी आक्सफोड विश्वविद्यालय के छात्र थे। यहा यह बता देना उचित होगा कि क्रिकेट में कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयो मे पुरानी प्रतिद्वन्द्विता है। एक बार दोना विश्वविद्यालयो की टीमो के बीच मैच हो रहा था। कैम्ब्रिज की टीम के एक खिलाड़ी रेटक्लिफ ने 5 घटे और 40 मिनट के खेल में 201 रन बना लिए। दूसरे दिन जब आक्सफोर्ड की बारी आई तो पटौदी के नवाब ने बडे आत्म विश्वास के साथ अपने कप्तान से कहा कि मैं रेटक्लिफ से ज्यादा रन बनाकर ही लौटूगा। और उन्होने अपन वादे और वचन का पालन किया। उन्होने 238 रन बनाए और फिर भी आउट नही हुए।

इग्लैंड म उन्होन सन् 1929 म खेलना शुरू किया। उनके खेल से प्रभावित होकर उन्हें आस्ट्रेलिया का दौरा करनेवाली इग्लैंड की टीम मे शामिल कर लिया गया।

नवाब इफ्तखार अली का जन्म 17 माच 1901 को पजाब की एक रियासत पटौदी मे हुआ था।

1946 म नवाब पटौदी भारतीय टीम को इग्लैंड ले गए थे। उस समय अब

खिलाडियो का चुनाव हुआ तो चयन समिति का ध्यान एकदम पटौदी के नवाब की ओर गया। क्योकि वह इग्लैंड के मैदानो, मौसम और पिचो से भली भांति परिचित थे। उनके कुशल नेतृत्व का यह पारणाम हुआ कि भारत इग्लड से तीन टेस्टमैचो म से कुल एक मैच हारा।

5 जनवरी, 1952 को पोलो खेलते हुए उनकी मृत्यु हो गई।

इग्लिश चैनल के तैराक—किसी पवतारोही से किसी ने एक बार यह पूछ लिया था कि आप अपनी जान जोखिम मे डालकर इतने ऊचे-ऊचे पवतो पर क्यो चढते हैं। उसने मुस्कराकर उत्तर दिया था पवत है तो इसलिए हम चढते हैं। यही उत्तर समुद्र पार करनेवाले तैराक भी दे सकते है और कह सकते हैं कि समुद्र हैं तो हम अपनी जान जोखिम मे डालकर इनपर विजय प्राप्त करते है। तैराकी के क्षेत्र मे इग्लिश चैनल का जिक्र यहा-वहा अवश्य हो जाता है क्योकि इसकी परम्परा काफी पुरानी है।

तैराकी के क्षेत्र म समुद्र पार करने की शुरुआत मैथ्यू वेब ने की। पिछली सदी मे वह अक्सर भारतीय बन्दरगाहो मे देखे जाते थे। 1875 मे वेब ने पहली बार चैनल पार किया। उस समय तक लोग कभी यह सोच भी नही सकते थे कि भयकर जीवो से भरपूर इग्लिश चैनल को कोई इनसान तैरकर पार कर सकता है। लेकिन वेब ने यह करिश्मा कर दिखाया और पहल का श्रेय प्राप्त किया। कहा जाता है कि वेब भारतीय बन्दरगाहो पर ब्रिटिश जहाज लाया करते थे और इस तरह दोनो देशो म व्यापार बढाने मे उनका योगदान भी उल्लेखनीय है। समुद्र म बार-बार अपने जहाज़ लाने या ले जाने और तूफानी समुद्रो मे तैरने के शौक के कारण ही उन्हाने बहुत-से डूबते लोगो की जानें बचाइ। जिनमे एक उनका सगा भाई भी था।

इग्लि । चैनल पार करने से पहले वेब ने ब्लैकवाल पायर से ग्रेवसैंड तक 20 मील लम्बी अपनी तैराकी 4 घटे 45 मिनट मे पार की। उनका यह रिकाड 24 साल तक बरकरार रहा। 12 अगस्त, 1875 को उन्होने इग्लिश चैनल पार करने की पहली कोशिश की, लेकिन 6 घटे 49 मिनट तैरने के बाद उन्हे अपना यह अभियान बीच म ही छोड देना पडा। 15 दिनो के बाद उन्होने फिर तैयारी की और इस बार वह विजयी रहे। जुलाई, 1883 मे नियागरा जलप्रपात के करीब तैरने के प्रयास मे उन्होन अपनी जान गवा दी। इस प्रकार के खतरे के खेल म हिस्सा लेने म अपनी जान का खतरा तो बना ही रहता है।

वेब के 36 साल बाद तक भी कोई तैराक इग्लिश चैनल पार करने मे सफल नही हो सका, हालाकि इसके लिए 70 बार प्रयास किए गए। इग्लिश चैनल पार करने वालो को इग्लैंड से फ्रास या फ्रास से इग्लैंड वाली कोई भी एक दिशा चुननी होती है। वेब ने इग्लड से फ्रास वाला रास्ता चुना था।

वेब के बाद बहुत-से लोगों ने इंग्लिश चैनल पार करने के अपने-अपने दावे पुरजोर करने शुरू कर दिए। लेकिन 1927 में एक स्त्री के इस दावे में जरूर कोई दम था। उसने यह चैनल 13 घंटे 10 मिनट में पार किया तथा 1,000 पौंड की धनराशि पुरस्कार स्वरूप प्राप्त की।

इंग्लिश चैनल तैरने के लिए अब साहसी लोगों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। लिहाजा 1927 में चैनल स्विमिंग एसोसिएशन की स्थापना हुई। तैरने के लिए एसोसिएशन की इजाजत लेना कोई जरूरी नहीं था, लेकिन किसी भी तैराक के इस दावे को 'कि उसने चैनल पार कर लिया है" मान्यता तभी दी जाती थी जब उसके इस साहसिक कार्य को एसोसिएशन का कोई सदस्य देखे।

1927 से लेकर अगस्त, 1978 तक लगभग 130 तैराकों ने फ्रांस से इंग्लैंड तक के समुद्र को पार किया तथा 29 ने इंग्लैंड से फ्रांस तक। यद्यपि अभी तक एक ही तरफ से तैराक आते-जाते रहे हैं। दोनों तरफ से बिना रुके चैनल पार करने का श्रेय दुनिया के केवल दो तैराकों को प्राप्त है। 22 सितम्बर, 1961 को अर्जेंटीना के एंटोनिया अबेरतोंदो ने 43 घंटे और 10 मिनट में और 1965 में अमेरिका के टेड हरिक्सन ने 30 घंटे 3 मिनट में दोहरी बार इंग्लिश चैनल पार किया था।

इन्तिखाब आलम—जन्म 28 दिसम्बर 1941। आजकल सरे काउण्टी से सम्बद्ध। पाकिस्तान के भूतपूर्व कप्तान, विश्व के श्रेष्ठतम स्पिनरों में गिनती। टेस्ट मैचों में अपनी पहली ही गेंद पर सी० मैक्डोनाल्ड की विकेट गिराई। 47 टेस्टों में 1493 रन।

इम्तियाज अहमद—जन्म 5 जनवरी, 1928। 1962 शृंखला के प्रथम टेस्ट में इंग्लैंड के स्कोर 5 विकेट पर 544 रन में विकेटकीपर इम्तियाज ने एक भी बाई नहीं दी। 41 टेस्टों में 2079 रन, 93 खिलाड़ी आउट।

इंजीनियर—फारुख मानकजी इंजीनियर का जन्म 2 फरवरी, 1938 को बम्बई में हुआ। इंजीनियर सीधे हाथ के बल्लेबाज तथा उच्चकोटि के विकेटकीपर हैं। वह पारी शुरू करने वाले भी बल्लेबाज माने जाते रहे। 1961 से ही वह भारतीय टीम के प्रथम नम्बर के विकेटकीपर है। वह अब तक कुल 30 टेस्ट मैच खेल चुके हैं और 41 कैच ले चुके हैं। अब तक उन्होंने कुल 12 खिलाड़ियों को स्टम्प आउट किया। वह टेस्ट मैचों में अब तक कुल 1615 रन बना चुके हैं। वेस्टइंडीज के विरुद्ध खेलते हुए उन्हें शतक बनाने का भी श्रेय प्राप्त हो चुका है। वह वेस्टइंडीज, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड का दौरा कर चुके हैं।

हैदराबाद में श्रीलंका के दूसरे गैर-सरकारी टेस्ट में उन्होंने शतक बनाया और 7 विकेट ली। न्यूजीलैंड के खिलाफ मद्रास में पहले टेस्ट में 117 मिनट में

90 रन बनाए। 1971 मे उन्हे इग्लैंड का दौरा करने वाली भारतीय टीम मे भी शामिल कर लिया गया था।

इन्द्र सिंह—इन्द्र सिंह, जिनका जन्म 23 दिसम्बर, 1943 को हुआ था, भारतीय टीम के एक सर्वोत्कृष्ट फारवर्ड पक्ति के फुटबाल खिलाडी माने जाते है। बहुत वर्षों तक वह मर्डेका प्रतियोगिता जो एशियाई प्रतियोगिता मानी जाती है, मे भाग लेने वाली भारतीय टीम मे चुने जाते रहे है। एक बार जब अखिल एशियाई फुटबाल टीम का चयन किया गया तो उसमे उन्हे शामिल कर लिया गया। उन्होने जालधर की लीडस फुटबाल टीम की ओर से डी० सी०एम० प्रतियोगिता डूरेंड और रोवर्स कप प्रतियोगिताओ मे भाग लिया और इस प्रकार अखिल भारतीय फुटबाल की प्रतियोगिताओ म लीडस क्लब, जालधर न एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। 1962 से 1967 तक वह राष्ट्रीय फुटबाल प्रतियोगिता म पजाब की ओर से खेलते रहे। 1964-67 के दौरान वह मर्डेका फुटबाल प्रतियोगिता मे सर्वश्रेष्ठ फारवर्ड खिलाडी माने जाते रहे। इस समय वह जे० सी० टी० फगवाडा की टीम के कप्तान हैं।

इवान्स, टी० गाडफ्रे (कैण्ट)—जन्म 18 अगस्त, 1920। कैण्ट और इग्लैंड की श्रेष्ठ विकेटकीपरो की परम्परा का एम्स के बाद अगला सदस्य। 1946 से इवान्स ने 91 टेस्ट मैच खेले और 219 खिलाडी आउट करने तथा 2439 रन बनाने का अद्भुत कीर्तिमान बनाया। पूरे जीवन मे इवान्स ने 811 कैच लपके तथा 249 खिलाडी स्टम्प किए।

ईरानी कप विजेता

सत्र	स्थान	विजेता
1955 60	नई दिल्ली	बम्बई
1960 61	मैच नही	
1961 62	मैच नही	
1962 63	बम्बई	[illegible]
1963 64	अनन्तपुर	बम्बई
1964 65	मैच स्थगित	
1965 66	मद्रास	बम्बई और शेष भारत सयुक्त विजेता, क्योंकि पहली पारी पूरी न हो सकी।
1966 67	कलकत्ता	शेष भारत
1967 68	बम्बई	बम्बई
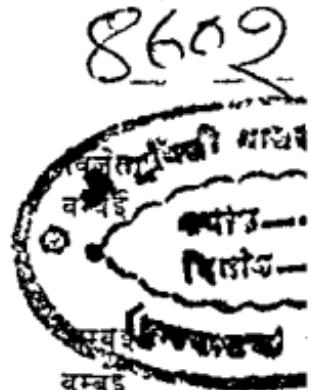
सत्र	स्थान	विजेता
1968 69	बम्बई	शेष भारत
1969 70	पूना	बम्बई
1970 71	कलकत्ता	बम्बई
1971 72	बम्बई	शेष भारत
1972 73	पूना	बम्बई
1973 74	बंगलौर	शेष भारत
1974 75	अहमदाबाद	कर्नाटक
1975 76	नागपुर	बम्बई
1976 77	नई दिल्ली	बम्बई
1977 78	बम्बई	शेष भारत
1978-79	बंगलौर	शेष भारत

उ

उदयचन्द (पहलवान)—सेना के मशहूर पहलवान उदयचन्द को पहली बार देखने से ऐसा लगता है कि यह आदमी या तो कोई एथलीट है या हाकी का खिलाड़ी। शरीर की बनावट से वह पहलवान नहीं लगते, लेकिन जिस समय लंगोट कसकर अखाड़े मे उतरते हैं तो अपने इस्पाती शरीर और कुश्ती के निराले दाव-पेचो से दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर देते हैं।

नायब सूबेदार उदयचन्द का जन्म 1937 मे ग्राम गोडी कला (जिला हिसार) मे एक जाट परिवार म हुआ। स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद यह 1953 म सेना मे भरती हो गए। कुश्ती से इनका और इनके परिवार के अन्य सदस्यो का विशेष लगाव था। इनके बड़े भाई नायब सूबेदार हरिराम कई वर्षों तक सेना के लाइटवेट वग म चैम्पियन और राष्ट्रीय चैम्पियन रहे। इनको अपने बड़े भाई से कुश्ती की प्रेरणा मिली। सेना के प्रसिद्ध पहलवान लीलाराम को इन्होंने अपना गुरु मान लिया। लीलाराम भारत के हैवीवेट चैम्पियन रह चुके हैं और उदयचन्द के कथनानुसार आज उन्हे कुश्ती मे जो मान और सम्मान मिला है इसका श्रेय लीलाराम को दिया जा सकता है।

1955 म पहली बार सेना की प्रतियोगिताओ मे वह फेदरवेट वग मे रनर अप रहे। 1956 और 1957 मे इन्होने अपने वग मे सेना की चैम्पियनशिप जीती और 1958 मे कटक मे हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं मे वह राष्ट्रीय

चैम्पियन बने। 1959 मे अमृतसर मे हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे वह वेल्टर-वेट मे लक्ष्मीकांत पाण्डे से हार गए और इन्हे दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। लक्ष्मीकांत पाण्डे को 1958 मे कार्डिफ म हुई राष्ट्रकुल खेल प्रतियोगिताओ मे रजत पदक प्राप्त हुआ था। वह उस समय वेल्टरवेट के राष्ट्रीय चैम्पियन थे। उदय चन्द लक्ष्मीकांत पाण्डे से हार जाने पर भी निराश नही हुए बल्कि उन्होने मन ही मन पाण्डे को हराने का सकल्प कर लिया। 1960 मे दिल्ली म हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे उन्होने अपने सभी प्रतिद्वद्वियो को हरा दिया। यहा यह बता देना उचित होगा कि इन प्रतियोगिताओ मे पाण्डे ने भाग नही लिया था। उसके बाद 1960 म ही पहले बम्बई मे और बाद म मई-जून के महीने मे शिमला मे भारतीय पहलवानो के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया, ताकि रोम ओलम्पिक के लिए अच्छे से अच्छे पहलवान का चुनाव किया जा सके। वहा उन्होने अपने वग के सभी प्रतिद्वद्वियो को (अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वी लक्ष्मीकांत पाण्डे को भी) हरा दिया और इस प्रकार अपनी पुरानी हार का बदला ले लिया। यहा यह बता देना उचित होगा कि इससे पहले पाण्डे किसी भारतीय पहलवान म नही हारे थे। इस प्रकार उदयचन्द को रोम ओलम्पिक टीम मे शामिल कर लिया गया। रोम ओलम्पिक खेलो मे उदयचन्द का प्रदशन बहुत ही शानदार रहा। पहली कुश्ती मे उन्होने इग्लैंड के एक नामी पहलवान को अको से हरा दिया। दूसरी कुश्ती एक रूसी पहलवान के साथ हुई जिसमे दोनो पहलवान बराबर रहे। तीसरी कुश्ती म वह टर्की के पहलवान से हार गए।

उद्यम सिंह—उद्यम सिंह का जन्म 4 अगस्त, 1928 को जालधर के निकट ससारपुर गाव मे हुआ था।

1948 से 1965 तक की राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिताओ मे उद्यम सिंह ने पजाब का प्रतिनिधित्व किया और एशियाई प्रतियोगिताओ मे भारत का। 1948 से 1964 तक विदेशो का दौरा करने वाली भारतीय टीम के ये स्थाई सदस्य रहे। 1965 मे पजाब की टीम को राष्ट्रीय चैम्पियनशिप (बम्बई), आगा खा हाकी प्रतियोगिता (बम्बई), अखिल भारतीय उबेदुल्लाह गोल्ड कप हाकी टूर्नामेंट (भोपाल) आदि प्रतियोगिताए जीतने का गौरव प्राप्त हुआ। 1952, 1956, 1960 और 1964 के ओलम्पिक खेलों मे उन्होने भारत का प्रतिनिधित्व किया। इस समय उनकी अवस्था लगभग 50 वर्ष की है और अब भी वह सीमा सुरक्षा दल (बी० एस० एफ) की ओर से देश की बडी प्रतियोगिताओ मे भाग लेते हैं।

उबेर कप—उबेर कप प्रतियोगिता की शुरुआत 1956-57 मे हुई। 1977 मे पहली बार मुकाबलो का आयोजन ठीक टामस कप प्रतियोगिता के आधार पर ही किया गया। याद रहे कि बैडमिंटन की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ (पुरुषो

की टीम) मे जो दर्जा टामस कप को प्राप्त है वही स्त्रियो की टीम प्रतियोगिताओं मे उबेर कप का है। आज तक उबेर कप प्रतियोगिता मे 7 मुकाबले होते थे और टामस कप प्रतियोगिता मे 9 मुकाबले। लेकिन अब से उबेर कप म भी 9 मुकाबलो के आधार पर हार जीत का निणय किया जाता है।

यदि उबर कप मे भारतीय खिलाडियो के पिछले प्रदशन पर नजर दौड़ाई जाए तो पता चलता है कि शुरु शुरु म इसम भारतीय खिलाडियो ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। प्रतियोगिता के पहल वष भारत ने मलेसिया को हरा दिया था लेकिन बाद म अतर क्षेत्रीय मुकाबलो मे भारत अमेरिका से हार गया था। उस समय अमेरिका को विश्व चैम्पियन माना जाता था। 195 -60 म भी भारत ने मलेसिया को हरा दिया लेकिन बाद म अमेरिका से हार गया। 1962 63 म भारतीय टीम ने पहले तो हागकाग को हराया लेकिन दूसरे राउड मे भारत ने इडोनेसिया को वाक-ओवर दे दिया। 1965 66 मे भारत को मलेसिया से वाक-ओवर मिला, लेकिन बाद म एशियाई क्षेत्र मे ही भारत थाईदेश से हार गया। 1968 69 मे फिर यही पुनरावृत्ति हुई, यानी थाईदेश ने भारत को हरा दिया। 1971-72 म भारत न थाईदेश का वाक-ओवर दिया और 1974 75 मे भारत मलेसिया से 0 7 से हार गया, यानी भारत एक भी मुकाबला नहीं जीत सका। सक्षेप मे यह कि एक जमाने म मलेसिया को हराना जितना आसान था आज उतना ही कठिन है।

1956 57 मे उबेर कप प्रतियागिता का प्रारम्भ अमेरिका मे हुआ तथा 1963 64 म इसे विश्व स्तर पर स्वीकार किया गया। श्रीमती उबेर स्वय बड-मिंटन की एक श्रेष्ठ खिलाडिन थी और उ होन ही खिलाडिनो को इस तरह का कप भेंट करने का सुझाव रखा था।

यह प्रतियागिता चार क्षेत्रो के आधार पर खेली जाती है (एशियाई क्षेत्र, यूरोपीय क्षेत्र, अमेरिकी क्षेत्र तथा आस्ट्रेलियाई क्षेत्र)। जहा तक एशियाई क्षेत्र का सवाल है, भारत 1963 तक लगातार इस क्षेत्र मे विजय प्राप्त करता रहा है, किन्तु उसके बाद लगातार उसे हार का ही सामना करना पडा। इन खेलो का आयोजन हर तीन साल बाद किया जाता है। 1971 मे इसका आयोजन भारत (लखनऊ) म किया गया था।

इन खेलों के आयोजन म भारतीय बैडमिंटन सघ का विशेष सहयोग प्राप्त होता है। इस सघ की स्थापना 22 सितम्बर, 1934 को कलकत्ता म हुई थी। श्री सूरतकुमार मित्रा को इसका पहला अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त हुआ। 1935 मे सघ ने अखिल भारतीय चैम्पियनशिप का आयोजन किया जिसम केवल बगाल के पुरुष खिलाडियो ने ही भाग लिया। 1936 म उत्तर प्रदेश ने भी इसमें भाग लिया और 1936 मे पहली बार पजाब की टीम ने इसमे भाग लिया और

पहली बार ही सभी ट्राफिया जीत ली। 1939 मे पहली बार बंद स्टेडियम के अदर प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया जिसके काफी अच्छे और उत्साह-वद्धक परिणाम निकले। उसके बाद से इसका आयोजन बद कोर्ट मे ही करने का फैसला किया गया। 1941 मे पहली बार बम्बई (महाराष्ट्र) ने राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं मे हिस्सा लेना शुरू किया।

जहा तक स्त्रियों की प्रतियोगिताओ का सवाल है, उसकी शुरुआत 1944 मे हुई तथा मीना शाह, सुशील कपाडिया, शशिभट्ट, मुमताज लोटवाला, दुधार सीलाज और प्रेम पराशर आदि मुख्य खिलाडिनो ने विशेष ख्याति प्राप्त की।

1955 म भारत विश्व के बैडमिटन मच पर छाने वाला तीसरा देश था और उबेर कप शुरू होन से 1963 तक भारतीय खिलाडिनें एशिया की सर्वोत्तम खिलाडिनें मानी जाती रही इनमे से मीना शाह, दमयती तावे और शोभा मूर्ति आदि अर्जुन पुरस्कार से भी अलकृत हो चुकी है।

अब तक भारत मे 42 राष्ट्रीय तथा 31 अन्तरराज्य बैडमिटन प्रतियोगिताओ का आयोजन हो चुका है।

पिछले वष पणजी (गोआ) मे सम्प न हुई 42वी राष्ट्रीय व 33वी अन्तर राज्य प्रतियोगिता मे प्रकाश ने विजयश्री तो प्राप्त की है साथ ही साथ लगातार सात बार राष्ट्रीय चैम्पियन बनने का नया कीर्तिमान भी स्थापित किया। उनसे पहले नदू नटेकर ने 6 बार राष्ट्रीय चैम्पियन का रिकार्ड तो स्थापित किया था लेकिन वह भी लगातार चैम्पियन बनने का गौरव प्राप्त नही कर सके।

उषा सुदरराज—भारतीय टेबल टेनिस के इतिहास मे महिला खिलाडी उषा सुदरराज का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। मैसूर निवासिनी उषा सुदरराज की सफलता का रहस्य था उनकी एकाग्रता, तत्परता और दृष्टितीव्रता। युगोस्लाविया जाने वाली भारतीय टीम का उन्होंने नेतृत्व भी किया। उषा 1955 से ही टेबल टेनिस की क्षेत्रीय और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे भाग लेती आ रही हैं। उनका जन्म मैसूर के एक ऐसे परिवार में हुआ जिनके सदस्यो का खेल कूद के प्रति बहुत लगाव और झुकाव था। उनकी बहिन रमा सुदरराज भी टेबल टेनिस की मशहूर खिलाडिन थी। 1964 मे जालधर मे आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता मे उनका फाइनल मुकाबला नीला कुलकर्णी से हुआ जिसमे उन्होने नीला को हराकर महिलाओ की सिंगल्स प्रतियोगिता जीती।

उन्होने एक-एक करके चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रीय रिकार्ड भग करने शुरू किए। 1948 में वेम्बली में उन्होंने 10,000 मीटर की दौड़ में दुनिया के सबसे तेज दौड़ाक हेइओनो को पीछे छोड दिया और चार साल बाद, यानी 1952 में, हेलसिंकी ओलम्पिक खेलो में तो उन्होंने एक साथ तीन स्वण पदक प्राप्त कर एक नया ही कीर्तिमान स्थापित किया।

जातोपेक के जीवन में 19 सितम्बर के दिन का विशेष महत्व है। इनका और उनकी पत्नी डाना का जन्म 19 सितम्बर, 1922 को हुआ। 19 सितम्बर को ही इनका विवाह हुआ और 19 सितम्बर, 1952 को हेलसिंकी में जातोपेक ने 5,000 मीटर में स्वण पदक प्राप्त किया। उनकी पत्नी डाना ने भी इसी दिन भाला फेंकने में स्वण पदक प्राप्त किया। उन्होंने अपने जीवन काल में दो ओलम्पिक खेलो में चार स्वण पदक प्राप्त किए और अलग-अलग फासले की दौड़ों मे 10 विश्व कीर्तिमान स्थापित किए।

एथलेटिक—भागने दौड़ने और उछलने-कूदने का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि मानव-जाति का इतिहास। तेज से तेज भागने या अपना पीछा करने वाले प्रतिद्वन्द्वी या शत्रु या जगली जानवर को पीछे छोडने की आदत आदि मानव म भी थी और आज के मानव मे भी है। जेट विमानों के युग मे दौड धूप की बात तो सोची जा सकती है लेकिन तेज से तेज दौडने की बात कुछ बेतुकी भी लग सकती है। सवाल उठता है कि जब एक से एक तेज सवारी मौजूद है तो इनसान टागो को क्यो ज्यादा कष्ट दे? लेकिन आधुनिक अनास्था का यह सवाल अब तक एथलीटो का छू नही सका है और वे तेज से तेज दौडने के नये नये कीर्तिमान स्थापित करने मे और भी ज्यादा तेजी दिखाते रहे हैं। जिसका नतीजा यह है कि आज के एथलीटो के सामने ऊचाइया झुकती जा रही हैं और लम्बाइया और छोटी होती जा रही है। मनुष्य एथलेटिक के क्षेत्र मे जो निरन्तर प्रगति कर रहा है उसकी साथकता स्पष्ट और स्वाभाविक है।

एथलेटिक का महत्त्व और उसकी लोकप्रियता दिन-ब दिन बढती जा रही है। ओलम्पिक खेलो मे एथलेटिक की प्रतियोगिताओ म कई प्रकार की छोट बडे फासले की दौडें होती हैं छोटे फासले की दौडे, मध्यम फासले की दौडें और लम्बे फासले की दौडें सौ मीटर, दो सौ मीटर और चार सौ मीटर की प्रतियोगिताए छोटी दौडें अथवा स्प्रिन्टस कहलाती हैं। स्प्रिन्ट्स मे भाग लेने वाले एथलीट अपनी सारी सचित शक्ति का उपयोग उसके क्षणिक विस्फोट द्वारा शरीर को उच्चतम वेग पर दौडाने म करते है। दौड शुरू होने की सूचक बन्दूक दागने की आवाज सुनाई पडी नही कि धावको की पक्ति टूटती नजर आती है और पल भर म ही, यानी कुछ सेकडो मे ही हार-जीत का फैसला हो जाता है। इसके विपरीत होती हैं पाच हजार मीटर दस हजार मीटर और 26 मील 385 गज की

मैराथन दौड़। ये दौड़ें लम्बी दौड़े कहलाती हैं।

छोटी दौड़ों का इतिहास ईसा के जन्म से 776 वर्ष पहले शुरू होता है। पिछले 50 वर्षों में छोटी दौड़ के इतिहास में अनेकों क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। वैज्ञानिक प्रयोगों ने पहले की धारणाओं और मान्यताओं को तोड़ दिया है। सन 1936 में बर्लिन ओलम्पिक में अमरीकी नीग्रो एथलीट जैसी ओवन्स ने सौ मीटर की दौड़ को जब 10 3 सेकंड में पार किया तब लोगों ने दांतों तले अंगुली दबा ली थी। लेकिन 100 मीटर के फासले की दौड़ को 10 3 सेकंड में पार करने से लेकर इसी फासले को 9 9 सेकंड में पार करने में पूरी तीन शताब्दियां लगी।

लम्बी दौड़ में धावक के दमखम और उसकी शारीरिक शक्ति की असली परीक्षा हो जाती है। इसके अलग अलग धावकों का दौड़ने का ढंग अलग-अलग होता है। कुछ धावक पहले तो थोड़ा धीमा भागने लगते हैं लेकिन आखिरी क्षणों में वह बहुत तेज़ भागते हैं। ओलम्पिक खेलों में एथलेटिक्स की विभिन्न प्रकार की कई प्रतियोगिताएं होती हैं।

एल्फ्रेड ओएटर—अमेरिका के चक्का फेंकने के चैम्पियन एल्फ्रेड ओएटर का नाम अब ओलम्पिक खेलों के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। वह ऐसे पहले खिलाडी हैं जिन्हें लगातार चार बार ओलम्पिक खेलों में स्वर्ण पदक प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ है। उन्होंने मेल्बोर्न (1956), रोम (1960), तोक्यो (1964) और मेक्सिको (1968) में चक्का फेंकने में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। मेक्सिको में उन्होंने 64 78 मीटर (212 फुट 6½ इंच) दूर चक्का फेंककर नया ओलम्पिक रिकार्ड स्थापित किया था। इतना ही नहीं, उन्हें पहली बार 200 फुट से ज्यादा दूर चक्का फेंकने का गौरव भी प्राप्त है। ठीक ऐसे ही जैसे रडी मैट्सन का पहली बार 70 फुट से ज्यादा दूर गोला फेंकने का या कि रोजर बैनिस्टर को पहली बार 4 मिनट से कम समय में एक मील का फासला तय करने का गौरव प्राप्त है। यह गौरव ओएटर को मई 1962 में प्राप्त हुआ जब उन्होंने 200 फुट 5½ इंच दूर चक्का फेंका।

अप्रैल 1964 को यानी तोक्यो ओलम्पिक से 6 महीने पहले जब उन्होंने 206 फुट 6½ इंच का नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया तब उन्होंने सोचा कि अब तो तोक्यो में तीसरा स्वर्ण पदक निश्चित ही है, मगर कुछ ही समय बाद चेकोस्लोवाकिया के लुडविक डेनिक ने 211 फुट 9½ इंच दूर चक्का फेंककर उनका रिकार्ड भंग कर दिया। तोक्यो ओलम्पिक फाइनल से कोई छः दिन पहले ओएटर प्रशिक्षण के दौरान कुछ जख्मी हो गए। डाक्टरों ने उन्हें पूरी तरह आराम करने की सलाह दी, मगर ओएटर तो स्वर्ण पदक जीतने का संकल्प किए बैठे थे, उन्होंने डाक्टरों के आगे हाथ-पांव जोड़े और उनसे कहा

कि आप मुझे जल्दी से जल्दी ठीक कर दें ताकि मैं किसी तरह प्रतियोगिता में हिस्सा ले सकू। खैर, डाक्टरो ने उनकी जिद और उनकी जिम्मेदारी पर उन्हें प्रतियोगिता मे हिस्सा लेने की इजाजत दे दी और इस प्रकार उनकी तीसरी बार स्वर्ण पदक प्राप्त करने की मुराद पूरी हुई। तोक्यो में पुरस्कार प्राप्त करने के बाद उन्होंने कहा था कि मैं मेक्सिको में कोई पदक (स्वर्ण, रजत या कांस्य) प्राप्त करके सतोष कर लूगा। मेक्सिको में उन्होंने चौथी बार स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

एलवेरा ब्रिटो—महिला हाकी में कुमारी एलवेरा ब्रिटो का एक विशिष्ट स्थान है। वह पिछले पाच वर्षों से अन्तर-राज्य हाकी में अपना कमाल दिखाती रही। उन्होंने कई बार देश विदेश का दौरा करने वाली भारतीय महिला हाकी टीम का सफल नेतृत्व किया। राष्ट्रीय महिला हाकी प्रतियोगिता में मैसूर राज्य को छठी बार राष्ट्रीय चैम्पियन होने का गौरव प्राप्त है और इसका श्रेय काफी हद तक कुमारी ब्रिटो को ही है।

एवरी ब्रूडेज—20 वर्षों तक अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अध्यक्ष पद का भार सभालने वाले खेल जगत मे लौह सकल्प के सम्राट' कहे जाने वाले शौकिया (गैर-पेशेवर) खिलाडियो के सबसे बडे पक्षधर एवरी ब्रूडेज का 8 मई, 1975 को दिल का दौरा पडने से देहान्त हो गया। वह 87 वर्ष के थे। वह 1972 तक अन्तराष्ट्रीय ओलम्पिक समिति के अध्यक्ष पद पर रहे और उनके बाद लार्ड किलानिन इस पद पर आसीन हुए। अध्यक्ष पद छोडने के एक साल बाद ही उन्होंने जर्मन राजघराने की 37 वर्षीया रियूस से विवाह किया। उनकी पहली पत्नी एलिजाबेथ की मृत्यु 1971 मे हुई।

म्यूनिख ओलम्पिक के बाद अगस्त 1972 मे अपने अन्तिम भाषण मे उन्होंने कहा था कि दुनिया मे दो तरह के खिलाडी होते है। एक वे जो केवल स्वतन्त्र और स्वस्थ रूप से अपने शौक के लिए खेलो मे भाग लेते हैं और दूसरे वे जो खेलो से पैसा कमाते है। ओलम्पिक खेलो की गरिमा शौकिया खिलाडियो से ही है, पेशेवर खिलाडियो से नही।

यो भी ब्रूडेज एक करोडपति व्यवसायी थे और बडे से बडा प्रलोभन भी उन्हे अपने सिद्धान्तो और आदर्शों से हटा नही सकता था। उनके जीवन मे कई बार ऐसे अवसर आए जब कुछ देशो ने उनके सिद्धान्तो के साथ खिलवाड करना चाहा। कुछ देशो ने अपने ओलम्पिक विजेताओ को उपहारो से मालामाल करना शुरू कर दिया लेकिन उन्होंने हर बार यही कहा कि खेल जगत का अधिकारी मैं हू, किसी देश के राज्याध्यक्ष को ओलम्पिक सिद्धान्तो मे हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नही है।

1936 मे बर्लिन ओलम्पिक के समय हिटलर का वैभव अपनी पराकाष्ठा

पर था। नाज़ियों ने स्टेडियम में भी मनमाने ढंग से हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। जर्मनी के एक खिलाड़ी ने जब गोला फेंकने में स्वर्ण पदक प्राप्त किया तो वहीं पर नगाड़े बजाए जाने लगे। हिटलर उसे पुरस्कार देने के अपने बाक्स में ले गया। हिटलर के चारों ओर पुलिस खड़ी हो गई। उसी समय ब्रूडेज ने हिटलर से कहा कि इस प्रकार के प्रदर्शन यहां नहीं हो सकते। क्योंकि यह खेल शान्ति और सद्भाव के प्रतीक हैं, राजनैतिक प्रचार के साधन नहीं।

एड्रिच, जान हग (सरे)—जन्म 21 जून, 1937। 1965 में न्यूज़ीलैंड के विरुद्ध लीड्स टस्ट में 52 चौकों और 6 छक्कों की मदद से 310 अविजित रन। यह एक टेस्ट रिकार्ड। इसी पारी में बैरिंग्टन के साथ दूसरे विकेट के लिए 369 रन जोड़े। 1964 में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध अपने प्रथम टेस्ट में शतक बनाया। कुल 77 टेस्ट मैचों में 5138 रन। इसी वर्ष क्रिकेट जीवन के 100 शतक पूरे किए।

एड्रिच, विलियम जे० (मिडिलसक्स)—जन्म 26 मार्च, 1916। इंग्लैंड के उन गिने चुने बल्लेबाज़ों में से एक जिन्होंने एक सत्र में (1947 में 3539 रन) 3000 से अधिक रन बनाए। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में 36965 रन तथा 400 विकेट। 39 टेस्टों में 2440 रन। रायल एयर फोर्स में पायलट तथा लीग डिवीज़न में फुटबाल का खिलाड़ी भी।

एलन जार्ज ओसवाल्ड 'गबी' (कैम्ब्रिज, मिडिलसैक्स)—जन्म 31 जुलाई, 1902, सिडनी में। विश्व-युद्धों के बीच के समय का सबसे प्रसिद्ध खिलाड़ी। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1932-33 की बाडी लाइन शृंखला की देन। 25 टेस्टों में (11 में कप्तान) 750 रन तथा 29 37 औसत से 81 विकेट।

एम्स० लेस्ले ई० जी० (कण्ट)—जन्म 3 दिसम्बर 1905, कैण्ट में। विश्व का सवश्रेष्ठ विकेटकीपर बल्लेबाज। पूरे क्रिकेट जीवन में 37245 रन बनाए तथा 415 खिलाड़ी आउट किए (विश्व-रिकार्ड)। 1928 से 1938 के बीच 47 टेस्ट मैच खेले और 40 63 औसत से 2438 रन बनाए तथा 16 खिलाड़ी आउट किए।

एमिस डेनिस लेस्ले (वारविकशायर)—जन्म 6 अप्रैल, 1943 को बर्मिंघम में। इंग्लैंड का आठवें दशक का सवश्रेष्ठ सलामी बल्लेबाज। 1974 में 68 95 औसत से 1379 रन। केवल 2 रन से विश्व रिकार्ड न तोड़ने से वंचित। 48 टेस्ट मैचों में 3569 रन।

एशियाई खेल—भारतीय खेल-कूद के इतिहास में 4 मार्च, 1951 का दिन बड़ा महत्त्वपूर्ण दिन माना जाता है। इस दिन नई दिल्ली के नेशनल स्टेडियम में पहली बार एशियाई खेलों का आयोजन किया गया था। भारत को एशियाई खेलों का जन्मदाता कहा जाता है। इसी अवसर पर श्री जवाहरलाल नेहरू ने

खिलाड़ियों को यह मन्त्र दिया था— मेल को खेल की भावना से खेलो।'

पहले एशियाई खेलों में एशिया के 11 देशों के खिलाड़ी मैदान में उपस्थित हुए। भाग लेनेवाले देशों के नाम इस प्रकार थे

अफगानिस्तान, बर्मा, श्रीलंका, इंडोनेशिया, ईरान, जापान, मलाया, फिलीपीन्स, थाईलैंड और भारत। नेपाल की ओर से केवल एक प्रेक्षक (प्रतिनिधि) ने भाग लिया था।

जैसे ही इन देशों के खिलाड़ी मैदान में परेड करते हुए आए, ग्यारह सौ कबूतर और हज़ारों की संख्या में गुब्बारे आकाश में उड़ाए गए। सारा आकाश रंग बिरंगे गुब्बारों से भर गया। इस इन्द्रधनुषी सौन्दर्य ने उस समारोह की शोभा को चार चांद लगा दिए। प्रतियोगिता के आठ दिन कितनी जल्दी-जल्दी बीते अब केवल इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

पहली एशियाई खेल प्रतियोगिता में जापान को सबसे अधिक स्वर्ण पदक प्राप्त हुए। इसके बाद भारत का स्थान रहा। एशियाई देशों में मित्रता, सद्भाव और शान्ति स्थापना के उद्देश्य से एशियाई खेलों का आयोजन किया गया था। इससे खेल-कूद के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। लोकप्रियता की दृष्टि से अब ओलम्पिक खेलों और राष्ट्रकुल खेलों के बाद एशियाई खेलों का ही नम्बर आता है। ओलम्पिक और राष्ट्रकुल की तरह एशियाई खेलों का आयोजन हर चार साल बाद किया जाता है। किसीने ठीक ही कहा है कि विभिन्न खेलों में भाग लेनेवाले खिलाड़ी अपने सभी भेद भाव (रंग भेद और जाति भेद) भुलाकर स्वस्थ मुकाबले के लिए मैदान में इकट्ठे होते हैं। दुनिया के खिलाड़ियो तुम धन्य हो, जो लड़ाई के मैदान को खेल के मैदान में बदल देते हो।

एशियाई खेलों की लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़ने लगी। नई दिल्ली में पहले एशियाई खेलों में 11 देशों ने भाग लिया और 1954 में मनीला में दूसरे एशियाई खेलों में भाग लेने वाले देशों की संख्या 18 हो गई। 1951 में पहले एशियाई खेलों में केवल छः विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं का ही आयोजन किया गया, जैसे एथलेटिक (पुरुष और महिला दोनों), बास्केट बाल, साइक्लिंग, फुटबाल, तैराकी और भारोत्तोलन। मनीला में साइक्लिंग प्रतियोगिता को हटाकर उसके स्थान पर कुश्ती, मुक्केबाज़ी और निशानेबाज़ी को शामिल कर लिया गया। यानी वहां अब 8 विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1958 में तीसरे एशियाई खेलों का आयोजन तोक्यो में किया गया। इसमें भाग लेने वाले देशों की संख्या बढ़कर 20 हो गई। एशियाई खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन काफी उत्साहवर्द्धक रहा। नई दिल्ली में लेवी पिंटो, मनीला में प्रद्युमन सिंह (गोला और चक्का फेंकने के चैम्पियन) और तोक्यो में

मिल्खा सिंह ने एथलटिक की दुनिया मे भारत का नाम ऊचा किया। नई दिल्ली मे पहले एशियाई खेलो मे फुटबाल के खेल म मेवालाल द्वारा किए गए गोल से भारत का एशियाई चैंम्पियन होने का गौरव प्राप्त हुआ। जकार्ता मे भारतीय फुटबाल खिलाडियो के जख्मी होने और वहा के दर्शको के विरोध के बावजूद भारतीय फुटबाल टीम का एशियाई चैंम्पियन होना अपने आप मे बहुत बडी बात थी।

1966 म 9 दिसम्बर से 20 दिसम्बर तक पाचवें एशियाई खेला का आयोजन बैंकाक म किया गया। वहा पर भारत ने हाकी के खेल मे एशियाई चैंम्पियन बनने का गौरव प्राप्त किया। यहा यह बता देना उचित होगा कि 1962 मे जकार्ता मे हुए एशियाई खेलो म पाकिस्तान ने हाकी के खेल म 2-0 स हरा दिया था। तीसरे एशियाई खेलो मे जिनका आयोजन तोक्यो मे किया गया था यो तो भारत और पाकिस्तान फाइनल के मुकाबले म बराबर रहे थे लेकिन पाकिस्तान का गोल औसत के आधार पर विजयी घोषित कर दिया गया था।

पाचवें एशियाई खेलो मे 'कौन कहा रहा' की सूची मे फिर जापान का नाम सबसे ऊपर रहा।

1970 म भी 9 दिसम्बर से 20 दिसम्बर तक छठे एशियाई खेला का आयोजन बैंकाक मे ही किया गया। इसमे भारतीय खिलाडियो का प्रदशन बहुत शानदार रहा। कवल हम हाकी के खेल मे अपने एशियाई चैंम्पियन के पद को बरकरार नही रख सके। भारत और पाकिस्तान के बीच फाइनल मैच हुआ। 70 मिनट का निर्धारित समय समाप्त हो गया और कोई टीम कोई गोल नही कर सकी। फिर 15 मिनट का समय दिया गया। इसम जब कोई टीम एक भी गोल नही कर सकी तो 15 मिनट का 'अचानक मौत' वाला समय दिया गया। इसका अथ यह होता है कि जसे ही कोई टीम कोई गोल करती है मैच को वही रोक दिया जाता है। दूसरे अतिरिक्त समय के उत्तरार्द्ध म यानी 98वें मिनट मे पाकिस्तान के रशीद ने गोल कर दिया। यो भारतीय हाकी टीम का खेल बहुत शानदार रहा, लेकिन किस्मत ने पाकिस्तान का साथ दिया। और इस प्रकार हम सबसे कीमती स्वण पदक (हाकी के खेल म स्वण पदक प्राप्त करना बहुत बडी बात मानी जा सकती है) प्राप्त करने से वचित रह गये।

छठे एशियाई खेल (1970) भारत का पाचवा स्थान

देश	स्वण	रजत	कांस्य
जापान	74	47	23
द० कोरिया	18	13	23

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
थाईलैंड	9	17	13
ईरान	9	7	7
भारत	6	९	10
इज़रायल	6	6	5
मलेसिया	5	1	7
इंडोनेशिया	2	5	13
बर्मा	3	2	7
श्रीलंका	2	2	—
फिलिपीन	1	9	12
ताइवान	1	5	12
पाकिस्तान	1	2	7
सिंगापुर	—	6	9
कम्बोडिया	—	2	3
द० वियतनाम	—	—	2
हांगकांग	—	—	—
नेपाल	—	—	—

तेहरान में हुए सातवें एशियाई खेलों में भारतीय पदक विजेता खिलाड़ी

स्वर्ण पदक विजेता

1. विजय सिंह चौहान (डिकैथलन—कुल 7,375 अंक) नया एशियाई रिकार्ड
2. टी० सी० योहानन (लम्बी कूद—8 07 मीटर) नया एशियाई रिकार्ड
3. श्री राम सिंह (800 मीटर—1 मिनट 47 5 सेकंड) नया एशियाई रिकार्ड
4. शिवनाथ सिंह (5,000 मीटर—14 मि० 20 50 सेकंड)

रजत पदक विजेता

1. डा० कर्णी सिंह (व्यक्तिगत ट्रैप शूटिंग—निशानेबाजी)
2. शिवनाथ सिंह (10,000 मीटर—30 मि० 51 61 सेकंड)
3. निर्मल सिंह (तारगोला—60 02 मीटर)
4. प्रवीण कुमार (चक्का—53 64 मीटर)

5 गुरमेज सिंह (3,000 स्टीपल चेज)
6 मोहिन्दर सिंह गिल (त्रिकूद—एथलेटिक)
7 बहादुर सिंह (गोला—17 94 मीटर)
8 4×400 मीटर रिले (एथलेटिक)
9 तिल बहादुर बूरा (लाइट हैवीवेट—मुक्केबाजी)
10 मेजरसिंह (मिडिलवेट—मुक्केबाजी)
11 मेहताब सिंह (लाइट हैवीवेट—मुक्केबाजी)
12 हाकी—कप्तान अजीतपाल सिंह

कांस्य पदक विजेता

1 सुरेश बाबू (डिकेथलान—6 836 अंक)
2 सतीश पिल्लई (लम्बी कूद—7 58 मीटर)
3 लेहम्बर सिंह (400 मीटर बाधा—एथलेटिक)
4 डा० कर्णी सिंह (व्यक्तिगत स्कीट—निशानेबाजी)
5 चन्द्रनारायणन् (फ्लाइवेट—मुक्केबाजी)
6 मनू स्वामी वेनू (लाइटवेट—मुक्केबाजी)
7 सुखचैन सिंह (ग्रीको-रोमन कुश्ती—100 किलो वेग)
8 सतबीर सिंह (50 किलो वग—फ्री-स्टाइल कुश्ती)
9 सतपाल (82 किलो वग—फ्री-स्टाइल कुश्ती)
10 सुखचैन सिंह (100 किलो—फ्री-स्टाइल कुश्ती)
11 जगराज सिंह (गोला—17 64 मीटर)
12 बैडमिंटन—

क्रम	देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
1	जापान	75	50	51
2	ईरान	36	28	17
3	चीन	33	45	28
4	दक्षिण कोरिया	16	26	15
5	उत्तर कोरिया	15	14	17
6	इजराइल	7	4	8
7	भारत	4	12	12
8	थाईदेश	4	2	8
9	इंडोनेशिया	3	4	4
10.	मंगोलिया	2	5	8

क्रम	देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
11	पाकिस्तान	2	0	9
12	श्रीलका	2	0	0
13	सिंगापुर	1	3	7
14	वर्मा	1	2	3
15	ईराक	1	0	5
16,	फिलीपीन्स	0	2	12
17	मलेसिया	0	1	4
18	कुवैत	0	1	0
19	अफगानिस्तान	0	0	1

भारतीय पदक विजेता (बैंकाक—1978)

स्वर्ण पदक विजेता

1 रामास्वामी ज्ञानशेखरन (200 मीटर—21 42 सेकड)
2 हरिचन्द (5000 मीटर—14 मि० 2 0 सेकड)
3 हरिचन्द (10,000 मीटर—30 मि० 07 7 सेकड)
4 श्रीराम सिंह (800 मीटर—1 मि० 48 8 सेकड)
5 गीता जुत्सी (800 मीटर महिलाओ की दौड—2 मि० 07 7 सेकड)
6 हाकम सिंह (20 किलो, पैदल चलना—1 घटा 31 मि० 58 8 सें०)
7 सुरेश बाबू (लम्बी कूद—7 85 मीटर)
8 बहादुर सिंह (गोला फेंकना—17 61 मीटर)
9 रणधीर सिंह (ट्रैप निशानवाजी)
10 राजेन्द्र सिंह (74 किलो वर्ग—कुश्ती)
11 करतार सिंह (90 किलो वर्ग—कुश्ती)

रजत पदक विजेता

1 आर० ज्ञानशेखरन (100 मीटर— 10 44 सेकड)
2 उदयप्रभु (400 मीटर—46 79 सेकड)
3 गीता जुत्सी (1500 मीटर महिलाओ की दौड—4 मि० 28 2 सें०)
4 एजल मेरी जोसेफ (पेंटायलन)
5 4×400 मीटर (मुरलीकुत्तन, हरकमल जीत सिंह, उदयप्रभु और श्रीराम सिंह)
6 गोपाल सैनी (3000 स्टीपल चेज—8 मि० 44.8 सें०)

7. नौकादौड़ (याचिंग—के० एस० के० मोगिया और धर्मेन्द्र कुमार एटरप्राइज)
8. वजमाहन (मुक्केबाजी-हैवीवेट)
9. सतपाल (100 किलो वग से अधिक कुश्ती)
10. एजल मेरी जोसेफ (लम्बी कूद—महिला—6 05 मीटर)
11. हाकी (इसमे फाइनल मे पाकिस्तान ने भारत को 1-0 से हराया)

कांस्य पदक विजेता

1. सतवीर सिंह (110 मीटर बाधा—14 43 सें०)
2. मुरली कुत्तन (400 मीटर—46 98 सें०)
3. रतन सिंह (1500 मीटर)
4. लान टेनिस (युगल प्रतियोगिता—श्याम मिनोत्रा और चिरदीप मुखर्जी)
5. माइक मठैया (मुक्केबाजी—लाइट वेल्टरवेट)
6. मलूक सिंह (मुक्केबाजी—लाइट मिडिलवेट)

पदक-तालिका (बैंकाक—1978)

एशियाई खेलों के समापन के बाद अन्तिम पदक-तालिका इस प्रकार रही

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
जापान	70	60	49
चीन	51	54	47
द० कोरिया	18	20	31
उ० कोरिया	15	13	15
थाईदेश	11	12	19
भारत	11	11	6
इण्डोनेशिया	8	7	18
पाकिस्तान	4	4	9
फिलीपीन	4	4	6
इराक	2	4	6
सिंगापुर	2	1	4
मलेसिया	2	1	3
मंगोलिया	1	3	5
लेबनान	1	1	0

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
सीरिया	1	0	0
बर्मा	0	3	3
हांगकांग	0	2	3
श्रीलंका	0	0	2
कुवैत	0	0	1

भारत को 4 स्वर्ण पदक एथलेटिक (दौडकूद म), 1 कुश्ती म और एक मुक्केबाज़ी म प्राप्त हुआ। रजत पदको का विवरण इस प्रकार रहा 5 दौडकूद, 1 हाकी 1 कुश्ती, 1 मुक्केबाज़ी और 1 वाटरपोलो। कास्य पदको का विवरण इस प्रकार रहा 5 दौडकूद, 1 फुटबाल, 3 कुश्ती और 1 नौकायन।

छठे एशियाई खेलो म भारतीय एथलीटो का प्रदशन काफी सतोषजनक रहा। पदको की 'कौन कहा रहा' की सूची मे भारत को चाहे पाचवा स्थान मिला लेकिन जहा तक एथलेटिक प्रतियोगिता का सवाल है भारत को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। जापान ने एथलेटिक प्रतियोगिता मे 19 स्वर्ण, 7 रजत और 6 कास्य पदक प्राप्त किए, लेकिन भारत ने एथलेटिक मे 4 स्वर्ण 5 रजत और 5 कांस्य पदक प्राप्त कर दूसरा स्थान प्राप्त किया।

12 दिसम्बर, 1970 का दिन भारत के लिए बहुत शुभ रहा। पहली बार बकाक के मैदान म राष्ट्रीय धुन सुनने को मिली। भारत के दो खिलाडियो (जोगिन्दर सिंह और प्रवीण कुमार) ने दो नये एशियाई रिकार्ड स्थापित किए। एथलेटिक म तीसरा स्वर्ण पदक प्राप्त करने का श्रेय चण्डीगढ की कमलजीत सधु को 400 मीटर की दौड म प्राप्त हुआ। वह ऐसी पहली स्त्री खिलाडी हैं जिन्होने एशियाई खेलो मे एथलेटिक मे स्वर्ण पदक प्राप्त किया। एथलेटिक मे चौथा स्वर्ण पदक दिलाने का श्रेय 23 वर्षीय मोहिन्दरसिंह गिल को त्रिकूद म प्राप्त हुआ। मोहिन्दर सिंह गिल इस समय कैलिफोर्निया विश्व विद्यालय मे पढ रहे हैं।

कुश्ती मे केवल मास्टर चन्दगीराम ही स्वर्ण पदक प्राप्त कर पाए। चन्दगीराम पहली बार किसी अन्तराष्ट्रीय प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए गए थे। चन्दगीराम ने 100 किलोवग की कुश्ती मे स्वर्ण पदक प्राप्त किया। जीतसिंह ने 90 किलोवग की कुश्ती म रजत पदक प्राप्त किया। मुक्केबाज़ी म भारत के हवासिंह ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया था।

ऐशेज (भस्मी)—आस्ट्रेलिया और इग्लैंड के बीच खेली जानेवाली टेस्ट शृखलाओ के साथ ऐशज का नाम जोडने के पीछे एक लम्बी कहानी है। इन दोनो देशो के बीच ऐशेज को क्रिकेट के सिरमौर का प्रतीक माना जाता है। 1882 मे जब पहली बार आस्ट्रेलिया ने इग्लैंड को हराया था उस वक्त इस हार से सारे

इग्लैंड मे एक मायूसी का वातावरण छा गया था। एक समाचार पत्र ने लिखा कि 29 अगस्त, 1882 को इग्लैंड मे क्रिकेट का खेल एक तरह से मर गया और इसकी ऐशेज (भस्मी) आस्ट्रेलिया पहुच गई है। तभी से 'ऐशेज' को राष्ट्रीय महत्त्व मिल गया। कुछ ही महीने बाद इग्लैंड की टीम की विजय हुई और कहा गया कि 'ऐशेज' फिर इग्लैंड म पहुच गई है। क्रिकेट के मैदान म इग्लैंड और आस्ट्रेलिया की पुरानी प्रतिद्वन्द्विता है। इसलिए जब इन दोनो देशो के बीच कोई टेस्ट शृखला शुरू होती है तो 'एशेज' हार या जीत का पर्याय बन जाती है।

ओ

ओलपिक खेल—ओलपिक खेल कब, कहा और कैसे शुरू हुए इस बारे मे निश्चयपूवक कुछ नही कहा जा सकता। ओलपिक खेलो के बारे मे कई तरह की किवदतिया प्रचलित है। कुछ खेल-पडितो का कहना है कि ओलपिक खेलो की शुरुआत ईसा पूव 776 मे हुई। यूनान के दक्षिणी पश्चिमी प्रदेश एलिस मे एक छोटी सी नगरी थी, जिसका नाम ओलपिया था। इसी नगरी के दक्षिणी छोर में एल्फियस (रूफिया) नाम की एक छोटी-सी नदी बहती थी। 776 ईसा पूव रूफिया नदी के किनारे ही दो आदमियो में दौड का मुकाबला हुआ और इसी दौड में कोरोबस नाम का व्यक्ति विजयी हुआ। कोरोबस को पहला ओलपिक चैम्पियन माना जाता है। कोरोबस के जीतने पर उन्हे जैतून की पत्तियो का हार पहनाया गया। जिस वृक्ष से वे पत्तिया और शाखाए ली गइ वह बहुत ही पवित्र वक्ष माना जाता था।

यह भी कहा जाता है कि यूनान के प्रसिद्ध योद्धा हरक्यूलीस ने अपनी बहादुरी के कारनामे दिखाने के लिए ये खेल शुरू किए। हरक्यूलीस के बारे मे कहावत है कि वह आधा देवता था और आधा इनसान। यूनानी और रोमवासी तो उसकी पूजा देवता के रूप में करते है। हरक्यूलीस के पिता को अपने बेटे से बहुत घृणा थी। हरक्यूलीस इतना बहादुर था कि हर असम्भव काम को भी सम्भव कर दिखाता। कहते ह कि उसकी याद को बनाए रखने के लिए ओलम्पिक खेलो की शुरुआत हुई।

यह भी कहा जाता है कि यूनान में थैसेली तथा मैसिडोनिया की सीमा पर ओलम्पस नाम का एक पवत था। यह पवत आज भी वहा विद्यमान है। वहां के लोग अपने आप को देवताओ के समान पवित्र समझते है। इसलिए ये लोग अपने आप को ओलपियन कहा करते हैं। यूनानी भाषा में ओलम्पियन का अर्थ होता

है 'ईश्वर के समान'। ये लोग जुअस को अपना इष्ट देवता या कुल देवता मानते थे। ईसा से 776 वर्ष पूर्व इन लोगों ने अपने इष्ट देवता को प्रसन्न करने के लिए पहली बार खेल कूद का आयोजन किया। उसमें कुश्ती, मुक्केबाजी, भाला फेंकना, चक्का फेंकने, रथों की दौड़, जानवरों की लड़ाई आदि कुछ मनोरंजक प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। इस प्रकार धीरे धीरे लोगों के प्रति यहां के लोगों की दिलचस्पी बढ़ने लगी। उसके बाद हर चार साल बाद इन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाने लगा।

यूनानी शुरू से ही खेल प्रेमी थे। उन दिनों यूनान के विभिन्न नगर राज्य आपस में हमेशा लड़ते रहते। लेकिन ओलंपिक खेलों के दौरान युद्ध को रोक दिया जाता। खेल-कूद के मैदान में आपस में मैत्री बढ़ाने और मेल मिलाप करने का सिलसिला तभी से शुरू हो गया था। एक और किंवदन्ती के अनुसार उन दिनों ओलम्पिक नगर के एलिस प्रदेश पर एक प्रतापी शासक एनोमास का राज्य था। उसकी एक पुत्री थी। उसका नाम हिप्पोदमिया था। हिप्पोदमिया बहुत ही सुन्दर थी। दूर-दूर से बहुत से नवयुवक एनोमास राजा के पास आते और उसकी सुपुत्री से विवाह करने की इच्छा प्रकट करते। एनोमास बड़े ही विचित्र स्वभाव का व्यक्ति था। उसने अपनी बेटी के विवाह के लिए यह शर्त रखी कि जो युवक एनोमास को रथों की दौड़ में हरा देगा वही हिप्पोदमिया से विवाह कर सकेगा। इस शर्त के साथ ही यह शर्त और जोड़ दी गई कि एनोमास से हारने वाले युवक को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा। यह शर्त सुनकर बहुत से युवकों का साहस टूट गया। वैसे तेरह युवकों ने साहस किया भी, मगर हारने के बाद अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। अन्त में चौदहवीं बार पैलोस नामक एक साहसी नवयुवक ने हिम्मत की और एनोमास को बड़ी चालाकी से हराकर हिप्पोदमिया से विवाह किया। कहा जाता है कि ओलम्पिक खेलों को शुरू करने का श्रेय पैलोस को ही है।

इस प्रकार की अनेकों किंवदंतियां प्रचलित है। इनमें से कौन-सी सही है कौन-सी गलत इसका उत्तर किसीके पास नहीं है। लेकिन इतना सही है कि शुरू-शुरू में ओलंपिक खेलों को एक धार्मिक मेले का रूप दिया जाता था। उस मेले का दर्शन के लिए लोग दूर-दूर से आते थे। दूसरे धार्मिक समारोहों की भांति इन खेलों के शुरू करने से पहले यूनानी पुजारी पशु की बलि देते। खेलों के दौरान मैदान के चारों ओर स्थित मन्दिरों की ज्वालाएं हमेशा जलती रहती। यह भी कहा जाता है कि ओलम्पिक खेलों के दिनों में सभी लोग आपसी लड़ाई झगड़े बन्द कर देते। खेलों में भाग लेने वाली टीमों में एक प्रकार की शान्ति सन्धि होती। खेलों के माध्यम से लोग एक-दूसरे के निकट आते। उन दिनों ओलम्पिक में विजय प्राप्त करनेवाले खिलाड़ी को बहुत सम्मान मिलता। मरने के बाद

ओलपिक विजेता को देवताओ के समान पूजा जाता।

धीरे-धीरे ये प्रतियोगिताए बहुत लोकप्रिय हो गई। जुयस का मंदिर इन खेलो के लिए छोटा दिखाई पडने लगा। कुछ समय बाद एलिस नदी के तट पर ओलपिया नगर के मैदान मे इनका आयोजन किया जाने लगा। यह भी कहा जाता है कि शुरू-शुरू म प्रत्येक खिलाडी को यह शपथ लेनी पडती थी कि उसने कम-से-कम दस महीने का अभ्यास किया है। केवल पानी और पनीर पर गुजारा किया है। 98वें ओलपिक खेलो तक महिलाओ को ओलपिक खेला को देखन की इजाजत नही थी। यदि कोई महिला वहा भूले-भटके आ जाती तो उसे पहाडी से गिराकर मार दिया जाता। शुरू-शुरू म केवल पाच दिनो के लिए ओलपिक खेलो का आयोजन किया जाता था। पहले ओलपिक खेलो मे केवल 200 गज की दौड हुई। बाद म और भी कई तरह के खेल उसमे शामिल कर लिए गए। तेरहवें ओलपिक खेलो मे रथो की दौड मुक्केबाजी, कुश्ती, लोहे का पहिया फेंकना और अलग-अलग फासलो की दौडो के अलावा छोटे लडको के लिए अलग प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाता। 77वे ओलपिक खेलो मे तो और भी बहुत से खेलो को शामिल कर लिया गया। खेलो के दौरान एक मेला सा लगा रहता। लोग दूर-दूर से आते। बडी-बडी दूकानें लगती। नगर सजाए जाते।

समय ने पलटा खाया। यूनान की आन, बान और शान घटने लगी। और किन्ही कारणो से इन खेलो को बन्द कर देना पडा। 394 से 1896 तक ओलपिक खेलो का आयोजन नही हो सका।

आधुनिक ओलम्पिक खेल—1894 मे फ्रास के एक उत्साही खेल प्रेमी बैरन प्येर कोबर्ते (1863 1937) ने ओलम्पिक खेलो को फिर से शुरू करने का सकल्प किया। कोबर्ते ने कहा कि विश्व म शाति स्थापित हो अलग अलग देशो मे आपस मे मैत्री, सहयोग और सद्भाव स्थापित हो, इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि सब राष्ट्र अपने खिलाडियो को ओलम्पिक खेलो म भेजे। उन्होने कहा कि खेल-कूद से बैर और घृणा दूर होती है और आपस म प्रेमभाव और मैत्रीभाव बढता है। बैरन प्येर कोबर्ते को आधुनिक ओलम्पिक खेला का जन्म दाता भी कहा जाता है।

23 जून, 1894 को पेरिस म एक अन्तर्राष्ट्रीय एथलेटिक फेडरेशन की बैठक हुई। उस बैठक म ओलम्पिक खेलो को फिर से शुरू करने का प्रस्ताव रखा गया। इस प्रस्ताव का सबने खुले दिल से स्वागत किया। यह फैसला किया गया कि 1896 म यूनान की राजधानी एथेन्स म पहली आधुनिक ओलम्पिक खेल-प्रतियोगिता का आयोजन किया जाए।

1896 म एथेन्स में एक विशाल स्टेडियम बनाया गया। इस स्टेडियम को बनाने का श्रेय अलेक्जेंड्रिया के एक घडीसाज जार्ज एवर आफ को प्राप्त हुआ।

इसमें 13 राष्ट्रों ने भाग लिया। भाग लेनेवाले खिलाड़ियों की कुल संख्या 258 थी। इन खेलों में संगीत, साहित्य, मैराथन दौड़, रथों की दौड़, मुक्केबाज़ी, कुश्ती, जानवरों की लड़ाई, भाग-दौड़ और उछल-कूद की प्रतियोगिताएं शामिल की गई। हाकी, फुटबाल या बास्केट बाल आदि खेल शामिल नहीं किए गए। उस समय कुश्ती और भारोत्तोलन में आज की तरह बैंटम वेट, हैवी वेट या लाइट वेट आदि वर्गीकरण नही किया गया था। जो भी खिलाड़ी सबसे अधिक वजन उठा लेता वही सबसे बड़ा भारोत्तोलक माना जाता और जो भी कुश्ती में सब को पछाड़ देता वही सबसे बड़ा पहलवान माना जाता। तब से लेकर आज तक हर चार साल बाद ओलम्पिक खेलों का आयोजन किया जाता है।

ओलम्पिक खेलों को दुनिया की सबसे बड़ी प्रतियोगिता माना जाता है। ओलम्पिक की मशाल को यूनान के मन्दिरों की पवित्र अग्नि का प्रतीक माना जाता है। यह मशाल ओलम्पिक खेल शुरू होने से कुछ दिन पहले ओलम्पिक के जुयस के मन्दिर म उस देश मे लाई जाता है जहा खेला का आयोजन हो रहा होता है।

इसके बाद 1900 म दूसरे ओलम्पिक खेला का आयोजन फ्रांस की राजधानी पेरिस मे किया गया। इसमे 20 राष्ट्रो के लगभग एक हज़ार खिलाड़ियों ने भाग लिया।

ईस्वी सन् 1904 के इद-गिद रूस तथा जापान के बाच युद्ध के कारण काफी तनाव था। इन दोनो देशो म युद्ध के बादल मडरा रहे थे। तीसरे ओलम्पिक खेलो का आयोजन सेंट लुइस म किया तो गया लेकिन उसका रंग फीका ही रहा। रूस तथा जापान की तनातनी के कारण कुछ अन्य देशों ने भी इसमे भाग लेने से इनकार कर दिया। इस प्रकार केवल 11 राष्ट्रों के 496 प्रतियोगी ही खेलो मे भाग लेने के लिए पहुच पाए।

1908 मे चौथे ओलपिक खेला का आयोजन लन्दन में किया गया। उस समय इग्लैंड का दुनिया भर मे बोलबाला था। इसमे 22 राष्ट्रो के 2,023 खिलाडियो ने भाग लिया। पाचवा ओलपिक 1912 में स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम म हुआ। इसमें 28 देशो के 2 484 प्रतियोगियो ने भाग लिया। 1916 में छठे ओलपिक खेलो का आयोजन बर्लिन (जमनी) मे होना था, लेकिन युद्ध के कारण इन खेलो का आयोजन सम्भव नही हो सका।

1920 मे बेल्जियम की राजधानी एंटवप मे ओलपिक खेलो ा आयोजन किया गया। इसमें 29 देशो के 2 543 खिलाडियो ने भाग लिया। इसमें हाकी के खेल को शामिल किया गया। हाकी के खेल में इग्लैंड ने विजय प्राप्त की।

भारतीय खिलाडी और ओलपिक

भारतीय खिलाडियो ने ओलपिक खेलो मे कब स भाग लेना शुरू किया, इस बारे में भी खेल-पडितो के दो मत हैं। आम तौर पर यही समझा जाता है कि भारत ने 1920 में पहली बार एटवप (बेल्जियम) ओलपिक खेलो में भाग लिया। उस समय चार एथलीट और दो पहलवानो ने गैर-सरकारी रूप से ओलपिक खेलो मे भाग लिया। ये खिलाडी व्यक्तिगत तौर पर वहा गये थे। इन खिलाडियो को वहा भिजवाने का श्रेय सर दोराव टाटा को दिया जा सकता है। उन्होंने न केवल इस दल को आने-जाने का खर्च दिया, बल्कि इन खिलाडियो के चयन म व्यक्तिगत रूप से दिलचस्पी भी ली।

कुछ खेल-समीक्षको का कहना है कि 1900 म कलकत्ता के एक एंग्लो इंडियन युवक नामन जी० प्रिटचाड ने न केवल पेरिस आलपिक खेलो मे हिस्सा लिया, बल्कि 200 मीटर की दौड मे रजत पदक भी प्राप्त किया। इस खिलाडी ने किस देश की ओर से ओलपिक खेलो मे हिस्सा लिया था, इस बारे मे किसी को कुछ मालूम नही, मगर उसने जो दो पदक जीते उन्हे कलकत्ता के एक खेल-सगठन के पास जमा करा दिया था।

1924 में भारत ने ओलपिक खेलो मे भाग लिया। इस बार एच० सी० बक के नेतृत्व में 9 एथलीटो की एक टीम ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। श्री बक एक अमेरिकी थे और मद्रास के वाई० एम० सी० ए० कालेज आफ फिजिकल एजुकेशन के साथ सम्बद्ध थे। इस बार भारतीय खिलाडियों ने कोई पदक तो प्राप्त नही किया, लेकिन दो खिलाडियो का प्रदशन काफी उत्साहवद्धक रहा। उनमें से एक थे टी० के० पिट, जिन्होने 400 मीटर की दौड मे सेमिफाइनल मे तीसरा स्थान प्राप्त किया और दूसरे थे दिलीपसिंह जो लम्बी कूद मे छठा स्थान प्राप्त करने में केवल 3/4 इच ही पीछे रहे।

1928 में एम्स्टडम (नीदरलैंड) में ओलपिक खेल हुए। इन खेलो का भारत के लिए एक विशेष महत्त्व है। 26 मई, 1928 का दिन भारत के लिए बडा ही गौरवपूण दिन माना जाता है। इसी दिन एम्स्टडम में पहली बार भारत को विजयमच पर खडे होने का गौरव प्राप्त हुआ। हाकी के क्षेत्र में ओलपिक खेलो मे भारत की यह पहली विजय थी। इस जीत के बाद भारतीय समाचार पत्रो म यह समाचार छपा—'भारतीय हाकी खिलाडियो ने अपने पराधीन देश को जैसा असाधारण गौरव दिलाया है, वह राष्ट्रीय नेता भी अभी तक नही दिला पाए।' भारतीय खिलाडी जब स्वण पदक प्राप्त कर स्वदेश लाट तो देशवासियो ने उन्हे पलको पर उठा लिया। तभी से हाकी के खेल मे भारत ने दुनिया भर में एक धाक जमा दी।

एम्स्टडम ओलपिक खेला म 46 राष्ट्रो के 2,725 खिलाडियो न भाग लिया।

चार साल बाद 1932 मे लास एजेल्स म होन वाले खेलों मे भारतीय खिलाडी पहली बार अमेरिकी धरती पर गए और अमेरिका और जापान की टीमो को हराकर फिर हाकी मे स्वण पदक प्राप्त किया। इस बार भारतीय एथ लेटिक टीम ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। उसके बाद 1936 म बर्लिन म हुए ओलपिक खेलो म भारतीय हाकी टीम का नेतृत्व हाकी के जादूगर ध्यानचन्द न किया और इस बार हाकी जगत मे भारत की धाक और भी गहरी हो गयी। इस बार भी भारतीय एथलीटो ने ओलपिक खेलो म भाग लिया, लेकिन उनका प्रदशन उत्साहवद्धक नही रहा। इसी वष ध्यानचन्द को 'हाकी के जादूगर' के नाम से पुकारा जाने लगा था।

उसके बाद अगले दो ओलपिक खेलो का आयोजन 1940 मे तोक्यो और 1944 म हेलसिंकी मे होनेवाला था, लेकिन दूसरे विश्व युद्ध के कारण ओलपिक खेलो का आयोजन नही हो सका।

स्वतन्त्रता के बाद पहली बार भारतीय खिलाडियो न 1948 म लन्दन में हुए ओलपिक खेलो म भाग लिया। इस बार भारत न और अधिक सख्या म अपने खिलाडी भेजे। इस वष हाकी व एथलेटिक्स के अलावा भारत न फुटबाल, मुक्केबाजी, भारोत्तोलन, कुश्ती, साइकिल-दौड तथा तैराकी मे भी भाग लिया। इस वष भी भारत को लगातार चौथी बार हाकी मे विजय प्राप्त हुई।

1952 म हेलसिंकी म ओलपिक म भारतीय हाकी टीम न फिर स्वण पदक प्राप्त किया। अब तक हाकी के खेल मे कुछ दूसरे देश भी काफी आगे बढ गए थे। 1956 मे मलबन ओलपिक खेलो मे भारत न किसी तरह फिर विश्व विजेता का पद प्राप्त कर लिया। लेकिन 1960 म रोम ओलपिक खेलो के अवसर पर भारत को पहली बार हाकी के खेल म हार स्वीकार करनी पडी थी। भारत ने हाकी के खेल में 32 वर्ष तक विश्व विजेता के पद को बरकरार रखा। दुनिया का और कोई भी देश किसी एक खेल मे लगातार इतने वर्षों तक विश्व विजेता नही बन पाया।

1960 के ओलपिक खेलो म भारतीय एथलीट मिल्खा सिंह अपन पूरे फाम में थ। मिल्खा सिंह ने पिछले ओलपिक रिकाड मे सुधार करते हुए 400 मीटर के फासले को 45 6 सेकेंड मे पूरा किया और चौथे स्थान पर रहे।

इधर रूस और अमेरिका की खेल-कूद के क्षेत्र म भी होड लग गई। ओलपिक खेला की 'कौन-कहा रहा' की सूची म कभी अमेरिका का नाम सबसे ऊपर रहता तो कभी रूस का। रोम ओलपिक खेलो मे रूस ने 43 स्वण पदक प्राप्त कर पहला स्थान प्राप्त किया और अमेरिका ने 34 स्वण पदक प्राप्त कर दूसरा।

1964 मे ओलपिक खेलो का आयोजन तोक्यो मे किया गया। इसमे

अमेरिका ने सबसे अधिक स्वर्ण पदक प्राप्त किए। दूसरा स्थान रूस को और तीसरा स्थान जापान को प्राप्त हुआ था। भारत ने एक बार फिर फाइनल मे पाकिस्तान को हराकर विश्व विजेता का पद प्राप्त किया और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त की। एथलेटिक मे भारत के कप्तान गुरबचन सिह विश्व के पाचवें हडलर (बाधा दौड के धावक) बने।

तोक्यो ओलपिक खेलो मे अमेरिका ने 36 स्वर्ण पदक प्राप्त किए और रूस ने 30। इन दो बडे राष्ट्रो ने कुल 163 स्वर्ण पदको म से एक-तिहाई से भी अधिक स्वर्ण पदक जीते। 1952 से पहले रूस ने कभी ओलपिक खेलों मे भाग नहीं लिया था। तोक्यो ओलपिक खेलो मे भारत को हाकी मे स्वर्ण पदक प्राप्त करने पर ही सन्तोष करना पडा।

1968 मे मेक्सिको मे ओलपिक खेलों का आयोजन किया गया। इस बार भारत की हाकी टीम फाइनल तक भी नही पहुच सकी और केवल कास्य पदक (यानी तीसरा स्थान) प्राप्त करके ही स तोष करना पडा।

किया। इनमे से नीलिमा घोष (1952), मेरी डिसूजा (1952), मेरी लीला राय, एलिजावेथ डेवेन पाट (1960), स्टीफी डिसूजा (1960 64) के नाम मुख्य रूप से लिए जा सकते हैं। इनमे स्टीफी डिसूजा को सन् 1964 के टोक्यो ओलपिक खेलो मे 400 मीटर के फासले की दौड़ मे क्वाटर फाइनल म छठा स्थान प्राप्त हुआ था।

जहा तक भारतीय फुटबाल का सवाल है, सन् 1948 म भारतीय फुटबाल टीम को पहली बार ओलपिक खेलो म भाग लेने के लिए भेजा गया। 1956 में मेल्बन ओलपिक खेलो मे भारतीय फुटबाल टीम ने सेमिफाइनल मे पहुचकर सबको हैरान कर दिया था। तीसरे स्थान के लिए उसका मुकाबला बुलगेरिया से हुआ जिसमे हार जाने के कारण भारतीय फुटबाल टीम को ओलपिक खेलो मे चौथा स्थान प्राप्त हुआ।

ओलपिक खेलो मे भारत ने बहुत से पदक भले ही न प्राप्त किये हो, लेकिन भारतीय खिलाडियो का प्रदशन काफी उत्साहवद्धक रहा है। फिर ओलपिक खेलों का मूल उद्देश्य पदक प्राप्त करना नही। आधुनिक ओलपिक खेलो के जन्मदाता कावर्तें ने पहले ओलपिक खेलो के उद्घाटन के अवसर पर कहा था कि ओलपिक खेलो मे पदक प्राप्त करने का इतना महत्त्व नही है जितना कि उसमे भाग लेने का है। यह जरूरी नहीं है कि हम जिन्दगी की हर बाजी जीतें। जरूरी यह है कि हम अपनी ओर से जी-जान से सघष करें।

यदि केवल पदक प्राप्त करने के उद्देश्य से ही ओलपिक खेलो मे भाग लेना हो तो दुनिया के केवल 18 या 20 देशो को ही ओलपिक खेलो म भाग लेने के लिए जाना चाहिए। लेकिन अब ओलपिक खेलो में भाग लेनवाले देशो की सख्या 110 से भी अधिक होती है, जबकि कौन कहा रहा की सूची में केवल 20 देशो के ही नाम होते है।

म्यूनिख ओलपिक (1972)

किसीने ठीक ही कहा है कि खेल-कूद किसी भी राष्ट्र का दपण होता है। दुनिया का कौन सा देश कितना विकसित, समृद्ध या शक्तिशाली है यह जानने के लिए उस देश की सैनिक शक्ति, जनशक्ति या क्षेत्रफल देखने की जरूरत नही होती। ओलपिक खेलो की पदक-तालिका पर नजर दौडान मात्र से ही उसकी झलक मिल जाती है। राजनीति के मैदान म और खेल के मैदान मे सोवियत सघ और अमेरिका की प्रतिद्वद्विता काफी पुरानी है। ओलपिक खेलो म कभी अमेरिका का नाम सबसे ऊपर रहता है तो कभी सोवियत सघ का। लेकिन इस बार सोवियत सघ ने सबसे अधिक पदक प्राप्त कर यह साबित कर दिया कि वह खेल-जगत म भी दुनिया का सबस शक्तिशाली देश है। इस बार सोवियत

संघ ने कुल मिलाकर 99 पदक प्राप्त किए जिनमे से 50 स्वण पदक थे । अमेरिका ने 33 स्वण पदक प्राप्त कर दूसरा स्थान प्राप्त किया ।

प्राचीन ओलपिक खेलो के दौरान स्वत एक प्रकार का युद्धविराम हो जाता था, लेकिन म्यूनिख ओलपिक खेलो के दौरान न केवल वियतनाम जसी नृशस लडाई चलती रही बल्कि खेल का मैदान भी इस्राइली खिलाडियो के खून से लथपथ हो गया । 5 सितम्बर को कुछ अरब छापामारो ने ओलपिक गाव मे इस्राइली खिलाडियो को मार दिया जिसके कारण एक दिन के लिए खेल स्थगित कर देने पडे ।

इस बार अमेरिका के खिलाडी अधिक स्वण पदक प्राप्त करने मे भले ही सफल न हो सके हो लेकिन अमेरिका के एक खिलाडी ने कभी न टूटनेवाला रिकाड जरूर स्थापित कर दिया । अमेरिका के 22 वर्षीय तैराक माक स्पिट्ज को म्यूनिख ओलम्पिक का हीरा माना गया । एक साथ सात स्वण पदक प्राप्त कर वह दुनिया का महानतम खिलाडी बन गया । ओलपिक खेलो मे आज तक किसी भी खिलाडी ने एक ही ओलपिक मे एक साथ इतने स्वण पदक प्राप्त नही किए । माक स्पिटज ने न केवल सात स्वण पदक जीते बल्कि सातो प्रतियोगिताओ म नये विश्व रिकाड भी स्थापित किए । उन्होन 100 मीटर, 200 मीटर फ्री-स्टाइल, 100 मीटर और 200 मीटर बटरफ्लाई के अतिरिक्त 400 मीटर फ्री रिले 800 मीटर फ्री रिले और 400 मीटर मेडली मे स्वण पदक प्राप्त किए ।

तैराकी के महिलाओ के मुकाबले म आस्ट्रेलिया की 15 वर्षीया शान गोल्ड ने एक साथ तीन स्वण पदक प्राप्त किए । 15 साल की उम्र म कोई लडकी तीन स्वर्ण पदक प्राप्त कर सकती है इस बात पर भारतीय युवक और युवतिया आसानी से विश्वास नही करेंगे । क्योकि यहा तो 15 साल की उम्र म लडकिया लाड और दुलार से दादी और नानी की गोद मे बैठकर अपन बाल धुलवाती और सवारती है । आस्ट्रेलिया की इस युवती ने 200 मीटर, 400 मीटर फ्री-स्टाइल और 200 मीटर मेडली मे स्वण पदक प्राप्त किए । या तो सभी तैराकी पडितो ने यह भविष्यवाणी कर रखी थी कि वह 100 मीटर फ्री-स्टाइल मे भी स्वण पदक जीतेगी लेकिन उसमे वह तीसरे स्थान पर रही और उसे कास्य पदक पर ही सन्तोष करना पडा । इस हार के बाद भी उसने अपन चेहरे पर जरा भी निराशा का भाव प्रकट नही होने दिया और मुस्कराते हुए अपने कागरू खिलौने को अपने सिर पर रखकर जनता का अभिवादन स्वीकार किया । यो वह अपनी सफलता से बहुत प्रसन्न नही थी क्योकि वह अभी एक-दो स्वर्ण पदक और जीतना चाहती थी । तभी तो वह पत्रकारो से बार-बार यह कहती थी कि मैं क्षमा चाहती हू कि मैं आपकी और अपने देशवासियो की आशाओ को पूरा नही

कर पाई। ने.कन शाने के पिता से लोगो ने कहा कि आखिर आप मेरी बच्ची से क्या चाहत हैं ? वह कोई मानव यन्त्र तो नही है जिसे चाभी भर कर तालाब मे फेंक दिया जाए और वह नया विश्व रिकाड स्थापित कर और स्वण पदक लकर बाहर निकले।

इस बार तैराकी के मुकाबलो में सबसे अधिक नये विश्व रिकाड स्थापित हुए। तैराकी के कुल 29 मुकाबले हुए जिनम 23 में नये विश्व रिकाड स्थापित हुए। एथलेटिक क क्षेत्र मे इस बार रूसी खिलाडियो का ही बोलबाला रहा। एथलटिक में 100 मीटर के विजेता को दुनिया का सबसे ताकतवर इनसान कहा जाता है। पिछले काफी वर्षों से अमेरिका के खिलाडी ही इसमें सबसे आगे रहते थे, लेकिन इस बार सोवियत सघ के खिलाडी वालेरी बोरजोव ने 100 मीटर और 200 मीटर मे स्वण पदक प्राप्त किया।

हर बार की तरह इस बार भी कुछ नये रिकाड स्थापित हुए और कुछ नये खिलाडियो न नामी-गरामी खिलाडियो को पछाड दिया। बास कूद में अमेरिका के बाब सीग्रेन जिन्होने एक के बाद एक अपने ही कई कीर्तिमानो में सुधार किया था, इस बार केवल रजत पदक ही प्राप्त कर पाए। पूर्वी जमनी के वुल्फगग नादविग ने इसमें स्वण पदक प्राप्त किया। चक्का फेंकने म चेकोस्लोवाकिया के लुडविक डानक बाजी मार ले गए। उगाडा के एक खिलाडी जान आकी बुआ ने 400 मीटर बाधा दौड मे प्रथम स्थान पाकर अपने देश के लिए पहला स्वण पदक जीतन का गौरव प्राप्त किया। भाला फेंकने मे इस बार पश्चिमी जमनी के क्लाम वाल्फरमैन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। गोला फेंकने मे पोलड के कोमर ने नया विश्व रिकाड (21 18 मीटर) स्थापित किया और अमेरिका के जाज वुडस केवल रजत पदक ही प्राप्त कर सके। केन्या के किपचोग केइनो 1500 मीटर म रजत पदक ही प्राप्त कर सके। उन्होंने स्टीपलचेज मे स्वण पदक जीता। फिनलैंड के लासे विरेन ने 5,000 मीटर और 10 000 मीटर म स्वण पदक प्राप्त किए। मैराथन दौड को ओलपिक खेलो की सबसे दिलचस्प और मन सनीखेज दौड माना जाता है, इसमे खिलाडी का 26 मील 385 गज की दूरी तय करनी पडती है। इसम इथियोपिया के अबेबे बिकिला को लगातार दो बार (1960 और 1964 म) मैराथन दौड जीतने का गौरव प्राप्त हुआ। 1968 म यह मुकाबला उनके देशवासी मामो वाल्दे न जीता था। लेकिन इस बार अमेरिका के फ्रक शाटर ने मराथन दौड मे स्वण पदक प्राप्त किया और मामो वाल्दे तीसरे स्थान पर रहे।

भारोत्तोलन म सुपर हैवी वग म सबसे अधिक वजन उठाने वाल को दुनिया का सबसे ताकतवर इनसान' माना जाता है। इस बार रूस के ही 30 वर्षीय वासिली एलेक्सीव ने 649 किलो वजन उठाकर अपने पद (दुनिया का सबसे

ताकतवर इनसान) को बरकरार रखा। कुश्ती मे भी रूसी खिलाडियो को प सफलता प्राप्त हुई। सुपर हैवीवेट वग मे रूस के एलेक्जेंडर मेडवेड ने तार तीसरी बार इस वग मे स्वण पदक प्राप्त किया। लगातार तीसरी बार पदक प्राप्त करना ही उनके जीवन की सबसे बडी मनोकामना थी। शायद लिए उन्होने तुरन्त खेल से सन्यास लेने की घोषणा कर दी।

एथलेटिक की प्रतियोगिताओ मे 24 पुरुषो की होती ह और 14 महिलाओ। इस बार कुछ खिलाडियो न तो लगातार पाचवी बार ओलपिक खेलो मे भाग ा। अमेरिका की ओल्गा कोलोनी ने 1956 म चक्का फेंकने मे स्वण पदक त किया था। आस्ट्रेलिया की डनिस ग्रीन ने भी 1956 मे नौकायन मे कास्य जीता था। इन खिलाडियों ने इस बार भी ओलपिक खेलो मे भाग लिया। तो ताइवान की ची चेंग ने 100 मीटर और 200 मीटर का विश्व रिकाड पित कर रखा था, लेकिन इस बार वह घुटनो के दद के कारण ओलपिक खेलो गग नही ले सकी। इस बार 100 मीटर और 200 मीटर की महिलाओ की मे पूव जननी की रैनेट स्टैचर ने स्वण पदक जीता। 200 मीटर मे स्टैचर 22 4 सेकड के विश्व रिकाड की बराबरी की।

जिम्नास्टिक के खेलो म खिलाडी दशको को मुग्ध कर देते ह। इस बार वियत सघ के खिलाडी इनमे भी अग्रणी रहे। महिला खिलाडिनो म रूस और जमनी के बीच बडी होड थी अन्तत रूसी महिलाए ही बाजी मार ले गइ। जमनी को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ।

20 वर्षीया ल्यूडमिला तूरीश्चेवा ने व्यक्तिगत स्पर्द्धा मे स्वण पदक जीता ।

म्यूनिख ओलपिक मे भारतीय खिलाडियो का प्रदशन कुल मिलाकर बहुत ही निराशाजनक रहा। भारतीय नाविक यदि 30वें स्थान पर रहे तो भारतीय निशाने- बाज 34वें स्थान पर। भारत के अधिकाश पहलवान मारुति, अडकर, जगरूप, मास्टर चदगीराम, विराजदार और मुख्तियार सिंह प्रारम्भिक चक्रो मे ही हार गए। दिल्ली के दो होनहार पहलवान सुदेश कुमार और प्रेमनाथ जब पाचवें राउड पहुचे तो यह कहा जाने लगा कि ये दोनो पहलवान जरूर कोई न कोई पदक ले आएगे, लेकिन इन पहलवानो को भी चौथा स्थान प्राप्त हुआ।

भारतीय एथलीटो ने भी बहुत निराश किया। सबसे ज्यादा उम्मीद मोहिंदर सिंह गिल पर थी, लेकिन उन्होने ही सबसे ज्यादा निराश किया। त्रिकूद की योग्यता चक्र प्रतियोगिता मे मोहिंदर सिंह गिल ने तीन बार प्रयास किए और तीनों बार उन्हे गलत ढग से कूदने पर फाउल घोषित किया गया। प्रवीण कुमार केवल 53 12 मीटर ही चक्का फेंक सके, जबकि योग्यता स्तर 59 मीटर निर्धारित किया गया था।

हाकी के खेल मे एशिया का 44 वर्षों का प्रभुत्व समाप्त हो गया। 1928 से लेकर अब तक भारत और पाकिस्तान को ही विश्व-विजेता का गौरव प्राप्त होता रहा। 19 8 से 1956 तक लगातार भारत को विश्व विजेता का गौरव प्राप्त होता रहा। 1960 मे रोम मे हुए ओलपिक खेलो मे पाकिस्तान की जीत हुई। 1964 म तोक्यो मे भारत ने पुन अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा प्राप्त की, लेकिन 1968 मे मेक्सिको मे भारत को केवल कास्य पदक प्राप्त करके ही सन्तोष करना पड़ा और पाकिस्तान ने स्वण पदक जीता था। लेकिन इस बार हाकी के खेल म सबसे अधिक उतार-चढाव आए। सेमि-फाइनल मे भारत और पाकिस्तान का मुकाबला हुआ जिसमे भारत पाकिस्तान से 2 0 से हार गया।

फाइनल मे पाकिस्तान और पश्चिमी जमनी का मुकाबला हुआ जिसम पश्चिमी जमनी ने पाकिस्तान को 1-0 से हरा दिया। पाकिस्तानी खिलाडी इस हार को बर्दाश्त नही कर सके और उन्होने विजय मच पर खडे होकर पश्चिमी जमनी की राष्ट्रधुन का अपमान किया और पदक का गले मे पहनने की बजाय हाथ मे ल लिया। एक खिलाडी ने तो उस पदक का पाव म रखकर लोगों को दिखाया। पाकिस्तानी खिलाडियो के इस अभद्र व्यवहार के कारण 11 खिला डियो को आजीवन ओलपिक खेलो से निष्कासित कर दिया गया और चार साल तक के लिए पाकिस्तान हाकी फेडरेशन पर प्रतिबध लगा दिया गया। उस समय तो पाकिस्तानी खिलाडी बिना होश के जोश दिखा गए, लेकिन बाद म अपने किए पर बहुत प्रायश्चित करन लगे। एक एक करके पाकिस्तानी अधिकारियों और नताओ ने अन्तर्राष्ट्रीय हाकी सघ से माफी मागनी शुरू कर दी।

तीसरे स्थान के लिए भारत और हालैंड का मुकाबला हुआ (कुछ समय बाद पाकिस्तानी खिलाडियो पर से प्रतिबन्ध हटा दिया गया), जिसम भारत ने हालैंड को 2 1 से हराकर कास्य पदक प्राप्त किया।

1972 के म्यूनिख ओलपिक—कौन कहा रहा

देश का नाम	स्वण पदक	रजत पदक	कांस्य पदक
सोवियत सघ	50	27	22
अमरिका	33	31	30
पूव जमनी	20	23	23
पश्चिमी जमनी	13	11	16
जापान	13	8	8
आस्ट्रेलिया	8	7	2
पोलड	7	5	10

देश का नाम	स्वर्ण पदक	रजत पदक	कांस्य पदक
ब्राजील	0	0	2
इथियोपिया	0	0	2
स्पेन	0	0	2
जमैका	0	0	1
भारत	0	0	1
घाना	0	0	1
नाइजीरिया	0	0	1

मांट्रियाल ओलंपिक (1976)

यदि आप म्यूनिख ओलंपिक और मांट्रियाल ओलंपिक खेलों की 'पदक तालिका' का मिलान करें तो आप पाएंगे कि कुछ देश नीचे से ऊपर आ गए, कुछ ऊपर से नीचे और कुछ ऐसे देशों का, जिनका हमेशा नामोल्लेख होता था (जैसे भारत) इस बार नामोल्लेख तक नहीं हुआ।

इस बार यदि पूर्व जर्मनी के खिलाड़ियों ने पदक बटोरने के मामले में चमत्कार कर दिखाया ('कौन कहां रहा' की सूची में उसे दूसरा स्थान प्राप्त हुआ) तो ऑस्ट्रेलिया जैसा देश इस बार एक भी स्वर्ण पदक प्राप्त नहीं कर सका, जबकि म्यूनिख ओलंपिक में उसने आठ स्वर्ण पदक प्राप्त किए थे और पदक तालिका में उसे छठा स्थान मिला था। इस बार उसे 32 वां स्थान मिला।

दुनिया भर के खेल प्रेमी पूर्व जर्मनी की प्रगति पर अब तक आश्चर्य कर रहे हैं। उनका कहना है कि यदि उसकी प्रगति की यही रफ्तार रही तो बहुत मुमकिन है कि मास्को में होनेवाले आगामी ओलंपिक (1980) में 'कौन कहां रहा' की सूची में उसे पहला स्थान प्राप्त हो जाए। फिर यह भी सवाल उठता है कि आखिर पूर्व जर्मनी ने इतनी जल्दी इतनी प्रगति कैसे कर ली? इतनी जल्दी विश्व चैंपियन तैयार करने के लिए उसके पास कौन-सी प्रशिक्षण रूपी जादू की छड़ी है? अमरिका जैसे देश को इस बार तीसरा स्थान प्राप्त हुआ।

मांट्रियाल ओलंपिक खेलों में इस बार जो खिलाड़ी ज्यादा प्रकाश में आए, वे हैं रोमानिया की जिम्नास्टिक की महारानी नादिया कोमानेची, पूर्व जर्मनी की कोर्नेलिया एंडर, क्यूबा के तिओफिलो स्टीवेंसन और अल्बर्टो जानतोरीना, फिनलैंड के लास वीरेन, अमेरिका के जान नेबर, सोवियत संघ के वालेरी एलेक्सीव, न्यूजीलैंड के जान वाकर आदि।

फिनलैंड के लास वीरेन ने जब लगातार दूसरी बार 10 000 मीटर की दौड़ में सफलता प्राप्त की तो उनकी तुलना पावो नूर्मी और एमिल जातोपेक जैसे अमर धावकों के साथ की गई लेकिन जब उन्होंने 5 000 मीटर की

दौड मे भी स्वण पदक प्राप्त कर लिया तो उन्होने उन खिलाड़ियों को भी पीछे छोड ओलपिक मेलो के इतिहास मे अपने नाम का नया अध्याय जोड दिया।

क्यूबा के अल्बर्टो जानतोरीना ऐसे पहले दौडाक हैं जिन्हान 400 मीटर और 800 मीटर की दौडो मे स्वण पदक प्राप्त किया। 17 वर्षीय कार्नेलिया एडर ने इस बार तैराकी म चार स्वण पदक और एक रजत पदक प्राप्त किया। रोमानिया की 14 वर्षीया नादिया कोमानेशी ने जिम्नास्टिक मे 5 पदक (3 स्वण, 1 रजत और 1 कास्य पदक) प्राप्त कर 'जिम्नास्टिक की महारानी' का विशेषण प्राप्त किया।

अमेरिका के जान नेबर ने तैराकी मे 4 स्वण पदक प्राप्त किए। न्यूजीलैंड के जान वाकर ने 1,500 मीटर मे स्वण पदक प्राप्त करके यह सिद्ध कर दिया कि इस फासले की दौड मे वही विश्व चैंपियन है। सोवियत सघ के 34 वर्षीय वासिली एलेक्सीव ने 'महाबली' (दुनिया के सबसे ताकतवर इनसान) पद को जो उन्होंने म्यूनिख ओलपिक मे प्राप्त किया था, पुन प्राप्त कर लिया। ट्रिनिडाड के हैसली क्राफोड 100 मीटर के फासले को 10 06 सेकड मे पूरा करके 'दुनिया के सबसे तेज इनसान' कहलाए।

मैराथन भारत 11वें स्थान पर लोगो की सबसे ज्यादा दिलचस्पी मैराथन दौड के परिणाम जानने मे भी थी। 1 अगस्त, 1976 को जिस समय मैराथन दौड शुरू हुई उस समय 72 उम्मीदवारों म म्यूनिख आलपिक के विजेता अमेरिका के फ्रैंक शाटर और उपविजेता बेल्जियम के लसीमोट भी थे। 30 किलोमीटर तक तो शाटर सबसे आगे थे और वह सोच रहे थे कि इस बार भी मैराथन दौड जीत जाएगे लेकिन 30 किलोमीटर के बाद पूव जमनी क व्लादिमर सिर्पिस्की न जोर पकडा और उ हे पछाड दिया। व्लादिमेर न इस फासले (26 मील 385 गज) को 2 घटे 9 मिनट और 55 सेकड मे पूरा करके स्वण पदक प्राप्त किया। भारत के शिवनाथ सिंह ने इस दौड को 2 घटे 16 मिनट और 22 सेकड मे पूरा करके 11वा स्थान प्राप्त किया। मुकाबला समाप्त हाने के बाद शिवनाथ सिंह ने कहा कि यदि मुझे दद न उठता तो बहुत मुमकिन ह कि मुझे तीसरा या चौथा स्थान मिल जाता।

इस बार कुश्ती के मुकाबलो मे सोवियत सघ का और मुक्केबाजी म अमेरिका का बोलबाला रहा। ग्रीको रोमन कुश्तियो और फ्री स्टाइल कुश्तिया म इस बार रूसी पहलवानो को विशेष सफलता प्राप्त हुई। भारी वजन की कुश्तियो मे सोवियत सघ और हल्के वजन की कुश्तियो म जापान बाजी मार ले गया। अमेरिका को फ्री-स्टाइल कुश्ती मे केवल एक ही स्वण पदक प्राप्त हो सका।

मुक्केबाजी के विभिन्न मुकाबलो मे अमेरिका ने 5 स्वण पदक प्राप्त किए।

अमेरिका के बाद क्यूबा का नबर आता है। जिन अमेरिकी मुक्केबाजों ने स्वण पदक प्राप्त किए उनके नाम है लियो रैंडोल्फ (फ्लाईवेट—51 किलो), रॉय लियोनार्ड (लाईट वेल्टरवेट—63 5 किलो), माइकेल स्पिक्स (मिडिलवेट—75 किलो), लियाने स्पिक्स (लाइट हैवीवेट—81 किलो)।

क्यूबा के जिन मुक्केबाजों ने स्वण पदक प्राप्त किए उनके नाम है जार्ज हेरनाडेस (लाइट फ्लाइवेट—48 किलो), एनोयल हेरेरा (फेदरवेट—57 किलो) और इओफिलो स्टीवेंसन (हैवीवेट—81 किलो से ऊपर)।

इस बार सोवियत सघ मुक्केबाजी मे एक भी स्वर्ण पदक प्राप्त करने म सफल नही हो सका।

मिडिलवेट और लाइट हैवीवेट म स्वण पदक प्राप्त करनेवाले 20 वर्षीय माइकेल स्पिक्स और 23 वर्षीय लियोन स्पिक्स, दोनो सगे भाई हैं।

फुटबाल के खेल म इस बार पूव जमनी ने गत ओलपिक चैम्पियन पोलड को 3-1 से हराकर स्वण पदक प्राप्त किया।

हाकी मे एशिया का प्रभुत्व समाप्त हो गया। भारत और पाकिस्तान म से कोई भी टीम इस बार फाइनल तक नही पहुच सकी। जहा तक पाकिस्तान का सवाल है वह तो फिर भी किसी तरह सेमि-फाइनल तक पहुच गया, भारत तो सचमुच इस बार बहुत पिछड गया। भारत को सेमि-फाइनल तक पहुचने का एक अच्छा अवसर (स्वण अवसर) मिला था लेकिन भारत उसका भी लाभ नही उठा सका। माना कि भारत ने दूसरी भिडन्त मे आस्ट्रेलिया का अच्छा मुकाबला किया, लेकिन हार तो हार ही है, भले वह 'टाई ब्रेकर' से 6 5 से हो या सीधे 6-1 से।

खेल शुरू होने से पहले हाकी के विशेषज्ञो ने अपनी भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि इस बार भारत, पाकिस्तान हालड और पश्चिमी जमनी म से कोई दो टीम फाइनल म पहुचेंगी। लेकिन इस बार तो सचमुच कमाल हो गया। यह भविष्यवाणी इतनी गलत साबित हो सकती है इसकी शायद किसीन कल्पना भी नहीं की थी। इन चार टीमो म से एक भी टीम इस बार फाइनल तक नहीं पहुच पाई। पाकिस्तान और हालैंड की टीमे सेमि फाइनल तक जरूर पहुचीं लेकिन सेमि-फाइनल म आस्ट्रेलिया ने इस बार पाकिस्तान को भी 2 1 से हरा दिया। दूसरे सेमि-फाइनल म न्यूजीलैंड ने हालैंड को 2 1 से हराकर फाइनल म प्रवेश किया।

उसके बाद यह मान लिया गया था कि जो टीम (आस्ट्रेलिया) भारत और पाकिस्तान की टीमों को हरा सकती है उसके लिए फाइनल मे न्यूजीलैंड को हरा पाना बहुत मामूली बात होगी, लेकिन लोगो की धारणा यहां भी गलत निकला और इस बार न्यूजीलैंड की टीम को पहली बार ओलपिक चैम्पियन होने का

गौरव प्राप्त हुआ।

पाकिस्तान को इस बार कास्य पदक प्राप्त करके ही सताप करना पडा। तीसरे स्थान के लिए खेले गए मुकाबले मे पाकिस्तान ने हालैंड को 3 2 से हरा कर कास्य पदक प्राप्त किया।

भारत को इस बार सातवा स्थान मिला। पाचवें से आठवें स्थान के लिए हुए मुकावलो मे भारत पहले तो पश्चिम जमनी की टीम से 3-2 से हार गया लेकिन उसके बाद उसन मलयेसिया को 2 0 से हराकर सातवा स्थान प्राप्त किया। इस बार भारत हालैंड, आस्ट्रेलिया और पश्चिमी जमनी की टीमो से हारा।

हाकी के खेल म इस वार विभिन्न देशो की स्थिति इस प्रकार रही 1 न्यूजीलैंड, 2 आस्ट्रेलिया, 3 पाकिस्तान, 4 हालैंड, 5 पश्चिम जमनी, 6 स्पन, 7 भारत, 8 मलयेसिया, 9 बेल्जियम, 10 अर्जेंटीना और 11 कैनाडा।

त्रिकूद म सोवियत सघ के विक्टर सेनेयीव ने लगातार तीसरी बार स्वण पदक प्राप्त करके यह सिद्व कर दिया कि त्रिकूद मे आज भी उनका कोई सानी नही है। उन्होने इस बार 17 29 मीटर कूद लगाकर स्वण पदक प्राप्त किया। अमेरिका के जेम्स बट्स न 17 18 मीटर त्रिकूद लगाकर रजत पदक प्राप्त किया। ब्राजील के डी ओलीवेरा 16 90 मीटर ही कूद सके। त्रिकूद के विश्व चैम्पियन ओलीवेरा द्वारा कास्य पदक प्राप्त करने पर लोगा को थोडा दुखद आश्चय हुआ।

ओलम्पिक खेला मे लोगो की सबसे ज्यादा दिलचस्पी एथलेटिक प्रतियोगिताओ मे होती है। एथलेटिक प्रतियोगिताओ मे अब तक अमेरिका और सोवियत सघ के खिलाडियो का ही बोलवाला रहा करता था। लेकिन इस वार खेलकूद के क्षेत्र म यदि किसी देश ने सबसे ज्यादा प्रगति की है तो वह है पूव जमनी। पौन दो करोड की आबादी वाला यह देश अब पदक बटोरने के मामले म अमेरिका और रूस से टक्कर लेने की स्थिति मे आ गया है। इस बार जिन छोटे-छोटे देशो ने एथलेटिक मे विशेप सफलता प्राप्त की है वे है मैक्सिको, त्रिनिडाड, टोबागो, क्यूबा, पूव जमनी, हगरी, जमैका, फिनलड और पोलैंड।

अभी तो 20 अफ्रीकी और अरब देशो ने ओलम्पिक म भाग नही लिया, वरना न जाने कितने ही स्वण पदको पर अफ्रीकी देशा के एथलीट अपना अधिकार जमा लते।

इस बार दुनिया का सबसे तेज धावक बनने का गौरव त्रिनिडाड के 26 वर्षीय हैसली क्राफोड को प्राप्त हुआ। उसने इस फासले को 10 06 सैकिंड म पूरा करके स्वण पदक प्राप्त किया। इसमे रजत पदक भी जमैका के एक खिलाडी

डोनाल्ड क्वारी को प्राप्त हुआ। पिछले ओलम्पिक के विजेता (100 और 200 मीटर) रूस से वालेरी ब्रोजाव इस बार केवल कास्य पदक ही जीत पाए। 200 मीटर की दौड मे तो उन्होने अस्वस्थ होने के कारण भाग ही नही लिया।

महिलाओ की 100 मीटर की दौड जीतने का गौरव पश्चिम जर्मनी की रनेग्रेट रिचटर को प्राप्त हुआ। उसने इस फासले को 11 08 सकिंड मे पूरा किया।

क्यूबा के अल्बर्टो जानतोरीना ने भी ओलम्पिक के महान खिलाडियो की सूची मे अपना नाम लिखवा लिया। उन्होंने 400 मीटर और 800 मीटर म स्वण पदक प्राप्त किया। चौडे कधो वाले जोनतोरीना (कद 6 फुट 3 इच और वजन 180 पौड) ऐसी रफ्तार से दौडते हैं जैसे कोई बिजली से चलने वाला इजन दौड रहा हो। उन्होने 400 मीटर फासले को 44 26 सैकिंड म पूरा किया। अमेरिका के फ्रेड न्यूहाउस को इसमे रजत पदक प्राप्त हुआ। क्यूबा के धावक शुरू मे तो इतना तेज़ नही दौडे जितना कि अतिम 100 मीटर मे। जब 100 मीटर का फासला बाकी रह गया था तो अमेरिका के न्यूहाउस अपनी जीत एक तरह से पक्की समझ बैठे थे लेकिन उसके बाद जोनतोरीना ने ऐसा ज़ोर पकडा जैसे किसी 'एक्सप्रेस गाडी' का इजिन ज़ोर पकडता है।

800 मीटर की दौड म तो उ होंने 1 मिनट 43 00 सैकिंड का नया विश्व और ओलम्पिक रिकाड कायम किया था। इस दौड मे भारत के श्रीरामसिंह फाइनल तक तो पहुच गए थे लेकिन अपने जीवन की सवश्रेष्ठ दौड लगाने के बावजूद वह सातवें स्थान पर ही रहे। श्री रामसिंह ने इस फासले को 1 मिनट 45 77 सैकिंड मे पूरा किया था।

10 000 मीटर की दौड मे इस बार फिनलैंड के पुलिसमैन लासे वीरेने ने लगातार दूसरी बार स्वण पदक जीत कर अपना नाम दो अमर खिलाडियो (पावो नूर्मी और एमिल जातोपक) के साथ जुडवा लिया। ओलम्पिक खेलो में इतिहास मे यह तीसरा अवसर है जब किसी धावक ने लगातार दूसरी बार यह दौड जीता हो। फिनलैंड के ही पावो नूर्मी ने 1920 और 1928 मे तथा चेकोस्लोवाकिया के एमिल जातोपक ने 1948 और 1952 मे यह दौड जीती थी।

गोला फेंकने और तारगोला फेंकने म इस बार रूसी खिलाडी बाजी मार गए। गोला फेंकने म इस बार प्रथम स्थान सोवियत सघ के एलेग्जेंडर बेरिश्नीकोव (22 0 मीटर) को प्राप्त हुआ और उन्होने नया ओलम्पिक रिकाड स्थापित किया। तारगोला म सोवियत सघ के यूरी सिडेह ने 77 52 मीटर की दूरी तक तार गोला फेंक कर नया कीर्तिमान स्थापित किया।

भाला फेंकने मे इस बार अमरिका के मैक विल्किंस जरूर बाजी मार गए। हालांकि विल्किंस का विश्व रिकार्ड 70 86 मीटर का है लेकिन इस बार उन्होंने

केवल 67 50 मीटर चक्का फेंककर ही स्वण पदक प्राप्त कर लिया।

इस बार सबसे पहला स्वर्ण पदक जीतने का गौरव पूव जमनी के सेनाधिकारी लेफ्टिनेंट 21 वर्षीय ओवे पोटेक को हुआ। उन्होंने यह स्वण पदक फ्री-पिस्टल निशानेबाजी मे जीता।

जहाँ तक जिम्नास्टिक का सवाल है मानना होगा कि इस बार सबसे ज्यादा सफलता रोमानिया की स्कूल छात्रा 14 वर्षीया कुमारी नादिया कोमानेशी को प्राप्त हुई जिसे इस बार जिम्नास्टिक की महारानी कहा गया। बिना कोई अक खोए 10 अक प्राप्त करने वाली वह ओलम्पिक की पहली महान खिलाडिन मानी गई। म्यूनिख ओलम्पिक खेलो म सबसे ज्यादा सफलता सोवियत सघ की लुडिमिला तूरिश्चेवा को प्राप्त हुई थी।

पिछली बार की तरह इस बार भी सोवियत सघ को जिम्नास्टिक मे एक साथ कई स्वण पदक प्राप्त करने की आशा थी लेकिन नादिया के त्रुटिहीन प्रदशनो से उनकी आशाओ पर पानी फिर गया। इस भोली भाली लडकी के चित्र कनाडा के सभी समाचार पत्रों के मुखपृष्ठ पर छपने शुरू हो गए। जब भी नादिया का कोई मुकाबला होता स्टेडियम दशकों से ठसाठस भर जाता। जैसे जैसे उसने एक के बाद एक करके व्यक्तिगत व्यायाम की स्पर्द्धाओ म स्वण पदक जीतने शुरू किए लोगो ने उसे जिम्नास्टिक की नई महारानी कहना शुरू कर दिया। म्यूनिख ओलम्पिक मे दो स्वण पदक जीतने वाली कुमारी कारबट हारने के बाद एकदम मायूस-सी हो गई। नादिया ने (कद 4 फुट 11 इच, वजन 88 पौंड) जीत के बाद कहा कि मुझे इस जीत पर खुशी है लेकिन आश्चय नही है। मैंने खूब तैयारी की थी, यह सब उसीका फल है।

जहा तक तैराकी का सवाल है उसमे अमेरिका और पूव जमनी के तैराको को विशष सफलता प्राप्त हुई। अमेरिका के जान नबेर ने इस बार मैक्सिको और म्यूनिख ओलम्पिक मे 100 मीटर और 200 मीटर बैक स्ट्रोक मे स्वण पदक जीतने वाले पूव जमनी के रोलड मैथ्ज को हरा दिया। इस हार के बाद मथ्ज इतने निराश हुए कि उन्होने 25 वष की उम्र मे ही तैराकी से सन्यास लेने की घोषणा कर डाली। अमेरिका के ही ब्रायन गुडल ने 400 मीटर फ्री-स्टाइल को 3 मिनट 51 93 सैकिंड मे पूरा कर अपना पिछला रिकाड सुधार कर नया विश्व रिकाड कायम किया। वैसे उसने 1500 मीटर मे भी स्वण पदक प्राप्त किया था।

पूव जमनी की कार्नेलिया एडर ने आध घटे के भीतर ही दो स्वण पदक (110 मीटर बटर फ्लाई और 200 मीटर फ्री स्टाइल) जीत कर तैराकी के इतिहास मे अपना नाम जोड दिया। 17 वर्षीया एडर इससे पहले भी दो स्वण पदक(एक 100 मीटर फ्री-स्टाइल म और दूसरा 4 × 100 मीटर मेडली रिले मे) जीत चुकी थी। इस अभूतपूर्व सफलता के फलस्वरूप ही एडर को इस बार 'स्वण

सुदरी' कहा जाने लगा।

जहा तक दूसरे भारतीय प्रतियोगियो का सवाल है भारतीय खिलाडी गुरु शुरू के राउड मे ही प्रतियोगिता से अलग होते गए। फेदर वेट के भारतीय मुक्केबाज एस० के० राय पहले ही मुकाबले मे क्यूबा के एलेज हेरेरा से 1 मिनट 43 सैकिड म हार (नाक आउट) गए। यो राय का पहला मुकाबला नाइजीरिया के मुक्केबाज से होने वाला था लेकिन अफ्रीकी देशों के प्रतियोगिता से अलग हो जाने के कारण उसे वाक-ओवर मिल गया था। भारत के दूसरे मुक्केबाज सी० मछैया भी पूव जमनी के उल्रिच बेयीर से अको के आधार पर हार गए।

भारोत्तोलन मे इस बार केवल एक प्रतियोगी (अनिल मडल) भेजा गया था। 52 किलो वग मे वह 85 किलो वजन भी उठाने म सफल नही हो सके और उन्होने जक के लिए ज़ोर लगाना तक मुनासिब नही समझा।

माट्रियल ओलम्पिक पदक तालिका

	देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
1	सोवियत सघ	47	43	35
2	पूव जमनी	40	25	25
3	अमेरिका	34	35	25
4	पश्चिम जमनी	10	12	17
5	जापान	9	6	10
6	पोलैंड	8	6	11
7	बुल्गारिया	7	8	9
8	क्यूबा	6	4	3
9	रोमानिया	4	9	14
10	हगरी	4	5	12
11	फिनलैंड	4	2	0
12	स्वीडन	4	1	0
13	ब्रिटेन	3	5	5
14	इटली	2	7	4
15	यूगोस्लाविया	2	3	3
16	फ्रास	2	2	5
17	चेकोस्लोवाकिया	2	2	4
18	न्यूज़ीलैंड	2	1	1
19	दक्षिण कोरिया	1	1	4
20	स्विट्ज़रलैंड	1	1	2

अपने तीन भाइयो म सबसे छोटे हैं। उनका परिवार भारत विभाजन के बाद सिरसा मे आकर बस गया था (उस समय सिरसा पजाब का ही अग था)। 1971 मे वह हरियाणा स्कूल की ओर से पजाब के विरुद्ध खेले। बाद मे उन्हें उत्तर क्षेत्र स्कूल की टीम मे चुन लिया गया।

1975 76 मे उन्होने रणजी ट्राफी मैचो मे हिस्सा लिया और उसके बाद 1978 मे पाकिस्तान का दौरा करने वाली भारतीय टीम मे उन्हें शामिल कर लिया गया। कपिलदेव ने अब तक केवल 9 टैस्ट मैच ही खेले हैं (3 पाकिस्तान के विरुद्ध और 6 वेस्टइडीज के विरुद्ध)। वेस्टइडीज के विरुद्ध दिल्ली मे खेल गए पाचवें टेस्ट मे (यह कपिलदेव का आठवा टेस्ट था) कपिलदेव ने जीवन का पहला शतक बनाया। 94 रन बनाने के बाद उन्होने चौका मारा और उसके बाद छक्का मार कर उन्होने अपने जीवन का शतक पूरा किया। भारतीय खिलाड़ियों मे सबसे छोटी उम्र मे शतक बनाने का गौरव कपिलदेव को ही प्राप्त है। कपिल देव की सबसे बडी विशेषता यह है कि वह जितनी तेज गति से गेंद फेंकते हैं उतनी ही तेज गति से रन भी बनाते हैं। अब तक का उनका सवश्रेष्ठ स्कोर 126 रन (और आउट नही) है।

भारत के हरफनमौला कपिलदेव भारत के ऐसे दूसरे खिलाडी हैं जो टेस्ट जीवन मे दोहरा गौरव (1,000 से अधिक रन और 100 से अधिक विकेट लेने का गौरव) प्राप्त कर चुके हैं। पहली बार यह गौरव वीनू माकड को प्राप्त हुआ था।

कबडडी—कबड्डी का खेल दो टोलियो (टीमो) के बीच खेला जाता है। दोनो टीमो मे बराबर-बराबर खिलाडी होते हैं। इस खेल मे एक टोली म ठीक कितने खिलाडी होने चाहिए इसकी कोई निश्चित सीमा नही है। एक टीम म चार से लेकर 16 खिलाडी तक हो सकते है। भारत मे कुछ क्षेत्रों मे यह खेल गोलाकार रूप मे और कुछ क्षेत्रो म आयताकार रूप मे खेला जाता है। खेल शुरू होने से पहले कप्तान टॉस करता है और टॉस जीतने वाली टीम को स्थान चुनने का अधिकार होता है। इसके बाद दोनो टीमे बारी बारी से अपना एक खिलाडी अपनी प्रतिद्वन्द्वी टोली मे भेजती हैं जो पाले (सीमा रेखा) से सास भरने के बाद 'कबडडी-कबडडी' कहता हुआ दूसरी टोली मे जाता है। और यदि वह 'कबडडी कबडडी' कहते हुए विरोधी टीम के किसी एक खिलाडी को हाथ लगा देता है तो दूसरे खिलाडी एक ओर हट जाते है और केवल वही खिलाडी उसको पकडने, रोकने या उसकी सास तोडने की कोशिश करता है। यदि 'कबडडी कबडडी' कहने वाले खिलाडी ने विरोधी खिलाडी से अपने आपको छुडा लिया और बिना अपनी सास तोडे पाले को पार कर लिया तो उसे एक अक मिल जाता है और यदि इसी धर-पकड म उसकी सास टूट जाती है तो दूसरी टीम को एक अक मिल जाता है।

कबड्डी का खेल विशुद्ध रूप में भारतीय खेल है इसलिए इस खेल में भारत की आत्मा झलकती है। देशी खेलों में यह खेल प्रधान माना जाता है। यह खेल इतना सरल और रोचक है कि भारत के हर प्रदेश हर शहर और हर गांव में खेला जाता है। इस खेल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह बिना किसी साज-सामान के खेला जा सकता है। भारत के अलग अलग प्रदेशों में यह खेल अलग अलग प्रकार से खेला जाता है और नाम भरने के बाद 'साडू-गुडू', 'चीडू-गुडू' 'जू-जू-जू' 'वडा-वडा-वडा' 'टा टा टा', 'कोट कोट कोट', 'कोडी कोडी-कोडी', 'कबड्डी-कबड्डी-कबड्डी', आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। हर प्रान्त में यह खेल अलग-अलग तरह से खेला जाता है। कहीं एक खिलाड़ी को एक खिलाड़ी द्वारा ही पकड़ने जाने का नियम है तो कहीं यह नियम है कि एक से छूटने पर दूसरा खिलाडी भी उसे पकड़ सकता है। यह खेल केवल ताकत का खेल नहीं है। यह खेल चुस्ती, फुर्ती और तेजी का खेल है। इस खेल के खिलाड़ी में एक साथ कई गुणों का तालमेल होता है। लम्बा सांस भरने की आदत के अलावा, कुश्ती के दाव-पेच, तेज भागने की क्षमता शरीर का लोचदार गठन, तीक्ष्ण बुद्धि आदि। सच तो यह है कि इस खेल में शरीर के सभी अंगों का व्यायाम हो जाता है। कुछ खेल-प्रेमियों का कहना है कि सही अर्थों में कबड्डी भारत का राष्ट्रीय खेल है।

कमलजीत संधु—1970 में बैंकाक में हुए छठे एशियाई खेलों में पहली बार एक भारतीय महिला एथलीट ने 400 मीटर की फासले की दौड़ में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। कमलजीत संधु ने भारतीय एथलेटिक्स के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया। 400 मीटर की दौड़ का मुकाबला था। दुनिया की सबसे तेज दौड़ने वाली महिला 26 वर्षीया ची चेंग को हराकर आगे निकलने की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। ची चेंग पूरे आत्मविश्वास के साथ मैदान में आई। लम्बे फासले की दौड़ों में जैसा कि अक्सर होता है, 200 मीटर के बाद ची चेंग ने जोर मारा और सबको पीछे छोड़ गई। लेकिन जब केवल मंजिल से 50 मीटर दूर रह गई तो घुटने में चोट के कारण गिर गई। उसके बाद भारतीय खिलाड़ी कमलजीत संधु सबसे आगे निकल गई। उस समय कमलजीत संधु पंजाब विश्वविद्यालय में एम० ए० की छात्रा थी। उनका जन्म 12 अगस्त, 1948 को हुआ। उनके पिता फौज में कप्तान हैं और उन्हीं के प्रोत्साहन से कमलजीत संधु को यह प्रतिष्ठा और लोकप्रियता प्राप्त हुई। उसके बाद 1971 में प० जर्मनी की सरकार ने भारत के कुछ एथलीटों को वहां प्रशिक्षण के लिए बुलाया। इनमें से कमलजीत संधु भी एक थीं। वहां पर भी इनका प्रदर्शन बहुत शानदार रहा। एथलेटिक्स के क्षेत्र में उनकी सेवाओं पर भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री उपाधि से अलंकृत किया है।

काउड्रे, कोलिन—24 दिसम्बर, 1932 को बगलौर म ज मे माइकेल कोलिन काउड्रे के नाम के साथ टेस्ट क्रिकेट म सबसे अधिक कैच (120 कैच) लेने का रिकाड है। कैच पकडने म काउड्रे महारथी समझे जाते रहे हैं। 114 टैस्ट मैचो म 120 कैच पकडकर उन्होने सर्वाधिक कैच पकडने का विश्व रिकाड स्थापित कर रखा है। मुश्किल से मुश्किल कैच को अथवा 'हाफ चास' को भी सही स्थिति मे पहुचकर लपकने का उनका तरीका नवयुवको के लिए आज भी अनुकरणीय है।

एक बल्लेबाज के रूप मे काउड्रे ने अपना सिक्का बडी जल्दी जमा लिया था। 1946 म 13 वष की अल्प आयु म ही उ ह लाड स के प्रसिद्ध मैदान पर खेलने का मौका मिल गया था जिसका उन्होने, अपने टोनब्रिज स्कूल के लिए 75 तथा 44 रन बनाकर, भरपूर लाभ उठाया। 1951 म कैंट की ओर से पूरा काउटी सत्र खेलने का अवसर मिला और उन्होने 33 02 के औसत पर 1189 रन बना डाले। तब से प्रत्येक सत्र म हजार रन पूरे करने म वे कभी असफल नही हुए।

टेस्ट क्रिकेट मे उनका अभ्युदय 1954 मे 22 वष आयु मे हुआ। आस्ट्रेलिया के दौरे पर उ हे भावी खिलाडी के रूप म चुना गया, पर तु उन्होने अपने तीसरे टेस्ट मे ही शतक लगाकर टेस्ट क्रिकेट मे अपना नाम रोशन कर लिया। इस दौरे पर उनका टेस्ट औसत 35 44 रहा। इस दौर के बाद उन्होने कभी पीछे मुडकर नही देखा। अपन समय मे वे सवश्रेष्ठ बल्लेबाज और क्षेत्ररक्षक के रूप म मशहूर रहे। 114 टैस्ट मैचो मे 22 शतको की सहायता से 7624 रन बनाकर इग्लैंड की तरफ से टेस्ट क्रिकेट मे सर्वाधिक रन बनाने वालो की तालिका म उनका प्रथम स्थान है और विश्व क्रिकेट तालिका म सोबस के बाद दूसरा।

कानरेड हट—वेस्टइडीज के मशहूर क्रिकेट खिलाडी और पारी शुरू करने वाले बल्लेबाज कानरेड हट को उनके देशवासी हमेशा 'विश्वसनीय खिलाडी (मिस्टर रिलायबल) कहकर ही पुकारते रहे। कुछ वष पहले 35 वर्षीय हट ने प्रथम श्रेणी के टेस्ट मैचो मे स यास लेने की घोषणा की थी। स यास का कारण यह था कि उनका नाया घुटना जख्मी हो गया था। हट ने 45 06 की औसत से टेस्ट मैचो म 3 245 रन बनाए। जहा तक हट की खेल पद्धति का सवाल है, यही कहा जा सकता है कि वह बचाव पद्धति मे ज्यादा विश्वास रखते हैं और मारधाड के खेल मे कम। 1963 और 1966 म वेस्टइडीज की जिस टीम ने इग्लैंड का दौरा किया हट उसके उप कप्तान नियुक्त किए गए थे। उन्होने 1958 म पाकिस्तान के विरुद्ध खेलते हुए अपने टेस्ट जीवन की शुरुआत की थी। कानरड हट ने एक भेंट मे कहा था— मेरा जन्म 9 मई 1932 को बारबडोस मे हुआ, जिसे कुछ दिन पहले ही स्वतन्त्रता मिली थी। पिता रिटायर्ड रिलीफ अफसर

थे। क्रिकेट खेलना मैंने अपने देश के लडको की भांति बहुत कम उम्र में ही शुरू किया था—उस समय मेरी उम्र छह साल की होगी। मुझे अब भी याद है कि कैसे अपने साथियों के साथ पड के तना के बैट और हाथ की बनी फूहड गेंद से खेला करता था।"

काम्पटन, डेनिस चार्ल्स स्काट (मिडिलसेक्स)—23 मई 1918 को जन्म। *78 टेस्टो में 5807 रन बनाए। केवल चार अंग्रेज बल्लबाजो को ही उससे अधिक* रन बनाने का श्रेय। आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलने वाला इंग्लैंड का सबसे कम आयु का खिलाडी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनो में भारत में होने के कारण 1944 45 के रणजी ट्राफी फाइनल में होल्कर की ओर से अविजित 249 रन ठोके। इंग्लैंड की सीनियर डिवीजन फुटबाल का खिलाडी भी।

कारदार, अब्दुल हफीज—17 जनवरी, 1925 को जन्म, पाकिस्तानी क्रिकेट की उन्नति का मुख्य अभियन्ता। विभाजन से पूर्व भारत की ओर से तथा उसके बाद पाकिस्तान की ओर से। पहले पाकिस्तान के कप्तान, बाद में क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष।

कार्नोलियस, चार्ल्स—चार्ल्स का जन्म 27 अक्तूबर, 1945 को माइलापुर (मद्रास) में हुआ था। बाद में वह अपने परिवार के साथ पठानकोट आ गए। यही उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। पहले वह गवनमेंट स्कूल, पठानकोट में पढ़े और उसके बाद उन्होंने डी० ए० वी० कालेज, जालंधर में इन्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की। स्कूल की टीम में वह 'सेन्टर फारवर्ड' के स्थान पर खेलते थे और कालेज की टीम में 'राइट हाफ' के स्थान पर। उनका कहना है कि लोग पीछे से आगे की ओर बढते हैं लेकिन मैं आगे से पीछे की ओर हटा और गोली बन गया। मुझे गोली बनाने का श्रेय सरदार ऊधमसिंह को है, क्योंकि उन्होंने मुझे एक बार कहा था कि पंजाब की टीम में कोई अच्छा गोली नही है और दक्षिण भारत के खिलाडी गोली का दायित्व ज्यादा अच्छी तरह से निभा सकते हैं। राष्ट्रीय प्रतियोगिता में चार्ल्स पंजाब का प्रतिनिधित्व करते। 1969 में उन्होंने अन्तरराष्ट्रीय हाकी मेले में भाग लिया और उसके बाद बैंकाक में हुए एशियाई खेल (1970), बारसेलोना में हुई पहली विश्व कप प्रतियोगिता (1971), म्यूनिख आलम्पिक (1972) और दूसरी विश्व कप प्रतियोगिता, एम्स्टडम (1973) में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

अगस्त 1974 में (जब तहरान में भाग लेने वाली भारतीय हाकी टीम को पटियाला स्थित नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान में प्रशिक्षण दिया जा रहा था) अभ्यास करते हुए बाए घुटने पर मामूली-सी चोट लगी थी जो बढ़ते बढ़ते इतनी बिगड गई कि कुछ डाक्टरो ने घुटना कटवाने तक का सुझाव

दिया। उसके बाद वह इलाज के लिए लदन भी गए, लेकिन उनका घुटना ठीक नही हुआ। इस प्रकार उनका खिलाडी जीवन समय से पहले ही समाप्त हो गया। लेकिन चूकि हाकी उनकी रग रग मे समाई हुई थी इसलिए हाकी के खेल से वह नाता तोड नही पाए और बाद म सीमा सुरक्षा दल की टीम के प्रशिक्षक बन गए।

कार्पोव, अनातोले—कार्पोव का ज म 23 मई 1951 को जियाताउस्ट जिले (चेल्याबिस्क क्षत्र) मे हुआ। उ होने सात साल की उम्र म शतरज सीखना और खेलना शुरू किया और देखते ही देखते उनकी गिनती चोटी के खिलाडियो म होन लगी। 1966 मे (तब उनकी उम्र लगभग 15 वष की ही थी) शतरज के खेल मे उनकी विलक्षण प्रतिभा के कारण उ हे सोवियत सघ की 'मास्टर आफ स्पोट स' की उपाधि से अलकृत किया गया। 1969 मे वह विश्व जूनियर चैम्पियन बने और उ ह अ तरराष्ट्रीय मास्टर की उपाधि मिल गई और उसके एक साल बाद ही वह अ तरराष्ट्रीय ग्रैडमास्टर बन गए।

उसके बाद तो वह एक के बाद एक करके प्रमुख अ तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताए जीतने लगे जैसे मास्को (1971), हेस्टिंग्स (1971 72), सैन एटोनियो (1972), मेड्रिड (1973) जिसमे उ होने चोटी के ग्रडमास्टरो जैसे ओल्फ एडर सन (स्वीडन) बर्न (अमेरिका), एस० गलिगोरिक (यूगोस्लाविया), ब्लास्ती मिल होट (चेकोस्लोवाकिया), बेट लार्सेन (डेनमार्क) ई० मेकिंग (ब्राजील), एल० पोर्टिश (हगरी), डब्ल्यू उन्मान (पूव जमनी) और अपने ही देश के भूत पूव चैम्पियनो तिगरन पत्रोसियान, वासिली स्मीस्लोव, बोरिस स्पास्की और माइकेल ताल को हराया।

1972 मे यूगोस्लाविया, 1974 म फ्रास म हुई प्रतियोगिताओ के कार्पोव को सोवियत सघ की टीम मे शामिल किया गया था। 1973 म युरोपीय प्रति योगिता म भी वह सोवियत सघ की टीम के सदस्य थे।

1974 म उ होने ग्रैडमास्टर लेव पोलुगेवस्की, भूतपूव विश्व चैम्पियन स्पा स्की और चार बार सोवियत सघ के चम्पियन का पद प्राप्त करने वाले विक्टर कोचनोय को हराया। कुल मिलकर 60 बाजियो म कार्पोव 17 बाजिया जीत और केवल तीन हारे। 1978 म उ होने कोचनोय को हरा कर पुन विश्व चम्पि यन का पद प्राप्त किया।

किपचोग केइनो—केइनो ने मक्सिको ओलम्पिक म केनिया की टीम का नेतृत्व किया था। आस्ट्रेलिया के रान क्लार्क और केनिया के किपचोग केइनो की प्रतिद्वद्विता कोई ज्यादा पुरानी नहीं है। लेकिन केइनो ने क्लार्क पर एसा रोब जमा लिया था कि उ ह देखते ही क्लार्क का आत्मविश्वास डगमगाने लगता

था। 1966 म किंगस्टन मे हुई राष्ट्रकुल प्रतियोगिताओ मे कनाक को इस बात का पूरा विश्वास था कि वह 5,000 और 10,000 मीटर की प्रतियोगिताओ मे स्वर्ण पदक प्राप्त करेंगे, मगर वहा उन्हे केनिया के ही दो धावको के आगे घुटने टेकने पडे। राष्ट्रकुल प्रतियोगिताओ मे 5,000 मे केइनो और 10 000 मीटर मे केनिया के ही नफ्तली तेमू बाजी मार ले गए।

मैक्सिको ओलम्पिक खेलों मे 1500 मीटर की दौड मे स्वर्ण पदक प्राप्त करने के बाद केनिया के किपचोग केइनो ने कहा कि मैं अभ्यास के दौरान कुछ अस्वस्थ हो गया था। इसीलिए मैंने 10,000 मीटर की दौड मे हिस्सा नही लिया था। मैक्सिको की ऊचाई को देखते हुए 1500 मीटर को 3 मिनट 34 9 सैकिंड मे तय करना अपने आप मे बहुत बडी बात समझी जाती है। वैसे इस फासले की दौड का विश्व रिकार्ड 3 मिनट 33 1 सैकिंड का है, जो अमेरिका के जिम रिऊन ने स्थापित किया था। जिम रिऊन को इस दौड म दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। मुकाबला खत्म हो जाने के बाद अमेरिका के जिम रिऊन न कहा कि वैसे तो मैं अपनी ओर से बहुत तेज दौडा, लेकिन केइनो न तो कमाल ही कर दिखाया है। केइनो ने 5,000 मीटर के फासले की दौड मे भी रजत पदक प्राप्त किया था। और पेट की गडबडी के कारण 10,000 मीटर मे हिस्सा नही लिया था।

किरमानी, सैयद—जन्म 29 दिसम्बर, 1949। किरमानी ने विकेट के पीछे रहकर जितना कमाल दिखाया है उतना ही विकेट के आगे रहकर भी बल्लेबाजी के साथ ईमानदारी बरती है। कीपिंग मे दक्ष किरमानी ने फारुख इजीनियर के अभाव को लगभग विस्मृत सा कर दिया है। वे स्टेट बैंक आफ इण्डिया की बगलौर शाखा मे कार्यरत है।

टेस्ट खेले 22, पारी 35 अपराजित 5, अर्द्धशतक 5, रन 847, कैच 37, स्टम्प 15।

किशनलाल—पद्मश्री किशनलाल हाकी जगत म 'दादा' नाम से अधिक लोकप्रिय है। उनका जन्म 2 फरवरी, 1917 को महू (मध्य प्रदेश) के मध्यवर्गीय परिवार मे हुआ। किशनलाल ने 21 वर्ष तक राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिताओ म भाग लिया। वह 1935 से 1941 तक मध्य भारत की ओर से, 1942 से 1948 तक बम्बई राज्य की ओर से तथा 1949 से 1957 तक भारतीय रेलवे की ओर से खेले। 1949 से 1956 तक वह भारतीय रेलवे की हाकी टीम के कप्तान रहे।

1948 म लन्दन ओलम्पिक मे भाग लेने वाली भारतीय टीम का चुनाव करते समय निर्वाचन समिति के सामने कठिन समस्या पैदा हो गई थी। देश का विभाजन हो जाने से बहुत-से खिलाडी देश की नई सीमा के उस पार जा रुके थे और यह भय होने लगा था कि वे सब मिलकर विश्व की नई विजेता हाकी टीम

गठित करेंगे। बहुत सोच-विचार करने के बाद टीम का नतृत्व किशनलाल को सौप दिया गया। उन्होंने इस दायित्व का बड़ी कुशलतापूर्वक निर्वाह किया। 1948 मे हाकी मे स्वण पदक प्राप्त करने के लिए जब किशनलाल विजय मच पर खड़े हुए और ब्रिटिश भूमि मे भारत का तिरगा लहराया गया उस समय उनका ही क्या सारे भारतीयो का दिल झूम उठा। कारण यह कि सही अर्थों म यह हमारी पहली राष्ट्रीय विजय थी।

1948 से 1956 तक, यानी 17 वर्षों तक वह देश के सवश्रेष्ठ राइट आउट खिलाड़ी रहे। भारतीय खेल जगत मे उन जैसा निश्छल और सीधा आदमी मिलना मुश्किल है। आजकल किशनलाल रेलवे म हाकी के प्रशिक्षक ह।

कुराश—कुराश कुश्ती की उजबेक पद्धति है, जो जूडो से बहुत कुछ मिलती जुलती है। इसके साथ ही कुराश मे फेंकने, पकडने और गिरान की अपनी विशिष्ट युक्तिया है। यह कुश्ती मध्य एशिया म प्राचीन काल से प्रचलित है। यह बुखारा व खोरेज्म नखलिस्तानो म तथा फेर्गाना घाटी (उजबेकिस्तान) म विशेष रूप स लोकप्रिय है।

उजबेक राष्ट्रीय पोशाक पहने दो खिलाड़ी अखाडे म उतरते हैं। हाथ मिलाने के बाद वे रेफी का सकेत पाने पर एक-दूसरे को पेटी से खीचत है। एक दूसरे को सिरो से छूते हुए दोनो पहलवान धीरे धीरे कुश्ती शुरू करते हैं। अचानक ही एक पहलवान एक युक्ति आजमाता है और अपन प्रतिद्वन्द्वी को जमीन पर पटक देता है।

वर्षों पहले कुराश मे चन्द लोग ही शामिल होते थ और लम्बे अन्तरालो के बाद प्रतियोगिताए होती थी। सम्प्रति इस खेल मे नियमित रूप से प्रतियोगिताए आयोजित की जाती है और काफी सख्या मे दशक उपस्थित होत हैं। कुराश को हाल ही मे माध्यमिक स्कूलो के पाठयक्रम मे, बच्चो के लिए खेल-स्कूलो के काय क्रमो म तथा कालेज पाठ्यक्रम म शामिल किया गया है। शारीरिक व्यायाम का उजबेक राज्य सस्थान कुराश प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित कर रहा है।

कुश्ती—कुश्ती के खेल का इतिहास बहुत पुराना है। इसलिए यह बता सकना काफी मुश्किल है कि कुश्ती का खेल कब और कैसे शुरू हुआ। इस खेल की शुरआत सबसे पहले भारत मे हुई और उसके बाद कुश्ती कला का प्रसार ईरान, रोम और दुनिया के दूसरे भागो मे हुआ। प्राचीन भारत म कुश्ती को मल्लविद्या कहा जाता था। ऐतिहासिक प्रमाणो के अनुसार यूनान म ईसा से पूव सन 708 मे ओलम्पिक खेलो मे कुश्ती प्रतियोगिता का लेखा मौजूद है। पर यूनान के पास यदि एक हरकुलीस है तो भारत के पास ऐसे कई हरकुलीस है।

कहते है कि 1938 मे कयाफ्जी (बगदाद) नामक स्थान पर खुदाई के दौरान कुछ पत्थर निकले, जिनपर 5 000 वष पूव के कुश्ती सम्बन्धी आलेख व आंकड़े

खुदे हुए थे। उन शिलालेखो के अनुसार कुश्ती की शुरुआत भारत मे हुई। इसके बाद यह कला ईरान गई, ईरान से रोम और फिर विश्व के दूसरे भागो मे कुश्ती-कला का प्रसार हुआ।

कहा जाता है कि शुरू-शुरू म इस खेल का स्वरूप बिल्कुल अवैज्ञानिक और करीब करीब जगली था। तब तक इस खेल के नियम और उप नियम भी तैयार नही किए गए थे। पहलवान 'जय बजरगबली' या 'वाहे गुरु की फतह' का उच्चारण कर आपस मे पिल पडते थे। जो जिसको चित कर देता बस उसे ही विजेता घोषित कर दिया जाता। उस जमाने मे न तो वजन के आधार पर पहलवानो का वर्गीकरण किया जाता था और न समय की ही कोई सीमा होती थी। कुश्ती के कोई निश्चित नियम भी नही थे। इसीलिए 1896 म जब एथेंस मे ओलम्पिक खेलो का आयोजन किया गया तो कुछ ऐसे नियम बनाए गए जो सब जगह समान रूप से लागू किए जा सके।

भारत के प्राचीन ग्रथो—रामायण और महाभारत—मे भी कुश्ती-कला का उल्लेख हुआ है। यहा तक कि हनुमान, बाली, सुग्रीव, भीम और बलराम जैसे योद्धाओ का चित्रण भी महान पहलवानो के रूप मे ही किया गया है। कहा जाता है कि भारतीय कुश्ती के दाव-पेचो की शुरुआत महाभारत काल से ही शुरू हो गई थी। महाभारत के विराट पर्व म भीम और जरासध पहलवानो की मुठभेड का अच्छा खासा वर्णन है। रावण के दरबार म अनेको मल्ल योद्धा थे। पौराणिक कथाओ म जामव त, हनुमान जरास ध और भीम जैसे नायको की कुश्ती तकनीको का विस्तार से वर्णन किया गया है। मुगल बादशाहो को भी कुश्ती के खेल से विशेष दिलचस्पी थी। सरदार, जमीदार और राजे-महाराजे अपने यहा बडे-बडे पहलवानो को सरक्षण देते और बडी बडी कुश्तियो का आयोजन करवाते। उत्सव, मेले या त्योहार के अवसर पर भी बडे बडे दगलो का आयोजन किया जाता था।

1900 के दौरान भारत मे गामा, इमामबख्श, करीमबख्श, रहीम सुल्तानीवाला, गेंदासिह तथा कीकरसिह आदि कई नामी पहलवान हुए जिन्हे 'रुस्तम-ए-हिन्द' और 'रुस्तम ए-जहान' का पद प्राप्त हुआ। सन् 1892 मे करीमबख्श ने इग्लैंड के टाम कनन को और सन् 1900 म गुलाम ने पेरिस म तुर्की के कादर अली को हराया था। 1910 म गामा, इमामबख्श और अहमदबख्श तथा गामू इग्लैंड गए थे। इग्लैंड म आयोजित कुश्ती प्रतियोगिता मे इन पहलवानो को ले जाने का श्रेय शरत कुमार मिश्र को है, जिन्होने सभी पहलवानो का खर्च स्वय वहन किया था। लेकिन कुश्ती के क्षेत्र म जितनी ख्याति और गौरव गामा को प्राप्त हुआ उतना दुनिया के किसी अन्य पहलवान को प्राप्त नही हुआ। 'रिंग' नामक पत्रिका ने गामा को विश्व के चोटी के 15 पहलवानो मे प्रमुख स्थान

दिया था। सच तो यह है कि उनमे असाधारण शक्ति थी। उनके कुश्ती का ढग और उनके दाव पेच और आक्रमण की शक्ति और क्षमता देखते ही बनती थी। कहते है, गामा ने दुनिया के सभी पहलवानो को चुनौती दे दी थी कि कोई भी पहलवान उनके सामने पाच मिनट से ज्यादा देर नही टिके रह सकता। कहते है कि तीन पहलवानो ने गामा की इस चुनौती को स्वीकार किया और उनमे से कोई भी दो मिनट से ज्यादा देर तक उनके सामने नही टिक सका। एक बार पटियाला मे गामा और जैबिस्को की कुश्ती हुई। आज भी कई कुश्ती प्रेमियो के दिलो म उस कुश्ती की याद ताजा हो आती है। इधर दोनो पहलवानो ने हाथ मिलाए और उधर दशको ने पलक झपकने के बाद देखा कि गामा जैबिस्को की छाती पर चढा बैठा है।

यहा यह बता देना भी उचित होगा कि गामा के पिता और बाबा भी अपने जमाने के मशहूर पहलवान थे। गामा का कद 5 फुट 7 इच और वजन 250 पौंड के लगभग था। 1910 मे ल दन म हुई विश्व प्रतियोगिता मे गामा ने दो मिनट से भी कम समय मे एक एक करके 15 पहलवानो को चित कर दिया था। अमेरिका के चोटी के पहलवान रोवर को गामा 15 मिनट से कम समय म 13 बार चित कर चुके थे।

ब्रिटिश शासन काल मे भी बडे बड़ जमीदारो और जागीरदारो को अपने यहा बडे बडे पहलवान रखने का शौक था। स्वर्गीय प्रधानमन्त्री श्री जवाहर लाल नेहरू के पिता मोतीलाल नेहरू को भी कुश्ती के खेल से विशेष दिलचस्पी थी। वह सन 1900 मे गुलाम पहलवान को अपने खर्च से पेरिस ले गए थे। जहा गुलाम पहलवान ने अन्तरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त की और भारत का नाम रोशन किया। उसके दस साल बाद गामा और उनके भाई इमामबख्श ने लदन मे दुनिया के सभी पहलवानों को एक एक करके चित किया।

1930 म विभिन्न कारणो से कुश्ती-कला की लोकप्रियता कुछ कम होने लगी। इसके कई कारण थे। देश की आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितिया बदलने लगी। पहलवानो को प्रश्रय देने की प्रथा धीरे धीरे कम होने लगी। 1934 *से पहले तक अधिकाश भारतीय पहलवान पेशेवर होते थे, यानी वह कुश्ती लडने* से पहले ही पैसे खरे करवा लेते थे। 1948 म भारत म भारतीय कुश्ती बोर्ड की स्थापना हुई और दस वर्ष के अन्दर ही उसने अपना प्रथम पुरस्कार प्राप्त कर लिया। सन् 1958 म कार्डिफ म हुए राष्ट्रकुल खेलो मे लीलाराम व लक्ष्मीकान्त ने क्रमश एक स्वर्ण पदक व रजत पदक जीता। कुछ ही [illegible] ...नवरा म दो स्वर्ण पदक जीते। 1960 की रोम ओलम्पिक प्रतियो[illegible] लाइट हैवी वेट प्रतियोगिता म 7वा तथा माधोसिंह मिडिल वेट [illegible] स्थान प्राप्त कर सके। एक वर्ष बाद याकोहामा म सम्पन्न [illegible] । म

उदयचन्द ने लाइट वेट मे एक कास्य पदक प्राप्त किया। विश्वम्भरसिंह हैवी वेट म छठे तथा सुरभजन लाइट हैवी वेट म सातवें स्थान पर रहे। 1962 की एशियाई प्रतियोगिताओ मे यह प्रतियोगिताए जकार्ता मे हुई, भारत ने सात सदस्यो की एक टीम भेजी और सभी ने पुरस्कार प्राप्त किया। तोक्यो ओलम्पिक म विशम्भर फैदर वेट वग की कुश्ती म छठे स्थान पर रह। 1965 म मैनचेस्टर म हुई प्रतियोगिता म बिशम्भरसिंह को चौथा स्थान प्राप्त हुआ। 1966 म बैंकाक म भारत के आठ पहलवानो न हिस्सा लिया और हर पहलवान कोई न कोई पदक लेकर लौटा। 1967 मे नई दिल्ली मे हुई विश्व कुश्ती प्रतियोगिता म मे विशम्भरसिंह ने रजत पदक प्राप्त किया।

भारत मे सदा से ही मिट्टी के अखाडो पर दगल लडन की प्रथा और परम्परा रही है। भारतवष म गद्दो पर कुश्ती लडने का अभ्यास बहुत कम किया गया पर आजकल बडी-बडी अतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ का आयोजन गद्दो पर ही किया जाता है। गत कुछ वर्षो म भारतीय पहलवानो ने अपन स्टाइल और तकनीकी का काफी विकास किया है। प्राचीन काल की कुश्ती (मल्लविद्या) और आधुनिक कुश्ती मे काफी अन्तर है। कुश्ती के नियमो और उप नियमो म भी भारी परिवतन हुए हैं। एसे दाव पचो को जिससे शरीर के किसी अग के टूट जान या जख्मी हो जाने का भय हो अवैध करार किया गया। जैसे सिर को कैची मे फसाकर पीडा पहुचाना वर्जित कर दिया गया, क्योकि अक्सर देखा गया है कि इस दाव म फसा पहलवान कई बार दद से घबराकर आत्म समपण कर बैठता है। भारतीय ढग की कुश्ती म लगोट पकडना वध होता है और इसीलिए लगोट और कच्छा बहुत कसकर बाधा जाता है। मगर ओलम्पिक फ्री स्टाइल कुश्ती म यानी ग्रीको रोमन (यूनानी-रामन) कुश्ती म टागो को पकडने की इजाजत नही होती और सभी दाव कमर से ऊपर के हिस्से म लगाने पडत हैं।

कल तक हम आप जिस 'दगल' कहते थे आज हम उसे 'फ्री स्टाइल कुश्ती' कहते है। कल तक दगल अखाडो म होते थे, मगर आज कुश्ती गद्दो पर होती है। कल तक पहलवान अपने बूटो को अखाडो से कोसो दूर रखते थे, मगर आज वह बिना बूट के तसम कसे मैदान म नही घुस सकते। कल और आज मे कितना फक हो गया है! आज के पहलवान को न तेल मालिश की जरूरत है, न डड-बैठक की, पुराने दाव-पेचो को जानने वाले पहलवान को अब दकियानूसी कहा जाता है। अब उसे न तो 'जय बजरगबली' कहने की जरूरत है, न अखाडे की मिट्टी से अपना माथा स्पश करने की।

आज जिस कुश्ती को ओलम्पिक नियमावली के अनुसार दुनिया से सभी देशो मे मान्यता प्राप्त है उसे फ्री-स्टाइल कुश्ती कहा जाता है और यह भारतीय कुश्ती का ही एक सशोधित एव सवर्धित रूप है। इस कुश्ती मे न तो पहलवान अपने

शरीर पर तेल, ग्रीस या किसी अ य चिकने पदार्थ का लेप न र सकता है और न ही अपने प्रतिद्वन्द्वी की गदन पर घुटना रख सकता है और न ही उसका जांघिया पकड सकता है। प्रत्येक कुश्ती 9 मिनट की होती है, जिसम तीन-तीन मिनट पश्चात एक एक मिनट का विश्राम दिया जाता है। यदि 9 मिनटो म हार जीत का निणय न हो सके यानी कोई भी पहलवान अपने प्रतिद्वन्द्वी के दोनो कन्धो को गद्दा पर एक साथ स्पश न करवा सके तो अको के आधार पर विजेता की घोषणा कर दी जाती है। ओलम्पिक खेलो और दूसरी विश्व कुश्ती प्रतियोगिताओ मे अ तरराष्ट्रीय कुश्ती सघ (फीला) का ही निय त्रण होता है और सभी को इस सघ द्वारा निर्धारित नियमो का पालन करना होता है।

हर पहलवान को अपने वग के पहलवान के साथ ही कुश्ती लडनी होती है। वजन के आधार पर पहलवानो का वर्गीकरण किया जाता है। जैसे

फ्लाई वेट	52 किलो तक (114 5 पौंड)
बैंटम वेट	57 किलो तक (125 5 पौंड)
फेदर वेट	63 किलो तक (139 9 पौंड)
लाइट वेट	70 किलो तक (154 0 पौंड)
वेल्टर वेट	78 किलो तक (171 5 पौंड)
मिडिल वेट	87 किलो तक (191 5 पौंड)
लाइट हैवी वेट	97 किलो तक (213 5 पौंड)
हैवी वेट	97 किलो स ज्यादा चाहे कितना

भारतीय कुश्तियो का लेखा-जोखा

अर्जुन पुरस्कार विजेता पहलवान

1961	उदय चन्द	सेना
1962	मालवा	पजाब
1963	गणपत अण्डालकर	महाराष्ट्र
1964	बिशम्भरसिंह	रेलवे
1965	—	—
1966	भीमसिंह	सेना
1967	मुख्तियार सिंह	सेना
1968	—	—
1969	मास्टर च दगीराम (भारतीय ढग की कुश्ती)	हरियाणा
1970	—	—
1971	सुदेश कुमार	दिल्ली

प्रेमनाथ	दिल्ली
जगरूप सिंह	हरियाणा
सतपाल	दिल्ली

हिन्द केसरी

ता का नाम	विजेता का स्थान	प्रतियोगिता का आयोजन
न्द्र	इन्दौर	हैदराबाद
न खानचनाले	कोल्हापुर	दिल्ली
ा अण्डाल्कर	कोल्हापुर	दिल्ली
।र सिंह	पंजाब	अजमेर
र चन्दगीराम	दिल्ली	दिल्ली
योगिता का आयोजन नही हुआ)		
सिंह	दिल्ली	पटना
योगिता का आयोजन नही हुआ)		
ा माने	कोल्हापुर	करनाल
ीन	राजस्थान	जबलपुर
ा पटेल	कोल्हापुर	अहमदाबाद
र चन्दगीराम	हरियाणा	रोहतक
न्त सिंह	(के० सु० पुलिस)	कानपुर
ाथ सिंह	महाराष्ट्र	नागपुर
योगिता का आयोजन नही हुआ)		
र चन्दगीराम	हरियाणा	इन्दौर
।योगिता का आयोजन नही हुआ)		
। मुतनाले	कर्नाटक	बंगलौर
ाल	दिल्ली	रोहतक

भारत केसरी

मास्टर चन्दगीराम	हरियाणा
मास्टर चन्दगीराम	हरियाणा
मेहरदीन	राजस्थान
विजय कुमार	पंजाब
।योगिता का आयोजन नही हुआ)	
नेत्रपाल	सेना
। का ... ी हुआ)	
	दिल्ली

भारत कुमार

1969	मुरारी लाल	दिल्ली
1970	जगदीश मित्तल	दिल्ली
1971	विजय कुमार	पजाब
1972	(प्रतियोगिता का आयोजन नही हुआ)	
1973	सतपाल	दिल्ली
1974	(प्रतियोगिता का आयोजन नही हुआ)	
1975	करतार सिंह	दिल्ली

रुस्तम ए हिन्द

1948	केसर सिंह	पजाब
1968	मेहरदीन	राजस्थान
1969	चन्दगीराम	हरियाणा
1970	सज्जन सिंह	सेना
1971	सुखवन्त सिंह	पुलिस
1972	हरीशचन्द्र विराजदार	महाराष्ट्र
1973	दादू चौगले	महाराष्ट्र
1974	सतपाल	दिल्ली
1975	सतपाल	दिल्ली

महान भारत केसरी

1972	चन्दगीराम	हरियाणा	दिल्ली
1973	दादू चौगले	महाराष्ट्र	दिल्ली
1976	सतपाल	दिल्ली	दिल्ली

भारत भीम

1969	चन्दगीराम	हरियाणा	लखनऊ
1970	चन्दगीराम	हरियाणा	लखनऊ

के० डी० सिंह 'बाबू' (कुवर दिग्विजय सिंह 'बाबू')—कुवर दिग्विजय सिंह 'बाबू' को ध्यानचन्द के युग के बाद का सबसे अच्छा राइट इन खिलाडी माना जाता है। 1952 मे हेलसिंकी ओलम्पिक खेलो मे उन्होंने भारतीय टीम का नेतृत्व किया था। उन्होंने 1948 के लन्दन ओलम्पिक खेलो म उप-कप्तान के रूप मे भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया था। तब पद्मश्री किशनलाल भारतीय टीम के कप्तान नियुक्त किए गए थे। किशनलाल और बाबू का राइट आउट और राइट इन का जो जोड था वसा जोड भारतीय हाकी म फिर कभी दिखाई नही दिया। सच तो यह है कि खेल के मैदान म बाबू और किशनलाल एक दूसरे के मन की बात जानने में जुडवें भाइयों जैसे थे। बाबू जानते थे कि

किशन अब कहा गेंद फेंकने वाले है और किशनलाल यह जानते थे कि बाबू से गेंद हासिल करने के लिए मुझे कहा पहुचना चाहिए। बाबू को आगे बढाने मे किशनलाल का भी बहुत हाथ है। किशनलाल जानते थे कि उन्हें 1952 की ओलम्पिक टीम मे भी शामिल कर लिया जाएगा, लेकिन वह बाबू को कप्तान बनाना चाहते थे, इसलिए वह ट्रायल मैचो से दूर रहे। बाबू को भारत सरकार ने पदमश्री से भी अलकृत किया। भारतीय हाकी के गिरते स्तर से बाबू काफी परेशान थे।

इसे भारतीय हाकी का दुर्भाग्य ही माना जाना चाहिए कि विश्वविख्यात खिलाडी कुवर दिग्विजय सिह 'बाबू' ने 27 माच, 1978 को सुबह 5 बजे अपने आपको गोली मारकर आत्महत्या कर ली। 55 वर्षीय 'बाबू' पिछले पाच छह महीनो से मानसिक रोग से ग्रस्त थे। उनका जन्म 2 फरवरी, 1923 मे लखनऊ के निकट बाराबकी मे हुआ था।

1968 और 1972 मे बाबू को भारतीय टीम का प्रशिक्षक नियुक्त किया गया था। 1958 म उन्हे पद्मश्री से भी अलकृत किया। 1974 से वह उत्तर प्रदेश के खेलकूद निदेशक रहे। 1952 मे हेल्म पुरस्कार प्राप्त करने वाले वह पहले एशियाई खिलाडी थे। वह देश के सवश्रेष्ठ 'इन साइड राइट' माने जाते थे।

केनेथ पावेल—मैसूर के मशहूर धावक केनेथ पावेल आजकल रेलवे मे काम करते हैं। भारत सोवियत अन्तरराष्ट्रीय एथलेटिक प्रतियोगिता से पूर्व पटियाला प्रशिक्षण शिविर मे पावेल ने 100 मीटर की दौड को 10 4 सैकिंड मे और 200 मीटर की दौड को 21 4 सकिंड मे पूरा किया था। केनेथ पावेल गत वर्षों मे विदेशो का दौरा करने वाली भारतीय एथलेटिक टीमो के नियमित सदस्य रहे। इन्होने पश्चिम जमनी, हालैंड, स्विट्जरलैंड और कई अन्य देशो का भी दौरा किया।

कोप्स, इरलैंड—'बैडमिंटन के खेल मे दुनिया के सवश्रेष्ठ खिलाडी किसे कहा जा सकता है?' इस प्रश्न का उत्तर देते हुए बैडमिंटन के पुराने उस्ताद हबट शील ने एक बार कहा था—"वसे तो किसी खेल विशेष मे चोटी के खिलाडियो मे तुलना करना अपन आप मे बहुत कठिन काम होता है फिर भी वह इतना तो कहा ही जा सकता है कि यदि आप बैडमिंटन की सिगल्स प्रतियोगिता की बात करें तो डेविड फ्रीमैन को बैडमिंटन का सबश्रेष्ठ खिलाडी कहा जा सकता है और यदि आप बैडमिंटन के हरफनमौला सवश्रेष्ठ खिलाडी का नाम जानना चाहें तो डेनमाक के इरलैंड कोप्स का नाम लिया जा सकता है। यही ठीक है कि फ्रीमैन का 10 वर्षों तक सिगल्स प्रतियोगिता में दुनिया का कोई भी खिलाडी हरा नही सका, लेकिन इसपर भी वह इतनी बहुगुणी प्रतिभा का खिलाडी नही था जितना कि कोप्स है। कोप्स बैडमिंटन

की सिंगल्स और डबल्स दोनो मे ही लाजवाब खेलता है।"

डेविस फ्रीमैन और इरलैंड कोप्स के अतिरिक्त मलयेसिया के बेंग पोग सून को भी काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई। उसके बारे मे तो यह कहा जाता है कि वह कोट के मध्य खडा हो जाता और वही से बिना ज्यादा इधर-उधर भागे खेलता रहता। उसको भुजाए इतनी लम्बी थी कि कोट के मध्य से ही सभी जगह उसकी पहुच होती है।

फ्रीमैन के बाद बेंग पोग सून का युग आया और उसके बाद डेनमाक के दढियल खिलाडी इरलड कोप्स का युग शुरू होता है। 1945 मे कोप्स ने 9 वप की उम्र मे ही बैडमिटन मे अपने हाथ दिखाने शुरू कर दिए थे। डेनमाक मे बैडमिटन का खेल काफी लोकप्रिय है। कोप्स ने 1957 मे अन्तरराष्ट्रीय मैचो मे हिस्सा लेना शुरू कर दिया था और 1960 मे तो वह अखिल इग्लड बैडमिटन प्रतियोगिता का चैम्पियन बन गए थे। उसके बाद से उनकी जीत का जो सिलसिला शुरू हुआ वह अब तक चलता आ रहा है। कोप्स अब तक कई देशो मे अपने खेल का प्रदशन कर चुके हैं और दुनिया मे अपना और अपने देश का नाम रोशन कर चुके हैं। वह अब तक यूरोप, अमेरिका, कैनाडा, फ्रास, स्वीडेन और पश्चिमी जमनी की सभी प्रतियोगिताए जीत चुके हैं।

कोप्स बैडमिटन के जन्मजात खिलाडी है। वह बैडमिटन के खेल का दिन रात अभ्यास करते हो, ऐसा नही है। आजकल वह अपने व्यावसायिक जीवन मे काफी व्यस्त हैं और अभ्यास के लिए बहुत कम समय जुटा पाते हैं। लेकिन इसकी उन्हें जरा भी चिन्ता नही। उनका कहना है—"अब तो मैं उस अवस्था पर पहुच चुका हू जहा मुझे अभ्यास की जरूरत महसूस नही होती। अब तो सप्ताह भर मे एक गेम खेलना ही मेरे लिए काफी है।"

कोलेहमनेन—स्टाकहोम ओलम्पिक मे एक ऐसे महान एथलीट का उदय हुआ, जिसने एथलेटिक्स की दुनिया मे अपने देश फिनलैंड के लिए लम्बी दूरी के उत्कृष्ट धावको की शानदार परम्परा शुरू की। यह एथलीट था—हास कोलेहमैनेन, जिसने 1912 के ओलम्पिक खेलो मे 5 हजार मीटर दौड, 10 हजार मीटर दौड और 1,000 मीटर क्रास-कट्री दौड मे स्वण पदक जीते। पावो नूर्मी के आदर्श कोलेहमैनेन ने 1920 के एटवर्प खेलो मे मैराथन मे भी स्वण पदक जीता था। 3 हजार मीटर से 30 हजार मीटर तक की विभिन्न दौडों म अनेक विश्व रिकार्ड कायम करने वाले कोलेहमैनेन का जन्म दिसम्बर 1889 मे और मृत्यु जनवरी 1966 में हुई थी।

क्राफोर्ड, हैसली—जिस धावक को आज 'दुनिया का सबसे तेज दौडाक' कहलवाने का गौरव प्राप्त है वह बचपन म थोडी-सी मिठाई या ट्राफी प्राप्त करने के लिए त्रिनिडाड की गलियो मे दौडा करता था। लेकिन 1976 म

माट्रियल ओलम्पिक मे स्वण पदक प्राप्त करके उसने अपना और अपने देश का नाम ऊचा कर दिया। सान फेरनाडो के एक निधन परिवार मे जन्मे क्राफोड ने आठ वप की उम्र से ही ओलम्पिक चैंम्पियन बनने का सपना देखना शुरू कर दिया था। लेकिन इस सफलता के लिए उन्हे कितनी साधना करनी पडी यह सिफ वही जानते हैं। शुरू शुरू मे उन्हे कई असफलताओ का भी सामना करना पडा।

क्राफोर्ड का, जो एक औद्योगिक सस्थान मे डिजाइन बनाते हैं, कहना है कि हम लोग 11 भाई-बहन थे। हम लोग बहुत गरीब थे। जब मैं छह साल का था तो मैंने ट्राफी प्राप्त करने के लिए दौड लगाई थी। वह ट्राफी या मिठाई उसी बच्चे को मिलती थी जो दौड मे प्रथम आता था।

1970 में जब वह राष्ट्रकुल खेलो मे भाग लेने के लिए एडिनबग पहुचे तो वहा उनको दौडते हुए देखकर 'ईस्टर्न मिचिगन विश्वविद्यालय' ने उन्हे छात्रवत्ति देने का फैसला किया। जिससे उन्हे वैज्ञानिक ढग से प्रशिक्षण मिलने लगा। जिन दिनो वह ओलम्पिक की तैयारी मे जुटे थे, उन दिनों उनकी कम्पनी ने, जहा वह काम करते हैं, दो महीने की तनख्वाह नही दी। 'लेकिन मुझे तो बस एक ही धुन सवार थी। तनख्वाह की चिंता छोड़ मैंने अपना अभ्यास जारी रखा।'

क्रिकेट—क्रिकेट का खेल दो टीमो मे खेला जाता है और हर टीम मे ग्यारह ग्यारह खिलाडी होते हैं। यह खेल एक बडे मैदान मे खेला जाता है और इस मैदान के बीच मे एक 'पिच' बनाया जाता है जो 22 गज लम्बा और 10 फुट चौडा होता है। इसके दोनो तरफ 28 इच ऊचे तीन 'स्टम्प' लगे रहते हैं और इन स्टम्पो के बीच दो 'गिल्लिया' लगी रहती हैं। ये तीनो स्टम्प इतने पास पास गाडे जाते हैं जितने मे से गेंद न गुजर सके। गेंद की परिधि 9 इच होती है। क्रिकेट का गेंद एक खास ढग का होता है, जिसका भार 5 5 औंस से कम और 5 75 औस से अधिक नही होता। हर टीम का अपना एक कप्तान होता है, जो इन ग्यारह खिलाडियो मे ही शामिल होता है। इसके अलावा दो अम्पायर होते हैं, जिनका फैसला दोनो टीमो को मान्य होता है। दोनो टीमो मे से कौन सी टीम पहले खेलेगी इसका फैसला सिक्के की उछाल से, जिसे 'टॉस' कहते हैं, किया जाता है। जिस टीम का कप्तान टॉस जीत जाता है, वह यदि चाहे तो पहले खेल शुरू कर सकता है। दसवें खिलाडी के आउट होते ही सारी टीम को आउट हुआ मान लिया जाता है। और इस बीच उस टीम ने जितने भी रन बनाए होते हैं वह उसके आगे जोड दिए जाते हैं और कहा जाता है कि अमुक-अमुक टीम ने अपनी पहली पारी मे इतने रन बनाए हैं।

अमरनाथ ने 1933-34 की शृखला मे बम्बई टेस्ट मे लगाया। यह लाला अमरनाथ का पहला टेस्ट शतक था और भारतीय भूमि पर यह पहला टेस्ट मैच था। भारत ने इग्लैंड के विरद्ध पहली टेस्ट विजय 1951 52 की शृखला मे विजय हजारे के नेतत्व मे मद्रास टेस्ट मे एक पारी तथा 4 रन से पाई। यह भारत की पहली पारी विजय थी। भारत ने अपनी एक मात्र पारी में 9 विकेट पर 457 रन बनाए जिसमें पकजराय ने 111 रन व पाली उमरीगर के अविजित 130 रन थे। वह अब तक का भारत का सर्वोच्च स्कोर था तथा पाली उमरीगर का पहला टेस्ट शतक। 1961 62 शृखला में भारत ने इग्लैंड को एक भी टेस्ट नही जीतने दिया। नारी काट्रेक्टर के नेतत्व में भारत ने 2 मैच जीत तथा तीन मैच बराबर छूटे। भारत ने इग्लैंड की भूमि पर पहली टेस्ट विजय 1971 की शृखला ओवल टेस्ट मे इग्लैंड का 4 विकेट से हरा कर पाई। इग्लैंड ने पहली पारी मे 355 रन तथा दूसरी पारी म 101 रन बनाए। भारत ने अपनी दोनो पारियो मे क्रमश 284 रन तथा 6 विकेट पर 174 रन बनाए। इस शृखला का नेतत्व अजीत वाडेकर ने किया। 3 टेस्टो की यह शृखला भारत ने 1 0 से जीती। सन् 1932 से लेकर 1974 तक भारत ने इग्लैंड के विरद्ध 13 टेस्ट शृखलाए खेली। 1974 की 13वी शृखला भारत के लिए दुर्भाग्यशाली रही। 1971 मे विश्व क्रिकेट मे छा जाने वाला भारत 1974 मे इग्लैंड से 3 0 से हारा। अब तक भारत इग्लैंड के विरुद्ध 53 टेस्ट मैच खेल चुका है, जिसमे 7 मैच भारत ने जीते 25 हारे व 21 बराबर रहे।

भारतीय क्रिकेट टेस्ट का इतिहास एक नजर मे

वष	जिसके विरुद्ध टेस्ट खेला गया	देश मे या विदेश मे	खेले गए टेस्ट	जीते	बराबर	हारे
1932	इग्लड	विदेश म	1	0	0	1
1933 34	इग्लैंड	देश मे	3	0	1	2
1936	इग्लैंड	विदेश मे	3	0	1	2
1946	इग्लैंड	विदेश म	3	0	2	1
1947-48	आस्ट्रेलिया	विदेश मे	5	0	1	4
1948-49	वेस्टइडीज	देश मे	5	0	4	1
1951 52	इग्लड	देश में	5	1	3	1
1952	इग्लैंड	विदेश मे	4	0	1	3
1952-53	पाकिस्तान	देश मे	5	2	2	1
1953	वेस्टइडीज	विदेश मे	5	0	4	1
1954-55	पाकिस्तान	विदेश मे	5	0	5	0

वर्ष	जिसके विरुद्ध टेस्ट खेला गया	देश मे या विदेश मे	खेले गए टेस्ट	जीते	बराबर	हारे
1955-56	न्यूज़ीलैंड	देश मे	5	2	3	0
1956	आस्ट्रेलिया	देश मे	3	0	1	2
1958-59	वेस्टइंडीज़	देश मे	5	0	2	3
1959	इंग्लैंड	विदेश मे	5	0	0	5
1959 60	आस्ट्रेलिया	देश मे	5	1	2	2
1960-61	पाकिस्तान	देश मे	5	0	5	0
1961 62	इंग्लैंड	देश मे	5	2	3	0
1962	वेस्टइंडीज़	विदेश मे	5	0	0	5
1963 64	इंग्लैंड	देश म	5	0	5	0
1964	आस्ट्रेलिया	देश मे	3	1	1	1
1965	न्यूज़ीलैंड	देश मे	4	1	3	0
1966-67	वेस्टइंडीज़	देश मे	3	0	1	2
1967	इंग्लैंड	विदेश मे	3	0	0	3
1967 68	आस्ट्रेलिया	विदेश मे	4	0	0	4
1968	न्यूज़ीलैंड	विदेश मे	4	3	0	1
1969	न्यूज़ीलैंड	देश मे	3	1	1	1
1969	आस्ट्रेलिया	देश मे	5	1	1	3
1971	वेस्टइंडीज़	विदेश मे	5	1	4	0
1971	इंग्लैंड	विदेश मे	3	1	2	0
1972	इंग्लैंड	देश मे	5	2	2	1
1974	इंग्लैंड	विदेश मे	3	0	0	3
1977	आस्ट्रेलिया	विदेश मे	5	2	0	3
1978	पाकिस्तान	विदेश मे	3	0	1	2
1978-79	वेस्टइंडीज़	देश मे	6	1	5	0

टेस्ट मैचो मे भारत कुछ महत्त्वपूर्ण आकड़े

पहली टेस्ट शृंखला—1932 मे इंग्लैंड के विरुद्ध इंग्लैंड मे।

देश	शृंखलाएं	टेस्ट	जीते	हारे	बराबर
इंग्लैंड के विरुद्ध	13	53	7	25	21
आस्ट्रेलिया के विरुद्ध	7	30	5	19	6
वेस्टइंडीज़ के विरुद्ध	8	37	4	17	16
न्यूज़ीलैंड के विरुद्ध	6	22	10	3	9
पाकिस्तान के विरुद्ध	4	18	2	3	13

टेस्ट मैचों मे त्रिशतक (300 से अधिक रन) बनाने वाले बल्लेबाज

365*—गरी सोवस (वेस्टइडीज) ने 1957 58 म किंग्स्टन मे पाकिस्तान के विरुद्ध खेलते हुए।

364—एल० हटन (इग्लैंड) ने 1938 मे ओवल (लन्दन) मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए।

337—हनीफ मोहम्मद (पाकिस्तान) ने 1957 58 मे ब्रिजटाउन म वेस्टइडीज के विरुद्ध खेलते हुए।

336*—डब्ल्यू० आर० हैमड (इग्लैंड) ने 1932 33 म ओकलैंड में न्यूलैंड के विरुद्ध खेलते हुए।

334—डान ब्रैडमैन (आस्ट्रेलिया) ने 1930 मे लीडस मे इग्लैंड के विरुद्ध खेलते हुए।

325—ए० सन्धाम (इग्लड) ने 1929 30 मे किंग्स्टन मे वेस्टइडीज के विरुद्ध खेलते हुए।

311—आर० बी० सिम्पसन (आस्ट्रेलिया) ने 1964 मे मानचेस्टर म इग्लैंड के विरुद्ध खेलते हुए।

310*—जे० एच० एडरिच (इग्लड) ने 1965 मे लीड्स मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध खेलते हुए।

307—आर० एम० काउपर (आस्ट्रेलिया) ने 1965 66 मे मेलबोन म इग्लैंड के विरुद्ध खेलते हुए।

304—डान ब्रैडमैन (आस्ट्रेलिया) ने 1934 मे लीडस मे इग्लैंड के विरुद्ध खेलते हुए।

302—लारेंस रोव (वेस्टइडीज) ने 1973 74 म ब्रिजटाउन में इग्लड के विरुद्ध खेलते हुए।

क्रिकेट के इतिहास मे पहले-पहल की बातें

(1) पहला टेस्ट मैच—15 मार्च, 1877 को। (आस्ट्रेलिया—इग्लड)

(2) पहला टेस्ट—मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में।

(3) पहला रन—चार्ल्स बैनरमैन (आस्ट्रेलिया)।

(4) पहला विकेट—हिल (इग्लड)।

(5) पहला विकेट क्सिका—टाम्सन (आस्ट्रेलिया)।

(6) पहली जीत—45 रन (आस्ट्रेलिया)।

(7) पहला ओवर—अल्पेडशा (इग्लैंड)।

---

*जो अन्त तक अविजित रहे।

(8) पहला टेस्ट शतक—बैनरमैन (165 रन) (आस्ट्रेलिया—1877)।

(9) पहला दोहरा टेस्ट शतक—मुर्डोच (211 रन) (आस्ट्रेलिया—1880)

(10) 99 पर आउट पहला खिलाड़ी—क्लेम हिल (आस्ट्रेलिया—1901-2)।

(11) सबसे कम रनो से—पहली जीत (आस्ट्रेलिया के विरुद्ध इग्लैंड) (3 रन) (1902)।

(12) सबसे अधिक रनो से—पहली जीत (इग्लैंड के विरुद्ध आस्ट्रेलिया) (675 रन) (1928-29)।

(13) पहला खिलाडी शुरू से अन्त तक—मुर्डोच (153 रन) (1880) (आस्ट्रेलिया के विरुद्ध इग्लैंड)।

(14) एक वर्ष मे 1000 रन बनाने वाला पहला खिलाडी—क्लेम हिल (आस्ट्रेलिया) (1060 रन)।

(15) पाच टेस्टो में हारने व जीतने वाला पहला देश—जीत—(आस्ट्रेलिया), (1920-21), हार—(इग्लैंड)।

(16) पहला शतक प्रतिद्वन्द्वी कप्तानो द्वारा—(1913 14) जे० डगलस (109) और एच० टेलर (119) (दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध इग्लैंड)।

(17) पहला टेस्ट कब से किस देश में—1 आस्ट्रेलिया (1877), 2 इग्लैंड (1880), 3 वेस्टइडीज़ (1900), 4 भारत (1932), 5 न्यूजीलैंड (1929 30), 6 पाकिस्तान (1952)।

क्रिकेट मे 'टेस्ट' मैचों की शुरुआत—टेस्ट क्रिकेट का इतिहास ठीक 103 वष पुराना है। 15 मार्च, 1877 को मेलबोन मे आस्ट्रेलिया और इग्लैड के बीच पहला क्रिकेट टेस्ट खेला गया था और 12 से 17 माच, 1977 को मेलबोन मे एक ऐतिहासिक (शताब्दी) टेस्ट का आयोजन किया गया था।

इन दोनो देशो के बीच पहला टेस्ट 15, 16 और 17 माच, 1877 को खेला गया था। इससे पहले दोनो देशो के बीच मैच न होते रहे हो ऐसी बात नही है, लेकिन जहा तक टेस्ट मैच का सवाल है उसकी शुरुआत इसी टेस्ट से हुई।

पहली विकेट लेने का गौरव इग्लैंड के गेंददाज़ हिल को प्राप्त हुआ, जिसने टामसन को एक रन पर आउट कर दिया। इस मैच को चार्ल्स बैरनमैन का मैच कहा जाता है, जिन्होंने अकेले 165 रन बनाए। आस्ट्रेलिया की टीम ने पहली पारी मे 245 और दूसरी पारी मे 104 रन बनाए थे जिसके जवाब म इग्लैंड की टीम ने पहली पारी 196 और दूसरी पारी मे 108 रन बनाए। इस प्रकार आस्ट्रेलिया की टीम 45 रनो से जीत गए। आस्ट्रेलिया की टीम का नेतृत्व डा० डब्ल्यू० ग्रेगरी ने और इग्लैंड की टीम का नेतृत्व जेम्स लिलो व्हाइट ने किया था।

इंग्लैंड-पाकिस्तान टेस्ट शृंखलाएं

वर्ष	इंग्लैंड का कप्तान	पाकिस्तान का कप्तान	कुल टेस्ट	इंग्लैंड ने जीते	पाकिस्तान ने जीते	बराबर
1954	लेन हटन (दूसरे और तीसरे टेस्ट में डेविड शेफर्ड कप्तान)	अब्दुल हफीज कारदार	4	1	1	2
1961 62	टेड डेक्सटर	इम्तियाज अहमद	3	1	0	2
1962	टेड डेक्सटर (तीसरे टेस्ट म कोलिन काउड्रे कप्तान)	जावेद बर्की	5	4	0	1
1967	ब्रायन क्लोज	हनीफ मोहम्मद	3	2	0	1
1968 69	कोलिन काउड्रे	सईद अहमद	3	0	0	3
1971	रे इलिंगवर्थ	इंतिखाब आलम	3	1	0	2
1972 73	टोनी लुईस	माजिद खां	3	0	0	3
1974	माइक डनेस	इंतिखाब आलम	3	0	0	3
1977-78	माइक ब्रियरली	वसीम बारी	3	0	0	3
योग	(तीसरे टेस्ट में ज्योफ बायकाट कप्तान)		30	9	1	20
इंग्लैंड की भूमि पर हुए टेस्ट मैच			18	8	1	9
पाकिस्तान की भूमि पर हुए टेस्ट मैच			12	1	0	11

भारत इग्लैंड टेस्ट शृंखला एक नजर मे

वर्ष	भारतीय कप्तान	इग्लैंड कप्तान	कुल टेस्ट	भारतीय विजेता	इग्लैड विजेता	बराबर
1932	सी० के० नायडू	डी० आर० जारडीन	1	0	1	0
1933 34	सी० के० नायडू	डी० आर० जारडीन	3	0	2	1
1936	महाराजकुमार विजयनगरम	जी० एलन	3	0	2	1
1946	नवाब आफ पटौदी (सी०)	डब्ल्यू० हैमड	3	0	1	2
1951 52	विजय हजारे	नाइगल हावर्ड तथा डोनाल्ड कार	5	1	1	3
1952	विजय हजारे	लेन हटन	4	0	3	1
1959	दत्तू गायकवाड	कोलिन काउड्रे	5	0	5	0
1961 62	नारी कट्रेक्टर	टेड डेक्सटर	5	2	0	3
1964	मसूर अली खा पटौदी	एम० जे० के० स्मिथ	5	0	0	5
1967	मसूर अली खा पटौदी	डी० बी० क्लोज	3	0	3	0
1971	अजित वाडेकर	रे इलिगवर्थ	3	1	0	2
1972-73	अजित वाडेकर	टोनी लुइस	5	2	1	2
1974-75	अजित वाडेकर	माइक डेनेस	3	0	3	0
1976	बिशनसिंह बेदी	टोनी ग्रेग	5	1	3	[illegible]
			53	7	25	21

काफी समय तक इग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच ही टेस्ट मैच होते रहे। 1888 89 तक केवल इन्ही दो देशो के बीच मैच होते रहे। उसके बाद दक्षिण अफ्रीका की टीम ने भी टेस्ट मैच खेलना शुरू कर दिए। वेस्टइडीज ने पहली बार 1928 म, न्यूजीलैंड ने 1929-30 मे, भारत ने 1932 म और पाकिस्तान ने 1952 मे टेस्ट क्रिकेट मे प्रवेश किया।

क्षेत्ररक्षकों द्वारा 100 या उससे अधिक कैच

भारत आस्ट्रेलिया टेस्ट शृखला (1977 78) में पथ मे खेले गए दूसरे क्रिकेट मैच मे आस्ट्रेलिया के कप्तान बॉबी सिम्पसन ने गैनोन की गेंद पर भारतीय बल्लेबाज वेंकटराघवन को स्लिप मे कच कर लिया। यह उनका सौवा टेस्ट कच था। अब तक केवल पाच क्षेत्ररक्षक ही सौ या अधिक कैच ले सके हैं। इनमे आस्ट्रेलिया के दो, इग्लैंड के दो व वेस्टइडीज का एक क्षेत्ररक्षक है। इनमे सिम्पसन ऐसा खिलाडी है जिसने सबसे कम टेस्टो मे कचो का शतक पूरा किया।

क्लाउडियस, एल० डब्ल्यू०—1960 मे रोम ओलम्पिक मे भारतीय टीम का नेतृत्व करने वाले भारत के मशहूर हाकी खिलाडी क्लाउडियस का जन्म 24 माच, 1927 को बिलासपुर (मध्य प्रदेश) मे हुआ। लेकिन जूनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा पास करने के बाद वह बगाल चले गए। उन्होंने 1946 मे प्रथम श्रेणी के हाकी मैचो मे हिस्सा लेना शुरू किया। उन्होंने पहली बार बी० एन० रेलवे की ओर से बेटन कप प्रतियोगिता मे हिस्सा लिया। लेकिन उसके बाद 1947 स उन्होंने बगाल की ओर से खेलना शुरू किया। उन्होने 1948, 1952, और 1956 के ओलम्पिक खेलो मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। इसके अतिरिक्त उन्होन 1952 मे पूर्वी अफीका, 1954 मे मलाया, 1955 मे न्यूजीलैंड का भी दौरा किया। 1958 में तोक्यो मे हुए एशियाई खेलो मे भी उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया और 1959 मे यूरोप का दौरा करने वाली भारतीय टीम का नेतत्व किया। 1960 मे रोम मे हुए ओलम्पिक खेलों मे उन्हें भारतीय टीम का कप्तान चुना गया और इस प्रकार उन्होने लगातार चार बार ओलम्पिक खेलो मे भाग लेने का एक रिकाड कायम किया। 1974 में तेहरान मे हुए सातवें एशियाई खेलो में उन्हें भारतीय टीम का मैनेजर नियुक्त किया गया था।

क्लायड वॉलकॉट—क्वीन्स पाक क्रिकेट क्लब, पोर्ट ऑफ स्पेन के दिग्गज स्कोरबोड के सामने क्लायड वालकाट तथा फ्रैंक वारेल का बीस वष पुराना चित्र टगा है—बोड पर अकित हैं उनकी चौथी विकेट की भागीदारी के 574 रन, वॉलकॉट के अपराजित 314 रन तथा वारेल के भी

अपराजित 255 रन। वह 1946 का वर्ष था। एक वर्ष पश्चात वॉलकॉट इग्लैंड के विरुद्ध वेस्टइडीज की टीम मे विकेट कीपर के रूप मे चुन लिए गए।

सुप्रसिद्ध W's की तिकडी के वॉलकॉट सबसे कम उम्र के सदस्य थे। तीनों मे सबसे अन्त मे टेस्ट टीम म स्थान उन्होने ही पाया और सबसे पहले टेस्ट क्रिकेट से बाहर भी वे ही हुए। छह फीट तीन इच लबे, वजन, पहुच और शक्ति मे समरूप। वॉलकॉट की तेज गोलदाजी पर हुकिंग तथा कटिंग तथा सभी तरह की ड्राईविंग उनके क्रिकेटमय दशक के अविस्मरणीय दृश्य रहे।

1954 मे पोट ऑफ स्पेन मे उन्होने एक गेंद को ड्राइव किया (शायद ट्रूमेन की), जो जमीन से छह फुट से अधिक ऊचाई पर नही उठी और लाग-ऑफ की ओर ठीक प्रेस सीटो के नीचे की एक कुर्सी को चीर गई (वह कुर्सी कुछ सकिंड पूर्व ही एक महिला द्वारा खाली की गई थी तथा उस कतार मे केवल अकेली वही खाली कुर्सी थी)।

वॉलकॉट बारबाडोस के लिए सवप्रथम सोलह वर्ष की उम्र मे खेले, जबकि हरिसन कालेज मे केवल एक स्कूली छात्र थे। उन्होने बाजी उद्घाटित की तथा उनका स्कोर था मात्र 8 और 0। उस समय वे विकेट कीपर थे, क्योकि उस समय बारबाडोस को बल्लेबाजो से अधिक एक विकेट कीपर की आवश्यकता थी। 1950 मे भी वे विकेट कीपर ही थे, उनकी विशाल देहयष्टि को देखते हुए उनकी फुर्ती तथा गति आश्चयजनक थी।

उन्होंने अपने जीवन का पहला टेस्ट मैच 1948 में वेस्टइडीज मे इग्लैंड के विरुद्ध खेला, और अतिम टेस्ट इग्लैंड के विरुद्ध वेस्टइडीज में ही 1960 मे।

उनके जीवन का महान वर्ष आस्ट्रेलिया के विरुद्ध वेस्टइडीज में 1955 का रहा। पीठ की तकलीफ के कारण तब तक उन्होने विकेट कीपिंग बद कर दी थी। वसे यह बात उनके समान विशालकाय व्यक्ति के लिए असामान्य नही था।

1953-54 की वेस्टइडीज की इग्लैंड के विरुद्ध टेस्ट श्रृखला मे वॉलकॉट ने दो शतक, एक द्वि-शतक बनाए तथा उनकी कुल रन सख्या थी 698 रन। अगले वर्ष लिंडवाल, मिलर, आर्चर, इयान जानसन, डेविडसन, बिल जानस्टन तथा बेनो के विरुद्ध दस टेस्ट इनिंग्स मे 827 रन बनाए, जिनमे पाच शतक थे।

जीवन की 74 टेस्ट पारियो में वॉलकॉट ने 3798 रन बनाए, जिनमें 15 शतक थे (यह रेकार्ड केवल सोबस द्वारा ही तोडा गया और वीक्स द्वारा बराबर किया गया) और उनका औसत 56 5 रहा, वारेल के औसत से कुछ

अधिक तथा वीक्स के औसत से कुछ कम। उन्होंने 110 विकेटस भी लिए (औसत 37)। दाए हाथ से मध्यम तेज बटस तथा ऑफ स्पिन इनकी विशेषता थी। विकेट कीपर की हैसियत से उन्होंने 54 कैच लिए और 11 स्टम्प किए—कुल मिलाकर यह एक सच्चे आल राउन्डर का अपराजित रिकाड है।

वालकॉट अपने क्रिकेट जीवन मे इन सब बातो से अधिक एक 'हाड हिटर' के रूप मे विख्यात रहे हैं। जब वे गेंद पर बल्ला घुमाते थे तो गेंद बन्दूक की गोली-सी निकलती और यदि कभी क्षेत्ररक्षक उस ओर हाथ बढाता तो नानी याद आ जाती। दूसरी बात थी गेंद को पीटने के लिए परम्परावादी तरीके को छोडकर 'बक फुट' का प्रयोग। और ये दो बातें और किसी खिलाडी मे एक साथ न थी।

क्लोज (डी० बी०)—क्लोज बाए हाथ के बल्लेबाज तथा ऑफ-स्पिन गेंदबाज के रूप में इग्लैंड की उस टीम मे शामिल किए गए जिसने 1949 में न्यूज़ीलैंड का दौरा किया था। तब क्लोज की उम्र 18 वष की थी। इग्लैंड की तरफ से टेस्ट मैच के लिए चुने जाने वाले खिलाडियो में क्लोज़ सबसे कम उम्र वाले खिलाडी थे। 1950 51 में उन्होने आस्ट्रेलिया का दौरा किया। यहा वह अपने पूरे फाम में नही रहे। क्लोज क्रिकेट के अलावा फुटबाल के भी एक बहुत अच्छे खिलाडी हैं। कहते हैं कि उनका फाम में न रहने का कारण यह था कि याकशायर के फुटबाल के एक मैच में उन्हें घुटने में चोट लग गई थी। बस उसी दिन से उन्होने यह निश्चय किया कि वह एक ही खेल मे दत्तचित होकर खेलेंगे। लिहाजा उन्होने अपना सारा ध्यान क्रिकेट पर लगा दिया। 1950-51 और 1963 के बीच क्लोज एक तरह से क्रिकेट की दुनिया से बहिष्कृत ही समझे गए। लेकिन उनकी तकदीर ने फिर जोर मारा। 1963 मे वह वेस्टइडीज के खिलाफ पाचो मैचो मे खेले तथा बल्लेबाजो की सूची मे उनका तीसरा स्थान रहा। दस पारी मे उन्होने 315 रन बनाए। 1965 66 में वेस्टइडीज टीम ने इग्लैंड का दौरा किया था। इसके आखिरी टेस्ट में क्लोज को इग्लैंड की टीम का कप्तान नियुक्त किया गया। उन्होंने अपनी सूझ-बूझ और कुशल कप्तानी से इग्लैंड को एक पारी से जिताया। 1966-67 में इग्लैंड में भारत के विरुद्ध खेलने वाली इग्लैंड की टीम के कप्तान भी क्लोज ही थे। उन्होने भारत को 3-0 से हराया था। 1966-67 में पाकिस्तान को भी 2-0 से हराया। एक मच वराबर रहा था।

जन्म 24 फरवरी, 1931 लीडस में। 1970 में याकशायर द्वारा निकाले जाने के बाद 1971 से समरसट काउटी मे। 1968 में लीड्स यूनाइटेड टीम (फुटबाल) का नेतृत्व। 7 टेस्टो में इग्लड का नेतृत्व किया। 22 टेस्ट मैचों में 887 रन तथा 18 विकेट।

ग

गामा—शायद ही कोई ऐसा भारतीय खेल प्रेमी हो जिसने रुस्तमे जमा गामा पहलवान का नाम न सुना हो। आज से 60 वर्ष पहले भारत के जिस पहलवान ने दुनिया के पहलवानो को चित किया उसका नाम गामा था। गामा का जन्म एक कुश्ती प्रेमी मुस्लिम परिवार मे 1880 मे हुआ। उनकी रग रग मे कुश्ती का खेल समाया हुआ था। गामा और उनके भाई इमामबख्श ने शुरू शुरू मे कुश्ती के दाव पेच पजाब के मशहूर पहलवान माधोसिंह से सीखने शुरू किए।

1910 के आसपास गामा का नाम एकाएक दुनिया के सामने आया। 1910 की बात है, उस समय गामा की उम्र लगभग तीस वर्ष की थी। बगाल के एक लखपति सेठ शरद कुमार मित्र कुछ भारतीय पहलवानो को इग्लैड ले गए थे। उस समय लन्दन मे विश्व-दगल का आयोजन हो रहा था। इसमे इमामबख्श, अहमदबख्श और गामा ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। गामा का कद साढे पाच फुट और वजन 200 पौंड के लगभग था। लदन के आयोजको ने गामा का नाम उम्मीदवारो की सूची मे नही रखा। गामा के स्वाभिमान को बहुत ठेस पहुची। उन्होने एक थिएटर कम्पनी मे जाकर दुनिया भर के पहलवानो को चुनौती देते हुए कहा कि जो पहलवान अखाडे मे मेरे सामने पाच मिनट तक टिक जाएगा उसे पाच पौंड नकद इनाम दिया जाएगा। पहले कई छोटे मोटे पहलवान गामा से लडने को तैयार हुए। गामा ने पहले अमरिकी पहलवान रोलर को हराया और इमामबख्श ने स्विट्जरलैंड के कोनोली और जान लैम को मिनटो और सैकिंडो मे चित कर दिया। इसपर विदेशी पहलवानो और दगल के आयोजको के कान खडे हुए और उन्होने गामा को सीधे विश्व विजेता स्टेनली जिबिस्को से लडने को कह दिया। 12 दिसम्बर, 1910 के ऐतिहासिक दिन गामा और जिबिस्को की कुश्ती हुई। जिबिस्को गामा के मुकाबले बहुत लम्बा और भारी भरकम पहलवान था। यह कुश्ती 2 घटे 40 मिनट तक चली। गामा ने पोलैण्ड के इस पहलवान को इतना थका दिया कि वह हाफने लगा। जब गामा ने जिबिस्को को नीचे पटका तो वह अपने बचाव के लिए लेट गया। उसका शरीर इतना वजनी था कि गामा उसे उठा नही सके। इसपर भी जब हार जीत का फैसला न हो सका तो कुश्ती को अनिर्णीत घोषित किया गया और फैसले के लिए दूसरे दिन की तारीख तय की गई। दूसरे दिन जिबिस्को डर के मारे मदान मे ही नही आया। दगल के आयोजक जिबिस्को की खोजबीन करने लगे, लेकिन वह न जाने कहा छिप

गया और इस प्रकार गामा को विश्व विजयी घोषित किया गया।

* उसके बाद 28 जनवरी, 1928 को फिर पटियाला म इन दोनों पहलवानो की कुश्ती का आयोजन किया गया। इस बार गामा न केवल ढाई मिनट मे ही जिबिस्को को पछाड दिया। गामा की विजय के बाद पटियाला के महाराजा ने गामा का आधा मन भारी चादी की गुज और 20 हजार रुपय नक्द इनाम दिया था।

देश के विभाजन के बाद गामा भारत छोड़कर पाकिस्तान चले गए थे। रुस्तमे-जमा के आखिरी दिन बड़े कष्ट और मुसीबत म गुजरे। रावी नदी के किनारे इस अजय पुरुष को एक छोटी-सी झोपडी बनाकर रहना पडा। अपनी अमूल्य यादगारो सोने और चादी के तमगे बेच-बेचकर अपनी जिंदगी के आखिरी दिन गुजारने पडे। वह हमेशा बीमार रहने लगे। उनकी बीमारी की खबर पाकर भारतवासियो का दुखी होना स्वाभाविक ही था। महाराजा पटियाला और बिडला बन्धुओ ने उनकी सहायता के लिए धनराशि भेजनी शुरू की। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। 22 मई, 1960 को रुस्तमे जमा गामा मत्यु से हार गए। गामा मर कर भी अमर है। भारतीय कुश्ती कला की विजय पताका को विश्व मे फहराने का श्रेय केवल गामा को ही प्राप्त है।

गायकवाड, अशुमान—जन्म 23 सितम्बर, 1952। बडौदा का कप्तान अशुमान गायकवाड भूतपूर्व भारतीय कप्तान दत्तू गायकवाड का पुत्र। दाए हाथ का बल्लेबाज है और प्रारम्भिक बल्लेबाज के रूप मे भी जीवट से होल्डिंग के बम्परो को झेल चुका है। बम्बई मे जन्मा अशुमान उपयोगी आफब्रेक गेंदबाज है और चश्मा पहनता है। अब तक वेस्टइडीज, न्यूजीलैंड, इग्लैंड और आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेल चुका है। 1979 मे कानपुर म वेस्टइडीज के विरुद्ध खेलते हुए उसने शतक (162) पूरा किया। अब तक 19 टेस्टो मे 1,035 रन (औसत 33 38 रन) बना चुका है।

गावस्कर, सुनील—जन्म 10 जुलाई, 1949 (बम्बई)। लम्बे अर्से से भारतीय क्रिकेट को जिस उद्घाटक बल्लेबाज की तलाश थी, उसकी सही खोज 1971 मे पूरी हुई, जब सुनील गावस्कर ने वेस्टइडीज के विरुद्ध अद्वितीय प्रदर्शन किया। उसके बाद उन्होने कभी पीछे मुडकर नही देखा।

उस पहली शृखला के चार टेस्ट मैचो मे गावस्कर ने 774 रन (औसत 154 80) बनाकर एक कीर्तिमान स्थापित किया। पोर्ट ऑफ स्पेन के पाचवें टेस्ट की पहली पारी मे 124 व दूसरी पारी मे 220 रन बनाकर वे विश्व विख्यात बल्लेबाज वाल्टर्स, जी० एस० चपल और लारेन्स रो की श्रेणी मे आ खडे हुए जिन्होंने टेस्ट क्रिकेट मे पहली पारी म शतक व दूसरी पारी म दोहरा शतक बनाने का रिकार्ड कायम किया है।

1975-76 मे न्यूज़ीलैंड के दौरे के समय गावस्कर ने भारतीय टीम को नेतत्व भी दिया—जिसमे भारत विजयी रहा। 1978 79 मे वेस्टइडीज की टीम ने भारत का दौरा किया था। उस समय उन्हे भारतीय टीम का कप्तान नियुक्त किया गया। उसमे सुनील गावस्कर ने एक साथ कई रिकाड और कीत्तिमान स्थापित किए। उन्होने अब तक 19 शतक बनाए हैं। इस प्रकार शतक बनाने और सबसे अधिक रन बटोरने के मामले मे वह अब सबसे आगे निकल गए हैं। गावस्कर ने वेस्टइडीज़ के विरुद्ध 10 शतक बनाए हैं।

कलकत्ता टेस्ट के दौरान 1 वर्ष मे 1,000 रन पूरे करने का गौरव उन्होंने दूसरी बार प्राप्त किया। इसके साथ ही वह 4,000 रन पूरे करने का गौरव भी प्राप्त कर गए। जिस समय उन्होने 49 रन पूरे किए तो वह 4,000 से अधिक रन बनाने मे सफल हो गए और उसके बाद जब उन्होने 97 रन पूरे किए तो उन्हे दूसरी बार एक ही वर्ष मे 1,000 रन बनाने का गौरव प्राप्त हो गया। पिछली बार उन्हे यह गौरव 30 दिसम्बर, 1976 को प्राप्त हुआ था। इस प्रकार यह गौरव प्राप्त करने वाले वह दुनिया के दूसरे बल्लेबाज हैं। उनसे पहले इग्लैंड के केन बेरिंगटन ने 1961 और 1963 मे यह गौरव प्राप्त किया था। 1976 म उन्होने 11 टेस्टो मे (न्यूज़ीलैंड वेस्टइडीज, और इग्लैंड) 1,024 रन बनाए थे। इस बार उन्होंने 9 टेस्टो मे ही यह गौरव प्राप्त कर लिया। ब्रैडमैन ने केवल 6 टेस्टो मे ही यह गौरव प्राप्त किया था। अब तक एक वर्ष मे एक बार जिन बल्लेबाजो ने 1,000 रन पूरे किए उनके नाम इस प्रकार हैं डान ब्रैडमैन (1930), डेनिस काम्पटन (1947), गैरी सोबस (1958), बाब सिपसन (1964), और विवियान रिचर्ड (1976)। एक वर्ष मे सबसे अधिक रन बनाने का विश्व रिकाड रिचड का है, जिन्होंने आस्ट्रेलिया, भारत और इग्लैंड के विरुद्ध 11 टेस्ट खेलकर 1,710 रन बनाए थे।

टेस्ट मचो मे वह अब तक 22 शतको की सहायता से 5,000 से अधिक रन पूरे कर चुके हैं जिसका लेखा इस प्रकार है

जनवरी 1973 मे कानपुर मे इग्लैंड के विरुद्ध अपने जीवन का 11वा टेस्ट खेलते हुए उन्होंने 1,000 रन पूरे किए। अप्रैल 1976 मे पोर्ट आफ स्पेन मे वेस्टइडीज के विरुद्ध अपना 23वा टेस्ट खेलते हुए उन्होने 2,000 रन पूरे किए। दिसम्बर 1977 मे पर्थ मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध अपना 34वा टेस्ट खेलते हुए 3,000 रन पूरे किए। दिसम्बर 1978 मे कलकत्ता मे वेस्टइडीज के विरुद्ध अपना 43वां टेस्ट खेलते हुए 4,000 रन पूरे किए थे, और सितम्बर 1979 मे बगलोर मे 52वां टेस्ट खेलते हुए 5,000 रन पूरे किए।

सुनील गावस्कर के बारे मे एक आश्चर्यजनक तथ्य यह भी है कि वह अपने शरीर (कद 5 फुट 5 इच, वजन 66 किलो) को ठीक-ठाक रखने के लिए

क्रिकेट के मैदान से सीधे बैडमिंटन के मैदान मे भी पहुच जाते हैं।

पुस्तकें पढने और सगीत सुनने का उन्हे बहुत शौक है। उन्होने स्वय भी 'सनी डेज' नामक एक पुस्तक लिखी है और हमेशा लोगों से क्रिकेट की शब्दावली मे बात करते हैं।

कहते हैं कि एक बार वह अपनी कार मे कही जा रहे थे कि अचानक उनकी कार के आगे एक आदमी आ गया। उन्होने ब्रेक लगाया और कार से उतरकर उस आदमी के पास गए और बोले 'अरे भाई, देखकर चला करो, नही तो रन आउट हो जाओगे !' उस आदमी को यह पहचानने मे जरा भी देर नही लगी कि यह तो सुनील गावस्कर है !

गीता राय—राइफल की निशानेबाजी म भारत की महिला चम्पियन श्रीमती गीता राय बगाल के एक मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। उन्होने मट्रिक परीक्षा तक कभी निशानवाजी का सक्रिय अभ्यास नही किया। 1942 म उन्होने मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। बहुत सी भारतीय लडकियो की भाति श्रीमती गीता राय की शादी भी 10 वष की उम्र म सम्पन्न हुई। श्रीमती राय के पति श्री दिव्यनाथ राय ने, जो स्वय एक बहुत अच्छे खिलाडी थे, गीता राय को विभिन्न प्रकार के खेलो मे हिस्सा लेन को प्रेरित किया। 1949 म वह दक्षिण कलकत्ता की राइफल क्लब मे दाखिल हो गई और नियमित रूप से राइफल चलाने का अभ्यास करने लगी। तीन वष बाद ही, यानी 1952 म, श्रीमती गीता राय ने प्रथम अखिल भारतीय महिला निशानेबाजी प्रतियोगिता मे भाग लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया। अगले वष बगाल की चम्पियन बनने के साथ उन्होंने अखिल भारतीय निशानेबाजी प्रतियोगिता फिर जीत ली। सन 1956 के ओलम्पिक खेलो से पूव कलकत्ता मे हुई चुनाव प्रतियोगिता मे श्रीमती गीता राय ने 600 म 589 अक प्राप्त करके एक शानदार रिकाड स्थापित किया, परन्तु किसी कारणवश वह मेलबोन ओलम्पिक खेलो म भाग नही ले सकी। 1960 की राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता म गीता ने 14 स्वण पदक, 2 रजत पदक तथा एक कास्य पदक प्राप्त किया। निशानेबाजी के अतिरिक्त उन्होने तैराकी, नौका विहार और टेबल टेनिस म भी काफी निपुणता प्राप्त की।

गुरबचन सिंह—गुरबचन सिंह भारत के जाने माने एथलीटो मे से एक हैं। 1964 मे तोक्यो ओलम्पिक मे गुरबचन सिंह ने भारतीय एथलेटिक टीम का नेतत्व किया था। पहले पहल गुरबचन सिंह ने ऊची कूद प्रतियोगिता म हिस्सा लेना शुरू किया, पर बहुत जल्दी ही वह एथलेटिक के 'हरफनमौला खिलाडी' के रूप मे प्रसिद्ध हो गए और 1960 मे उन्होने डिकेथलन प्रतियोगिता मे भाग लेना शुरू कर दिया। रोम ओलम्पिक खेलों मे इन्होंने ऊची

कूद की प्रतिस्पर्धा मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1961 मे वह जर्मनी गए। 1962 मे जकार्त्ता मे हुए एशियाई खेलो मे उन्हे विशेष सफलता प्राप्त हुई। उस समय उन्हे 'एशिया का सर्वश्रेष्ठ हरफनमौला खिलाडी' घोषित किया गया। इसके बाद उन्होने 110 मीटर की बाधा दौड पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित कर दिया।

गुलाम पहलवान—20वी सदी के प्रथम चरण मे भारत मे कुश्ती कला अपनी चरम सीमा पर थी। रुस्तमे-जमा गामा से पहले जिस भारतीय पहलवान ने यूरोप के दगलो मे हिस्सा लेकर पहलवानी के क्षेत्र म इस देश का नाम रोशन किया, उसका नाम था गुलाम पहलवान। इन्हे महाबली गुलाम भी कहा जाता है। यथा नाम तथा गुण, यह पहलवान बहुत ही सरल स्वभाव के थे। बात-बात मे अक्सर हाथ जोडकर कहा करते थे—"मैं तो गुलाम हू।"

उस जमाने मे भारत मे एक और ख्यातनामा पहलवान था। इसका नाम था कीकर सिंह। काफी दिनो तक तो इसका फैसला ही नही हो सका कि कीकर सिंह और गुलाम पहलवान मे कौन उन्नीस है और कौन इक्कीस। इन दोनो महाबलियो की चार बार कुश्ती हुई। जिनमे से तीन बराबर रही। कभी गुलाम का पलडा भारी हो जाता तो कभी कीकर सिंह का।

पुराने पहलवानो को शरीर साधना का बहुत शौक होता था। आज का पहलवान शायद ही उतनी साधना करता हो। शायद इसीलिए जब यह सुनने को मिलता है कि गुलाम रोज सवेरे तीन बजे उठते थे। उसके बाद चार हजार बैठक लगाते, फिर एक ही सास मे सारा अखाडा गोड डालते। फिर तीस चालीस पहलवानो के साथ जोर करते। दिन मे ढाई हजार डड लगाते और शाम को चार पाच मील की दौड लगाते—तो दातो तले उगली दबानी पडती है।

गोल्फ—इस खेल का प्रारम्भ स्काटलैंड से हुआ माना जाता है, यद्यपि कुछ इतिहासज्ञ यह भी मानते हैं कि इसका जन्म ईसापूर्व मे ही हो चुका था। उनका कहना है कि उस समय चरवाहो मे यह खेल बहुत लोकप्रिय था। वे गोल्फ क्लबो जैसे उपकरणो से ककडो को मारते थे। हो सकता है कि यह बात कुछ सच भी हो, परन्तु इतना तो निश्चित है कि उनका प्रयास मात्र उन ककडो को अधिक से अधिक दूर पहुचाना रहता होगा और आधुनिक गोल्फ के खेल से उसकी अधिक समानता नही होगी।

स्काटलैंड मे सन् 1440 के लगभग यह खेल प्रचलित था। वहा के प्रसिद्ध 'रायल ब्लैक हीथ क्लब' की स्थापना 1608 मे हुई। एडिनबरा गोल्फिंग सोसाइटी की स्थापना सन् 1735 के लगभग हुई। प्रसिद्ध क्लब एड्रोंट गोल्फ क्लब की स्थापना भी वहा 1754 से पूर्व ही हो चुकी। इसी क्लब ने वहां

पर एक टूर्नामेंट का आयोजन भी किया।

स्काटलैंड मे पहला बड़ा टूर्नामेंट 1860 मे प्रेस्टविक गोल्फ कोर्स पर हुआ। समयातर मे इसीने ब्रिटिश ओपेन गोल्फ टूर्नामेंट का रूप धारण किया।

भारत मे इस खेल का प्रचलन आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व हुआ। सैनिक तथा नागरिक सेवाओ मे भरती होकर भारत आए अग्रेजो ने कलकत्ता मे यह खेल प्रारम्भ किया। इसी कारण काफी समय तक तो यह खेल केवल ब्रिटिश लोगो मे ही सीमित रहा। इन्ही गोल्फ-प्रेमियो मे से कुछेक ने मिलकर लगभग 1830 मे डमडम गोल्फ क्लब की स्थापना की। यही क्लब बाद में सुविख्यात रायल कलकत्ता क्लब बना। टालीगज कलकत्ता मे स्थापित इस क्लब मे पास दो अत्यन्त ही बढ़िया गोल्फ कोर्स हैं। लगभग 1892 तक रायल कलकत्ता क्लब अपने वतमान रूप मे आ चुका था। उसी समय भारत की एमेच्योर गोल्फ चैम्पियनशिप प्रारम्भ हुई। प्रारम्भ मे तो चैम्पियनशिप का निर्णय 'मेडल प्ले' के आधार पर किया जाता था, परन्तु बाद मे 1898 से 'मैच प्ले' का प्रारम्भ हुआ।

शुरू शुरू मे तो यह खेल कलकत्ता म ही नियमित रूप मे खेला जाता रहा, परन्तु धीरे-धीरे भारत के अन्य भागो मे भी फल गया। इसीके परिणाम-स्वरूप वेस्टन इडिया चम्पियनशिप, साउथ इडिया चम्पियनशिप तथा नार्दर्न चैम्पियनशिप का आरम्भ हुआ।

कालातर मे भारत के कई भागो मे महिलाओ के गोल्फ क्लब भी स्थापित हुए। ब्रिटेन से पेशेवर खिलाड़ियो को भी भारत मे बुलाया जाने लगा। सन 1955 मे भारतीय गोल्फ यूनियन की स्थापना हुई। 1956 मे इस यूनियन ने एमेच्योर गोल्फ चैम्पियनशिप का आयोजन करने का उत्तरदायित्व सभाला। यद्यपि अगले दो वष तक पहले की भाति रायल कलकत्ता क्लब मे ही इस प्रतियोगिता का आयोजन होता रहा। 1958 मे पहली बार यह प्रतियोगिता कलकत्ता से बाहर दिल्ली मे लोदी दिल्ली क्लब द्वारा आयोजित की गई। अब यह प्रतियोगिता प्रतिवर्ष देश के भिन्न भिन्न स्थानो मे होती है। लगभग इसी समय कलकत्ता मे ईस्ट इडिया गोल्फ चैम्पियनशिप को प्रारम्भ किया गया।

भारत ने 1958 म सेंट एड्रूस मे आयोजित की गई प्रथम विश्व एमेच्योर टीम चम्पियनशिप मे भाग लेने के लिए श्री आई० एस० मलिक के नेतृत्व मे टीम भेजी थी। भारतीय टीम के अन्य खिलाड़ी थे—मेजर पी० जी० सेठी, ए० एस० मलिक, और पीताम्बर राना। इस टीम ने टूर्नामेंट मे भाग लेने वाली 29 टीमो में चौदहवा स्थान प्राप्त किया।

गोल्फ के अन्तरराष्ट्रीय टीम मैच

दो देशा के बीच होने वाली कुछ गोल्फ प्रतियागिताओ ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। ये प्रमुख प्रतियोगिताए हैं

वाकर कप अमेरिका और इग्लैंड के एमेच्योर गोल्फ गिलाडी इस प्रतियोगिता मे भाग लेते हैं। इस मुकाबले का प्रारम्भ 1920 मे हुआ था। प्रत्येक देश अपनी टीम मे आठ खिलाडी भेजता है। यह टूर्नामेंट प्रति दूसरे वप होता है और इसका आयोजन बारी बारी से दोनो देशो मे किया जाता है।

राइडर कप इसमें ब्रिटेन तथा अमेरिका के पेशेवर गोल्फ खिलाडियो की टीम भाग लेती हैं। इस टूर्नामेंट का प्रारम्भ 1926 मे हुआ तथा यह प्रति दूसरे वष आयोजित किया जाता है। यह टूर्नामेंट भी बारी-बारी से दोनो देशो में खेला जाता है। प्रत्येक टीम मे आठ खिलाडी तथा दो खिलाडी वकल्पिक स्थान के लिए होत है।

अमेरिका कप कैनाडा, मक्सिको तथा अमेरिका की प्रतिनिधि एमेच्योर गोल्फ टीमो म प्रति दूसरे वप इस कप के लिए प्रतियोगिता होती है। प्रत्येक देश की टीम मे छह खिलाडी तथा दो वैकल्पिक खिलाडी होते हैं। तीनो देशो म बारी-बारी से कप मैच होते हैं। यह प्रतियोगिता सन् 1952 म प्रारम्भ की गई।

हापकिन्स कप यह प्रतियोगिता भी 1952 से ही प्रारम्भ हुई। इसमे अमेरिका तथा कैनाडा के पेशेवर खिलाडियो की टीमे भाग लेती हैं। प्रत्येक टीम में छह खिलाडी तथा दो वकल्पिक खिलाडी होते हैं।

गोल्फ का खेल तथा इसके नियम

इस खेल म विशेष प्रकार से बनाई छडियो (क्लबो) के द्वारा गेंद को मैदान मे बने विवरो (होल्स) म डालने का प्रयास किया जाता है। गोल्फ मदान 6500 गज से लेकर 6800 गज तक लम्बा होता है और इसमे सामान्यत 18 विवर होल होते हैं। कुछ मैदानो मे केवल नौ विवर ही होते हैं। और उनका दो बार उपयोग करके उन्हीसे 18 विवरो का काम ले लिया जाता है। दो विवरा के बीच की दूरी सौ गज से लेकर छह सौ गज तक कुछ भी हो सकती है।

विवर से गेंद की दूरी तथा उसके विशेष स्थान पर स्थिति को देखकर अलग अलग प्रकार के क्लबो से उसे हिट किया जाता है। खिलाडी का लक्ष्य यही होना है कि कम से कम स्ट्रोको म गेंद विवर म चला जाय।

गोल्फ की दो प्रकार की प्रतियोगिताए होती हैं—मच प्ले व स्ट्रोक प्ले। 'मैच प्ले' मे दो खिलाडी एक साथ खेलते हैं और उनका मुकाबला केवल एक दूसरे के साथ ही होता है। यह प्रतियोगिता 18 अथवा 36 विवरों पर खेली जाती है। इस बारे म निणय मुकाबला शुरू होने से पहले कर लिया जाता है। परिणाम इस आधार पर निश्चित किया जाता है कि किस खिलाडी ने सबसे अधिक विवर (होल) जीते हैं। जो प्रतियोगी कम स्ट्रोक लगाकर विवर म गेंद डाल लेता है वही उस विवर का विजेता माना जाता है। यदि दोना खिलाडी बराबर स्ट्रोक लगाकर गेंद को विवर म डालें तो प्रत्येक को आधा विवर मिलता है। एक विवर अधिक जीत लेने वाले खिलाडी को वन अप कहा जाता है। मैच म खेलने के लिए शेष बचे विवरो की जितनी सख्या है उससे अधिक सख्या म अप होने वाले खिलाडी को विजेता माना जाता है। उदाहरण के लिए यदि एक खिलाडी के दूसरे से तीन विवर अधिक हो तथा खेलने के लिए दो विवर ही शेष हो तो पहले खिलाडी को विजेता माना जाएगा।

गोल्फ की दूसरी प्रकार की प्रतियोगिता है—स्ट्रोक' अथवा 'मैडल प्ले'। इसम जो खिलाडी कुल विवरो मे गेंद डालने के लिए कम से कम स्ट्रोक लगाता है वही विजयी होता है। मैच प्ले म दो खिलाडिया का आपस मे ही मुकाबला होता है परन्तु स्ट्रोक अथवा मैडल प्ले म प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले प्रत्येक खिलाडी का मुकाबला शेष सभी खिलाडियों से होता है। इन प्रतियोगिताओ मे प्राय 72 विवरो मे गेंद डालने का लक्ष्य रहता है।

एमेच्योर प्रतियोगिताए मच प्ले तथा पेशेवर खिलाडियो की प्रतियोगिताए स्ट्रोक अथवा मैडल प्ले पर आधारित होती हैं। इन दोनो प्रकार की प्रति योगिताओ मे खिलाडी अकेले अथवा साझेदारी म खेल सकते हैं।

यदि खिलाडियो की खेल-क्षमता मे बहुत अतर हो तो उनमे हैंडीकप के आधार पर भी प्रतियोगिताओ का आयोजन होता है। भिन्न खेल क्षमताओ के खिलाडियो को समान स्तर पर लाने के लिए प्रदान किए जाने वाले स्ट्रोको की सख्या को हैंडीकप कहा जाता है। खिलाडी जितना ही अच्छा होगा उसे उतना ही कम हैंडीकप दिया जाएगा। श्रेष्ठतम खिलाडियो का हैंडीकप शून्य होता है और उन्हे स्क्रेच खिलाडी कहा जाता है।

विवर मे गेंद डालने का प्रयास प्रारम्भ करते समय खिलाडी गेंद को लकडी अथवा प्लास्टिक की बनी खूटी पर टीइग' क्षेत्र मे रख लेता है। इसकी लम्बाई गोल्फ क्लब की लम्बाई से दुगुनी होती है। दो चिन्हो के बीच की दूरी इस क्षेत्र की चौडाई होती है। खिलाडी इस क्षेत्र मे किसी भी स्थान पर गेंद रखकर खेलना शुरू करता है। टीइग क्षेत्र से लगाई स्ट्रोक को ड्राईविग कहा जाता है।

टीइंग क्षेत्र से विवर तक एक साफ सुथरा भाग जाता है। इस भाग की घास को भली प्रकार से काटा जाता है। इसे 'फेयर वे' कहा जाता है। इस भाग के दोनो तरफ लम्बी घास उगी होती है। फेयर वे पर अनेक स्थानो म रेत के छोटे छोटे टुकडे होते हैं इन्ह बरर कहा जाता है। इनसे गेंद को गुजारने के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता होती है। फेयर वे म कई स्थानो पर तो भाग को अवरुद्ध करने वाला जल होता है।

विवर का व्यास 4 5 इच होता है। इसकी न्यूनतम गहराई चार इच होती है। इसके चारा ओर के क्षेत्र को 'ग्रीन' कहा जाता है। ग्रीन की घास को खूब बारीकी से काटा गया होता है ताकि इस क्षेत्र तक गेंद ले आने के पश्चात खिलाडी मजे मे गेंद को विवर मे डाल दे। गेंद विवर म डालने के लिए लगाई गई स्ट्रोक को पटिंग कहा जाता है।

कुशल खिलाडी अधिकाश विवरो म गेंद चार स्ट्रोको मे ही डाल लेते हैं। टीइंग क्षेत्र से ड्राइव स्ट्रोक द्वारा गेंद सामान्यत सवा दो सौ से ढाई सौ गज तक पहुचाई जा सकती है। ग्रीन तक गेंद पहुचाने म एक शाट और लगाने की आवश्यकता होती है। तब विवर मे डालने के लिए अर्थात पटिंग के लिए दो और शाटो की आवश्यकता होती है। यद्यपि ऐसे विवर भी होते हैं जिनमे गेंद डालने के लिए तीन अथवा पाच स्ट्रोक आवश्यक माने जाते हैं।

अमेरिका मे प्रत्येक गोल्फ कोस के लिए निश्चित 'पार' रहता है। औसत दर्जे के अच्छे खिलाडी को जो स्कोर सामान्यत कर लेना चाहिए वह उस कोस विशेष का 'पार' कहलाता है। इसी प्रकार अनेक गोल्फ कोर्सों के लिए बोगी भी निश्चित होती है। बोगी से तात्पय उस स्कोर से होता है जो कि किसी सामान्य स्तर के खिलाडी को किसी विशेष गाल्फ कोस पर कर लेना चाहिए। यद्यपि आजकल इसका प्रयोग भिन्न अर्थों मे किया जाता है। आजकल तो इसका प्रयोग 'पार' से एक अधिक स्कोर को बतलाने के लिए किया जाता है।

गोल्फ खेलने के उपकरण

गेंद—खेल के प्रारम्भिक दिनो मे गेद पक्षियो के पखा से बनाई जाती थी। पतले से चमडे की एक थैली म उन्ह खूब ठूसकर भर व सी दिया जाता था। पखो को जितनी अच्छी तरह से भरा गया होता था वसी ही अच्छी गेंद बनती थी। परन्तु ऐसी गद को हिट करके अधिक दूरी पार नही करवाई जा सकती थी। इस गेंद को लगभग 175 गज की दूरी तक ही भेजा जा सकता था। बाद मे गटापार्चा की गेंद तैयार की गई। इस गेंद को लगभग 225 गज दूर तक भेजा जा सकता था। इसे विवर मे डालने मे भी अपेक्षया अधिक आसानी होती थी। अनेक परीक्षणा के बाद इस गेंद का प्रयोग 1848 मे प्रारम्भ हुआ।

1899 तक इस प्रकार की गेंदें सामान्य उपयोग में आती रहीं। इसके बाद अमेरिका में निर्मित विशेष प्रकार की रबर गेंद का प्रचलन प्रारम्भ हुआ।

गोल्फ गेंद का वजन तथा व्यास समय-समय पर बदला जाता रहा है। इन परिवर्तनों का मूल उद्देश्य यही रहा है कि गेंद अधिक से अधिक दूरी पार कर सके। औसत गेंद का वजन 1 62 औंस तथा व्यास 1 6 इंच होता है।

क्लब—सामान्य स्तर में गोल्फ खिलाड़ी टीइंग क्षेत्र से विवर तक गेंद पहुंचाने में अलग अलग प्रकार के चौदह क्लब इस्तेमाल करते हैं। इनमें से चार क्लब लकड़ी के और नौ या दस क्लब लोहे के होते हैं। एक राउंड में कोई खिलाड़ी 14 से अधिक क्लबों का इस्तेमाल नहीं कर सकता। इनमें से प्रत्येक क्लब का अलग-अलग नाम होता है और उससे अलग-अलग तरह के शॉट लगाए जाते हैं। इन क्लबों के लिए अलग-अलग नम्बर नियत किए गए हैं और प्राय नामों के स्थान पर नम्बरों से इनकी पहचान की जाती है।

लकड़ी के क्लब

नम्बर 1 ड्राइवर—इस क्लब का प्रयोग टीइंग क्षेत्र से गेंद को अधिक से अधिक दूर तक भेजने के लिए किया जाता है। इसकी लम्बाई 42 से 43 इंच होती है तथा वजन लगभग 14 औंस। इसका हेड बड़ा तथा फेस सीधा खड़ा (वर्टीकल) होता है।

नम्बर 2 ब्रेसी (Brassie)—फेयर वे पर पहुंची गेंद को अधिकतम दूरी तक पहुंचाने के लिए इस क्लब का इस्तेमाल किया जाता है। इसका फेस कुछ छोटा तथा ऊर्ध्वाधर से थोड़ा-सा कोण बना रहा होता है।

नम्बर 3 स्पून—ड्राइवर तथा ब्रेसी क्लबों के तुलना में इसकी हत्थी (शैफ्ट) कुछ छोटी होती है। फेस भी इसका कम गहरा होता है और ऊर्ध्वाधर से अपेक्षया अधिक कोण बना रहा होता है। फेयर वे पर पड़ी गेंद को यदि ब्रेसी से ठीक प्रकार हिट न किया जा सकता हो तथा ड्राइवर द्वारा हिट किए जाने पर गेंद के विवर से भी आगे निकल जाने की आशंका हो तो इस क्लब का प्रयोग किया जाता है।

नम्बर 4 बेफी—स्पून क्लब की तुलना में इसका हेड छोटा तथा फेस कम गहरा होता है। इसका फेस ऊर्ध्वाधर से काफी बड़ा कोण बनाता है।

लोहे के क्लब

नम्बर 1 क्लीक—यह लोहे का बना लम्बे हत्थे (शाफ्ट) वाला क्लब होता है। इसका फेस ऊर्ध्वाधर के साथ कोण बनाता है। लकड़ी के क्लबों से यदि गेंद 190 से 205 गज तक की दूरी के भीतर पहुंचानी हो तो इनका प्रयोग किया जाता है।

नम्बर 2 मिड आयरन—इस क्लब का फेस ऊर्ध्वाधर से कुछ बड़ा ही

आयरन शाट—इन शाटो को लगाने की विधि वुड शाटो से कुछ भिन्न होती है। क्लब हेड गेंद को छूने के साथ ही नीचे घास मे भी थोडा अदर चला जाता है। शाट पूरा होने पर कुछ घास भी जमीन से उखड आती है। इस तरह से हिट किए गेंद मे कुछ उलटी भ्रमि (बैक स्पिन) भी होती है और जमीन पर गिरने के साथ ही वह रुक जाती है।

एप्रोच शाट—ग्रीन के बहुत निकट आ जाने पर विवर मे गेंद को डालने के लिए लगाए गए शाट को एप्रोच शाट कहते हैं। विवर के पास पहुच गेंद डालने के दो उपाय होते हैं। गेंद को इस तरह मे हिट किया जाए कि उसमे बैक स्पिन पैदा हो जाए तथा वह उसके कारण गिरने पर रुक जाए अथवा गेंद को ऐसे हिट किया जाए कि गेंद कुछ दूरी तक हवा मे तैरने के बाद भूमि पर गिर पडे और लुढककर रुक जाय।

सड शाट—कुशल खिलाडी भी ग्रीन के निकट बने बकरो से बचकर नही निकल पाते। इसलिए रेत मे फसे गेंद को ठीक तरह से शाट लगाने के लिए उन्हें भी अच्छा खासा अभ्यास करना पडता है। खिलाडी अपना पैर रेत म अच्छी तरह जमा करके रखता है। तब सैंड वेज क्लब से शाट लगाई जाती है। क्लब केवल रेत को ही छूती है, गेंद को नही। यह सावधानी रखने पर ही गेंद को इच्छित दिशा मे और इच्छित दूरी पर पहुचाया जा सकता है।

पटिंग—ग्रीन तक पहुच गेंद को विवर मे डालने के लिए लगाए गए शाट को पटिंग कहते हैं। यह बडा ही नाजुक शाट है। ग्रीन की सतह प्राय समतल नही होती और उसम स्थान स्थान पर छोटे मोटे छिद्र होते हैं। विवर मे गेंद डालने के लिए खिलाडी पटर का प्रयोग करते है। पटर के ब्लेड के समानातर हथेलियो को खोलकर उसके हत्थे (शैंपट) को दबा लिया जाता है तथा गेंद को बडे धीमे से हिट किया जाता है शैंपट को पकडने का यह तरीका इसलिए अपनाया जाता है कि मासपेशियो का दबाव न पडे और निशाना सही बैठे।

गोल्फ के खेल मे इस्तेमाल होने वाले अनेक पारिभाषिक शब्द

एस—एक ही स्ट्रोक मे गेंद विवर म डालना।

ब्लाइड—एप्रोच मे ऐसी स्थिति जबकि खिलाडी को 'ग्रीन' न दिखाई दे रहा हो।

कडी—खिलाडी के क्लबो को उठाकर उसके साथ चलने वाला सहायक।

फेयर वे—टीइग क्षेत्र से ग्रीन तक गेंद ले जाने के लिए बना माग जिसकी घास अच्छी तरह से कटी होती है।

ग्रीन—विवर के चारा ओर का क्षेत्र जहा पर घास बडी बारीकी से काटी छांटी गई होती है।

पटिंग—ग्रीन तक पहुची गेंद को विवर मे डालने के लिए लगाए शाट।

टी—टीइग क्षेत्र मे बनाई कृत्रिम खूटी। प्रत्येक विवर के लिए खेल शुरू करने से पूर्व गेंद रेत अथवा प्लास्टिक से बनी इस खूटी पर रखी जाती है।

गोष्ठा बिहारी पाल—लगातार 23 वर्षों (1913 से 1936) तक फुटबाल खेलने वाले और अपने जमाने मे 'चीन की दीवार' नाम से सबोधित किए जाने वाले गोष्ठा पाल का जन्म 20 अगस्त, 1896 को गाव भोजेश्वर, तहसील मदारीपुर, फरीदपुर (जो अब बगलादेश मे है) मे हुआ। जब वह केवल डेढ महीने के ही थे कि उनके पिता का देहात हो गया और वह अपने नाना के पास भाग्यकुल, जिला ढाका मे चले गए। स्कूली जीवन मे वह फुटबाल खेलते रहे और 1913 मे जब उनकी अवस्था 17 वर्ष की थी, वह कलकत्ता आ गए।

कलकत्ता मे आकर गोष्ठा पाल कुमारतुली क्षेत्र मे रहने लगे और पहली बार मोहन बागान की ओर से डलहौजी टीम के विरुद्ध खेले। उस समय वह राइट हॉफ के स्थान पर खेले थे। बाद म लेफ्ट बैक के स्थान पर खेलने लगे। 1917 से 1933 तक पाल अपने पूरे फाम मे थे। यह ठीक है उस दौरान मोहन बागान की टीम ने ज्यादा ट्राफिया आदि नही जीती, लेकिन पाल उन दिनो की चर्चा करते हुए अक्सर यह कहा करते थे कि हमारा मुख्य उद्देश्य ट्राफिया जीतना नही बल्कि अग्रेजो को हराना होता था।

छह वर्षों तक (1921 से 1926 तक) उन्होने मोहन बागान की टीम का नेतृत्व किया। उनके सहयोगी उमापति कुमार टीम के उप-कप्तान हुआ करते थे। 1922 मे पाल के ही नेतृत्व मे मोहन बागान की टीम ने बम्बई मे पहली बार रोवर्स कप प्रतियोगिता मे भाग लिया था और फाइनल तक पहुच गई थी। फाइनल मे पहुचकर मोहन बागान की टीम डुरहम लाइट इनफेंट्री से 1-4 से हार गई थी। दिल्ली मे डूरंण्ड प्रतियोगिता मे पहली बार भाग लेने वाली किसी गैर-सैनिक टीम (मोहन बागान) का भी उन्होने नेतृत्व किया था। पहली बार 1933 मे श्रीलका का दौरा करने वाली आई० एफ० ए० की टीम का भी उन्होंने नेतृत्व किया। वहा पर उनकी टीम ने पाच मे से चार मैच जीते और पाचवा मैच बराबर रहा।

1962 मे भारत सरकार ने उन्हे पदमश्री से अलकृत किया। पद्मश्री प्राप्त करने वाले वह देश के पहले फुटबाल खिलाडी थे।

फुटबाल के अतिरिक्त वह कुछ अन्य खेलो (जैसे क्रिकेट, हाकी और लान टेनिस) मे भी भाग लेते रहे।

खिलाडी जीवन के बाद उन्होने पश्चिम बगाल के नवयुवक और होनहार खिलाडियों को प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। वह काफी लम्बे समय तक

पावरी श्रेष्ठ प्रदशन के बाद भी भारतीय टीम मे अपने निश्चित स्थान के लिए सघर्षरत हैं। वह जे० के० केमिकल्स बम्बई मे काय करते हैं।

1978-79 मे वेस्टइडीज की टीम ने भारत का दौरा किया था। छह टेस्ट मैचो की इस शृखला म धावरी सबसे सफल गेंदबाज सिद्ध हुए। उनका एक पारी का सबसे अधिक स्कोर 86 रन है। यह रिकाड उन्होने 1979 मे बम्बई म आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेले गए छठे और अन्तिम टेस्ट मे बनाया था। इसके अतिरिक्त 29 59 रनो की औसत से 59 विकेट भी ले चुके हैं।

च

चन्दगीराम, मास्टर—भारत के जिस मशहूर पहलवान को लगातार दो बार 'भारत केसरी' बनने का गौरव प्राप्त हुआ, वह हैं हरियाणा के मास्टर चन्दगीराम।

गौर वण, छरहरा शरीर, कद छह फुट दो इच, और वजन कुल 190 पौंड (यानी लगभग दो मन, पद्रह सेर), लेकिन कुश्ती कला मे इतना सिद्ध हस्त कि बडे-बडे नामी और वजनी पहलवान सामने आते ही अपना आत्म विश्वास खो बैठें। यही है मास्टर चन्दगीराम की तस्वीर।

मास्टर चन्दगीराम का जन्म 15 माच, सन् 1938 मे ग्राम सिसाय, जिला हिसार के एक मध्यवर्गीय जाट परिवार मे हुआ। आप अपने माता-पिता की एकमात्र सन्तान हैं। ढाई वष की अल्पायु मे ही इनकी माता श्रवण देवी का स्वगवास हो गया। खर, इनके पिता चौधरी माडूराम एक परिश्रमी, ईमानदार और धार्मिक प्रवृत्ति के किसान थे और उन्होने अपने इकलौते बेटे को जहा स्नेहभाव से भर दिया और माता की कमी को महसूस नही होन दिया, वही उन्होंने इनपर कडी निगरानी भी रखी। 1954 मे चन्दगीराम जी ने मैट्रिक की परीक्षा पास कर जालधर आटस क्राफ्टस का डिप्लोमा प्राप्त किया। 1957 मे उनकी नियुक्ति गवनमट हाई स्कूल, मुढाला मे ड्राइग मास्टर के रूप म हो गई।

1961 म मास्टर चन्दगीराम को एक होनहार और प्रतिभाशाली पहलवान समझकर जाट रेजिमट बरेली ने उन्ह अपनी रेजिमट के प्रमुख पहलवान के पद पर नियुक्त किया। 1957 से 1961 तक ड्राइग मास्टर रहने के बाद सन् 1962 म वह जाट रेजिमट के बुलावे पर सेना म चले गए। पहले चन्दगीराम लाइट हेवी वेट वग मे आते थे। इसी बीच इन्होने देश के नामी

पहलवानों को पछाड़ना शुरू कर दिया। 1961 में इन्होंने इन्दौर के मशहूर पहलवान इसहाक को कोल्हापुर में केवल दो मिनट में हराया। कुछ ही दिनों बाद इन्दौर में ही पाकिस्तान के गुलाम कादिर को भी अठारह मिनट में चित कर दिया।

उन्होंने कोल्हापुर, इन्दौर, बेलगाव, पूना, बंगलौर, मैसूर, जबलपुर, हैदराबाद और बम्बई में सैकड़ों कुश्तियां अब तक लड़ी हैं। सईद मुल्ला, श्रवण पहलवान, कलुआ इन्दौर के इसहाक मोहम्मद, कर्नाटक के पार्ली और पाकिस्तान के लाल पहलवान रशीद पहलवान, गुलाम कादिर व हजरत पाटिल आदि सभी मास्टर चन्दगीराम से हार चुके हैं।

1969 में उन्हें उनकी सेवाओं के लिए खेल जगत के सर्वोच्च पुरस्कार 'अर्जुन पुरस्कार' से अलंकृत किया गया।

चन्दू बोर्डे—चन्द्रकान्त गुलाबराव बोर्डे का जन्म 21 जुलाई, 1934 को पूना में हुआ। वह 1958-59 में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट मैचों में आए। *उस समय उन्हें आल राउंडर माना जाता था, लेकिन बाद में कंधों में तकलीफ* के कारण उन्होंने गेंदबाजी करनी छोड़ दी। इंग्लैंड की विकेट पर खेलने का उन्हें बहुत अभ्यास है। रणजी ट्राफी तथा दिलीप ट्राफी के मैचों में वह महाराष्ट्र और केन्द्रीय खंड (सेन्ट्रो) का नेतृत्व करते रहे। वह अब तक 55 टेस्ट मैच खेल चुके हैं और 32.181 की औसत रनसंख्या से 3,064 रन बना चुके हैं। पूरे टेस्ट जीवन में उन्होंने 5 शतक और 18 अर्द्ध शतक बनाए। उनकी जीवन की अधिकतम रन संख्या 177 (और आउट नहीं) थी। उन्होंने टेस्ट मैचों में 46.46 की औसत से 52 विकेट भी लिए। 1967 में भारत सरकार ने उनकी क्रिकेट के क्षेत्र में की गई सेवाओं पर पदमश्री से उन्हें अलंकृत किया। 1966 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से अलंकृत किया गया था।

चन्द्रशेखर—1971 में जिस प्रकार भारत वेस्टइंडीज टेस्ट शृंखला जीतने का श्रेय सुनील गावस्कर को दिया गया और उसे उस शृंखला का हीरो मान लिया गया, उसी प्रकार 1971 में भारत इंग्लैंड टेस्ट शृंखला जीतने का श्रेय चन्द्रशेखर को दिया गया और उसे इस शृंखला का हीरो माना गया। भारत ने पहली बार इंग्लैंड को इंग्लैंड की भूमि पर न केवल एक टेस्ट हराया बल्कि पहली बार एतिहासिक टेस्ट शृंखला भी जीतकर भारतीय क्रिकेट के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ दिया।

भारत इंग्लैंड टेस्ट शृंखला के आखिरी और निर्णायक टेस्ट में भारत के स्पिनर और गुगली गेंददाज भगवत चन्द्रशेखर ने केवल 38 रन देकर छह विकेट लिए थे। वैसे तो एक जमाने में जसू पटेल और सुभाष गुप्ते भी इससे

अधिक विकेट ले चुके हैं, लेकिन उन्होंने विकेट लेने मे समय काफी अधिक लिया था। इतने कम समय मे इतने कम रन देकर इतने ज्यादा विकेट लेने वाले चन्द्रशेखर भारत के पहले खिलाड़ी हैं।

चन्द्रशेखर की गेंद का सारा जादू उनकी जादुई कलाई और उगलियो मे छिपा है। गेंद ठीक कहा गिरेगी इसका सही पूर्वानुमान बल्लेबाज नहीं कर पाता और हक्का बक्का हो खडा का खडा रह जाता है और चन्द्रशेखर की गेंद अक्सर बल्लेबाजो को धोखा दे जाती है। यो चन्द्रशेखर गेंद को हमेशा एक ही ढग से पकडते हैं। वह लेग या टाप स्पिन से ज्यादा गुगली फेंकने म दक्ष हैं। उनकी बीच की उगली सीधी सीवन पर रहती है। उनकी कलाई के इस जादू के पीछे भी एक कहानी है। जब वह केवल आठ वर्ष के ही थे तो पोलियो (लकवे) के कारण उनका दायां हाथ एक तरह से बेकार सा हो गया था। चन्द्रशेखर का जन्म 18 मई, 1945 को बगलौर मे हुआ। मसूर विश्वविद्यालय म ही उन्होने शिक्षा प्राप्त की और अब बगलौर म एक बक अधिकारी के रूप मे काम कर रहे हैं। जिन दिनो उन्हे पोलियो हुआ उन दिना उन्हे क्रिकेट का बेहद शौक था। लेकिन तब वह विकेट-कीपर का ही दायित्व सभालते। सयोग से एक दिन उन्हे गेंद फेंकने का अवसर मिला। घबराते हुए उन्होने दाए हाथ से गेंद फेंकने की कोशिश की। देखते ही देखते वह विकेटकीपर स गेंददाज बन गए।

पोलियो के कारण वह कलाई को जरूरत पडने पर जरूरत स ज्यादा मोड लेते हैं और इस प्रकार कई बार लेगब्रेक गेंद को गुगली बना देते हैं।

वह 58 टेस्टो म हिस्सा लेने के बावजूद कुल 167 रन ही बना पाए हैं, जिसका औसत 4 07 बैठता है। लेकिन गेंदबाज के रूप मे 29 28 रनो की औसत से 242 विकेट ले चुके हैं। इग्लैड के विरुद्ध उन्होने 89 रन देकर 8 विकेट लिए। यह उनके जीवन का सवश्रेष्ठ प्रदशन था।

चक्का फेंकना (डिस्कस थ्रो)—चक्का फेंकने क खेल का इतिहास कितना पुराना है—इसपर मतभेद हो सकता है, मगर इसपर कोई मतभद नही है कि यह खेल काफी पुराना है और बहुत पहले मिस्र और कुछ अन्य देशो मे ऐसा था कि इसस कुछ मिलता-जुलता एक खेल खेला जाता था। अन्य प्राचीन खेलो की तरह तब तक इस खेल के भी कोई विशेष नियम या उप-नियम नही बनाए गए थ। परन्तु आज इस खेल के नियम और उप नियम निश्चित हैं। जब इस खेल के नियम और उप नियम तय कर दिए गए तब भी कुछ भागो म यह खेल अलग अलग आकार-प्रकार की प्लेटो (चक्रो) के आधार पर खेला जाता था। यद्यपि इस प्लेट या चक्के का वजन तय कर दिया गया था। चक्के का वजन 2 किलोग्राम (4 पौंड और 6½ औंस)

निश्चित कर दिए जाने के बाद भी कुछ सालो तक कुछ देश वजन के नियम का तो पालन करते रहे पर आकार प्रकार के नियम का उल्लंघन करते रहे। उदाहरणार्थ अमेरिका और मध्य युरोप म 7 फुट घेरे के चक्के का प्रयोग किया जाता रहा और स्कैंडेनेविया और कुछ अन्य भागो म 8 फुट 10½ इच घेरे के चक्के का प्रयोग होता रहा। 1912 म इस चक्के के घेरे के इस विवाद का भी फैसला कर दिया गया और उसका डायमीटर 2 50 मीटर (यानी 8 फुट 2½ इच) तय किया गया। यह चक्का एक विशेष लकड़ी का बना होता है और इसके किनारे पर पीतल चढ़ा रहता है।

इस प्रतियोगिता मे सबसे पहले जिस खिलाड़ी ने थोडा बहुत कमाल दिखाया उसका नाम था मार्टिन शेरीडान। कहने को तो यह अमेरिका का खिलाडी था, पर जन्म से आइरिश था। शेरीडान ने 1902 से लेकर 1909 तक इस खेल मे आठ बार विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। यानी 129 फुट 4 इच से जो चक्का फेंकना शुरू किया तो 144 फुट तक फेंक कर ही दम लिया। 1904 मे उन्हे ओलम्पिक चम्पियन होने का भी गौरव प्राप्त हुआ। अमेरिका के ही क्लारेंसी हाउसर 1924 और 1928 म इस खेल मे ओलम्पिक चम्पियन रहे। लेकिन सबसे ज्यादा प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा अमेरिका के अल ओएरटर को प्राप्त हुई, जो 1956, 1960 और 1968 म ओलम्पिक विजेता तो रहे ही, साथ ही उन्ह पहली बार 200 फुट से अधिक चक्का फेंकने का गौरव प्राप्त हुआ।

चरणजीत सिंह—1964 मे तोक्यो म हुए ओलम्पिक खेलो मे जिस भारतीय हाकी टीम ने पुन विश्व विजेता का पद प्राप्त किया उसका नेतृत्व चरणजीत सिंह ने किया था। उनका जन्म 22 नवम्बर, 1930 को गाव मारी, जिला कागडा म हुआ। उन्होंने गुरदासपुर मे अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। शुरू-शुरू मे उन्हे फुटबाल खेलने का बहुत शौक था, लेकिन उनके छोटे कद और दुबले शरीर के कारण उनके प्रशिक्षको ने उन्हे हाकी खेलने का सुझाव दिया। उन्होने इस सुझाव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। उसके बाद उन्ह लायलपुर जाना पडा। वहा वह खालसा स्कूल मे दाखिल हो गए। उन दिनो खालसा स्कूल की टीम बहुत अच्छी मानी जाती थी। चरणजीत सिंह जितना खेल मे अच्छे थे उतने ही पढ़ाई लिखाई मे भी। 1950 मे चरणजीत पजाब पुलिस मे भरती हो गए। 1960 म रोम ओलम्पिक खेलो मे चरणजीत ने भारत का प्रतिनिधित्व तो किया, लेकिन यह वर्ष भारतीय हाकी का सबसे ददनाक वर्ष माना जाता है। उन्होने पाकिस्तान, मलयेशिया, न्यूजीलड, आस्ट्रेलिया, फ्रास, हागकाग और अन्य कई देशो का दौरा भी किया। उन्हे अर्जुन पुरस्कार और पद्मश्री से भी अलकृत किया गया।

उसके बाद उन्होंने कृषि विश्वविद्यालय हिसार में उप निदेशक (खेलकूद) का दायित्व संभाल लिया।

चुन्नी गोस्वामी—काफी लम्बे अरसे तक भारतीय फुटबाल के इतिहास में अपने नाम और अपने खेल की छाप छोड़ने वाले सुबिमल गोस्वामी, जिन्हें लोग प्यार से 'चुन्नी गोस्वामी' कहते हैं, का जन्म 15 जनवरी, 1938 को कलकत्ता में हुआ। अपने दूसरे साथियों की देखादेखी उन्होंने बचपन में ही फुटबाल खेलना शुरू कर दिया। मोहन बागान के अधिकारी उनके खेल से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें 1954 में, जब वह केवल 16 वर्ष के ही थे, टीम में शामिल कर लिया और मोहन बागान की ओर से अपना पहला लीग मैच खेलते हुए उन्होंने गोल करने का श्रेय प्राप्त किया। उसके बाद उन्होंने मोहन बागान की टीम का नेतृत्व किया और उनके नेतृत्व में मोहन बागान की टीम ने देश की सभी प्रमुख प्रतियोगिताओं में विजयश्री हासिल की।

1955 से ही उन्होंने राष्ट्रीय फुटबाल प्रतियोगिताओं में बंगाल का नेतृत्व करना शुरू किया और 1960 में बंगाल टीम का नेतृत्व करने के साथ-साथ रोम के ओलम्पिक में भारत के प्रतिनिधित्व का गुरुतर भार भी संभाला।

1956 में मेलबार्न ओलम्पिक खेलों में चुन्नी को भारतीय टीम में शामिल नहीं किया गया, लेकिन उसके बाद 1958 में तोक्यो में हुए एशियाई खेलों में उन्हें टीम में शामिल कर लिया गया। तोक्यो के बाद काबुल में हुई एक प्रतियोगिता में उन्होंने आल इंडिया कबाइड युनिवर्सिटी टीम का नेतृत्व किया। 1962 से उन्होंने भारतीय टीम का नेतृत्व किया और 80 बड़े अंतरराष्ट्रीय मैचों में 500 से अधिक गोल किए।

1962 में जकार्ता में हुए एशियाई खेलों में जिस भारतीय टीम ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया उसके वह कप्तान थे। उन्हीं के नेतृत्व में तेल अवीव में हुई एशियाई कप और क्वालालम्पुर में हुए मर्डेका कप प्रतियोगिताओं में भारत को रनर अप रहने का गौरव प्राप्त हुआ। 1962 और 1964 में उन्हें एशिया का सर्वश्रेष्ठ फारवर्ड घोषित किया गया।

'चुन्नी' जितने अच्छे फुटबाल के खिलाड़ी थे, उतने ही अच्छे क्रिकेट के खिलाड़ी (हरफनमौला) भी थे। रणजी ट्राफी प्रतियोगिताओं में वह बंगाल की ओर से खेलते थे। 1966 में वेस्टइंडीज के विरुद्ध खेलने वाली ईस्ट और सेंट्रल जोन एकादश टीम में भी उन्हें शामिल किया गया।

1964 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

वह अपने जीवन का सबसे गौरवपूर्ण क्षण किसे मानते हैं? इसके जवाब में वह हमेशा यही उत्तर देते हैं कि 1962 में जकार्ता में हुए एशियाई खेलों

म जब भारत विरोधी वातावरण होने के बावजूद भारतीय टीम न स्वण पदक प्राप्त किया और मुझे विजय मच पर खड़े होने का गौरव प्राप्त हुआ तो मैं एक अवणनीय गौरव से अभिभूत हो उठा और उसे ही मैं अपने जीवन का सबसे गौरवपूण क्षण मानता हू।

अपने जीवन के सबसे अच्छे गोल का जिक्र करत हुए उन्होंने कहा कि जकार्ता म ही सेमी-फाइनल मे वीएतनाम के विरुद्ध खेलते हुए मैंने 25 गज की दूरी से जो गोल किया, वह मेरे खेल-जीवन का सबस अच्छा गोल है।

उनका कहना है कि 1956 से 1963 के बीच का समय भारतीय फुटबाल का स्वर्णिम अध्याय माना जाना चाहिए, क्योंकि इस दौरान हम रहीम जैसे प्रशिक्षक से प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला और भारतीय टीम म थगराज, अरुण, जरनैल, पी० के० और बलराम जसे चोटी के खिलाडी रहे।

चेतन चौहान—21 जुलाई, 1947 को जन्मा दाए हाथ का ठोस ओपनिंग बल्लेबाज और उपयोगी आफ-ब्रेक गेंदबाज चेतन चौहान काफी समय उपेक्षित रहने के बाद टीम का नियमित सदस्य बन पाया। बरेली मे जन्मा चौहान रणजी ट्राफी मे पहले महाराष्ट्र की ओर से खेलता था, बाद म दिल्ली का स्तम्भ बना रहा। रणजी ट्राफी म चेतन का बहुत अच्छा प्रदशन रहा। 1978 म उसने भारतीय टीम के साथ पाकिस्तान का दौरा किया। 1978 79 मे वेस्टइडीज के विरुद्ध खेलते हुए बम्बई टेस्ट मे उसने 84 रन बनाए।

32 वर्षीय चौहान अब प्रारम्भिक बल्लेबाज के रूप म काफी नाम कमा चुका है। 27 टेस्टो म खेलते हुए वह अब तक 1397 रन बना चुका है। उसका औसत 31 41 रन बठता है। उसका एक पारी का सर्वश्रष्ठ स्कोर 93 रन है। शाट लेग स्थान का वह अच्छा क्षेत्ररक्षक है और अब तक 28 कच ले चुका है।

चपमन, आथरपर्सी फ्रेक—(कम्ब्रिज, कण्ट) जन्म 3 सितम्बर 1900, मृत्यु 16 सितम्बर, 1961। इग्लड का सफलतम कप्तान। नौ म से छह टेस्ट जीते। 1930 के लार्ड्स-टेस्ट की दूसरी पारी मे ब्रडमैन के कैच को विश्व का सर्वोत्तम कैच कहा जाता है। पूरे जीवन म 16,135 रन बनाए।

ज

जयपाल सिंह—भारतीय हाकी का गौरवपूर्ण इतिहास 1928 से शुरू होता है। इस बार भारतीय हाकी ने पहली बार ओलम्पिक खेलों में भाग लिया और स्वर्ण पदक प्राप्त किया। जयपाल सिंह भारतीय टीम के कप्तान थे। उनका जन्म 1903 में रांची जिले में हुआ। उन्होंने स्कूली जीवन से ही हाकी खेलना शुरू कर दिया था। उसके बाद जब वह आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय गए तब वहां भी हाकी का अभ्यास करते रहे। आक्सफोर्ड से लौटने के बाद जयपाल सिंह कलकत्ता की हाकी टीम मोहन बागान में शामिल हो गए और 1930 से 1934 तक वह मोहन बागान की टीम के कप्तान रहे। उसके बाद उन्हें अखिल भारतीय खेलकूद परिषद का सदस्य नियुक्त किया गया। वह काफी समय तक संसद सदस्य भी रहे। 20 मार्च 1970 को उनकी मृत्यु हो गई। उनकी अकस्मात मृत्यु से बहुत से खेल प्रेमियों को जबरदस्त धक्का लगा।

जय सिम्हा, एम० एल०—देश के हरफनमौला और सदाबहार क्रिकेट खिलाड़ी, 36 वर्षीय एम० एल० जय सिम्हा ने जिन्होंने 'आंखों देखा हाल सुनाने' और क्रिकेट समीक्षक के रूप में भी अब काफी ख्याति प्राप्त कर ली है क्रिकेट से विधिवत संन्यास लेने की घोषणा कर दी है। भारतीय क्रिकेट में 22 साल तक अपनी धाक जमाने वाले जय सिम्हा ने 16 वर्ष की उम्र में ही हैदराबाद की ओर से रणजी प्रतियोगिता में खेलना शुरू कर दिया था। क्रिकेट जगत में 'जय' के नाम से प्रसिद्ध इस खिलाड़ी का जन्म 3 मार्च, 1939 को हुआ और उन्होंने 1955 में पहली बार रणजी प्रतियोगिता में आंध्र प्रदेश के विरुद्ध खेलते हुए 90 रन बनाकर अपनी धाक जमा ली। रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में वह अब तक कुल मिलाकर 5 500 रन (17 शतक सहित) बना चुके हैं। इस प्रकार अधिकतम शतक बनाने वालों की सूची में उनका तीसरा स्थान (यानी, मुश्ताक अली के बराबर) रहा। पहला स्थान हजारे (22 शतक) और दूसरा पंकज राय (21 शतक) का है।

किसी भी क्रिकेट खिलाड़ी का परिचय आंकड़ों के बिना अधूरा रहता है लेकिन जहां तक जय का सवाल है उनके परिचय में आंकड़ों के अतिरिक्त भी एक बात यह जोड़ी जाती है कि वह देश के एकमात्र ऐसे खिलाड़ी हैं जिन्हें मैच के पांचों दिन थोड़ी बहुत बल्लेबाजी करने का गौरव प्राप्त हुआ। यह गौरव उन्हें 1959 60 में कलकत्ता में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए प्राप्त हुआ था। लेकिन जब भी उनसे इस बारे में बातचीत की जाती है तो

वह इसे अपनी बहुत बडी उपलब्धि नही बल्कि एक सयोगमात्र मानते हैं।

सक्षेप म जय सिम्हा के आकडे इस प्रकार हैं

टेस्ट मच 39 टेस्ट, 71 पारिया, चार वार अविजित, कुल 2,056 रन, सवश्रेष्ठ रन सख्या 129, औसत 30 68 रन।

रणजी ट्राफी 80 मैच 110 पारिया, अविजित (10 वार) सवश्रेष्ठ रन सख्या 259 (बगाल के विरुद्ध) कुल रन सख्या 5 500, औसत 50 40 रन।

जय का सवश्रेष्ठ प्रदशन 1964 म रहा। इस वष बगाल के विरुद्ध रणजी ट्राफी मैच म उन्होने 259 रन बनाए। इसी वष रणजी ट्राफी के एक सीजन म 500 से ज्यादा रन बनाने का भी गौरव प्राप्त किया। इसी वष भारत *का दौरा कर रही इग्लड की टीम के विरुद्ध उन्होने 2 शतक भी लगाए।*

टेस्ट मैचो म जय का पदापण क्रिकेट के मक्का 'लाड स' से शुरू हुआ। 1959 म 20 वष की आयु म ही टेस्ट खेलने वाले खिलाडियो म जय सिम्हा उस समय सबसे कम उम्र म टेस्ट खेलने वाले भारतीय खिलाडी थे।

1967 68 मे आस्ट्रेलिया का दौरा करने वाली भारतीय टीम म जब अच्छे प्रदशन के बावजूद जय को स्थान न मिल सका तो भारतीय क्रिकेट प्रेमियो और क्रिकेट-समीक्षको ने चयनकर्ताओ की काफी टीका टिप्पणी की। आस्ट्रेलिया पहुचने पर जब भारतीय टीम की स्थिति काफी डावाडोल होने लगी और भारतीय टीम पहल दोनो टेस्टो (एडिलेड और मेलबोन) मे बुरी तरह हार गई तो जय सिम्हा की माग और भी बढ गई। जय सिम्हा को विशष विमान द्वारा आस्ट्रेलिया भेजा गया। ब्रिसबेन म तीसरा टेस्ट आरम्भ होते होते जय आस्ट्रेलिया पहुचे और भारतीय टीम म शामिल हो गए। यद्यपि सफर की थकान भी दूर नही हुई, फिर भी उन्होने 74 तथा 101 रन बनाकर भारतीय टीम को न केवल हारने से बचाया बल्कि एक बार तो जीत की कगार पर भी ला खडा किया। यह दूसरी बात है कि भारतीय टीम जीत नहा पाई।

मुश्ताक अली तथा इजीनियर की भाति जय भी 'आक्रमण ही बचाव का सवश्रेष्ठ उपाय है' के सिद्धान्त पर विश्वास करते थे। उनके क्रीज पर आने का साफ अथ यह था कि सब क्षेत्ररक्षक फल जाए अब जानदार ड्राइव हुक, पुल और कट की बारी है। सीधा ड्राइव उनका सवश्रेष्ठ शाट माना जाता था।

टेस्ट मैचो म उन्होने 3 शतक लगाए। एक शतक आस्ट्रेलिया के विरुद्ध तथा दो शतक 1964 म इग्लड क विरुद्ध (कलकत्ता तथा नई दिल्ली)।

जहीर अब्बास—पाकिस्तान का जहीर अब्बास एक जबदस्त आक्रामक और आकषक बल्लेबाज है।

सैयद जहीर अब्बास का जन्म 24 जुलाई, 1947 को स्यालकोट

(पाकिस्तान) म हुआ। आकपक स्ट्रोको वाला जहीर अब्बास देखने मे निहायत सु दर बल्लेबाज है और कभी कभार आफ ब्रेक गेदें भी फेंक लेता है। 1976 के सत्र म उसने 11 शतक बनाए और काउटी प्रतियोगिता की बल्लेबाजी की औसत म वह सबस ऊपर रहा, जो हर दृष्टि से सराहनीय है। इस सत्र म उसने प्रति पारी 75 11 रन की औसत से कुल 2,554 रन बनाए। प्रथम श्रेणी के मैचो मे वह अब तक 50 से अधिक शतक बना चुका है। पाकिस्तान की ओर से अब तक वह 33 टेस्ट मैचा मे खेला है और 6 शतको की सहायता से 2,460 रन बना चुका है। उनका उच्चतम स्कोर 274 रनो का है।

जरनल सिह—जरनल सिह का ज म 1936 म जिला लायलपुर (जो अब पाकिस्तान के अधीन है) म हुआ। अभी वह 13 ही वष के थे कि देश का विभाजन हो गया और उ हे अपने परिवार के सदस्यो के साथ होशियारपुर जिले म आना पडा। यहा उ होने फुटबाल के खेल म अपन स्कूल का प्रतिनिधित्व किया। हाई स्कूल के बाद कालेज जीवन मे उ होने 1954 से 57 तक पजाब विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया। सन् 1957 मे जब उन्हें पहली बार पजाब राज्य की टीम मे शामिल किया गया तो उनकी खुशी का कोई ठिकाना नही रहा। इसी वष उ होने डी० सी० एम० फुटबाल प्रतियोगिता मे भी भाग लिया। तभी उनके खेल प्रदशन से प्रभावित होकर कलकत्ता के मशहूर क्लब 'मोहन बागान' ने उ हे आमंत्रित किया। और इस प्रकार 1958 मे अपनी बी० ए० की पढाई पूरी कर वह 1959 मे कलकत्ता के प्रसिद्ध मोहन बागान क्लब मे शामिल हो गए। और उसके बाद से वह भारतीय टीम के एक आवश्यक अग बन गए।

1961 म उ होने मोहन बागान दल के साथ पूर्वी अफ्रीका का दौरा किया। 1961 से 67 तक मैर्डेका फुटबाल प्रतियोगिता मे उ होने भारत का प्रतिनिधित्व किया। इस प्रतियोगिता मे सन् 63 और 65 म भारत को तीसरा और 64 म दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। 1964 मे भारत ने इजराइल द्वारा आयोजित एशियाई कप टूर्नामेट मे भाग लिया जिसम इजराइल को प्रथम और भारत को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

जाजी, माइकेल—तोक्यो म 1964 म हुए ओलम्पिक खेलो म फ्रास के माइकेल जाजी हार के बाद इतन निराश हो गए थ कि वह दौड धूप की दुनिया स अपना रिश्ता ही तोड देना चाहते थ। लकिन जब वह वापस अपने देश परिस पहुचे तब वहा के उत्साही खेल प्रेमियो ने उनका इस ढग से स्वागत किया जस कोई चम्पियन अपने देश लौट आया हो। जाजी न फिर अपना इरादा बदल दिया और उसी दिन से उन्होने अपनी तैयारी और प्रशिक्षण शुरू कर दिया। केवल आठ महीने की कठोर साधना के बाद जून

1965 म उन्होने चार विश्व और दस युरोपीय रीतिमान स्थापित किए।

टोक्यो ओलम्पिक म जाजी को 5 000 मीटर फासले की दौड म चौथा स्थान प्राप्त हुआ था। वारश्कूल ने इस दूरी को 15 मिनट 48 8 सकिंड म पार कर प्रथम स्थान प्राप्त किया था, लेकिन केवल आठ महीने बाद ही जाजी न इस फासले को 13 मिनट 27 6 सैकिंड म पार कर नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। उनकी इस अभूतपूव सफलता पर उनक सबस बडे प्रतिद्वद्वी आस्ट्रेलिया के रान क्लाक ने भी उन्ह बधाई दी। उन्होने एक मील की दौड को 3 मिनट 53 6 सकिंड म पूरा कर नया विश्व रिकाड स्थापित किया था।

1960 के रोम ओलम्पिक म भी उन्ह 1,550 मीटर के फासले मे स्वण पदक प्राप्त करने की बडी उम्मीद थी लेकिन वहा उन्होने इस फासले को 3 मिनट 38 4 सकिंड म पूरा कर दूसरा स्थान प्राप्त किया था। आस्ट्रलिया के हब इलियट ने इस दूरी को 3 मिनट 35 6 सकिंड म पार किया था।

जातोपेक एमिल—चेस्कोस्लोवाकिया के सनिक अधिकारी एमिल जातोपेक ने 1952 के हेलसिंकी ओलम्पिक खेला म एक साथ तीन स्वण पदक जीतकर खेलकूद की दुनिया म एक हलचल-सी मचा दी। जातोपेक न 5 000 मीटर 10 000 मीटर और मैराथन दौड म स्वण पदक प्राप्त किए। इसस पहले 1948 म लदन म हुए ओलम्पिक खेला म उ होने 10 000 मीटर मे स्वण पदक प्राप्त किया था।

यहा यह बता देना उचित होगा कि जब-जब जातोपेक की चर्चा की जाएगी तब तब उनकी पत्नी डाना का भी उल्लेख अवश्य किया जाएगा। यह एक विचित्र सयोग की ही बात है कि उनका और उनकी पत्नी डाना का ज मदिन एक ही था। पति पत्नी दोनो का ज म 19 सितम्बर, 1922 का हुआ। दोनो का विवाह भी 19 सितम्बर को ही हुआ और 19 सितम्बर 1952 के दिन हेलसिंकी म दोनो ने ही एक एक स्वण पदक प्राप्त किया। इस दिन जातोपेक ने 5,000 मीटर की दौड म स्वण पदक प्राप्त किया और डाना ने महिलाओ की भाला फेंक प्रतियोगिता म स्वण पदक प्राप्त किया। दोनो के जीवन म 19 सितम्बर के दिन का विशेष महत्त्व है।

जिमथोप—अमेरिका के जिमथोप ने 1912 म स्टाकहोम ओलम्पिक म अपने अदभुत प्रदशन से स्वीडन के सम्राट गुस्ताव पचम सहित एक लाख दशको को स्तब्ध कर दिया था।

1888 म ओक्लाहोमा म जन्मे अमेरिकी रेड इडियन मिश्रित रक्त के इस विलक्षण एथलीट न प टेथलन और डिकेथलन म स्वण पदक जीते थे, लेकिन कई महीने बाद जनवरी 1913 म किसी अति आदशवादी के कहने

पर थोप से य पदक इसलिए वापस ले लिए गए कि उसने कभी पेशेवर के रूप म बेसबाल खेली थी। बाद म थोप ने बेसबाल और अमेरिकी शैली की फुटबाल म भी बड़ा नाम कमाया। विडम्बना यह है कि इस महान एथलीट और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का सवश्रेष्ठ फुटबाल (अमेरिकी) खिलाड़ी कहलाने वाले थोर्प का 1953 म निधनता की स्थिति मे देहान्त हुआ।

जिम रिऊन—जुलाई 1966 म जब 19 वर्षीय जिम रिऊन ने एक मील फासले की दौड म फ्रास के माइकेल जाजी का एकाधिपत्य समाप्त कर दिया और उसने 2 3 सेकिंड कम समय म यह फासला तय कर दिखाया तो खेल ससार म एक हलचल-सी मच गई। लोग हैरान होकर यह कहने लगे कि यदि 19 साल की उम्र म रिऊन का यह हाल है तो भरी जवानी म वह न जाने क्या कमाल कर डाले! एक मील के भूतपूर्व चम्पियन पीटर स्नैल (न्यूजीलैंड) ने कहा कि मैं तो हमेशा यह मानता रहा हू कि भाग दौड के क्षेत्र म 20 वष की उम्र म ही कुछ कमाल दिखाया जा सकता है, मगर इस दौडाक ने तो मेरी धारणा को ही गलत साबित कर दिया है। जिम रिऊन का कद 6 फुट 2 इच और वजन 155 पौड है। वसे तो 15 वष की उम्र से ही रिऊन ने भाग-दौड की बडी प्रतियोगिताओ म हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। 1964 म जब रिऊन ने तोक्यो ओलम्पिक मे भाग लिया तो उनकी उम्र केवल 17 वष की थी। ओलम्पिक मे क्योकि एक मील की प्रतियोगिता नही होती, इसलिए उन्होने 1500 मीटर की दौड मे हिस्सा लिया। वहा उनका प्रदशन ज्यादा उत्साहवद्धक नही रहा। लेकिन तोक्यो स लौटने के बाद दो वर्षों म ही उन्होने अपनी मुराद पूरी कर ली।

जिम लेकर—सरे के जिम लेकर को कुछ क्रिकेट-समीक्षक विश्व का आज तक का सवश्रेष्ठ आफ-स्पिनर मानते हैं, हालांकि ह्यू टेफील्ड (दक्षिण अफ्रीका), फ्रेड टिटमस (इग्लैंड), लास गिब्ज (वेस्टइडीज) और इरेपल्ली प्रसन्ना क समथक सम्भवत इस कथन से सहमत न हो। चार्ली टनर (आस्ट्रेलिया) से लेकर रे इलिगवथ (इग्लैंड) तक अनेक उत्कृष्ट आफ ब्रेक गेंदबाज हुए हैं, किन्तु जिम लेकर ने 1956 मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध जो असाधारण रन प्रदशन किया, वह अविस्मरणीय है, अपूव है।

यद्यपि जिम लेकर का जन्म 9 फरवरी 1922 को याकशायर म हुआ किन्तु वह काउटी क्रिकेट मे सरे की ओर स खेला। काउटी क्रिकेट म लेकर और टोनी लाक की जोडी बहुत जमती थी और इन दोनो ने सरे को 1952 से 1958 तक लगातार 7 बार काउटी चम्पियन बनाने म महत्त्वपूण योग दिया।

जिम लेकर ने 46 टेस्ट मैचो मे प्रति विकेट 21 23 रन की औसत से कुल 193 विकेट लिए। इग्लड के गेंदबाजो म उससे अधिक टेस्ट विकेट

फ्रेडी ट्रूमैन, डेरेक अडरवुड, ब्रायन स्टथम, अलेक बेडसर और जान स्नो ने लिए हैं। लेकर ने एक टेस्ट पारी म 5 या अधिक विकेट लेने का करिश्मा आठ बार दिखाया। लेकर ने प्रथम श्रेणी के मैचो म कुल मिलाकर 1,944 विकेट लिए। एक क्रिकेट सत्र म 100 या अधिक विकेट लने का करिश्मा उसने 11 बार दिखाया।

प्रथम श्रेणी के मैचा म लेकर ने सबसे शानदार प्रदशन ब्रडफोड म 1950 मे आयोजित एक टेस्ट परीक्षण मैच म किया, जिसमें उसने 14 ओवरो मे 12 मेडन फेंके और सिफ 2 रन पर आठ विकेट लिए। इसी सत्र म उसने 166 विकेट लिए, जो उसका सबसे अच्छा प्रदशन है।

1956 म आस्ट्रेलिया के विरुद्ध शृखला म असाधारण प्रदशन के अलावा लेकर ने सरे की ओर से आस्ट्रेलिया टीम के विरुद्ध ओवल म 88 रन देकर दस के दस विकेट लिए। अपने क्रिकेट जीवन के कुछ वप लेकर ने काउटी क्रिकेट म इसेक्स की ओर से खेलने म बिताए।

जिम्नास्टिक—*ओलम्पिक खेलो म सर्वाधिक आकपक प्रतियोगिता* जिम्नास्टिक्स को ही कहा जा सकता है, जिसम कला और कौशल का, प्रतिभा और तकनीक का अद्भुत सगम देखने को मिलता है। इसम सरकस का-सा भी लुत्फ रहता है और एक खेल का भी। स्केटिंग और डाईविंग का प्रदशनात्मक कौशल भी इसम है। भले ही प्राचीन यूनान म इसे खेल कम और स्वास्थ्य तथा शारीरिक विकास का माध्यम अधिक माना जाता रहा हो, अब जिम्नास्टिक्स एक घार स्पर्द्धात्मक खेल के रूप मे विकसित हो चुका है।

1896 मे एथे स म हुए पहले आधुनिक ओलम्पिक खेलो मे जिम्नास्टिक्स म जमनी को सबस अधिक सफलता मिली थी और इसके साथ ही यूरोपीय प्रभुत्व का सिलसिला शुरू हो गया। रिकाड के तौर पर कहा जा सकता है कि केवल 1904 म सेंट लुई मे हुए ओलम्पिक खेला म मेजबान अमेरिका को टीम खिताब मिला वरना यूरोपीय देश ही इसम विजयी रहे—विशेषकर इटली। 1936 म बर्लिन खेलो म मेजबान जमनी को पुरुप और महिला दोनो वर्गो के खिताब मिले। 1952 म हेलसिंकी ओलम्पिक से ओलम्पिक खेलो म सावियत सघ ने कदम रखते ही जिम्नास्टिक्स म अपना श्रेष्ठता सिद्ध कर दी। लकिन यूरोपीय प्रभुत्व कब तक अक्षुण्ण रहता! रोम ओलम्पिक से चुनौती आई, प्रबल चुनौती, अमेरिका या आस्ट्रेलिया से नहीं एशिया स जापान के रूप मे। जापान पिछले चार ओलम्पिक खेलो म पुरुप टीम-स्पर्द्धा का बिजता है।

यदि पुरुप-वग म जापान दावित बना हुआ है तो महिला वग म 1952 से सोवियत सघ का आधिपत्य है।

ओलम्पिक जिम्नास्टिक
सयुक्त व्यायाम प्रदर्शन (व्यक्तिगत स्पर्द्धा) विजेता

(पुरुष—1900 से प्रारम्भ)

वर्ष	विजेता
1900	गुस्ताव स ड्रास (फ्रास)
1904	एडोल्फ स्पिनलर (जमनी)
1908	अल्वर्टो ब्रैगालिया (इटली)
1912	अल्वर्टो ब्रैगालिया (इटली)
1920	ज्योर्जियो जैम्पोरी (इटली)
1924	लियोन स्कूल्लेज (यूगोस्लाविया)
1928	ज्योर्जेस मीज (स्विटजरलैंड)
1932	रोमियो नेरी (इटली)
1936	काल श्वाजमान (जमनी)
1948	वीको हुटानेन (फिनलैंड)
1952	विक्तर चुकारिन (सोवियत सघ)
1956	विकतर चुकारिन (सोवियत सघ)
1960	वोरिस साखलिन (सोवियत)
1964	युकिओ एण्डो (जापान)
1968	सवाओ काती (जापान)
1972	सवाओ काता (जापान)
1976	निकोलाई आद्रियानोव (सोवियत सघ)

(महिला—1952 से प्रारम्भ)

वर्ष	विजेता
1952	मारिया गारोम्रोव्स्काया (सोवियत सघ)
1960	लरिसा लेतिनिना (सोवियत सघ)
1956	लरिसा लेतिनिना (सोवियत सघ)
1964	वेरा कसलाव्स्का (चेकोस्लोवाकिया)
1968	वेरा कैसलाव्स्का (चेकोस्लोवाकिया)
1972	लुदमिला तुरिश्चवा (सोवियत सघ)
1976	नादिया कोमानेची (रोमानिया)

ओलम्पिक जिम्नास्टिक सयुक्त व्यायाम (टीम) स्पर्द्धा विजेता

(पुरुष—1924 से प्रारम्भ)

वर्ष	स्वर्ण	रजत	कांस्य
1924	इटली	फ्रास	स्विट्जरलड
1928	स्विटजरलड	चेकोस्लोवाकिया	यूगोस्लाविया
1932	इटली	अमेरिका	फिनलड
1936	जर्मनी	स्विटजरलड	फिनलड
1948	फिनलड	स्विटजरलड	हगरी
1952	सोवियत सघ	स्विटजरलैंड	फिनलड
1956	सोवियत सघ	जापान	फिनलड
1960	जापान	सोवियत सघ	इटली
1964	जापान	सोवियत सघ	जर्मनी
1968	जापान	सोवियत सघ	पूर्वी जर्मनी
1972	जापान	सोवियत सघ	पूर्वी जर्मनी
1976	जापान	सोवियत सघ	पूर्वी जर्मनी

(महिला—1928 से प्रारम्भ)

वर्ष	स्वर्ण	रजत	कांस्य
1928	हालड	इटली	ब्रिटेन
1932	स्पर्द्धा नही हुई		
1936	जर्मनी	चेकोस्लोवाकिया	हगरी
1948	चेकोस्लोवाकिया	हगरी	अमेरिका
1952	सोवियत सघ	हगरी	चेकोस्लोवाकिया
1956	सोवियत सघ	हगरी	रूमानिया
1960	सोवियत सघ	चेकोस्लोवाकिया	रूमानिया
1964	सोवियत सघ	चेकोस्लोवाकिया	जापान
1968	सोवियत सघ	चेकोस्लोवाकिया	पूर्वी जर्मनी
1972	सोवियत सघ	पूर्वी जर्मनी	हगरी
1976	रोमानिया	सोवियत सघ	सोवियत सघ

जूडो—जूडो, जो जापान का राष्ट्रीय खेल कहलाता है ससार के प्राय सभी देशो म लोकप्रिय हो चुका है, जबकि भारत म भी यही अन्य खेलो के साथ सम्मिलित कर दिया गया है। जूडो भारतीय कुश्ती से मिलता जुलता

खेल है, जिसमे दोहरी सिलाई वाली जाकेट तथा पाजामा पहने एक विचित्र पोशाक की पकड से पहलवान एक दूसरे पर दाव पेच चलाते है। प्रतिद्वन्द्वी का फेंकने, कुछ निश्चित समय तक जमीन पर फसाए रखने अथवा छुट्टी मागने पर हार जीत का निर्णय हो जाता है। कहते है जापान और चीन की सीमा पर लुच्चू नामक एक आइलैंड था जिसको हथियाने मे दोनो देशो का संघर्ष चलता था। सत्रहवी शताब्दी मे यह आइलैंड स्वतन्त्र हो गया। वहा हथियार रखने की मनाही थी, अत यहां के लोगो ने बिना हथियारो से, अर्थात घूसा, थप्पड, आदि से लडने वाली कलाओ का अभ्यास किया, जो आगे चलकर कराटे, ही हो जुजुत्सू आदि के नाम से प्रसिद्ध हुई। अठारहवी शताब्दी मे लुच्चू पर जापान का अधिकार हो गया और जापानियो ने कथित आइलैंड के लोगो से लडने भिडने की इस प्रकार की कई कलाए सीखीं। सन् 1866 मे जुजुत्सू के अनेक स्कूल खुले, जहा जिगरो कानो नामक एक विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ने इन कलाओ का पूर्ण प्रशिक्षण तथा अध्ययन किया और सन् 1880 मे इसी डा० जिगरो कानो ने इन्ही कलाओ मे से [illegible] निकाला और जिस जूडो का नाम दिया। जापान की राजधानी [illegible] मे कोडोकन नामक एक स्कूल स्थापित किया गया जहा राष्ट्र के अधिकांश युवको ने जूडो का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

दुनिया मे जूडो के लोकप्रिय होने का कारण और कुछ नहीं जापानियो का कठोर परिश्रम ही है। सन 1918 मे मि० गुज्जम कोइजुमी ने लन्दन मे बुडोकाई नामक जूडो स्कूल की स्थापना की जो अब भी भली भांति चल रहा है। [illegible] मे इस समय 50 जूडो क्लब है तथा ब्रिटेन मे 150 क्लब है। इसके अतिरिक्त अमेरिका, यूरोप तथा एशिया के सभी देशो मे जूडो [illegible] फैला हुआ है। विशेषकर अमेरिका मे स्कूल, कालेज, पुलिस, सेना, [illegible] अन्य विभागो मे जूडो का चलन है। वहा लडकिया भी अधिक संख्या मे जूडो का अभ्यास करती है। सन 1948 मे ब्रिटेन जूडो संघ तथा सन 1951 मे अन्तरराष्ट्रीय जूडो संघ की स्थापना हुई। [illegible] प्रतियोगिताए आयोजित होती रही हैं। [illegible] 1976 मे [illegible] इसे ओलम्पिक मे भी शामिल कर लिया गया और [illegible] प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमे अनेक देशो की जूडो टीमो ने भाग लिया। [illegible] जहा अब जूडो का प्रचलन नहीं [illegible] रहा है। लगभग दस वर्ष से [illegible] स्तर पर चल रही है तथा [illegible] आरम्भ कर दिया है।

[illegible] आर० एस० ([illegible]) — [illegible]

खिलाड़ी रणधीर सिंह जेंटल तीन ओलम्पिक खेलो (लदन—1948, हेलसिंकी —1952 और मेलबोर्न—1956) म भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और 1966 म बैंकाक म हुए पाचवें एशियाई खेलो म प्रशिक्षक के रूप म और 1973 म एम्स्टडम मे हुई दूसरी विश्व कप प्रतियोगिता म मैनेजर के रूप म भारतीय टीम के साथ गए थ ।

रणधीर सिंह का नाम जेंटल कसे पड़ा इसकी भी एक दिलचस्प कहानी है। रणधीर सिंह का जन्म दिल्ली म 22 सितम्बर, 1922 को हुआ। उनके पिता का नाम टेकचन्द सनी था जो पावर हाउस मे बायलर इजीनियर थ। इनका परिवार दिल्ली के पहाड़ी धीरज इलाके म रहता था और इनके कुछ मकान-जायदाद खजूर रोड पर थी।

शुरू शुरू म वह दिल्ली के 'इडिपेंडेंट स्पोर्ट्स क्लब' म खेला करते थे। 1942 म राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिता म उन्होंने दिल्ली राज्य का प्रतिनिधित्व किया और दिल्ली को राष्ट्रीय चम्पियन होने का गौरव प्राप्त हुआ। 1944 से 1947 तक वह दिल्ली की ओर से खेलते रहे। 1946 म वह दिल्ली टीम के कप्तान बने।

यह बात शायद बहुत कम लोग जानते होंगे कि जेंटल हाकी के जितने अच्छे खिलाड़ी थे उतने ही अच्छे फुटबाल के भी खिलाड़ी थे।

प्रतिद्वन्द्वी टीम के खिलाड़ी उनकी उपस्थिति से ही घबराते थे और उनसे हाथ जोड़ते हुए निवेदन करत कि भई तुम तो बहुत जेंटल (नम्र और विनम्र) हो, जरा खेलते म हमारे पर कृपा बनाए रखना। तभी स जेंटल उनका उपनाम हो गया। और बाद म वही उनका पारिवारिक नाम बन गया। सुनते है कि जेंटल के दो भाइयो को 'नोबल' और हबल' कहा जाता है। जेंटल कुल चार भाई हैं जिनमे से एक को छोड़कर बाकी सब विदेश मे रहते हैं।

जेंटल शुरू शुरू म इडिपेंडेंट क्लब की ओर से खेला करते थे। इसका मैदान दिल्ली कारपोरेशन के मैदान के एकदम साथ था। लेकिन 1947 म भारत विभाजन के बाद इस क्लब के बहुत से खिलाड़ी जैसे अजीज, नबीशाह कलाट आदि पाकिस्तान मे चले गए जिससे इस क्लब को बहुत धक्का लगा।

इसी बीच टाटा स्पोर्ट्स ने जेंटल को अपने यहा बुला लिया। दिल्ली का जेंटल अब बम्बई का खिलाड़ी बन गया। 1948 मे जब लदन ओलम्पिक में भाग लेने वाली भारतीय टीम का चुनाव किया गया तो पहले जेंटल का नाम खिलाड़ियो की सूची म नही था। इसी बीच पाकिस्तान हाकी फेडरेशन ने जेंटल के आगे पाकिस्तान आने का प्रस्ताव रखा। जाहिर है कि इस प्रस्ताव मे कुछ प्रलोभन भी जरूर रहा होगा। लेकिन तब जेंटल ने

बड़ी शान से उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया और कहा कि मुझे भारतीय टीम म शामिल किया जाए या न किया जाए, मैं किसी भी सूरत म अपना देश नही छोड सकता। बाद म जेंटल को भारतीय टीम म सुरक्षित खिलाडी के रूप म शामिल किया गया। लेकिन लदन ओलम्पिक मे जेंटल को सभी मैचा म शामिल किया गया। उनके खेल प्रदशन को देखते हुए ही उन्हे विश्व का सवश्रेष्ठ फुलबक माना गया।

1952 मे पाकिस्तान की हाकी टीम ने भारत का दौरा किया था। यह मच फिरोजशाह कोटला ग्राउड म खेला गया था। इस प्रदशनी मैच म जीत भारत की ही हुई। लेकिन मैच के बाद पाकिस्तानी टीम के मेनजर ने कहा कि भारतीय टीम स सिफ जेंटल को निकाल दो तब हमारा कमाल देखो।

जक क्रमर—लान टेनिस की दुनिया मे इस समय पेशेवर (प्रोफेशनल) खिलाडियो का ही बोलबाला है। जैक क्रमर ऐसा पहला खिलाडो है जिसने पेशेवर खिलाडी बनने की पहल की और लान टेनिस के खेल को एक धधे के रूप मे स्वीकार किया। दुनिया की बडी प्रतियोगिताओ को जीतने के बाद जब उन्होने पेशेवर खिलाडी बनने की घोषणा की तो दुनिया भर के शौकिया (गैर-पेशेवर) खिलाडी उनका विरोध करने लगे। लेकिन उन्होने सबसे यही कहा कि बडी प्रतियोगिता के सयोजको, दूसरे छोटे-बडे कमचारियो, यहा तक कि लाइन मैन गेद उठाने वालो को भी पसे मिलते हैं लेकिन खिलाडी को कुछ नही मिलता! आखिरी खिलाडी ने ऐसा क्या कसूर किया है?

जक क्रमर न 13 वष की उम्र तक रकेट को हाथ भी नही लगाया था और अब 60 वष से भी अधिक उम्र म रकेट को हाथ लगाने से पहले पैसे खरे करवा लेत है। 15 साल की उम्र म उन्होने अमेरिका की जूनियर प्रतियोगिता जीती। विम्बलडन जीतने के बाद वह पेशेवर बन गए और उन्होने पेशेवर खिलाडियो के एक अलग स्कूल की स्थापना की, जो अब एक तरह से विश्वविद्यालय का रूप धारण कर गया है।

जक डेम्पसी—मुक्केबाजी की दुनिया मे जिन दो महान मुक्केबाजो ने अपने अपने जमाने म सबसे ज्यादा समय तक अपने नाम की विजय पताका फहराई उनके नाम हैं जक डेम्पसी और जो लुई। जक डेम्पसी ने 1919 से लेकर 1926 तक इस क्षेत्र मे एकछत्र राज्य किया। सच तो यह है कि इन दोनो मुक्केबाजो की चर्चा के बिना मुक्केबाजी की कहानी अधूरी रह जाती है।

जक डेम्पसी का जन्म 24 जून, 1895 को मनासा (अमेरिका) म एक निधन परिवार म हुआ। घर की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उन्हे बचपन म ही पढाई लिखाई से नाता तोड देना पडा। खेलने कूदने की

कच्ची उम्र म ही वह रोजी-रोटी के फेर म पड गए और बचपन म ही एक ताबा खान म काम करने लगे। कहते हैं कि एक बार डेम्पसी घूमते घूमते एक छोटे से नगर म पहुचे। डेम्पसी के मैले और फटे-पुराने कपडा को देख कर कुछ आवारागद गुण्डा ने उनका मखौल उडाना शुरू कर दिया। डेम्पसी ने अपना झोला एक तरफ फेंका और एक एक को पकडकर धरती पर पटकना शुरू कर दिया। वहा दशको की भीड जमा हो गई। डेम्पसी की असीम शक्ति और अदभुत साहस देखकर लोग हैरान हो गए। इसी भीड म जक कीनस नाम का एक व्यक्ति भी उपस्थित था। जैक कीनस मुक्केबाजी के मुकाबला का आयोजन किया करता था। उसने डेम्पसी से बातचीत की और उसके सामने यह प्रस्ताव रखा कि यदि वह चाहे तो उसके लिए मुक्के बाजी के नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है। डेम्पसी ने कीनस का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फलत कीनस ने दो साल क अदर ही डेम्पसी को एकदम तयार कर लिया और डेम्पसी ने तत्कालीन हैवी वेट चम्पियन जैस विलड जसे महाबली मुक्केबाज को चुनौती दे डाली।

खर, 4 जुलाई, *1919* की शाम को मुकाबले का आयोजन किया गया। विलड के सामने डेम्पसी एक बौना सा लगता था। घटी बजी, मुकाबला शुरू हुआ। विलड अपनी जीत पर जरूरत से ज्यादा आश्वस्त था और डेम्पसी जरूरत स ज्यादा सावधान और चौकन्ना। विलड कई बार गिरा और कई बार उठा। मार खाते खात उसका बुरा हाल हो गया था। पाव लड़खड़ाने लगे। अब तक उसके नाक, दात, जबडे टूट चुके थे। तभी उसके मैनेजर ने रिंग म तौलिया फेक दिया, जिसका मतलब था कि विलड अपनी हार स्वीकार करता है।

अब डेम्पसी ने एक एक करके सभी नामी मुक्केबाजो को चुनौती दे डाली। बिली मिस्क और बिल ब्रेनन नामक दो मुक्केबाजो को उसने 'नाक आउट' द्वारा पराजित किया। इसके बाद जाज कार्पेंटियर नामक एक सुदर फ्रासीसी मुक्केबाज की बारी आई। 2 जुलाई, 1921 को डेम्पसी और जाज कार्पेंटियर का ऐतिहासिक मुकाबला हुआ।

उसके बाद डेम्पसी ने अर्जेंटीना के भारी-भरकम मुक्केबाज लुई फिरपो को 14 जुलाई, 1923 को न्यूयार्क म हराया। यह मुकाबला काफी रोमाचकारी रहा।

इसके बाद डेम्पसी ने एक फिल्म अभिनेत्री से विवाह कर लिया। विवाह के बाद पूरे तीन वर्षों तक उसने किसी मुकाबले म हिस्सा नही लिया। इसी बीच एक जेनी टनी नामक नवयुवक मुक्केबाज प्रकाश म आया। वह अक्सर कहा करता था—"मुझे दूसरों पर प्रहार करने की अपेक्षा, दूसरो के प्रहारो

से बचने की अधिक चिन्ता रहती है।" 23 सितम्बर, 1926 को फिलाडेल्फिया मे जेनी और डेम्पसी के मुकाबले का आयोजन किया गया। अत में जेनी को अंको के आधार पर विजयी घोषित किया गया। अगले दिन जेनी अपने प्रतिद्वन्द्वी से मिलने होटल में गया। उस समय डेम्पसी अंधेरे बद कमरे में हताश और निराश भाव से बैठा था। दोना महाबलिया की काफी देर तक बातचीत हुई। बाद में जेनी ने कहा—'मैने डेम्पसी जैसा महान मुक्केबाज आज तक नही देखा।'

एक साल बाद इन दोनो मुक्केबाजो का एक बार फिर शिकागो में मुकाबला हुआ जिसमें फिर जेनी को ही विजयी घोषित किया गया।

इसके बाद डेम्पसी ने मुक्केबाजी के खेल स सन्यास ले लिया। कुछ समय बाद जेनी ने भी इस खेल से अवकाश ले लिया। खेल के मैदान के ये दोना प्रतिद्वन्द्वी सदा के लिए एक दूसरे के गहरे मित्र बन गए।

जैसी ओवन्स—यो तो ओलम्पिक खेलो मे एक स्वण पदक प्राप्त करना भी अपने आप मे बहुत बडी बात होती है, लेकिन कुछ खिलाडी ऐसे भी होते हैं जो एक ही ओलम्पिक म एथलेटिक की विभिन्न प्रतियोगिताओ मे एक साथ चार स्वण पदक प्राप्त कर एथलेटिक के इतिहास मे अपने नाम का एक नया अध्याय जोड देते है। ऐसा कमाल सकडो वर्षों बाद कोई एक-आध खिलाडी ही कर सकता है।

अमेरिका के नीग्रो खिलाडी जसी ओवन्स ने 1936 के बर्लिन ओलम्पिक खेलो म 100 मीटर, 200 मीटर, लम्बी कूद और 4×100 मीटर रिले म स्वण पदक प्राप्त किए। इससे भी ज्यादा महत्वपूण और ऐतिहासिक बात यह है कि ये सभी पदक उ होने हिटलर की उपस्थिति म प्राप्त किए। एक ही ओलम्पिक खेल म बारह बार उनका नाम पुकारा गया। खेलकूद के इतिहास मे ऐसा चमत्कार न आज तक हुआ है और न शायद आगे कभी होगा।

जसी ओवन्स को 'आधी शताब्दी का खिलाडी' माना गया। लेकिन सच तो यह है कि वह इस पूरी शताब्दी का सवश्रेष्ठ खिलाडी है। उन्ह एक साथ 11 विश्व और अमेरिकी कीर्त्तिमान स्थापित करने की कीर्त्तिश्री प्राप्त हुई।

जैसी ओवन्स का जन्म एक बहुत ही निर्धन नीग्रो परिवार म हुआ। जब वह कालेज मे पढते थे तो उन्ह कही एक लिफ्ट चालक की नौकरी मिल गई। सुबह 8 स लेकर दोपहर 2 50 बजे तक वह पढ़ते और बाद में सीधे काम पर चले जाते। उन्होने अपना सारा जीवन पारिवारिक परेशानिया और सघष में व्यतीत किया। उ होने एक स्थान पर अपनी लम्बी कूद के मुकाबले की चर्चा करते हुए कहा कि जब मैं लम्बी कूद प्रतियोगिता जीत गया तो मेरा प्रतिद्वन्द्वी खिलाडी लूज लाग मुझे जीत की बधाई देने के लिए आया, पर नाजियो का

सरदार हिटलर हम दोनो को घूरता ही रहा। उनका कहना है कि दुनिया के सभी खिलाडी सही अर्थों में खिलाड़ी हैं, उनका मन निश्छल और पवित्र है लेकिन राजनीति का हस्तक्षेप उनके मन को अपवित्र बना देता है।

जोगिन्दर सिंह—गोला फेंकने में सेना के जोगिन्दर सिंह काफी शोहरत प्राप्त कर चुके हैं। 1966 म बैंकाक मे हुए पांचवें एशियाई खेलो म उन्होंने स्वण पदक प्राप्त किया था। छह फुट लम्बे इस खिलाड़ी को बैंकाक म स्वण पदक प्राप्त करने का कितना चाव था इस बात का अन्दाजा तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होने बैंकाक एशियाई खेलो के दौरान अपने भयकर रोग तक की किसीको खबर नही होने दी। वहां से स्वण पदक प्राप्त करने के बाद जब वह भारत लौटे तो उन्होने हर्निया का आपरेशन करवाया। बैंकाक म उन्होने 16 13 मीटर का नया एशियाई कीर्तिमान स्थापित किया।

उसके बाद उन्होने 1970 म बैंकाक म हुए छठे एशियाई खेलो म भारतीय टीम (एथलेटिक टीम) का नेतृत्व किया। उन्हाने वहां पर नया एशियाई रिकाड स्थापित किया। उन्हे भारत के लिए पहला (1970 एशियाई खेलों में पहला) स्वण पदक प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ।

जोगिन्दर सिंह का जन्म एक खेल प्रेमी परिवार मे हुआ। उन्होंने 1957 मे सेना म नौकरी कर ली और 1964 म उन्हे कमीशन प्राप्त हुआ। छह फुट चार इच लम्बे जोगिन्दर सिंह 1962 से अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ म भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। 1962 मे हुई एशियाई खेल प्रतियोगिता मे उन्हे कास्य पदक प्राप्त हुआ। बकाक म (1970) उन्होने न केवल स्वण पदक प्राप्त किया बल्कि एक नया एशियाई रिकाड स्थापित किया। 1968 म उन्हे अजुन पुरस्कार से भी अलकृत किया गया था।

जो लुई—जो लुई 1937 से 1949 तक विश्व चैम्पियन बने रहे। अर्थात् मुक्केबाजी के इतिहास म जो लुई एकमात्र ऐसा मुक्केबाज है, जिसे लगातार 12 वर्षों तक चम्पियन होने का गौरव प्राप्त हुआ। अत इसी आधार पर जो लुई को ससार का सबसे महान मुक्केबाज माना जा सकता है। उन्हे 'भूरा बमवषक' भी कहा जाता था।

जो लुई पूरे 15 वर्षों तक मुक्केबाजी के क्षेत्र मे छाए रहे। शुरू शुरू मे वह शौकिया खिलाडी की हैसियत से लडते रहे, लेकिन बाद मे जब उन्होंने बहुत लोकप्रियता प्राप्त कर ली तो वह पेशेवर खिलाडी बन गए। शौकिया खिलाडी के रूप में वह 54 मुकाबले में केवल 4 में हारे और 41 मुकाबलो में उन्होने 'नाक आउट' द्वारा विजय प्राप्त की।

पेशेवर मुक्केबाज के रूप मे उनका पहला मुकाबला शिकागो में जक क्रेकर के साथ 4 जुलाई, 1934 को हुआ। क्रेकर को हराने के बाद लुई ने एक

एक करक कई नामी मुक्केबाजो को 'नाक आउट' मे पछाड़ा। शायद ही कोई ऐसा मुक्केबाज हो जो आखिरी राउड तक जो लुई के सामने टिका रह सका हो। उसके बाद उन्होने स्टेनली प्रोरेडा और रमेज को हराया। जो लुई अपने प्रतिद्वन्द्वी पर मुक्को की ऐसी बौछार करता जसे कोई बम मार रहा हो। तभी से उन्हे 'भूरा बमवषक' कहा जाने लगा था।

जमनी के मशहूर मुक्केबाज मैक्स श्मैलिग से हुए लुई के मुकाबले का अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व है। क्योंकि उन दिनो हिटलर अक्सर इस बात की दुहाई देता रहता था कि जमनी के खिलाडियो का कोई जवाब नही। लेकिन लुई ने मैक्स को वह मजा चखाया कि वह बेचारा मरते-मरते बचा।

इसके बाद लुई ने फिर अविजित चम्पियन के रूप म इस खेल से सन्यास लेने की इच्छा प्रकट की। मगर अविजित चम्पियन के रूप मे अवकाश लेने की उनकी मुराद पूरी न हो सकी। इधर धनाभाव का सकट, उधर आयकर का बोझ। बेचारे को मजबूर होकर फिर मुक्केबाजी की शरण में आना पड़ा। तब उनके 10 मुकाबले हुए, जिनमें से वह आठ में जीते और दो मे हारे। 26 अक्तूबर, 1951 को राकी मार्शियानो ने उन्हे आठवें राउड में हरा दिया। यह उनके जीवन का आखिरी मुकाबला था। सच तो यह है कि यदि जो लुई पर आर्थिक सकट न आता तो अविजित चैम्पियन के रूप में इस खेल से अवकाश लेने की उनकी मनोकामना अवश्य पूरी हो जाती।

जो लुई का जन्म 13 मई, 1914 को अमेरिका के एक बहुत ही निर्धन नीग्रो परिवार में हुआ। इनके पिता निधनता के अभिशाप के कारण पागल हो गए। और कुछ दिनो बाद उनकी मृत्यु हो गई। लुई जब 10 वर्ष के ही थे तभी वह स्कूल में पढ़ने के साथ साथ एक बर्फ ढोने की गाडी में काम करने लग गए थे।

ट

टामस कप—टामस कप प्रतियोगिता का आयोजन हर तीन साल बाद किया जाता है। यह एशिया की बैडमिंटन की सबसे बडी प्रतियोगिता मानी जाती है। खेल-जगत मे जिन दो खेलो मे एशिया का प्रभुत्व माना जाता रहा है उनमे एक है हाकी और दूसरा है बडमिंटन। इस प्रतियोगिता मे मलयेसिया और इडोनेशिया की पुरानी प्रतिद्वन्द्विता है।

टामस कप विजेता

(1948 से प्रारम्भ)

1948-49—मलाया	1963-64—इडोनेशिया
1951-52—मलाया	1966-67—मलयेशिया
1954-55—मलाया	1969-70—इडोनेशिया
1957 58—इडोनेशिया	1972-73—इडोनशिया
1960-61—इडोनेशिया	1975-76—इडोनेशिया

टाम स्मिथ—टाम स्मिथ का जन्म टेक्सास म जून 1944 को हुआ। जब वह केवल 10 वष के ही थे तो उन्होंने भाग-दौड म हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। 17 वष की उम्र म तो उन्होंने 440 गज की दूरी को 47 7 सकिंड म पूरा कर दिखाया था।

उसी वष यानी 1962 मे स्मिथ ने 100 गज की दूरी को 9 6 सकिंड मे, 220 गज की दूरी को 21 3 सैकिंड मे पूरा किया और साथ ही साथ मजाक मजाक मे 24 फुट 2 इच लम्बी छलाग भी लगाकर दिखा दी।

दिन-ब-दिन उनकी प्रगति की गति तेज होती गई। स्कूली शिक्षा पूरी कर लेने के बाद वह सान जोस स्टेट विश्वविद्यालय म सामाजिक विज्ञान के छात्र बने। 1968 मे मैक्सिको ओलम्पिक खेलो मे उन्होंने 200 मीटर की दौड मे स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

टाम स्मिथ का कद 6 फुट 3 इच है और टागें काफी लम्बी हैं। उन्होंने 100 मीटर से 400 मीटर तक की दौडो मे नया इतिहास लिख डालने का सकल्प कर लिया था। टाम स्मिथ 'टामी' नाम से ज्यादा मशहूर हैं। खेलो मे अपने स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालय और अपने देश का नाम ऊचा करने के फलस्वरूप उन्हें विद्यार्थी जीवन म काफी वजीफा मिलता था।

टूर द फ्रांस—भारतीय खेल प्रेमिया के लिए 'टूर द फ्रास' प्रतियोगिता का नाम कुछ नया हो सकता है, परन्तु अन्तरराष्ट्रीय महत्त्व और लोकप्रियता की दृष्टि मे इसे दुनिया की सबसे बडी साइकिलिंग प्रतियोगिता माना जाता है। कहने वालो का तो कहना है कि ओलम्पिक और वल्ड कप प्रतियोगिता के बाद इसी प्रतियोगिता का नम्बर आता है। इस प्रतियोगिता के आयोजन मे 1 05,00,000 रुपये के लगभग खच होता है और जीतने वाले खिलाड़ी को तीन लाख रुपये से पुरस्कृत किया जाता है। यह प्रतियोगिता लगभग 24 दिन तक चलती है और इसमे हर साइकिल सवार को लगभग 3,000 मील की दूरी तय करनी होती है। इस फासले को पूरा करने म उन्हे तरह-तरह की मुसीबतों और कठिनाइयो का सामना करना पडता है। कभी धूप, कभी धूल, कभी आधी, कभी तूफान, कभी चढाई, कभी उतराई कभी बफ,

कभी घोर और कभी शान्ति—इन सबको लाघकर कही साइकिल सवार अपने गन्तव्य स्थान पर पहुचता है। यहां यह बता देना असगत नहीं होगा कि फ्रास और इटली मे इस प्रतियोगिता का बहुत प्रचलन है।

लगभग 24 दिनो मे पूरी होने वाली इस प्रतियोगिता मे 135 राउड होते हैं। हर राउड का अपना-अपना महत्त्व होता है। इस प्रतियोगिता का चम्पियन केवल उसी खिलाडी को माना जाता है जो सारी दूरी (3,000 मील के लगभग) को कम से कम समय मे तय करता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस प्रतियोगिता मे भाग लेने वाले साइकिल-सवार एक घटे मे 21 से 23 मील की औसत रफ्तार ले साइकिल चलाता है। जिसका अथ यह हुआ कि मैदानी इलाको मे 30 मील प्रति घटा की रफ्तार से साइकिल चलाता है। कहीं चढ़ाई पर उसकी रफ्तार काफी मन्द हो जाती है और उतराई पर तो कभी-कभी ये साइकिल सवार 70 मील प्रति घटा की रफ्तार के आसपास साइकिल चलाते हैं। यह दूसरी बात है कि इतनी तेज साइकिल चलाने मे कुछ साइकिल सवारो को अपने जीवन से भी हाथ धोना पडता है।

टेड टेम—25 अगस्त, 1857 को पहली बार किसी व्यक्ति ने चैनल को तरकर पार किया था—और वह तैराक था इग्लैंड की मर्चेंट नेवी का एक कप्तान मैथ्यू वेब। तब से लेकर अब तक 125 से भी अधिक तराक इग्लिश चैनल की खतरनाक लहरो और धाराओ को अपना गुलाम बनाने मे सफल हो चुके हैं।

इग्लिश चैनल को तरकर पार करने वाले पहले तीन व्यक्ति थे—कप्तान मैथ्यू वेब (1875), टॉमस बर्जेस (1911) तथा अमेरिकी तैराक हेनरी सुलीवान (1923)। इन तीना ही तराको ने चनल को इग्लैंड से फ्रास की दिशा मे पार किया।

विशेपज्ञो का कहना था कि अगर तैराक 21 मील लबी तैराकी को उलटी दिशा—यानी फ्रास से इग्लैंड की दिशा—से पूरा करने की कोशिश करें, तो उन्हे उतनी यातनाए नही सहनी पडेंगी, जितनी वेब और सुलीवान को सहनी पडी।

इस बात का सबूत भी जल्दी ही मिल गया। 1923 मे ही इस 'दक्षिण से उत्तर' वाली दिशा से दो तराको ने सफलतापूवक चैनल को पार किया और फिर तो सफल तैराको की सूची बड़ी तेजी से लबी होने लगी। तैराकी के इस दिशा-परिवतन से जैसे उनके हाथ मे कोई तिलिस्म ही आ गया था।

इन सफल तैराको मे एक नाम एडवड टेम का भी था। इस युवा अग्रेज बीमा-क्लक ने 5 अगस्त, 1927 के दिन कैप ग्रो नेत्स से अपनी तैराकी शुरू

की ओर 14 घटे 29 मिनट के बाद वह डोवर के तट पर था। उसे इस तैराकी म इससे भी कम समय लगा होता, अगर रास्ते म उसे खूखार शाक मछलियो का एक झुड न मिल गया होता। एक बार तो एक शार्क ने इस भारी भरकम तैराक को एक झटके से पानी से बाहर उछाल दिया था।

तब तक टेम को इस बात का अदाज भी नही था कि तैराकी के इतिहास मे उसका नाम बहुत गव से लिया जाएगा। कि वह पहला ऐसा व्यक्ति होगा जो चैनल को दो दिशाओ से तरकर पार करेगा।

टेड टेम का मनपसद खेल वाटरपोलो था और 1928 से लेकर 1939 तक वह इग्लैंड के वाटरपोलो दल का नियमित सदस्य था। वाटरपोलो के लिए जिस तरह के दम-खम की जरूरत होती है, उसे प्राप्त करने के लिए टेम ने लबी तराकियो का अभ्यास अपना रखा था।

टेड टेम ने चनल पर दोनो दिशाओ से सफलता प्राप्त की। यह उपलब्धि प्राप्त करने वाला वह विश्व का पहला तराक था। इस दूसरी तराकी म उसे 15 घटे 54 मिनट का समय लगा था। यह रिकाड समय था और टेम डोवर स्वण कप जीतने मे सफल हो गया था।

टेबल टेनिस—टेबल टेनिस का खेल किसी मैदान मे नही बल्कि एक मज पर खेला जाता है, इसीलिए इस खेल को टेबल टेनिस कहा जाता है। केवल टेनिस श द कहने से बात स्पष्ट नही होती, क्योकि जो खेल मैदान म खेला जाता है उसे लान टेनिस कहा जाता है और जो खेल मेज़ पर खेला जाता है उसे टेबल टेनिस कहा जाता है। कहते हैं कि शुरू-शुरू म इस खेल को 'पिंग पाग' कहा जाता था। इस खेल की शुरुआत कब और कहा हुई, इस बारे म काफी मतभेद है। कुछ लोगो का कहना है कि यह खेल इग्लड मे शुरू हुआ। कुछ लोग इस बात का खण्डन करते हैं, परन्तु इतना तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि 1902 के लगभग फ्रास, अमेरिका और इग्लड म इसी प्रकार का खल खला जाता था और उसे 'पिंग पाग' कहा जाता था। दूसरे महायुद्ध के बाद इस खेल का नाम टेबल टेनिस रखा गया।

शुरू शुरू म तो, यानी आज से लगभग 100 वर्ष पहले तक, इस खेल को खेल न मानकर एक प्रकार का खिलवाड़ ही माना जाता रहा। इग्लड म भी, जो इस खेल का जन्मस्थान माना जाता है, इस खेल को 1920 म मान्यता दी गई और वह भी तब जब यह पता चला कि यदि अब भी इस खेल को मान्यता नही दी गई तो यह खेल सदा-सदा के लिए खत्म हो जाएगा। टेबल टेनिस की प्रथम विश्व प्रतियोगिता का आयोजन 1926 म किया गया।

क्योकि इस खेल मे बहुत कम स्थान और कम चीजो की जरूरत होती है,

इसीलिए यह खेल बहुत ही जल्द लोकप्रिय हो गया। अब तो यह हालत है कि इस खेल म 40 से भी अधिक देश भाग लेने लगे हैं। टेबल टेनिस की अन्तर-राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ का आयोजन अन्तरराष्ट्रीय टेवल टेनिस फेडरेशन करती है। विश्व प्रतियोगिता मे दो बडे कप होते हैं। एक स्वेथलिंग कप और दूसरा कोरबिलन कप। स्वेथलिंग कप पुरुषो के लिए होता है और कोरबिलन कप स्त्रियो के लिए होता है।

पहले पहल इग्लड, रूमानिया, हगरी और चेकोस्लोवाकिया की टीमो ने ही स्वेथलिंग कप पर अपना अधिकार जमाया, पर 1954 म पहली बार इस कप पर एक एशिया के देश का अधिकार हो गया। इस देश का नाम था जापान। 1954 से 1959 तक इस कप पर जापान का ही अधिकार रहा। लेकिन 1959 मे पेकिंग मे हुई 26वीं विश्व टेबल टेनिस प्रतियोगिता मे चीन ने जापान को हरा दिया और इस कप पर अपना अधिकार कर लिया। तब भी कोरबिलन कप पर जापान का ही अधिकार रहा। यह खेल चीन म बहुत लोकप्रिय हो गया। अब तो यह हालत है कि चीन के लोग इसे अपना राष्ट्रीय खेल मानने लग गए हैं। वहा इस खेल के 50,000,00 रजिस्टड खिलाडी हैं।

जहा तक भारत का सवाल है, भारत ने अब तक एक भी ऐसा खिलाडी तैयार नही किया जिसे विश्व विजेता का सम्मान मिला हो, पर फिर भी भारत म कुछ एक ऐसे खिलाडी अवश्य हुए हैं जिन्हें विश्व मे नही तो एशिया मे प्रथम स्थान अवश्य मिल चुका है। भारतीय गुल नासिकवाला को टेबल टेनिस म 'एशिया की महारानी' सज्ञा से अभिहित किया गया। उन्हें सिंगापुर एशियाई प्रतियोगिता मे तिहरी सफलता प्राप्त हुई। अपने जमाने मे सुधीर ठाकरसी को एशिया का नम्बर एक का खिलाड़ी माना गया। इसके अतिरिक्त इस खेल के कुछ प्रसिद्ध भारतीय खिलाडियो के नाम इस प्रकार हैं जयन्त वोरा, पप्पू हुलदकर, जे० एम० बैनर्जी, गौतम दीवान, दिलीप सम्पत आदि। पुराने खिलाडियो मे एस० आर० ईरानी, सोमैया, कुमार घोष, यतीन व्यास, कपूर, कापडिया, फारुख खादाय, जी० जगनाथ, मनजीत दुआ आदि नाम गिनाए जा सकते हैं। महिला खिलाडियो मे मीना परादे, उषा सुन्दरराज, जॉय डिसूजा, नीला कुलकर्णी, इदिरा आयगर, अल्का ठाकुर, रेशेल जान, सतारावाला, सईद सुल्ताना, इदू पुरी और शैलजा सलोखे के नाम आते हैं।

टेबल टेनिस की 'सिंगल्स' और 'डबल्स' दो प्रतियोगिताए होती हैं। यह खेल जिस मेज पर खेला जाता है उसकी लम्बाई 9 फुट और चौडाई 5 फुट होती है। इस मेज की ऊचाई ढाई फुट होती है। इस मेज के बीचो-बीच एक नेट लगा रहता है। नेट की लम्बाई 6 फुट और ऊचाई 6 इच से थोड़ी ज्यादा होती है। टेबल टेनिस की गेंद सफेद रग की होती है और एक खास ढग की

बनी होती है। यह गद सेल्युलाइड की बनी रहती है। इस गेंद का घेरा साढ़े चार इच से लेकर पौने पांच इच तक का होता है। इस गेंद का वजन 2 53 ग्राम के लगभग होता है।

टेबल टेनिस का रकेट भी एक खास लकडी का बना होता है। इस खेल म सबसे पहले 21 प्वाइट्स जीतने वाले खिलाडी को विजेता माना जाता है। यदि दोनो खिलाडी 20-20 प्वाइट्स जीत लें तब उस स्थिति म जो अपने प्रतिद्वद्वी से पहले दो प्वाइट्स बना ले वही विजेता माना जाता है। खेल शुरू होने से पहले टॉस किया जाता है। टॉस के बाद तय किया जाता है कि कौन खिलाडी पहले सव करेगा। टेवल टेनिस के मुख्य आठ स्ट्रोक होते हैं। जिनम से कुछ इस प्रकार हैं—बैंक हैंट पुश, फोर हैंड ड्राइव, बैक हैंड ड्राइव, वैक हैंड फ्लिक, बैक हैंड, फोर हैंड धाप।

अय खेलो की तरह टेवल टेनिस के बारे म भी जानकार और इतिहास कार एकमत नही हैं, लेकिन अधिकाश लोग इस खेल को शुरू करने का श्रेय जेम्स गिब्स (जो एमेच्योर एथलेटिक एसोसिएशन के सस्थापक भी थे) को देते है। शुरू-शुरू म जिस खेल को टेबल टेनिस कहा जाता था 1890 म उसी खेल को पिंग पाग के नाम से पुकारा जाने लगा, और बाकायदा एक पिंग पाग एसोसिएशन की स्थापना हुई। लेकिन 1905 मे उस एसोसिएशन का नाम बदलकर फिर टेबल टेनिस एसोसिएशन कर दिया गया। 1921 तक कई देशो मे इस खेल का प्रचलन तो रहा, लेकिन इसकी देखरेख करने वाली कोई एक विश्व सस्था नही बनी थी। जनवरी 1926 म बर्लिन म जर्मनी के जाज लेहमन ने अन्तरराष्ट्रीय टेबल टेनिस सघ के गठन के मामले मे पहल की और बाकायदा सात युरोपीय देशो (जमनी, आस्ट्रिया, हगरी, इग्लैंड, वेल्स, स्वीडन और चेकोस्लोवाकिया) की वैठक मे अन्तरराष्ट्रीय सघ का गठन किया गया।

इस सस्था के गठन से पहले ही इग्लड म इस खेल का काफी प्रचलन था। बहुत से भारतीय छात्र भी इस खेल मे हिस्सा लेते रहे। इग्लड की एक खुली प्रतियोगिता को जीतने का गौरव भारत के एक लम्बे और दुबले-पतले खिलाडी पी० एन० नदा को हुआ, जिन्होने बाद म कई युरोपीय प्रतियोगिताओ म भी ख्याति अर्जित की थी। बाद मे उन्होने बर्लिन मे आयोजित जमन की एक खुली प्रतियोगिता भी जीती।

पहली विश्व प्रतियोगिता का आयोजन 1927 म लन्दन म हुआ, जिसमे 9 देशो ने भाग लिया। शुरू शुरू मे भारत का प्रतिनिधित्व युरोप मे पढने वाले भारतीय छात्र ही किया करते थे।

ट्रसी आस्टिन—14 साल की उम्र म ही अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर लेना कोई आसान बात नही है। 1977 की विम्बलडन प्रतियोगिता मे जितनी

चर्चा विम्बलडन चैम्पियनो (पुरुषो मे जान वग और स्त्रियो मे विरजीनिया वेड) की हुई यदि ठीक उतनी नही तो उससे थोडी कम चर्चा अमेरिका की 14 साल की खिलाडिन ट्रैसी आस्टिन (कद 5 फुट 1 इच) की हुई। यह ठीक है कि वह तीसरे राउड मे क्रिस एवट से हार गई थी, लेकिन क्रिस एवट भी उसके खेल की तारीफ किए बिना न रह सकी।

आस्टिन इतनी छोटी उम्र मे लगभग 400 छोटे मोटे मुकाबले जीत चुकी है। उसके प्रशिक्षक बाब लैंड्सडोप का कहना है कि वह बिना नागा स्कूल जाती है, क्योकि वह मानती है कि यह उम्र पढने की है, खेलने को तो अभी काफी उम्र पडी है।

आस्टिन ने बहुत छोटी उम्र मे ही टेनिस खेलना शुरू कर दिया था। यो उसके परिवार के अन्य सदस्यो को भी इस खेल से काफी लगाव था। 9 साल की उम्र मे तो वह क्लब म जाकर अच्छी अच्छी खिलाडिनो को हराने लग गई थी। जब भी उसे खेलने के लिए घर से बाहर जाना पडता तो वह अपने साथ एक-आध जासूसी उपन्यास जरूर रख लेती। या उसे डाक टिकटें इकट्ठी करने का भी बेहद शौक है। 1972 म जब उसने 12 साल से छोटी उम्र की अमेरिकी राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीती तो उस समय उसे सबसे अधिक लोकप्रिय खिलाडिन घोषित किया गया।

ड

डिकेथलन—डिकेथलन म भाग लेने वाले खिलाडी को एक साथ अलग-अलग तरह के दस खेलो मे भाग लेना पडता है। यदि वह किसी एक खेल मे भी भाग नही लेता तो वह फाइनल तक नही पहुच पाता। यह प्रतियोगिता दो दिन तक चलती है। पहले दिन खिलाडी को 100 मीटर की दौड, लम्बी कूद, गोला फेंकना, ऊची कूद और 400 मीटर के खेलो मे भाग लेना पडता है और दूसरे दिन 110 मीटर, बाधा, चक्का फेंकना, बासकूद, भाला फेंकना और 1500 मीटर की दौड मे भाग लेना पडता है। इस प्रतियोगिता मे हर खिलाडी को हर खेल के अलग-अलग अक प्राप्त होते हैं और जिसको कुल मिलाकर सबसे अधिक अक प्राप्त होते हैं वही खिलाडी प्रथम स्थान प्राप्त करता है। दूसरे शब्दो मे डिकेथलन मे प्रथम स्थान प्राप्त करने के लिए हर प्रतियोगिता मे या हर खेल मे प्रथम रहने की आवश्यकता नही होती। इस बात की भी पूरी सम्भावना रहती है कि खिलाडी किसी भी खेल मे प्रथम

स्थान न पा सके और हर खेल में अच्छे अंक प्राप्त करने के आधार पर प्रथम स्थान का अधिकारी बन जाए।

ओलम्पिक खेलों में डिकेथलन प्रतियोगिता की शुरुआत सबसे पहले 1912 में की गई थी। अमेरिका के हारल्ड ओसबोर्न ने सबसे पहले 6,000 अंक प्राप्त करके यह प्रतियोगिता जीती थी। 1924 के ओलम्पिक खेलों में इसी खिलाड़ी ने ऊंची कूद में स्वर्ण पदक भी प्राप्त किया था। दस साल बाद जर्मनी के हैंस-हैनरिख सिवर्ट ने 7,000 अंक प्राप्त किए। इसके बाद अमेरिका के ग्लेन मोरिस का नम्बर आता है, जिन्होंने 1936 के ओलम्पिक खेलों में 7,310 अंक प्राप्त करके इस प्रतियोगिता में नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस खेल में अमेरिका के बाब मैथियास, सोवियत संघ के विसिली कुजनीत्सोव, अमेरिका के ही राफर जानसन के नाम उल्लेखनीय हैं।

ओलम्पिक डिकेथलन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाला एक ऐसा भी एथलीट हुआ है जो रिकार्डों की सूची में तो स्थान नहीं पा सका, परन्तु आज भी उसे विश्व का सर्वकालिक महान एथलीट माना जाता है। अमेरिकी एथलीट जिमथोर्प ने स्टाकहोम ओलम्पिक (1912) में अपने खेल प्रदर्शन से दर्शकों को स्तब्ध कर दिया। डिकेथलन प्रतियोगिता के साथ ही उसने अन्य कठिन प्रतियोगिता पेंटेथलन भी जीती। ओलम्पिक खेलों में ऐसी युगल विजय प्राप्त करने वाला एकमात्र एथलीट थोर्प ही है। लेकिन स्वदेश लौटने पर थोर्प पर वज्रपात हुआ। पत्रकारों ने उसे बताया कि चूंकि बेसबाल का वह पेशेवर खिलाड़ी भी रहा था, इसलिए उसे पेशेवर खिलाड़ी मान लिया गया है। बस फिर क्या था, एक भीषण विवाद उठ खड़ा हुआ। अन्त में ओलम्पिक समिति ने उससे सारे पुरस्कार वापिस ले लिए और ओलम्पिक रिकार्डों से उसका नाम हटा दिया गया।

आज दुनिया के चोटी के डिकेथलन खिलाड़ियों में अमेरिका के जफ बेनिस्टर, ग्रीसलंड के ब्रूस जनर और जैफ बेनट, इंग्लैंड के किंग और गबट के नाम उल्लेखनीय हैं। इसके अतिरिक्त अनेक जर्मनी और पूर्व यूरोपीय देशों के खिलाड़ियों ने म्यूनिख में इस कठिनतम प्रतियोगिता में भाग लिया है। भारत का प्रतिनिधित्व इस मुकाबले में विजय सिंह चौहान ने किया। पिछले काफी अर्से से उन्होंने जर्मनी में कुछ प्रशिक्षकों के निरीक्षण में अभ्यास किया है और डिकेथलन के दसों मुकाबलों में अपनी क्षमता बढ़ाई है। लेकिन विश्व के चोटी के खिलाड़ियों की तुलना में अभी वह बहुत पीछे हैं।

डिकेथलन के ओलम्पिक चैम्पियन

1912	स्टाकहोम	वीज लाडर (स्वीडन)
1920	एटवर्प	एच० लवलड (नारवे)
1924	पेरिस	एच० एम० आसबार्न (अमेरिका)
1928	एम्स्टडेम	पावो यजोला (फिनलड)
1932	लास एजेलस	जेम्स बाश (अमेरिका)
1936	बर्लिन	ग्लेन मारिस (अमेरिका)
1948	लदन	बाब मैथियास (अमेरिका)
1952	हेलसिकी	बाब मैथियास (अमेरिका)
1956	मेलबोन	मिल्ट कैंपबेल (अमेरिका)
1960	रोम	रैफर जान्सन (अमेरिका)
1964	तोक्यो	विली हाल्ट्राफ (जमनी)
1968	मैक्सिको	बिल टूमी (अमेरिका)
1972	म्यूनिख	एवी लोव (सोवियत सघ)
1976	माट्रियल	बी० जेनेक (अमेरिका)

डी० ओलिवेरा (बेसिल दि ओलिवेरा)—बेसिल दि ओलिवेरा का जन्म रगभेद के देश दक्षिण अफ्रीका मे 4 अक्तूबर, 1934 को हुआ। केप टाउन मे इस नागरिक ने बचपन से ही क्रिकेट के खेल म अपना कमाल दिखाना शुरू कर दिया, लेकिन उसे कही भी अच्छे मैच म खेलने का मौका नही मिल सका, क्योकि उसका रग काला था और क्रिकेट को दक्षिण अफ्रीका की गोरेशाही सरकार खालिस गोरो का खेल मानती है। अभी बेसिल दि ओलिवेरा 16 वष का ही था कि उसकी बल्लेबाजी की धाक जम गई थी। पर यह बेहतरीन बल्लेबाजी दक्षिण अफ्रीका के काले लोगो के छोटे-मोटे मैचा तक ही सीमित रही। सौभाग्य से, इग्लड की टीम के साथ आए हुए कुछ खिलाडियो ने एक दिन इसकी बानगी देखी और इग्लड जाकर रगभेद के शिकार इस बल्लेबाज का प्रचार किया। होते-होते 1960 मे कवि, पत्रकार, क्रिकेट समीक्षक और भाष्यकार जॉन आलट और उनके एक पत्रकार साथी जॉन के ने दि ओलिवेरा को इग्लैड बुलाने का प्रबध किया। रगभेद के देश से दूर आकर दि ओलिवेरा का खेल अपना असली रग दिखा सका। शुरू म वह लकाशायर के एक क्लब के पेशेवर के रूप मे छुट्टी के दिन के मैचो मे खेलता रहा। वह स्थानिक क्रिकेट-प्रेमी समाज का प्रिय पात्र बना और दर्शको ने उसका नाम 'दि ओलिवेरा' से छोटा करके 'डाली' कर दिया। 1964 मे वारसेस्टरशायर काउटी ने उसे पेशेवर खिलाडी के रूप म अपनी

टीम मे शामिल किया। वारसेस्टर की टीम म अपने पहले वर्ष म ही उसने इंगलिस्तानी 'टुक टुक' के बीच म अपनी 'दुल्लेबाजी' की धाक जमा दी। काउटी की ओर से आस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलते हुए दि ओलिवेरा ने सेंचुरी मारी और अगले सीजन म उसके खेल के कारण ही वारसेस्टरशायर टीम ने काउटी चम्पियन का पद प्राप्त कर लिया। 1965 म उसे इग्लड की टीम म चुन लिया गया और सयोगवश जब जब भी वेस्टइडीज के तेज गेंददाजों ने इग्लैंड के बल्लेबाजो को वचाव का खेल खेलने के लिए बाध्य किया, तब-तब 'डाली' ने चौको और छक्को की बौछार शुरू कर दी। दुनिया के मशहूर गेंददाज हाल का, जिसके बारे मे कहा जाता है कि उसकी गेंद 90 मील प्रति घटा की रफ्तार से आती है, डाली ने 'एनलिसिज' बिगाड दिया। सोबर्स भी डाली को बाघ नही सका।

1966 के सीजन के अन्त तक डाली इग्लैंड का सबसे मशहूर क्रिकेट खिलाडी बन गया। उसे पैसा मिला और पैसे के साथ साथ प्रतिष्ठा भी मिली। वह दक्षिण अफ्रीका का पहला रगीन खिलाडी था, जो न केवल इग्लिश सत्र म खेला, वरन् इग्लैंड की ओर से भी खेला। 1965 म काउटी म और 1966 म टेस्ट टीम म। 44 टेस्ट मे 2484 रन, 47 विकेट। 1968 मे दक्षिण अफीका जाने वाली एम० सी० सी० टीम का सदस्य—इसी कारण दक्षिण अफ्रीका मे इस टीम को प्रवेश नही मिला

डी० सी० एम० प्रतियोगिता—दिल्ली क्लाथ मिल्स प्रतियोगिता फुटबाल की एक महत्त्वपूर्ण प्रतियोगिता मानी जाती है। इस प्रतियोगिता को शुभारम्भ 1945 में हुआ था। इस प्रतियोगिता मे देश की सभी टीम भाग लेती हैं। पिछले कुछ वर्षों से इसम विदेशी टीमो ने भी भाग लेना शुरू कर दिया है।

डी० सी० एम० फुटबाल प्रतियोगिता के रिकाड इस प्रकार हैं

सन्	विजेता	रनस-अप
1945	नई दिल्ली हीरोज, दिल्ली	किंग ओन याकशायर लाइट इन्फटरी, दिल्ली।
1946, 47 और 48, प्रतियोगिताए नही हुइ।		
1949	रायसीना स्पोटिंग, नई दिल्ली	सिटी क्लब, लखनऊ
1950	ईस्ट बगाल, कलकत्ता	58, गोरखा, देहरादून
1951	राजस्थान क्लब, कलकत्ता	58, गोरखा, देहरादून
1952	ईस्ट बगाल, कलकत्ता	58, गोरखा, देहरादून
1953	आयन जिमखाना, बगलोर	ई० आई० आर० एकाउण्ट आर० सी०, कलकत्ता
1954	जिओलोजिकल सर्वे, कलकत्ता	हैदराबाद

सन्	विजेता	रनर्स-अप
1955	आई०ए०एफ० स्टेशन, नई दिल्ली	डी० एस० ए०, इलाहाबाद
1956	आई० ए० एफ०	ईस्ट बगाल, कलकत्ता
1957	ईस्ट बगाल, कलकत्ता	ईस्टन रेलवे ए० सी०, कलकत्ता
1958	मोहम्मद स्पोटिंग, कलकत्ता	ईस्ट बगाल, कलकत्ता
1959	सेंट्रल पुलिस लाइस, हैदराबाद	मद्रास इजीनियरिंग ग्रुप, बगलोर
1960	ईस्ट बगाल	मोहम्मद स्पोटिंग
1961	मोहम्मद स्पोटिंग	मद्रास रेजिमेंटल सेंटर
1962	मद्रास रेजिमेंटल सेंटर	मफतलाल ग्रुप, बम्बई
1963	ई०एम०ई० सेंटर, सिकन्दराबाद	पजाब पुलिस, जालधर
1964	मोहम्मद स्पोटिंग, कलकत्ता	आध्र प्रदेश पुलिस, हैदराबाद
1965	आध्र प्रदेश पुलिस, हैदराबाद	सेंट्रल पुलिस लाइस, हैदराबाद
1966	पजाब पुलिस, जालधर	लीडर्स क्लब, जालधर
1967	मफतलाल ग्रुप, बम्बई	लीडर्स क्लब, जालधर
1968	मफतलाल ग्रुप, बम्बई	लीडर्स क्लब, जालधर
1969	ताज क्लब, तेहरान (ईरान)	साउथ सेंट्रल रेलवे, सिकन्दराबाद
1970	ताज क्लब, तेहरान	आंध्र प्रदेश पुलिस, हैदराबाद
1971	ताज क्लब, तेहरान	लीडर्स क्लब, जालधर
1972	(अप्रल, 25) पगमैन, उत्तर कोरिया	बायरिशर, म्यूनिख, पश्चिम जमनी
1973	ईस्ट बगाल, कलकत्ता	डाक रो गाग, उत्तर कोरिया
1974	ईस्ट बगाल, कलकत्ता	पजाब पुलिस, जालधर
1975	हुनपाग विश्वविद्यालय, दक्षिण कोरिया	ईस्ट बगाल
1976	हुनपाग विश्वविद्यालय और सीमा सुरक्षा दल (सयुक्त विजेता)	
1977	स्पाटक यूनाइटिड (सोवियत सघ)	जे० सी० टी० (फगवाड़ा)
1978	वोल्गा कलिनिन (सोवियत सघ)	बायरिशर, म्यूनिख, प० जमनी
1979	सीमा सुरक्षा दल और सिटीजन नेशनल टीम, दक्षिण कोरिया (सयुक्त विजेता)	

डूरण्ड प्रतियोगिता—डूरैंड प्रतियोगिता का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि भारतीय फुटबाल का इतिहास। डूरैंड प्रतियोगिता भारत की प्राचीनतम फुटबाल प्रतियोगिता है।

डूरण्ड प्रतियोगिता का शुभारम्भ आज से 90 वष पूर्व यानी 1888 ई० मे हुआ था। उसके तीन वर्ष बाद यानी 1891 मे रोवर्स कप प्रतियोगिता

शुरू हुई और पाच वर्ष बाद यानी 1893 मे आई० एफ० ए० शील्ड प्रतियोगिता। ये सभी प्रतियोगिताए भारत की प्रमुख फुटबाल प्रतियोगिताए मानी जाती हैं।

डूरैण्ड प्रतियोगिता को शुरू करने का श्रेय स्व० सर हेनरी मारटिमेर डूरंण्ड को प्राप्त है। इस प्रतियोगिता को शुरू करते समय सर मारटिमेर डूरण्ड ने यह कल्पना भी नही की थी कि उनके नाम पर शुरू की जाने वाले प्रतियोगिता इतने दिनो तक चलती रहेगी। सन् 1888 मे, सर मारटिमेर डूरैण्ड ने, जो उस समय भारत मे विदेशी मामला के सचिव थे, सेना के जवानो के मनोरजन के उद्देश्य से यह प्रतियोगिता शुरू की थी। पहली बार इस प्रतियोगिता मे केवल छह टीमो ने भाग लिया। वह चाहते थे कि फौजी जवान फुरसत के समय खेल-कूद मे दिलचस्पी लेना शुरू कर दें। काफी सोच विचार के बाद यह फैसला किया गया कि इस प्रतियोगिता का आयोजन गर्मियो के मौसम मे शिमला मे किया जाना चाहिए। उन दिनो गर्मियो के मौसम मे सरकारी दफ्तर शिमला मे चले जाते थे। शुरू शुरू मे एक विजेता के लिए एक ट्राफी प्रदान की जाने लगी और यह घोषणा की गई कि जो टीम लगातार तीन वष तक जीतेगी उसे यह ट्राफी सदा के लिए प्रदान कर दी जाएगी। 1893, 1894 और 1895 मे हाइलैंड लाइट इन्फटरी की टीम ने लगातार तीन बार इस ट्राफी पर अपना स्थाई अधिकार जमा लिया। उसके बाद सर हेनरी मारटिमेर ने ठीक उसी तरह की दूसरी ट्राफी भेंट की। उसके बाद ब्लैक वाच की टीम ने 1897,1898 और 1899 मे लगातार तीन बार प्रतियोगिता जीतकर उस ट्राफी पर अपना अधिकार जमा लिया। अब तीसरी ट्राफी बनवाने की समस्या उठ खडी हुई। लेकिन मारटिमेर डूरण्ड ने सहर्ष उसी तरह की तीसरी ट्राफी भेंट की। डूरैण्ड फुटबाल के इतने शौकीन थे कि स्वय मदान म जाकर विदेश विभाग की टीम का नेतृत्व किया करते थे।

1888 से 1913 तक इस प्रतियोगिता का आयोजन प्रतिवष शिमला म किया जाता था। तब तक हमेशा इसम गोरी पलटन को ही विजयश्री प्राप्त होती रही। प्रथम महायुद्ध के दौरान इस प्रतियोगिता का आयोजन नहीं हो पाया। उसके बाद 1920 से 1940 तक फिर प्रतिवष इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जाने लगा। भारत सरकार ने 1939 मे यह निर्णय लिया कि चूंकि अब ज्यादातर सरकारी दफ्तर पूरे वष भर तक दिल्ली म ही रहा करेंगे, इसलिए 1940 स प्रतियोगिता का आयोजन राजधानी म ही किया जाना चाहिए।

1940 का वर्ष भारतीय फुटबाल के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण और गौरवपूर्ण अध्याय है। पहली बार भारतीय खिलाड़ियो की टीम 'मोहम्मद स्पोर्टिंग क्लब' ने अग्रज खिलाड़ियों की टीम को हराकर डूरण्ड कप पर अधिकार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया। वार्विकशायर के विरुद्ध खेलते

हुए भारतीय खिलाडियो ने फाइनल मुकाबला जीतकर विदेशी टीमो के एकाधिकार को समाप्त किया। इस ऐतिहासिक मैच का आयोजन नेशनल स्टेडियम म किया गया था, जो उस समय तक इर्विन स्टेडियम कहलाता था। उस समय तक इस प्रतियोगिता मे रेफरी का दायित्व भी अग्रेज ही निभाते थे, लेकिन इस मैच के रेफरी थे हरनाम सिह (जो अब सेना के अवकाश प्राप्त कप्टन है और अब तक डूरैण्ड प्रतियोगिता से सम्बद्ध हैं)। यह पहला अवसर था जब किसी भारतीय को रेफरी का दायित्व सौपा गया था। यह फाइनल मुकाबला बडे उत्तेजनापूर्ण क्षणो मे शुरू हुआ। पूर्वार्द्ध मे दोनो टीमे एक-एक से बराबर रही, उत्तरार्द्ध मे मोहम्मद स्पोर्टिंग के लेफ्ट-इन साबू ने एक गोल ठोक दिया। सारा स्टेडियम खुशी से झूम उठा। लाड लिनलिथगो ने विजेताओ को पुरस्कार प्रदान किए।

उसके बाद द्वितीय महायुद्ध के कारण 1949 तक डूरैण्ड प्रतियोगिता फिर स्थगित हो गई। 1950 से लेकर अब तक डूरैण्ड कप प्रतियोगिता का फिर नियमित रूप से आयोजन किया जाने लगा। 1962 म चीनी आक्रमण के समय राष्ट्रीय आपातकालीन स्थिति के कारण इस प्रतियोगिता म एक बार फिर बाधा पडी।

1950 मे जब यह प्रतियोगिता शुरू हुई तब डूरण्ड की परम्परा को बनाए रखने के उद्देश्य से राष्ट्रपति ने इसका सरक्षक बनना स्वीकार कर लिया।

डूरण्ड कप के इतिहास म अब तक केवल तीन टीमो को लगातार तीन बार डूरण्ड कप जीतने का गौरव प्राप्त हुआ। 1893, 94 और 1895 म एच० एल० आई० को, 1897, 98 और 99 म 'दि ब्लैक वाच' को और 1963, 64 और 65 मे मोहन बागान को। यानी 1899 के बाद से केवल मोहन बागान की टीम को इस कप को लगातार तीन बार जीतने का गौरव प्राप्त हुआ। लेकिन यह कप अब चुनौती कप का रूप धारण कर गया है। यानी लगातार तीन बार कप जीतने पर भी यह कप उस टीम को नही दिया जा सकता। लेकिन यह तो मानना ही होगा कि मोहन बागान की टीम ने इस प्रतियोगिता के इतिहास मे एक नया अध्याय जोड दिया है।

यहा यह बता देना भी उचित होगा कि 1947 म देश के बटवारे के समय पाकिस्तान की आखें इस सुन्दर ट्राफी पर लगी हुई थी। पाकिस्तान ने डूरैण्ड कप हथियाने की जी-तोड कोशिश भी की, मगर भारतीय सेना क उच्च अधिकारियो ने इस कप को भारत से बाहर नही जाने दिया। कहा जाता है कि बटवारे के समय दोनो देश (भारत और पाकिस्तान) इस कप पर अपना-अपना दावा प्रकट करने लगे। सर क्लॉड ओचिनलेक (कमाडर इन-चीफ) की मशा इस कप को पाकिस्तान को देने की थी, लेकिन इसी बीच एस०

डी० सिंहा को, जो कि उस समय टूर्नामेंट के सहायक सचिव थे, कुछ खबर मिली और उन्होने जाकर एच० एम० पटेल का सूचित किया।

रक्षा सचिव श्री पटेल ने इस ट्राफी को स्टेट बैंक आफ इडिया म जमा करा दिया और एयर माशल मुखर्जी को इस बात के लिए सचेत कर दिया कि किसी भी सूरत म और किसी भी कीमत पर यह ट्राफी भारत से बाहर नही जानी चाहिए।

आखिर मे कश्मीर फड के लिए एक प्रदशनी मैच का आयोजन किया गया। एयर मार्शल मुखर्जी के व्यक्तिगत प्रयास से मोहन बागान की टीम को उस प्रदशन मैच के लिए बुलाया गया। मोहन बागान की टीम को शानदार सफलता प्राप्त हुई। बस फिर क्या था, श्री पटेल ने डूरण्ड कप प्रतियोगिता की कमेटी का पुनगठन किया और इस प्रतियोगिता का आयोजन दिल्ली म करने का फैसला किया गया। कुछ कानूनी अडचनो स बचने के लिए डूरण्ड कमेटी को एयर माशल मुखर्जी की अध्यक्षता म रजिस्टड करवा लिया गया।

स्वतत्रता प्राप्ति के पश्चात् का डूरंण्ड रिकार्ड

वष	विजेता	उप विजेता	गोल अ तर
1950	हैदराबाद सिटी पुलिस	मोहन बागान	1 0
1951	ईस्ट बगाल क्लब	राजस्थान क्लब, कलकत्ता	2 0
1952	ईस्ट बगाल क्लब	हैदराबाद सिटी पुलिस	1 0
1953	मोहन् बागान	नेशनल डिफेस एकेडमी	4 0
1954	हैदराबाद सिटी पुलिस	हि दुस्तान एयर क्राफ्ट, बगलौर	1 0
1955	मद्रास रेजिमटल सेंटर	इ डियन एयर फोस	1 0
1956	ईस्ट बगाल क्लब	हैदराबाद सिटी पुलिस	2 0
1957	हैदराबाद सिटी पुलिस	ईस्ट बगाल क्लब	2 1
1958	मद्रास रेजिमटल सेंटर	गोरखा ब्रिगेड	2 0
1959	मोहन बागान	मोहम्मद स्पोर्टिंग	3-1
1960	मोहन बागान व ईस्ट बगाल (सयुक्त विजेता)		
1961	आध्र प्रदेश पुलिस	मोहन बागान	1 0
1962	प्रतियोगिता नही हुई		
1963	मोहन बागान	आध्र प्रदेश पुलिस	3-0
1964	मोहन बागान	ईस्ट बगाल क्लब	2-0
1965	मोहन बागान	पजाब पुलिस	2-0
1966	गोरखा ब्रिगेड	सिख रेजीमेट सेंटर	2 0
1967	ईस्ट बगाल क्लब	बी० एन० रेलवेज	1 0

वर्ष	विजेता	उप विजेता	गोल अन्तर
1968	सीमा सुरक्षा दल, जालधर	ईस्ट बगाल क्लब	1 0
1969	गोरखा ब्रिगेड	सीमा सुरक्षा दल	1 0
1970	ईस्ट बगाल	मोहन बागान	2-0
1971	सीमा सुरक्षा दल	लीडर क्लब	1-0
1972	ईस्ट बगाल	मोहन बागान	1 0
1973	सीमा सुरक्षा दल	आर० ए० सी०, बीकानेर	2 0
1974	मोहन बागान	जगतजीत काटन मिल, फगवाडा	3 2
1975	सीमा सुरक्षा दल	जगतजीत काटन मिल, फगवाडा	1 0
1976	सीमा सुरक्षा दल व जे० सी० टी० (सयुक्त विजेता)		
1977	मोहन बागान	जगजीत काटन मिल, फगवाडा	2-1
1978	ईस्ट बगाल	मोहन बागान	3 0
1979	मोहन बागान	पजाब पुलिस	1 0

डेबी मायर—1968 म मैक्सिको नगर म जो ओलम्पिक खेल प्रतियोगिताए हुई थी उनमे मिस मायर ने अपने अतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धियो को यह अच्छी तरह प्रमाणित कर दिया कि 200 मीटर, 400 मीटर और 800 मीटर की तराकी प्रतियोगिताओ म उसका कोई मुकाबला नही है। उन्होने न केवल तीनो प्रतियोगिताओ म स्वण पदक जीते, बल्कि इसके साथ साथ नये ओलम्पिक रिकाड भी कायम किए।

डेबी अमेरिका मे 1500 मीटर की फ्री-स्टाइल तैराकी प्रतियोगिता की भी विजता है और मक्सिको म 3 स्वण पदक भी उन्हाने प्राप्त किए हैं।

डेविस कप—डेविस कप प्रतियोगिता 1900 म शुरू हुई। डेविस कप ट्राफी डविट एफ० डेविड द्वारा भेट की गई। डेविस अपने जमाने मे स्वय भी लान टेनिस के बहुत अच्छे खिलाडी थे। 1900 म लागवुड, बोस्टन (अमेरिका) मे अमेरिका और ब्रिटेन के बीच मुकाबला हुआ। धीरे धीरे इस प्रतियोगिता की लोकप्रियता बढने लगी। अब दुनिया के लगभग 50 देश इस प्रतियोगिता म भाग लेने लग गए हैं। इस कप पर जिस देश का अधिकार होता है उसे शौकिया टेनिस का चैंम्पियन माना जाता है।

भारत ने 1921 मे डेविस कप की प्रतियोगिता मे पहली बार भाग लिया था और 1948 तक भारत डेविस कप के युरोपीय क्षेत्र मे खेलता रहा। 1921 मे भारतीय टीम ने पहले दौर म फ्रास को हराया, पर अगले दौर म जापान से हार गया। इसी प्रकार 1922 म भारत ने पहले दौर म रूमानिया को 5-0 से हराया, किन्तु दूसरे दौर मे स्पेन से 4-1 से हार गया।

1952 म जब से पूर्व क्षेत्र की स्थापना हुई तब से भारत बराबर इसम

भाग लेता आ रहा है। डेविस के 59 वर्ष के इतिहास में 12 वर्ष, विश्व युद्ध के दौरान, इस प्रतियोगिता में व्यवधान पडा।

शुरू में इस प्रतियोगिता में चैलेंज राउड की प्रथा थी। यानी जो देश इस ट्राफी पर अपना अधिकार जमाता उसे बस एक बार अंत में चलेंज राउड (चुनौती मुकाबले) में ही खेलना पडता था। कुछ वर्ष पहले इस प्रथा को समाप्त कर दिया गया और अब विजेता देश को भी अन्य देशो की तरह सभी मुकाबलो मे खेलना पडता है। उस समय चैलेंज राउड में पहुचना भी बहुत बडे गौरव की बात मानी जाती थी। भारत को 1966 मे डेविस कप के चलेंज राउड मे पहुचने का गौरव प्राप्त हुआ।

डेविस कप के विजेता तथा रनर्स-अप

वर्ष	विजेता	रनर्स-अप
1900	अमेरिका	ब्रिटिश द्वीप समूह
1901	प्रतियोगिता नही हुई	
1902	अमेरिका	ब्रिटिश द्वीप समूह
1903	ब्रिटिश द्वीप समूह	अमेरिका
1904	ब्रिटिश द्वीप समूह	बेल्जियम
1905	ब्रिटिश द्वीप समूह	अमेरिका
1906	ब्रिटिश द्वीप समूह	अमेरिका
1907	आस्ट्रेलिया	ब्रिटिश द्वीप समूह
1908	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1909	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1910	प्रतियोगिता नही हुई	
1911	आस्ट्रलिया	अमेरिका
1912	ब्रिटिश द्वीप समूह	आस्ट्रेलिया
1913	अमेरिका	ब्रिटिश द्वीप समूह
1914	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1915-18	प्रतियोगिता नही हुई	
1919	आस्ट्रेलिया	ब्रिटिश द्वीप समूह
1920	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1921	अमेरिका	जापान
1922	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1923	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1924	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1925	अमेरिका	फ्रास

वर्ष	विजेता	रनर्स-अप
1926	अमेरिका	फ्रांस
1927	फ्रांस	अमेरिका
1928	फ्रांस	अमेरिका
1929	फ्रांस	अमेरिका
1930	फ्रांस	अमेरिका
1931	फ्रांस	ग्रेट ब्रिटेन
1932	फ्रांस	अमेरिका
1933	ग्रेट ब्रिटेन	फ्रांस
1934	ग्रेट ब्रिटेन	अमेरिका
1935	ग्रेट ब्रिटेन	अमेरिका
1936	ग्रेट ब्रिटेन	आस्ट्रेलिया
1937	अमेरिका	ग्रेट ब्रिटेन
1938	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1939	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1940-45	प्रतियोगिता नहीं हुई	
1946	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1947	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1948	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1949	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1950	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1951	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1952	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1953	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1954	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1955	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1956	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1957	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1958	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1959	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1960	आस्ट्रेलिया	इटली
1961	आस्ट्रेलिया	इटली
1962	आस्ट्रेलिया	इटली
1963	अमेरिका	आस्ट्रेलिया

वर्ष	विजेता	रनर्स-अप
1964	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1965	आस्ट्रेलिया	स्पेन
1966	आस्ट्रेलिया	भारत
1967	आस्ट्रेलिया	स्पेन
1968	अमेरिका	आस्ट्रेलिया
1969	अमेरिका	रूमानिया
1970	अमेरिका	पश्चिम जर्मनी
1971	अमेरिका	रूमानिया
1972	अमेरिका	रूमानिया
1973	आस्ट्रेलिया	अमेरिका
1974	दक्षिण अफ्रीका	भारत

(फाइनल मैच नहीं खेला गया)

8 दशक के इतिहास में अमेरिका ने इस कप पर 25 बार अधिकार जमाया, जबकि आस्ट्रेलिया ने 24 बार, ब्रिटेन ने 9 बार और फ्रांस ने 6 बार इसपर अधिकार जमाया। दक्षिण अफ्रीका, स्वीडन और इटली ने इसे एक-एक बार जीता है।

— डेक्स्टर, एडवर्ड रॉल्फ (कैम्ब्रिज, ससेक्स)—जन्म 15 मई, 1935। अपने 62 टेस्टों में से 30 में इंग्लैंड का नेतृत्व। इंग्लैंड के सर्वाधिक आलोचना सहने वाले कप्तानों में। 1963 के लार्ड्स टेस्ट में वेस्ट इंडीज के विरुद्ध डेक्स्टर की 80 मिनट में 70 रन की पारी को एक सर्वश्रेष्ठ पारी माना जाता है। 47.89 औसत से 4502 रन।

त

ताश का खेल—ताश के खेल को लोग आधुनिक मानते हैं, पर वास्तव में यह बहुत पुराना खेल है। कितना पुराना, इसका अनुमान लगाना आसान नहीं है। इसके जन्म-स्थान के बारे में भी दुनिया के ताश प्रेमी एकमत नहीं हैं। कोई इसका जन्म स्थान मिस्र को मानता है, कोई अरब को, कोई बेबीलोनिया को और कोई भारत को। यों तो भविष्यपुराण में 'चतुराजी' नामक खेल का उल्लेख मिलता है जिसमें दो के स्थान पर चार व्यक्ति एक साथ खेलते हैं। ताश का एक प्राचीन नाम 'पत्रक्रीडा' भी है।

मुसलमानो के काल म भारत म एक पुराना भारतीय खेल 'दशावतारी' नाम से भी विख्यात था। यह खेल भी ताश से बहुत मिलता जुलता था। इन ताशो के पीछे भगवान के विभिन्न अवतारो के चित्र रहते थे। इस खेल की 1,000 साल पुरानी गड्डी आज भी लन्दन की रायल एशियाटिक सोसायटी के पुस्तकालय म सुरक्षित है। इस गड्डी के ताश रुपये की भाति गोलाकार हैं और सम्भवत इसका नाम 'ताश' (फारसी म 'ताश' का अथ 'गोल' होता है) पडा। यह ताश दक्षिण के विष्णुपुर राज्य के राजा खेला करते थे। उनका विश्वास था कि यह खेल खेलने म मनोरजन तो होता ही ह, भगवान के विभि न अवतारो के नाम भी मुह से बार बार निकलते हैं।

अकबर के काल म प्राचीनकाल के समान, ताश के बारह रगा के बारह बारह पत्ते होते थे (हालाकि बारह राजा नही होते थे)। इन रगो के नाम थे—अश्वपति, नरपति, गजपति, धनपति, दलपति, बलपति, नौपति, स्त्रीपति, देवपति, अहिपति, वनस्पति और असरपति। इनम अश्वपति मुख्य रग माना जाता था।

'आइने अकबरी' के लेखक अबुलफजल के अनुसार अकबर ने ताशो के चित्रा म परिवतन कर देवताओ के चित्रो के स्थान पर तत्कालीन समाज के चित्र देने का प्रयत्न किया। रगो के नाम भी सस्कृत से फारसी म हो गए। चीन म ताश का खेल बारहवी शताब्दी की दूसरी दशाब्दी के प्रारम्भिक वर्षों म आरम्भ हुआ। युरोप के देशो म इस खेल का प्रचलन तेरहवी और चौदहवी सदी के मध्य म आरम्भ हुआ। इग्लड म इस खेल का उल्लेख 1278 म, जमनी मे 1377 मे और फ्रास मे 1400 मे मिलता है। फ्रास के राजा चाल्स षष्ठ (1380 1422) इस खेल के बहुत शौकीन थे।

कुछ लोगो का यह भी मत है कि ताश का खेल भारत म मिस्र और युरोप स आया।

तेनजिग नार्के—29 मई, 1953 का दिन पवतारोहण के इतिहास का सबसे महत्त्वपूण दिन माना जाता है। इस दिन पहली बार तेनजिग नार्के और एडमड हिलरी ने एवरस्ट (सगरमाथा) का तिलक करके एक असम्भव काम को सम्भव कर दिखाया। इस ब्रितानी पवतारोही दल का नेतत्व करन का श्रेय सर जान हट को प्राप्त हुआ। इससे पहले यही समझा जाता था कि एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करना इसान के वस या वूते की बात नही है। एक शेरपा कहावत के अनुसार एवरेस्ट पवत इतना ऊचा है कि कोई चिडिया तक भी उसे पार नही कर सकती।

लेकिन तेनजिग नार्के और हिलरी द्वारा सगरमाथा (एवरेस्ट) का तिलक करने के बाद तो एवरेस्ट पर चढ़ने की एक प्रकार से होड सी चल पडी। आए दिन यह खबरें सुनने को मिलने लगी कि अमुक दल ने एवरेस्ट पर

विजय प्राप्त कर ली है, या कि भारतीय अभियान के 9 सदस्य ससार के इस सर्वोच्च शिखर (29,028 फुट) पर चढ़ने में सफल हो गए हैं। यहा यह बता देना आवश्यक है कि 29 मई, 1965 को भारतीय दल के 9 पर्वतारोही एवरेस्ट पर पहुचने म सफल हुए जो कि साहसिक प्रयत्नो का एक नया विश्व रिकार्ड है। इस दल के नेता लेफ्टिनेंट कमाण्डर कोहली थे। लेकिन पर्वतारोहण के क्षेत्र मे जितनी लोकप्रियता पहली बार एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने वाले पर्वतारोही तेनजिंग नार्के को प्राप्त हुई उतनी और किसी पर्वतारोही को प्राप्त नही हुई। एक साधारण-सा शेरपा देश का बहुत बड़ा सूरमा बन गया। और इस प्रकार तेनजिंग ने विश्व के उच्चतम शिखर एवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर पर्वतारोहण के क्षेत्र म भारत का मान बढ़ाया।

तेनजिंग नार्के को पर्वतो पर चढने का बचपन से ही शौक था। इनके पिता बहुत गरीब थे। पर्यटको का सामान अपनी पीठ पर ढोते और किसी तरह अपने परिवार का खर्च चलाते। पिताजी की देखा-देखी तेनजिंग को भी पहाडो पर चढने का शौक हुआ।

1936 से लेकर 1953 तक जितने भी अधिकृत या अनधिकृत अभियान एवरेस्ट पर हुए, प्राय सभी दलो म तेनजिंग शामिल होते थे। उन्होने एवरेस्ट पर चढने के अपने स्वप्न को साकार करने के लिए कई प्रयत्न किए। वह किसी अहकार, अभिमान या बदले की भावना से एवरेस्ट पर नही चढते, बल्कि स्नेह की भावना से चढते थे। एवरेस्ट उनके लिए माता के समान थी, और उसपर चढने का प्रयत्न करते हुए उन्हे ऐसा लगता, जसे वह अपनी मा की गोद म चढने की कोशिश कर रहे हो।

1953 से पहले भी बहुत से पर्वतारोहियो ने एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने की कोशिश की, मगर किसीको सफलता नही मिल सकी।

त्रिलोक सिंह—हवलदार त्रिलोक सिह सेना के प्रसिद्ध दौडाक थे। सन् 1959 मे सेना के मुकाबलो म यह 5 000 मीटर तथा 10 000 मीटर की दौड म प्रथम रहे और 1961 के राष्ट्रीय मुकाबलो मे इन्होने 10,000 मीटर की दौड म नया अखिल भारतीय रिकार्ड स्थापित किया। 1962 म इन्होने 10 000 मीटर की दौड मे पुन अपना ही पुराना रिकार्ड भग कर डाला। 1962 म भारतीय टीम के साथ एशियाई खेलो म भाग लेने के लिए जकार्ता गए, जहा इन्होने 10,000 मीटर की दौड को 30 मिनट 21 4 सकिंड म पूरा करके नया एशियाई रिकार्ड स्थापित किया और भारत की ओर से स्वर्ण पदक जीता। 5,000 मीटर की दौड म इन्होने तीसरा स्थान प्राप्त करके कास्य पदक जीता।

खेल जगत मे की गई उनकी सेवाओ पर उन्हे 1962 मे भारत सरकार द्वारा अर्जुन पुरस्कार से अलकृत किया गया था।

दिनेश खन्ना—पजाब के सिविल इजीनियर 33 वर्षीय दिनेश ख ना को बैडमिंटन के क्षेत्र म एशियाई चैम्पियन होने का गौरव प्राप्त है। उनका ज म 4 जनवरी, 1943 को हुआ। 1965 मे लखनऊ म हुई एशियाई प्रतियोगिता जीतने का गौरव प्राप्त करने के साथ-साथ उसी वप उ ह अजुन पुरस्कार से भी अलकृत किया गया। 1965 म आयोजित नेहरू प्रतियोगिता और एशियाई प्रतियोगिता जीतकर इ होने सचमुच एक सनसनी पैदा कर दी थी और खेल-समीक्षको ने यह कहना शुरू कर दिया था कि जैसे लान टेनिस के क्षेत्र मे भारत को कई वर्षों बाद रामनाथन कृष्णन मिला, उसी प्रकार भारतीय बैडमिंटन को कई वर्षों बाद दिनेश ख ना मिला है। 1957 और 1959 की जूनियर राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे यह दो बार रनर अप रहे। 1966 और 1967 मे अखिल इग्लैंड प्रतियोगिता मे दिनेश ख ना ने भारत का प्रतिनिधित्व किया।

दिलीप ट्राफी विजेता

सन्	विजेता	रनस अप
1961 62	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1962 63	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1963 64	पश्चिम क्षेत्र सयुक्त विजेता दक्षिण क्षेत्र	
1964-65	पश्चिम क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1965 66	दक्षिण क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1966-67	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1967-68	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1968 69	पश्चिम क्षेत्र	दक्षिण क्षेत्र
1969-70	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1970-71	दक्षिण क्षेत्र	पूर्वी क्षेत्र
1971-72	मध्य क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र
1972-73	पश्चिम क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1973-74	उत्तर क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
1974-75	दक्षिण क्षेत्र	पश्चिम क्षत्र
1975-76	दक्षिण क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र

1976-77	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1977 78	पश्चिम क्षेत्र	उत्तर क्षेत्र
1978 79	उत्तर क्षेत्र	पश्चिम क्षेत्र

दिलीप सिंह, ब्रिगेडियर—ब्रिगेडियर दिलीप सिंह पहली भारतीय टीम के सदस्य थे जिसने पेरिस म हुई सन् 1924 के ओलम्पिक खेलो म भाग लिया। इस टीम के 7 सदस्य थे। दिलीप सिंह लम्बी कूद म विश्व भर म सातवें नम्बर पर आए। इनका रिकाड 23 फुट 10 5 इच था। टीम के चयन के लिए खिलाडियो की चयन परीक्षा लाहौर म हुई। दिलीप सिंह लम्बी कूद म प्रथम रहे। इनका रिकाड 21 फुट 11 5 इच था। जब यह समाचार पटियाला के महाराजा भूपेन्द्र सिंह को मिला तब उन्होने तुरन्त दिलीप सिंह को पटियाला सेना मे लफ्टिनैण्ट नियुक्त कर दिया। और दिलीप सिंह ओलम्पिक खेलो मे लफ्टिनण्ट दिलीप सिंह के नाम से सम्मिलित हुए।

1924 के ओलम्पिक म दिलीप सिंह की लम्बी कूद का रिकाड 23 फुट साढे दस इच था जो जापान के सिरी ओडो से आधा इच कम था। सिरी ओडो को प्रशिक्षण की सुविधा उपलब्ध हुई और वह 1928 की ओलम्पिक मे विश्व विजेता बना। दिलीप सिंह के काय को देख अमेरिकन टीम के कोच ने इन्ह अमेरिका म प्रशिक्षण के लिए आमन्त्रित किया। किन्तु दिलीप सिंह इस पेशकश से कोई लाभ न उठा सके। 1928 मे यह एम्स्टडम म हुए ओलम्पिक खेलो म भारतीय टीम के कप्तान बने।

वह छठी कक्षा से ही लम्बी कूद म प्रथम आते रहे। वास्तव म इन्ह बाल्यावस्था से ही लम्बी कूद म रुचि थी। अपने गाव से स्कूल जाते तब माग म नाले पडते थे, जिन्ह हमेशा कूदकर पार करते थे। लम्बी कूद के अभ्यास का वणन करते हुए उन्होने कहा कि वह घर पर कूदने का अभ्यास करते और यह नियम बना रखा था कि रोज़ पिछले दिन के रिकाड से आगे बढना है। इसके लिए वह कूद के अन्तर पर निशान लगा लेते और जब तक अपने निशाने पर न पहुचते, कूद का अभ्यास जारी रखते। दिलीप सिंह क्रिकेट तथा हाकी के चोटी के खिलाडियो मे रहे है, किन्तु लम्बी कूद से इन्हे सबसे ज्यादा प्यार था।

सन् 1951 मे पहले एशियाई खेल दिल्ली मे हुए और उस समय ओलम्पिक मशाल जलाने का श्रेय इन्ह प्रदान किया गया। सन् 1954 म दूसरे एशियाई खेलो मे यह भारतीय टीम के मैनेजर बने। 1960 म दिल्ली राष्ट्रीय खेलो के समय यह ज्वालामुखी मन्दिर से ओलम्पिक मशाल प्रज्ज्वलित कर दिल्ली लाए।

दिलीप सिंह राजकुमार—'विस्डन' की सूची म रणजीत सिंह के बाद राजकुमार दिलीप सिंह जी का नाम आता है। दिलीप सिंह जी राजी के भतीजे

और जहा तक क्रिकेट का सवाल है, उनके सच्चे उत्तराधिकारी थे। दिलीप सिंह जी केवल इग्लिस क्रिकेट म ही खेले और राजी के पदचिह्नो पर चले। इसका प्रमुख कारण यह है कि उनके यशस्वी चचाजान न केवल उन्ह प्रोत्साहित करते थे, बल्कि उनके खेल को सवारते भी थे। दिलीप सिंह जी ने 1928 म कम्ब्रिज विश्वविद्यालय म क्रिकेट खेलना शुरू किया। अगले ही साल ससेक्स की ओर से उन्होने काउटी क्रिकेट मे भाग लिया। 1929 तथा 1932 के बीच के वर्ष दिलीप सिंह जी की प्रगति के दिन थे, पर इस थोडी अवधि म ही उन्होने बल्लेबाजी के वह कमाल दिखाए कि इग्लिश क्रिकेट पर उनकी धाक जम गई और 1929 म 'विस्डन' ने उनको सम्मानित किया। उनकी एक उल्लेखनीय उपलब्धि यह है कि 1930 म उन्होने नारथपटनशायर के विरुद्ध ससेक्स के लिए 333 रन पीटे। वे रन उन्होने एक दिन मे करीब 330 मिनटो म बनाए थे, आज तक काउटी क्रिकेट म किसी एक व्यक्ति ने इतना वडा करिश्मा नही किया। यह एक सयोग ही कहिए कि तब राजी ही ससेक्स काउटी क्रिकेट क्लब के प्रेजीडेंट थे। अगले तीन वर्षों—1929, 1930 तथा 1931 म दिलीप सिंह जी ने काउटी क्रिकेट के एक सीजन म 2,000 से भी अधिक रन बनाए। दिलीप इग्लड के लिए पहली बार 1929 म दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध खेले। उनका अन्तिम खेल 1932 म न्यूजीलैंड के विरुद्ध था। आस्ट्रेलिया के मुकाबले पहले टेस्ट मैच म लाडस म 43 और 173 रन बनाकर उन्होने अपने चचाजान की ही मिसाल कायम की। पर स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण उन्ह क्रिकेट को तिलाजलि देनी पडी। दिलीप आखिरी बार इग्लैंड म 1932 म खेले।

दीपू घोष—दीपू घोष, जिनका जन्म 17 जून, 1940 को हुआ था, 1969 म हुई पुरुषों की सिंगल्स और पुरुषो की डवल्स मे राष्ट्रीय चम्पियन थे। वह 1960, 63, 66 और 1969 मे हुई थामस कप प्रतियोगिता मे भारत की ओर से खेले और 1966 म भारतीय टीम के कप्तान रहे। वह 1965 मे एशियाई बैडमिंटन चैम्पियनशिप म भारत की ओर से खेले। उन्होने 1963 मे सिंगापुर गोल्ड कप चम्पियनशिप म मिक्स्ड डबल टाइटल जीता। वह 1963, 64, 65 और 1966 म सिंगल्स मे भारत के दूसरे नम्बर के खिलाडी थे और 1965, 66 व 1967 म डवल्स म भारत के नम्बर एक खिलाडी थे।

दुआ, मनजीत—जिन लोगो ने मनजीत दुआ को खेलते हुए देखा है उनका कहना है कि मनजीत दुआ आक्रमण और बचाव दोनो ही पक्षो म अपने प्रतिद्वद्वी से श्रेष्ठ थ। उनकी फोरहैड ड्राइव तो देखते ही बनती है। वह भविष्य मे अभी कई वर्षों तक भारत के नम्बर एक खिलाडी बने रह सकते हैं। दुआ का कहना है कि मैं जन्म से तो पजाबी हू लेकिन अब दिल्लीवाला हो गया हू, क्योकि दिल्ली मे ही मैंने इस खेल का अभ्यास किया है। मृदुभाषी

दुआ का कहना है कि यों तो इस देश में भी रणबीर भंडारी जैसे कुछ अच्छे प्रशिक्षक हैं लेकिन मेरा व्यक्तिगत विचार यह है कि या तो देश के चोटी के खिलाडियो को और आगे प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए यूरोप आदि दूसरे देशों में भेजा जाए या फिर दूसरे देशों के कुछ प्रशिक्षकों को यहां आमंत्रित किया जाए। भारतीय खिलाडी अक्सर यूरोपीय खिलाडियों की खेल पद्धति का ही अनुसरण करते हैं, जापानी, चीनी या कोरियाई खिलाडियों का नही। अब इस खेल में यूरोपीय खिलाडी भी बडी तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। अब चीन और जापान का उतना दबदबा नही रहा। यूरोपीय खिलाडियों की प्रगति का यह कारण नही है कि वहां पर खिलाडियो में पेशेवर की प्रवृत्ति प्रबल हो रही है, बल्कि उसका मुख्य कारण यह है कि वहां पर चोटी के खिलाडियो को प्रोत्साहित करने के लिए काफी पुरस्कृत किया जाता है—भले ही लान टेनिस जितना नही।

दुआ ने 20 वर्ष की उम्र में ही इस खेल में काफी ख्याति अर्जित कर ली है। हिन्दू कालेज के छात्र दुआ का कहना है कि अरुण कुमार (कर्नाटक), हरि (तमिलनाडु) इस देश के होनहार खिलाडी हैं।

दुर्रानी, सलीम—11 दिसम्बर, 1934 को जन्मा भारत का यह खब्बू आल राउंडर अविभाजित भारत के मशहूर विकेटकीपर अब्दुल अजीज का पुत्र है। दुर्रानी आकर्षक खब्बू बल्लेबाज और घातक खब्बू स्पिनर है। रणजी ट्राफी में मुख्यत राजस्थान की ओर से 3500 से अधिक रन और 225 से अधिक विकेट ले चुका है। इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज और न्यूजीलैंड के विरुद्ध टेस्ट खेले। टेस्ट क्रिकेट में भारत की ओर से सबसे तेज अर्द्धशतक बनाने का गौरव 29 मिनट में। अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने वाला पहला क्रिकेट खिलाडी।

29 टेस्ट, 1202 रन, 75 विकेट, 14 कैच।

देवधर, प्रोफेसर—भारतीय क्रिकेट में प्रोफेसर देवधर का अद्वितीय स्थान है। वह अपने जमाने के नामी खिलाडियो में से थे। उन्होने उस समय क्रिकेट खेलना शुरू किया जबकि भारत मे क्रिकेट के खेल का प्रचलन ही हुआ था। इसलिए यह कहा जा सकता है कि देवधर की जीवन कहानी ही भारतीय क्रिकेट के प्रारम्भिक विकास की कहानी है। 1911 में वह फर्ग्यूसन कालेज की ओर से खेले। 1926 मे उन्हें पहली बार शतक बनाने का गौरव प्राप्त हुआ। उस समय उन्होने एम० सी० सी० के विरुद्ध 148 रन बनाए थे। 1929 में वह क्वाड्रेंगुलर प्रतियोगिता में हिन्दुओ के कप्तान नियुक्त किए गए। 1934 में उनके नेतृत्व मे हिन्दू टीम ने अंग्रेजों की एक तगडी और मजबूत टीम को एक पारी और 32 रनो से हरा दिया। उसके बाद वह रणजी प्रतियोगिताओ मे हिस्सा लेने लगे। वह महाराष्ट्र की ओर से खेलते

थ। उन्होंने महाराष्ट्र की टीम का इतना मजबूत बना दिया कि 1939 40 म रणजी ट्राफी महाराष्ट्र न जीती। दिलीप सिंह न उनके बारे म एक बार कहा था—'हमारे तरुण खिलाडी देवधर के लम्बे क्रिकेट जीवन से शारीरिक स्वास्थ्य का महत्त्व जान सकते है। वह 50 साल से भी अधिक आयु म प्रथम श्रेणी के मैचा म हिस्सा लते थे और कई नौजवान खिलाडिया से अच्छा खेलते थ।' उनका कहना बिल्कुल सही है। इतनी लम्बी अवधि तक भारतीय क्रिकेट पर छाया रहने वाला शायद ही कोई और दूसरा खिलाडी हो। देवधर क्रिकेट के अलावा टेनिस, फुटबाल और कई अन्य भारतीय खेलो म भी हिस्सा लत थ। कुछ ही वष पूव उन्ह उनकी दीघकालीन क्रिकेट सेवाओ के लिए पदमश्री की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

देसाई, रमाकांत—रमाकात देसाई का जन्म 20 जून, 1939 को बम्बई म हुआ। देसाई 28 टेस्ट मैचो मे खेले है तथा उन्होने कुल 74 विकेट लिए हैं। टेस्ट मैचो म उनका सवश्रेष्ठ प्रदशन 1964 65 मे बम्बई मे न्यूजीलड के विरुद्ध रहा, जिसमे उन्होने 56 रन देकर 6 विकेट लिए। देसाई ने अपना पहला प्रथम श्रेणी मैच सी० सी० आई० की ओर से वेस्टइडीज के विरुद्ध 1958 59 मे खेला था। इस मैच मे उन्होने 60 रन म 5 तथा 68 रन म 3 विकेट लिए थे। 1958 59 म ही उन्होंने रणजी ट्राफी म गुजरात के विरुद्ध अपना पहला मैच खेला और पूरे मैच म 39 रन देकर 7 विकेट लिए। रणजी ट्राफी मे देसाई ने 15 41 के औसत से कुल 239 विकेट लिए।

ध

ध्यानचन्द—मानना होगा कि हाकी के खेल मे ध्यानचन्द ने लोकप्रियता का जो कीर्तिमान स्थापित किया है उसके आसपास भी आज तक दुनिया का कोई खिलाडी नही पहुच सका। उनका जन्म प्रयाग के एक साधारण राजपूत परिवार म 29 अगस्त, 1905 को हुआ। कालातर म उनका परिवार इलाहाबाद से झासी आ गया। उनके बाल्य-जीवन म खिलाडीपन के कोई विशेष लक्षण दिखाई नही देते थे। इसलिए कहा जा सकता है कि हाकी के खेल की प्रतिभा जन्मजात नही थी, बल्कि उन्होन सतत साधना, अभ्यास, लगन, सघर्ष और सकल्प के सहारे यह प्रतिष्ठा अर्जित की थी।

साधारण शिक्षा प्राप्त करने के बाद 16 वष की अवस्था म वह सना म एक साधारण सिपाही की हैसियत से भरती हो गए। जब वह फस्ट ब्राह्मण

रेजीमट' म भरती हुए उस समय तक उनके मन म हाकी के प्रति कोई विशेष दिलचस्पी या रुचि नही थी। ध्यानचन्द को हाकी खेलन के लिए प्रेरित करने का श्रेय उनकी रेजीमट के एक सूबेदार मेजर तिवारी का है। मेजर तिवारी स्वयं भी हाकी के प्रेमी और खिलाडी थ। उनका देख रख म ध्यानचन्द हाकी खेलने लगे और देखते ही देखते वह दुनिया के एक महान खिलाडी बन गए।

1928 म एम्स्टडम ओलम्पिक खेला म पहली बार भारतीय टीम ने भाग लिया। एम्स्टडम म खेलने से पहले भारतीय टीम ने इग्लैंड म 11 मैच खेते और वहा ध्यानचन्द को विशेष सफलता प्राप्त हुई।

एम्स्टडम म भारतीय टीम पहले सभी मुकाबले जीत गई। भारत ने आस्ट्रेलिया को 6-0 से, बेल्जियम को 9-0 से, डेनमार्क का 6-0 से, स्विटजरलड को 6-0 से हराया और इस प्रकार भारतीय टीम फाइनल म पहुच गई। फाइनल म भारत और हालैंड का मुकाबला था। फाइनल मैच मे भारत ने हालड को 3 0 से हरा दिया। इसम दो गोल ध्यानचन्द ने किए।

1932 म लास एजिलस म हुई ओलम्पिक प्रतियोगिताओ म भी ध्यानचन्द को टीम मे शामिल कर लिया गया। उस समय तक वह सेंटर फारवड के रूप मे काफी सफलता और शोहरत प्राप्त कर चुके थे। तब सेना म वह 'लैंस नायक' के बाद नायक हो गए थे। इस दौरे के दौरान भारत ने काफी मैच खेले। इस सारी यात्रा म ध्यानचन्द ने 262 म से 101 गोल स्वय किए। निर्णायक मैच मे भारत ने अमरिका का 24 1 स हराया था। तब एक अमरिकी समाचार पत्र ने लिखा था कि भारतीय हाकी टीम तो पूव से आया तूफान थी। उसने अपने वेग से अमेरिकी टीम के ग्यारह खिलाडियो को कुचल दिया।

उसके बाद 1933 मे एक बार वह रावलपिण्डी मे मैच खेलने गए। इस घटना का उल्लेख यहा इसलिए किया जा रहा है कि आज हाकी के खेल मे खिलाडियो मे अनुशासनहीनता की भावना बढ़ती जा रही है और खेल के मैदान मे खिलाडियो के बीच काफी तेजी आ जाती है। 14 पजाब रेजिमेट (जिसम ध्यानचन्द भी सम्मिलित थे) और सैपर्स एण्ड माइनस टीम के बीच मैच खेला जा रहा था। ध्यानचन्द उस समय ख्याति की चरम सीमा पर पहुच चुके थे। उन्होने अपने शानदार खेल से विरोधिया की रक्षापक्ति को छिन्न भिन्न कर दिया और दशको को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

इसपर विरोधी टीम का सेंटर हाफ अपना सन्तुलन खो बठा और असावधानी मे उसके हाथो ध्यानचन्द की नाक पर चोट लग गई। खेल तुरन्त रोक दिया गया। प्राथमिक चिकित्सा के बाद ध्यानचन्द अपनी नाक

पर पट्टी बधवाकर मैदान म लौटे। उन्होने चोट मारने वाले प्रतिद्वन्द्वी की पीठ थपथपाई और मुस्कराकर कहा—'सावधानी स खेलो ताकि मुझे दोबारा चोट न लग।" उसके बाद ध्यानचन्द प्रतिशोध पर उतर आए। उनका प्रतिशोध कितना आदश है, इसकी बस कल्पना ही की जा सकती है। उन्होने एक साथ 6 गोल कर दिए। ये सचमुच एक महान खिलाडी का गुण है। इससे खेल खिलाडी का स्तर और प्रतिष्ठा ऊची होती है।

1936 के बर्लिन ओलम्पिक खेला म उन्ह भारतीय टीम का कप्तान चुना गया। इसपर उन्होने आश्चय प्रकट करते हुए कहा—'मुझे जरा भी आशा न थी कि मैं कप्तान चुना जाऊगा।" खर, उन्होने अपने इस दायित्व को बडी ईमानदारी क साथ निभाया। अपने जीवन का अविस्मरणीय सस्मरण सुनाते हुए वह कहते हैं कि 17 जुलाई के दिन जमन टीम के साथ हमारे अभ्यास के लिए एक प्रदशनी मैच का आयोजन हुआ। यह मैच बर्लिन मे खेला गया। हम इसमे चार के बदले एक गोल से हार गए। इस हार से मुझे जो धक्का लगा उसे मैं अपने जीते जी नही भुला सकता। जमनी की टीम की प्रगति देखकर हम सब आश्चयचकित रह गए और हमारे कुछ साथियो को तो भोजन भी अच्छा नही लगा। बहुत से साथियो को तो रात नीद भी नही आई।

5 अगस्त के दिन हमारा हगरी के साथ ओलम्पिक का पहला मुकाबला हुआ, जिसम हमारी टीम ने हगरी को चार गोलो से हरा दिया। दूसरे मैच म, जो कि 7 अगस्त को खेला गया, हमारी टीम ने अमेरिका को 7 0 से हराया। 10 अगस्त को खेले गए मुकाबले म हमारी टीम ने जापान को 9 0 से हराया और उसके बाद 12 अगस्त को फ्रास को 10 गोलो से हराया। 15 अगस्त के दिन भारत और जमन की टीमो के बीच फाइनल मुकाबला था। यद्यपि यह मुकाबला 14 अगस्त को खेला जाने वाला था पर उस दिन इतनी बारिश हुई कि मैदान मे पानी भर गया और खेल का एक दिन के लिए स्थगित कर दिया गया। अभ्यास के दौरान जमनी की टीम ने भारत को हराया था, यह बात सभी के मन म बुरी तरह से घर कर गई थी। फिर गीले मैदान और *प्रतिकूल परिस्थितियो के कारण हमारे खिलाडी और भी* निराश हो गए थे। तभी हमारी टीम के मैनेजर पकज गुप्ता को एक युक्ति सूझी। वह खिलाडियो को ड्रेसिंग रूम म ले गए और सहसा उन्होने तिरगा झडा हमारे सामने रखा और कहा कि इसकी लाज अब तुम्हारे हाथ है। सभी खिलाडियो ने श्रद्धापूवक तिरगे को सलाम किया और वीर सनिक की तरह मैदान म उतर पडे। भारतीय खिलाडी जमकर खेले और हमने जमन की टीम को 4-1 से हरा दिया। उस दिन सचमुच तिरगे की लाज रह गई।

उस समय कौन जानता था कि 15 अगस्त ही भारत का स्वतन्त्रता दिवस बनेगा ।

कहा जाता है कि मैच के दौरान गेंद हर समय ध्यानचन्द की स्टिक के साथ ही चिपकी रहती । यह देखकर दर्शक आश्चर्यचकित रह गए, लेकिन कुछ अधिकारियों को बीच में सन्देह होने लगा कि कहीं ध्यानचन्द की स्टिक में कोई ऐसी वस्तु तो नहीं लगी है, जो बराबर गेंद को अपनी ओर खींचे जाती है ! बात बढ़ गई और शंका-समाधान आवश्यक समझा गया । सैनिक को दूसरी स्टिक से खेलने को कहा गया, लेकिन जब दूसरी स्टिक से भी ध्यानचन्द ने दनादन गोलों का तांता बांधकर समां बांध दिया तो जर्मन अधिकारियों को विश्वास हो गया कि जादू स्टिक का नहीं उनकी लोचदार और सधी हुई कलाइयों का है । वहां के दर्शकों ने तभी ध्यानचन्द को 'हाकी का जादूगर' कहना शुरू कर दिया । 1936 के ओलम्पिक खेलों में भारतीय हाकी टीम ने कुल मिलाकर 38 गोल किए जिनमें से 11 गोल ध्यानचन्द ने ही किए ।

केवल हाकी के खेल के कारण ही सेना में उनकी पदोन्नति होती गई । 1938 में उन्हें 'वायसराय का कमीशन' मिला और वे जमादार बन गए । उसके बाद एक के बाद एक सूबेदार, लेफ्टीनेंट और कप्तान बनते चले गए । बाद में उन्हें मेजर बना दिया गया ।

1936 के बर्लिन ओलम्पिक खेलों के बाद द्वितीय विश्व-युद्ध के कारण 1946 और 1944 के ओलम्पिक खेलों का आयोजन नहीं हो सका । द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ध्यानचन्द ने हाकी से संन्यास ले लिया, लेकिन हाकी तो उनकी जीवनसंगिनी थी । उन्होंने नवयुवकों को गुरु मन्त्र सिखाने शुरू कर दिए । काफी समय तक वह राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान (पटियाला) में भारतीय टीमों को प्रशिक्षित करते रहे । चौथाई सदी तक विश्व हाकी जगत के शिखर पर जादूगर की तरह छाए रहने वाले मेजर ध्यानचन्द का 3 दिसम्बर, 1979 को सवेरे चार बजकर पच्चीस मिनट पर देहान्त हो गया ।

न

नाडकर्णी, बापू—भारत के मशहूर क्रिकेट खिलाड़ी बापू नाडकर्णी का जन्म 4 अप्रैल, 1933 को नासिक में हुआ । बी० एस-सी० (आनर्स) करने के बाद वह 1951-52 में महाराष्ट्र की ओर से रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में

लान टनिस की प्रतिष्ठा का प्रतीक डविस कप

म तरराष्टीय मच पर भारतीय ध्वज फहरान वाले बधु, प्रान द प्रमृतराज और विजय प्रमतराज

सबसे अधिक बार विम्बलडन जी
वाली श्रीमती जीन किंग

रामनाथन कृष्णन्
भारतीय लान टेनिस के गौरव

पहली बार विश्व कप (हाकी) पर अधिकार जमाने वाली भारतीय टीम

हाकी के जादूगर ध्यानचन्द

कंवर दिग्विजय सिंह बाबू

इंगलिश चैनल पार करने वाली पहली भारतीय महिला—आरती साहा
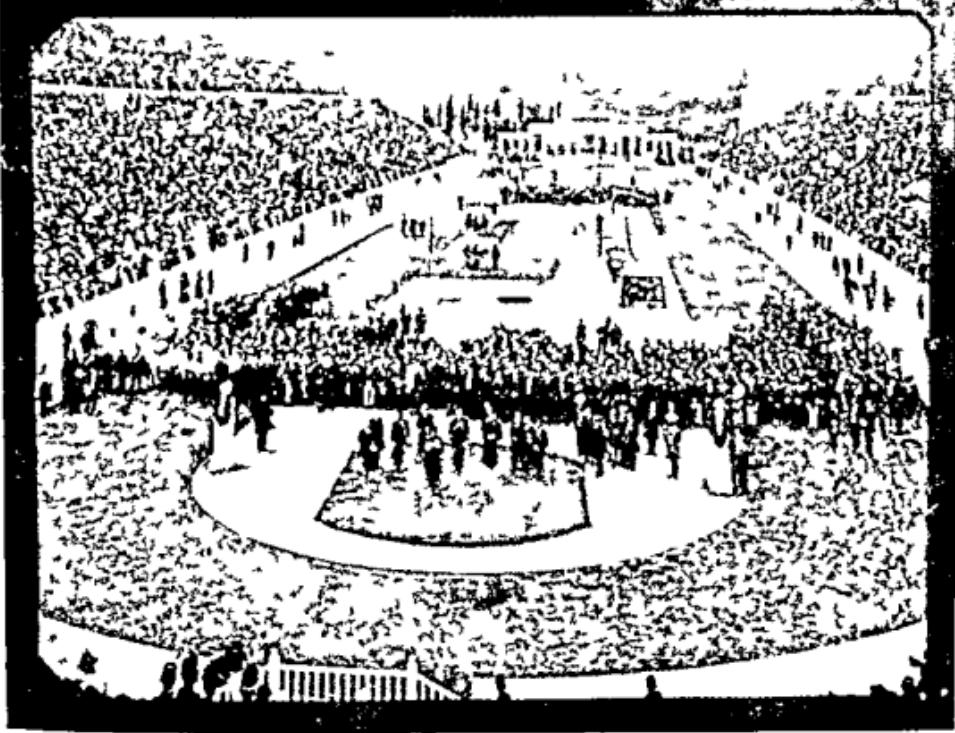
भारतीय फुटबाल के गौरव पी० के० बनर्जी

भारत केसरी सतपाल (पहलवान)

1896 म एथ स मे हुए प्रथम ओलम्पिक खलो का उद्घाटन

आधनिक ओलम्पिक खेलो के ज मदाता
पियरे ᷈ कावर्टिन

बर्लिन ओलम्पिक (1936) मे चार स्वण पदक
प्राप्त करन करन वाने जसी ओव स

लगातार दो बार मराथन दौड मे स्वण पदक प्राप्त
करने वाल इथोपिया के अबब बिकिना

1948 और 1952 मे डिकेथलन म स्वण पदक प्राप्त
करन वाल अमरिका के बाब मथियास

1960 म राम ओलम्पिक मे अपना
कीतिमान स्थापित करन वाल
मिल्खा सिह (फ्लाइग सिख)

भूतपूव हैवी वट चम्पियन जो लुई ग्रौर मोहम्मद ग्रली

1976 म पांच हजार मीटर की दौड मे
स्वण पदक विजता लास्से वारेन
(फिनलड)

बिशनसिह बदी

सुनील गावस्कर

दिलीप ट्राफी

रणजी ट्राफी

भाग लेने लगे। पहली बार उन्होने 1951 म रणजी ट्राफी प्रतियोगिता म भाग लिया। उसी वष उन्हे पश्चिम क्षत्र की टीम मे सम्मिलित किया गया, जिसने भारत आई हुई एम० सी० सी० टीम के विरुद्ध मैच खेला। 1955 मे दिल्ली टेस्ट म न्यूजीलैंड के विरुद्ध प्रथम बार उन्हे टेस्ट टीम मे सम्मिलित किया गया। 1960 मे प्रथम बार बम्बई की ओर से खेले। 1963 म उन्होने बम्बई की टीम का नतत्व किया।

एक बार उन्होने अपने जीवन की सबसे महत्त्वपूण घटना का उल्लेख करत हुए कहा था—'मेरे जीवन का सबसे रोमाचक क्षण वह था जब मैंने अपने देश को फरवरी 1964 मे हुए कानपुर टेस्ट मे इग्लैंड के हाथो हार से बचाया था।" यह उल्लेखनीय है कि नाडकर्णी ने उस टेस्ट मे दो पारियो म क्रमश 122 और 51 रन बनाए थे और दोनो बार वह आउट नही हुए थे। अपनी शानदार गेंददाजी का स्मरण करते हुए उन्होने कहा—"1959 म बम्बई के टेस्ट मे मैंने 102 रन देकर आस्ट्रेलिया के छह खिलाडियो को आउट किया और इसके पश्चात 1964 म मद्रास म इग्लैंड के विरुद्ध दानो पारियो म 11 विकेट लिए। ये दिन मैं कभी नही भूल सकता, क्योकि दोनो ही बार मैं मैदान म छाया रहा और बल्लेबाज मुझे जादूगर समझ रहे थे।" मद्रास के टेस्ट म नाडकर्णी ने 22 ओवर लगातार ऐसे फेंके जिनम कोई भी रन न बन पाया। यह गेंददाजी का नया रिकाड था।

नारी कण्ट्रक्टर—17 माच, 1962 का दिन भारतीय क्रिकेट तथा भारतीय क्रिकेट के भूतपूव कप्तान नारी कण्ट्रक्टर के लिए बडा ही दुर्भाग्यशाली सिद्ध हुआ। बारबदोस के विवादास्पद तेज गेंददाज चाली ग्रिफिथ की एक उठती हुई गेंद को टालने के ख्याल से कण्ट्रक्टर थोडा पीछे झुके। गेंद उनके दाए कान पर पूरे जोर से टकराई। मैदान म सन्नाटा छा गया। देखते ही देखते कण्ट्रैक्टर का चेहरा लाल हो आया। अस्पताल म आपरेशन किया गया। दिमाग पर असर पडा था। न केवल भारतीय खिलाडिया नाडकर्णी, उमरीगर और चन्दू बोड ने उन्हे बचाने के लिए खून दिया, बल्कि वेस्टइडीज के कप्तान सर फ्रक वारेल तक ने खून दिया। जान तो बच गई, लेकिन एक उत्कृष्ट बल्लेबाज और कुशल कप्तान का भविष्य भाग्य के क्रूर कालचक्र न बडी बेरहमी से खत्म कर दिया।

नारी कण्ट्रक्टर भारत के 14वें कप्तान थे। लेकिन वह कई दृष्टियो मे अपने पहले कप्ताना से बहुत जागरूक और दूरदर्शी थे। इस दौरे के कुछ महीने पहले ही टेड डेक्सटर इग्लड की टीम लेकर भारत आए थे। कण्ट्रैक्टर के कुशल नेतत्व की बदौलत भारत ने पहली बार उनको बिना रबर (शृखला बराबर रही) के स्वदेश लौटा भेजा।

प्रसिद्ध मल समीक्षक एलेक्स वरिस्टर के अनुसार कण्ट्रक्टर भारत का पहला और तब तक का अन्तिम बल्लबाज था जो तज गेंददाजा का बड़ी हिम्मत व तकनीक से मुकाबला करता था। 1959 म दूसरे टस्ट की याद ताजा करते हुए एलेक्स लिखते ह—स्टेथम की गेंद कण्ट्रक्टर का भारी पडी। एक बार तो वह तिलमिला गए। लकिन उन्हान सघप नही छाडा। वह जब भी खेलत तो अपन देश की प्रतिष्ठा को साथ जोडकर दखत। बाद म पता चला कि उनकी पसली म दरार पड गई है, लकिन इसक बावजूद वह साथी धावक की सहायता स खेलते रह। साढे चार घटे म उन्हाने 81 रन बनाए (जिसम 1 छक्का और 8 चौके थे)।

कण्ट्रक्टर ने 1952 53 म बडौदा के विरुद्ध गुजरात की ओर स रणजी मैचा म खेलना आरम्भ किया। पहल ही मैच म 152 व 102 रन बनाकर उन्हाने अपन आपको श्रेष्ठ और विश्वसनीय बल्लेबाज के रूप म प्रतिष्ठित किया। उन्हाने अपने 10 वर्षों क सक्रिय खिलाडी जीवन म 31 टेस्ट खल और 1611 रन बनाए। यह सख्या किसी भी अच्छे बल्लबाज के लिए गौरव की बात कही जा सकती है। रणजी प्रतियोगिताओ म तो उन्होने 3000 रन सख्या का छू लिया। इसम 12 शतका का महत्त्वपूण योगदान रहा। 1962 म उन्ह पद्मश्री मे सम्मानित किया गया।

सिर म स्टील प्लेट लगवाने के बाद आज भी कण्ट्रक्टर ने हिम्मत नहा हारी है तथा फुरसत के क्षणा म नये और होनहार खिलाडियो को अपने गुरुमन्त्र बताते रहते हैं। कुछ समय पहले उन्हे एम० सी० सी० न अपना आजीवन सदस्य बनाकर सम्मानित किया है।

निकोलाई आन्द्रियानोव—पुराने रूसी नगर क 24 वर्षीय छात्र निकोलाई आन्द्रियानोव सात ओलम्पिक पदक जीत चुके है जिनम से चार स्वण पदक हैं और वह विश्व जिम्नास्टिक्स क एक मान्यता प्राप्त नेता बन गए हैं।

बारह वप पूव, रसायन सयन्त्र की कर्मी उनकी मा ने अपने उद्दण्ड बेटे को सुधारने की सारी आशाए छोड दी थी और वह उन्ह निकोलाइ तोलमाचेव के वर्ग मे ले गई।

अपने खल जीवन की शुरुआत म आन्द्रियानोव को विजया की अपेक्षा अधिक पराजयो का सामना करना पडा। 1975 का वप, जब उन्होने बेर्न म युरोपीय पदवी हासिल की, आन्द्रियानोव के जीवन का सक्रान्ति काल था। उस समय विशेषज्ञो ने भविष्यवाणी की थी कि आन्द्रियानोव माट्रीयल ओलम्पिक खलो म विजयी रहेगे। और उनकी बात सही साबित हुई।

सम्प्रति, निकोलाई आन्द्रियानोव व उनकी पत्नी, जो एक समय म सुप्रसिद्ध जिम्नास्ट थीं ल्यूबोव बुर्दा अध्यापन शास्त्र सस्थान के छात्र हैं।

मास्को में होने वाले 22वें ओलम्पिक खेलों में भाग लेना अब आद्रियानोव का मुख्य लक्ष्य है।

नितीन्द्रनारायण राय—एक बार एक मशहूर पर्वतारोही से किसी ने पूछा कि आप अपनी जान जोखिम में डालकर इतने ऊंचे ऊंचे पर्वतों की चोटियों पर क्यों चढ़ते हैं ? उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया था—"पर्वत है तो हम चढ़ते है।" ठीक यही उत्तर इंग्लिश चैनल पार करने वाले तैराक भी दे सकते है और कह सकते है कि इंग्लिश चैनल है तो हम उसे पार करते हैं। पिछले दस वर्षों में दुनिया के अनेक देशों के तैराकों ने इंग्लिश चैनल (इंग्लैंड और फ्रांस के बीच का 20 मील चौड़ा समुद्र) पार किया। जिन छह भारतीय तैराकों को इस चैनल को पार करने का गौरव प्राप्त हुआ उनके नाम हैं मिहिर सेन, बिमल चन्द्र, नितीन्द्रनारायण राय, कुमारी आरती साहा, टिंगू खटाऊ और अविनाश सारंग।

नितीन्द्रनारायण राय ने डोवर (इंग्लैंड) से फ्रांस तक इंग्लिश चैनल को 10 घंटे और 21 मिनट में पार करके नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। पिछला कीर्तिमान कैनाडा के हेलगा जैंनसन ने स्थापित किया था। उन्होंने इस समुद्र को 10 घंटे और 23 मिनट मे पार किया था। श्री राय इंग्लिश चैनल को दोनों तरफ से पार करने के इरादे से गए लेकिन अपने इस संकल्प को (दोनों तरफ से बिना रुके इंग्लिश चैनल पार करना) पूरा करने में असमर्थ रहे। वह ऐसे पहले भारतीय है जिन्होंने दोनों तरफ से इंग्लिश चैनल को पार करने का प्रयास किया था।

नितीन्द्रनारायण राय चटगांव के रहने वाले हैं। बाद में वह अपने परिवार के साथ कलकत्ता आकर बस गए। 11 वर्ष की उम्र में तो उन्होंने तैरना शुरू कर दिया था। 15 वर्ष की उम्र में तो उन्होंने इंग्लिश चैनल पार करने का संकल्प कर लिया था। अब तक बिना रुके दोनों तरफ से चैनल पार करने का श्रेय दुनिया के केवल दो तैराकों को ही प्राप्त है। 22 सितम्बर, 1961 को अर्जेंटीना के एंटोनिया अबेरतोदो ने 43 घंटे और 10 मिनट में और 1965 में अमेरिका के टेड इरिक्सन ने 30 घंटे और 3 मिनट में दोहरा चैनल पार किया था।

निसार, मोहम्मद—भारतीय क्रिकेट का विश्लेषण करते समय अक्सर कहा जाता है कि भारत के पास तेज गेंददाज नहीं हैं, लेकिन एक जमाना था जब भारत के तेज गेंददाजों की गिनती दुनिया के सर्वश्रेष्ठ तेज गेंददाजों में की जाती थी। भारतीय तेज गेंददाजों मे मोहम्मद निसार का नाम अग्रणी है।

मोहम्मद निसार का जन्म 1 अगस्त, 1910 को हुआ था। गेंददाजी की उन्हें कितनी लगन थी इसका अन्दाजा तो इसी बात से लगाया जा सकता है

कि वह मई और जून की तपती धूप मे भी लाहौर के मिन्टो पाक मे गेंददाजी का अभ्यास किया करते थे। शुरू शुरू मे गवनमेंट कालेज लाहौर की ओर से खेलते हुए जब उन्होने इस्लामिया कालेज की 17 विकेटो की किल्लिया उडाईं तो उन्हें भारत का सवश्रेष्ठ गेंददाज मान लिया गया। इग्लड वाले उन्हें एक खतरनाक गेंददाज समझने लगे। लाड्स के मदान मे खेलते हुए उन्होने एक ही ओवर म इग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज सटक्लिफ (3) और होम्स (6) की विकेटें उडा दी। 1932 मे इग्लड की शक्तिशाली टीम को केवल रनो पर आउट कर देने का श्रेय निसार को ही प्राप्त हुआ। इग्लैंड के 1932 के दौरे के दौरान निसार ने 1,442 रन देकर 97 विकेटें उडाइ। उसके बाद 1933 34 म इग्लड की टीम ने भारत का दौरा किया। इसमे भी निसार का प्रदशन बहुत ही प्रशसनीय रहा।

निसार जैसे महान खिलाडियो की गिनती दुनिया के सवश्रेष्ठ तेज गेंददाजो मे की जाती है। 11 माच, 1963 को निसार की मत्यु हो गई।

नृपजीत सिंह—वालीबाल के प्रसिद्ध खिलाडी नपजीत सिंह पजाब पुलिस के खिलाडी हैं। यह भारतीय वालीबाल टीम की ओर से लका, जापान तथा रूस के साथ होने वाले अन्तरराष्ट्रीय मचो म भाग ले चुके हैं। 1962 म यह राष्ट्रीय चम्पियनशिप जीतने वाली पजाब की टीम के कप्तान थे तथा 1962 की एशियाई खेलों म भाग लेने वाली भारतीय टीम के साथ उप कप्तान के रूप म गए थे। इनके शानदार खेल के कारण ही भारतीय वालीबाल टीम एशियाई खेलो म रजत पदक जीतने म सफल हो सकी। यह इस समय भारत म वालीबाल मे सर्वोत्तम 'आल राउड' खिलाडी माने जाते हैं। खेल जगत म की गई उनकी सेवाओं पर उन्हे 1962 मे भारत सरकार द्वारा अर्जुन पुरस्कार से अलकृत किया गया।

नेविल कार्डस—क्रिकेट समीक्षक के रूप म जितनी ख्याति और सम्मान 85 वर्षीय नेविल कार्डस ने प्राप्त किया उतना दुनिया के किसी अन्य समीक्षक को प्राप्त नही हुआ। उनके द्वारा लिखी 'गुड डेज', 'डज इन सन' और 'आस्ट्रेलियन समर' जसी पुस्तकें आज भी क्रिकेट साहित्य की अमूल्य सपदा मानी जाती है। क्रिकेट लेखन म उन्होने जो शली अपनाई वह कई पीढ़ियो तक क्रिकेट समीक्षको का मागदर्शन करती रहेगी।

उनका जन्म 1889 मे मानचेस्टर म विचित्र परिस्थितियो म हुआ। अज्ञात पिता की सतान होने के कारण वह अत तक अपने पिता का नाम नहीं जान पाए। अपने बारे म इतना जरूर लिखा कि मरा पालन-पोषण एक वेश्या के घर हुआ था। बचपन कठिनाइयों म बीता। साधारण-सी शिक्षा प्राप्त करने के बाद 12 साल की उम्र म उन्होने स्कूल छोड दिया। उन्हे

कई छोटे मोटे काम (जसे चपरासी, पत्रवाहक, ओल्ड कामेडी थियेटर के बाहर खडे होकर चाकलेट बेचना आदि) करने पडे। लेकिन अपनी विलक्षण प्रतिभा के कारण देखते ही देखते उन्होने असाधारण ख्याति अर्जित कर ली और 1919 म उनका क्रिकेट पर पहला लेख प्रकाशित हुआ।

उन दिनो मैक्लारेन और ट्रपर जसे खिलाडियो की बडी घूम थी। जब-जब भी ये खिलाडी खेलना शुरू करते काडस सब कुछ छोडकर क्रिकेट के मदान मे पहुच जाते। 1913 म उन्होने 'डेली सिटीजन' म सगीत समालोचक के रूप म काम शुरू किया और दो वर्ष बाद ही उन्हे 'गार्जियन' जैसे प्रतिष्ठित पत्र म नियमित रूप से सगीत का स्तभ लिखने का काम मिल गया। 'गार्जियन' के सपादक ने उन्ह एक दिन वैसे ही साधारण काउटी मैच की रपट तैयार करने को कहा, लेकिन उन्होने क्रिकेट के खेल मे जो सगीत की सुरें मिलाईं उससे उनकी ख्याति चारो ओर फैल गई।

1936 और 1939 मे वह आस्ट्रेलिया गए और वहा उन्होने 'मेलबोन हेरल्ड' मे काम शुरू कर दिया। उसके बाद उन्होने 'सिडनी मार्निंग हेरल्ड' मे काम किया, कुछ समय तक उन्होने 'सडे टाइम्स' म भी काम किया, लेकिन फिर वह 'गार्जियन' म आ गए। 1916 म उन्होंने इस पत्र म लिखना शुरू किया और अतिम दिनो के कुछ सप्ताह पहले तक उसमे लिखते रहे।

जिस समय उन्होने 'डेली सिटीजन' मे लिखना शुरू किया उस समय उन्ह खेलो का पारिश्रमिक बहुत कम मिलता था, इसलिए उन्होने सी० पी० स्काट को यह लिखा कि क्या ही अच्छा हो कि आप मुझे क्लक के रूप मे रख लें। लेकिन दो महीने के अदर ही वह क्लक तो नही बल्कि रिपोटर जरूर बन गए। 1963 मे उन्हे सी० बी० ई० और 1967 म सर की उपाधि से अलकृत किया गया।

उन्होने लगातार छह दशको तक क्रिकेट की समीक्षा की और इस सिल सिले म उन्होने इग्लैंड और आस्ट्रेलिया के लगभग सभी स्थानो का दौरा किया। सगीत समीक्षा के सिलसिले मे वह पूरे यूरोप घूमे। इन दोनो विषयो पर उन्होने लगभग 20 पुस्तकें लिखी और सगीत के सुरो म और क्रिकेट के खेल मे जो रिश्ता है उसका भी उन्होने बखूबी बखान किया। तभी तो ब्रडमैन जैसे खिलाडी को भी यह कहना पडा, "काडस अपने आप म अनोखे हैं। इस परिवतनशील खेल और इस परिवतनशील जगत म उन जैसा शायद ही कोई दूसरा क्रिकेट समीक्षक हो सके।"

1932 म जब भारत ने लार्ड स म अपना पहला टेस्ट खेला और दो चोटी के खिलाडियो को थोडे से रनो पर आउट कर दिया तब काडस ने लिखा था कि मैं देख रहा हू कि यह खबर अब भारत के हर गली-बाजार मे, मैदानी

इलाकों से पहाड़ों तक और गांधी से नगादीन तक फल गई है। विजय मर्चेंट और मुश्ताक अली के ऐतिहासिक टेस्ट की चर्चा करते हुए उन्होंने लिखा कि मुश्ताक के चलन-फिरने म एक प्रकार की लीला है। मारने वाले बल्लेबाज हैं। जब पीछे हटते हैं तो माथा भुका लेत है और कछुए की तरह सिमट जाते हैं और जब आगे आते है तो हाथी की तरह सूड हिलाते हुए फलने लगते है, और उनके हाथ म मनोहारी मार छिपी हुई है। विजय मर्चेंट को खेलते हुए देखकर काडस ने कहा था कि वह भारत के एक अच्छे यूरोपीय हैं।

मानना होगा कि यदि दुनिया म डब्ल्यू० जी० ग्रेस से बडा कोई दूसरा क्रिकेट खिलाड़ी नही है तो नेविल काडस से बडा कोई दूसरा क्रिकेट समीक्षक भी नही हो सकता। 28 फरवरी, 1976 को काडस की मृत्यु हो गई।

नेहरू हाकी—अखिल भारतीय जवाहरलाल नेहरू हाकी प्रतियोगिता देश की महत्त्वपूर्ण प्रतियोगिता है। यह प्रतियोगिता भारत के खेल प्रेमी नेता स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू की याद म शुरू की गई। इसका मुख्य उद्देश्य देश मे हाकी के खेल को लोकप्रिय बनाना और देश की नई प्रतिभाओ को प्रकाश म लाना है।

नेहरू हाकी प्रतियोगिता रिकार्ड

वर्ष	विजेता	रनर्स-अप
1964	उत्तर रेलवे	दक्षिण पूर्व रेलवे
1965	एस० आर० सी० मेरठ	बम्बई एकादश
1966	आई० एच० एफ० (ब्लू) और आई०एच०एफ० (रेड) (सयुक्त विजेता)	
1967	भारतीय नौ सेना और उत्तर रेलवे (सयुक्त विजेता)	
1968	इडियन एयर लाइस और आल इडिया पुलिस (सयुक्त विजेता)	
1969	कोर आफ सिगनल	उत्तर रेलवे
1970	आल इडिया पुलिस	उत्तर रेलवे
1971	इडियन एयर लाइस	इगलड एकादश
1972	कोर आफ सिगनल	उत्तर रेलवे
1973	उत्तर रेलवे	एस० आर० सी० मेरठ
1974	उत्तर रेलवे	पश्चिमी रेलवे
1975	सीमा सुरक्षा दल	पजाब पुलिस
1976	पजाब पुलिस	सेना सेवा कोर
1977	सीमा सुरक्षा दल	इगलड
1978	सीमा सुरक्षा दल	पंजाब पुलिस
1979	पजाब पुलिस	सीमा सुरक्षा दल

यह प्रतियोगिता हर साल राजधानी के शिवाजी स्टेडियम में होती है। 31 दिसम्बर, 1964 को इस स्टेडियम को नये सिरे से बनाया गया था। इस स्टेडियम के बाबत नेहरू जी का यह कथन उल्लेखनीय है जो उन्होंने एशियाई खेलों के उद्घाटन के समय दुनिया के खिलाड़ियों को दिया था—खेल को खेल की भावना से खेलना (प्ले द गेम फार द स्पिरिट आफ द गेम)।"

नेहरू हाकी का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। यह प्रतियोगिता दिसम्बर 1964 में शुरू हुई। इस समय यह देश की सबसे बड़ी प्रतियोगिता मानी जाती है। पहले ही वर्ष इसमें 24 टीमों ने भाग लिया। पहली बार उत्तर रेलवे की टीम को यह शानदार ट्राफी जीतने का गौरव प्राप्त हुआ। दूसरे ही वर्ष से इसमें विदेशी टीमों ने भाग लेना शुरू कर दिया। 1965 में जापान की टीम ने इसमें भाग लिया और उन्होंने अपनी ओर से एक बहुत ही शानदार ट्राफी भेंट की। दूसरे वर्ष सिख रेजिमेंट सेंटर की टीम विजयी रही।

नौकायन—रोइंग यह खेल ओलम्पिक की मुख्य प्रतियोगिताओं में से एक है। ओलम्पिक की आठ श्रेणियां विश्व और जूनियर प्रतियोगिताओं में भी मान्य हैं। नौका को आठ सदस्यों का दल चलाता है।

अनधिकृत तौर पर किश्ती चालन या रोइंग को 1900 और 1904 के ओलम्पिक खेलों में सम्मिलित किया गया था। 1908 के खेलों में इसे अधिकृत रूप में शामिल कर लिया गया। उन खेलों में इसकी प्रतियोगिताएं हेनले के स्थान पर आयोजित की गईं।

चूंकि आरम्भ से ही नौकायन वर्ग में व्यक्तिगत मुकाबलों के स्थान पर टीम मुकाबलों को अधिक प्रश्रय दिया गया इसलिए नौकायन में व्यक्तिगत तौर पर कोई विशेष कीर्तिमान कायम नहीं हो पाए। टीम स्पर्धाओं में अमरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, स्विट्जरलैंड आदि देशों की उल्लेखनीय सफलताओं के साथ साथ व्यक्तिगत स्पर्धाओं में आस्ट्रेलिया के पियर्स ने 1928 व 1932 में, सोवियत संघ के इवानोव ने 1956 1960 व 1964 में स्वर्ण पदक जीतकर नौकायन को नई गरिमा प्रदान करने का प्रयत्न किया।

आक्सफोर्ड बनाम कैम्ब्रिज का वार्षिक मुकाबला विश्व भर में मशहूर है। इसकी तुलना यहां होने वाले फिल्मी सितारों के मैच से की जा सकती है।

महिलाओं के लिए रोइंग की विश्व चैम्पियनशिप 1972 के खेलों के बाद शुरू की गई है। इस बार से ओलम्पिक में भी इसे सम्मिलित कर लिया गया है।

फिलहाल न्यूजीलैंड की आठ सदस्यीय टीम रोइंग में ओलम्पिक चैम्पियन है।

कनोइंग — कैनोइंग यानी डोंगी चालन कसरत और आनंद का मिला जुला खेल है। ओलम्पिक में डोंगी चालन की शुरुआत 1908 में लन्दन खेलों

से हुई। इसम ब्रिटेन ने चार स्वण पदक जीत थे। 1912 के स्टाकहोम खलो म नार्वे ने 12 और 8 मीटर की डोंगियो से रेस जीतने का श्रेय प्राप्त किया तो स्वीडन और फ्रास ने क्रमश 10 मीटर और 6 मीटर की डागी-दौडो म नाम कमाया।

नार्वे ने सेलिंग मे 1920 के एण्टवप खेलो म दोबारा 7 स्वण पदक जीत कर एक बार फिर यह दिखा दिया कि इस खेल म उससे आगे निकलना टेढ़ी खीर है। वास्तव म देखा जाए तो ओलम्पिक मे कैनोइग बडे पैमान पर 1924 के पेरिस खेलो म पहली बार आयोजित की गई।

ओलम्पिक कैनाइग चम्पियन के रूप म ब्रिटेन के मक्डोनाल्ड स्मिथ और पैटीसन ने मैक्सिको ओलम्पिक मे सभी रेसें जीतकर एक नया विश्व रिकार्ड स्थापित किया।

प

पटेल, जसू—26 नवम्बर, 1920 को जन्मा गुजरात का यह आफ-ब्रेक गेंदबाज 1959 मे कानपुर टेस्ट म आस्ट्रेलिया के 14 विकेट 124 रन पर लेकर अमर हो गया। इसी प्रदशन के आधार पर जसू पटेल को पद्मश्री स अलकृत किया गया। 1955 म पाकिस्तान यात्रा पर गए। रणजी ट्राफी म 140 विकेट लिए। दो अवसरो पर रणजी ट्राफी म एक पारी मे 8 विकेट लिए।

7 टेस्ट, 25 रन, 29 विकेट, 2 कच।

पटेल ब्रजेश—24 नवम्बर, 1952 को जन्मे एक्स्ट्राकवर पर दीवार की तरह मजबूत सधे रहने वाले और ज़ोरदार स्ट्रोक्स के धनी ब्रजेश पटेल मध्यक्रम के बल्लेबाज हैं। सम्प्रति बगलौर के मफतलाल ग्रुप मिल्स म कायरत है।

टेस्ट 21 पारी 38, अपराजित 5, सर्वाधिक 115, वेस्टइडीज के विरुद्ध (उन्हीके मैदान पर), शतक 1 अद्धशतक 5, कुल रन 972 कच 17।

पदम बहादुर मल—हवलदार पदम बहादुर मल सेना के घूमेबाज हैं तथा अपनी श्रेणी म 1960 तथा 1961 मे राष्ट्रीय चम्पियन रहे हैं। 1962 म वह भारतीय टीम के साथ एशियाई खेलो म भाग लने के लिए जकार्ता गए और लाइट वेट श्रेणी म इन्होने स्वण पदक प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त इन्हे एशिया का सर्वोत्तम घूसेबाज़ होने के नाते एक और स्वण पदक दिया गया। एशियाई खेलो के इतिहास म इस प्रकार का स्वण पदक पहली बार पदम बहादूर मल को प्रदान किया गया। खल जगत मे की गई

उनकी सेवाओं पर उन्हें 1962 में भारत सरकार द्वारा अर्जुन पुरस्कार से अलंकृत किया गया।

पद्मश्री और पद्मभूषण से अलंकृत खिलाड़ी

1956

ध्यानचन्द (हाकी)	पद्मभूषण
सी० के० नायडू (क्रिकेट)	पद्मभूषण

1957

बलबीर सिंह (हाकी)	पद्मश्री

1958

रावराजा हनूत सिंह (पोलो)	पद्मभूषण
महाराजकुमार विजयानन्द आफ विजयानगरम् (क्रिकेट)	पद्मभूषण
कवर दिग्विजय सिंह 'बाबू' (हाकी)	पद्मश्री

1959

तेनजिंग नार्के (पर्वतारोहण)	पद्मभूषण
मिहिर सेन (तराकी)	पद्मश्री
मिल्खा सिंह (एथलेटिक)	पद्मश्री

1960

कुमारी आरती साहा (तराकी)	पद्मश्री
जमू पटेल (क्रिकेट)	पद्मश्री
विजय हजारे (क्रिकेट)	पद्मश्री

1961

ज्ञान सिंह (प्रिंसीपल, हिमालय पर्वतारोहण संस्थान)	पद्मश्री

1962

जी० वी० पाल (फुटबाल)	पद्मश्री
एन० जे० कट्रेक्टर (क्रिकेट)	पदमश्री
पी० आर० उमरीगर (क्रिकेट)	पद्मश्री
रामनाथन कृष्णन (लान टेनिस)	पद्मश्री

1963

मुश्ताक अली (क्रिकेट)	पद्मश्री
सोनम ग्यात्सो (पर्वतारोहण)	पद्मश्री

1964

चरण सिंह (हाकी)	पदमश्री
एम० जे० गोपालन (क्रिकेट)	पदमश्री
नवाग गोम्बू (पर्वतारोहण)	पद्मश्री

1965

प्रो० देवधर (क्रिकेट)	पद्मश्री
विल्सन जो स (बिलियर्ड)	पदमश्री

1966

रामनाथन कृष्णन (लान टेनिस)	पदमभूषण
मिहिर सेन (तराकी)	पदमभूषण
पृथीपाल सिंह (हाकी)	पद्मश्री
शंकर लक्ष्मण (हाकी)	पद्मश्री
नवाब पटौदी (क्रिकेट)	पदमश्री

1967

चन्दू बोर्डे	पदमश्री

1969

एरापल्ली अनन्त	पदमश्री
राव श्रीनिवास	पदमश्री
बिशनसिंह बेदी	पदमश्री

1970

सैयद मादनुल हक	पदमश्री

1971

मास्टर चन्दगीराम (भारतीय ढंग की कुश्ती)	पद्मश्री
कुमारी कमलजीत संधु (एथ लेटिक)	पदमश्री

गुडप्पा रंगनाथ विश्वनाथ (क्रिकेट)	पद्मश्री
लेस्ली क्लाउडियस (हाकी)	पद्मश्री
शैलेन्द्रनाथ मन्ना (फुटबाल)	पदमश्री
गौस मोहम्मद (लान टेनिस)	पद्मश्री

1972

अजीत वाडेकर (क्रिकेट)	पदमश्री
चन्द्रशेखर (क्रिकेट)	पदमश्री
जगदीश लाल (क्रिकेट)	पदमश्री
पी० सी० चौधरी (क्रिकेट)	पद्मश्री

1973

वीनू मांकड (क्रिकेट)	पद्मभूषण
फारुख इंजीनियर (क्रिकेट)	पदमश्री

1974

राजकुमार खन्ना (लान टेनिस)	पद्मभूषण
पकज राय (क्रिकेट)	पद्मश्री

पादुकोने, प्रकाश—1971 से प्रकाश में आने वाले प्रकाश पादुकोने का अब तक प्रकाशित होता रहना जारी है। 1971 में उन्होंने कनिष्ठ और वरिष्ठ दोनों वर्गों (राष्ट्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता, मद्रास) में अपनी विजय पताका फहराकर भारतीय बैडमिंटन में अपने नाम का एक इतिहास रचा। तब से अब तक वह राष्ट्रीय चम्पियन बनते ही आ रहे हैं। वह आठ बार राष्ट्रीय चम्पियन होने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं।

जब भी कहीं बैडमिंटन की किसी प्रतियोगिता का आयोजन होता है तो साधारण से साधारण खेल प्रेमी भी झट से यह भविष्यवाणी कर देता है कि जीत तो राष्ट्रीय चम्पियन पादुकोने प्रकाश की ही होगी। सच तो यह है कि भारतीय बैडमिंटन में आज जो कुछ भी है, वह सब प्रकाश के पास है। मतलब कि प्रकाश भारतीय बैडमिंटन का इतिहास पुरुष बन चुका है। भले ही वह बैडमिंटन के अन्तरराष्ट्रीय कोर्ट पर सफलता की सीढ़ी नहीं चढ सका है, लेकिन भारतीय कोर्ट पर उसे चुनौती देने वाला कोई दूसरा खिलाड़ी सामने नहीं है।

पाली उमरीगर—भारतीय क्रिकेट के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे

जाने वाले नामो मे सी० के० नायडू, लाला अमरनाथ, विजय हजारे, वीनू माकड, विजय मर्चेंट के बाद उमरीगर का नाम आता है।

पाली उमरीगर (पालनजी रतनजी उमरीगर) का जन्म 28 मार्च, 1926 को शोलापुर (महाराष्ट्र) म हुआ। वह अपने समय के एक बहुत ही निर्भीक बल्लेबाज और कुशल गेंददाज होने के साथ साथ देश के सर्वश्रेष्ठ क्षेत्र रक्षक भी माने जाते थे।

उमरीगर उस समय प्रकाश म आए जब सन् 1948 म विश्वविद्यालय की टीम मे खेलते हुए वेस्टइडीज की टीम के विरुद्ध उन्होने शतक बना डाला। तभी से उनका सितारा बुलन्दी पर रहा। बम्बई मे भारत वेस्टइडीज टेस्ट श्रृखला मे उन्हे भारतीय टीम म शामिल किया गया। उमरीगर भारत की ओर से कुल 76 टेस्ट मैचो मे हिस्सा ले चुके हैं। वह भारतीय टीम का आठ मैचो मे नेतृत्व भी कर चुके हैं न्यूजीलैंड के विरुद्ध—1955 (चार मैचो म), आस्ट्रेलिया के विरुद्ध—1956 (तीन मैचो मे) और वेस्टइडीज के विरुद्ध—1957 (एक मैच मे)। रणजी ट्राफी मैचो मे उन्होने कई बार बम्बई की टीम का नेतृत्व किया।

उमरीगर ने अपने समय मे (1948 से 1962 तक) केवल सात टेस्ट मचो को छोडकर (आफिशियल और अन-आफिशियल) बाकी सभी मचो मे हिस्सा लिया। वह पहले भारतीय हैं जिन्होने सबसे ज्यादा मचो म भारत का प्रतिनिधित्व किया।

उमरीगर की बल्लेबाजी के सामने वेस्टइडीज के स्मिथ जसे फील्डर को भी पीछे हटना पडता था। 30-40 रन बनाने तक ही उन्हें डर रहता था, उसके बाद तो वह गेंद और गेंददाज दोनो की ओर से निर्मम और निर्भय होकर खेलते थे।

1962 मे पाली उमरीगर ने टेस्ट मैचो से अवकाश ग्रहण करने की घोषणा की। विजय मर्चेंट की भांति उमरीगर ने भी उस समय अवकाश ग्रहण किया जिस समय वह खेल की चरम सीमा पर पहुचे हुए थे।

उनकी क्रिकेट की सेवाओ पर भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री की उपाधि से अलकृत किया है।

पावो नूर्मी—ओलम्पिक खेलो के इतिहास म लम्बे फासले की दौडो म फिनलड के पावो नूर्मी का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका पूरा नाम पावो जोहानेस नूर्मी है, लेकिन खेलकूद ससार म इन्हे 'फ्लाइग फिन' के नाम से जाना जाता है। उन्होने अपने जमाने मे 24 विश्व रिकार्ड स्थापित किए और ओलम्पिक खेलो म 9 स्वर्ण पदक प्राप्त किए। सन् 1924 म पावो नूर्मी ने (तब उनकी उम्र केवल 26 वर्ष की ही थी) 8 अलग अलग फासले की जिन

दौडो मे विश्व कीर्तिमान स्थापित किए थे वे इस प्रकार हैं 1500 मीटर, एक मील, 2,000 मीटर, 3,000 मीटर, 3 मील, 5,000 मीटर, 6 मील और 10 000 मीटर।

पावो नूर्मी की हठधर्मी और तुनकमिजाजी के कई किस्से-कहानिया प्रचलित हैं। कहा जाता है कि पावो नूर्मी को किसी भी दौड प्रतियोगिता म हारना स्वीकार नही था। हार को वह एक तरह से कलक मानते थे और अक्सर देखा गया कि जब भी उनका कोई प्रतिद्वद्वी उनसे आगे निकल जाता तो नूर्मी बीच में ही दौडना बन्द कर देते और सीधे अपने कमरे (ड्रेसिंग रूम) म चले जाते। एक बार की बात है, एक दौड प्रतियोगिता मे नूर्मी हिस्सा ले रहे थे। शुरू शुरू के दौरो म तो नूर्मी अपने सभी प्रतिद्वद्वियो से आगे रहे, मगर आखिरी दौर मे एक दूसरा दौडाक उनसे थोडा आगे निकल गया। बस, फिर क्या था, नूर्मी उसी समय सीधे अपने ड्रेसिंग रूम मे पहुच गए और बिना किसीसे कुछ कहे गाडी पकडकर वापिस चले गए। न तो द्वितीय स्थान का पुरस्कार प्राप्त करने के लिए वह मदान म उपस्थित हुए और न ही उन्होंने अपने किसी परिचित या प्रतिद्वद्वी / को कोई सूचना ही दी। हारते समय उन्हे अपने आप पर बहुत गुस्सा आता था। वह इस बात को भी सहन नही कर सकते थे कि कोई उन्हें हारते हुए देखे।

भागदौड की दुनिया से सन्यास लेने के बाद नूर्मी प्रशिक्षक बन गए और एक प्रशिक्षण शिविर के निदेशक नियुक्त किए गए। कहते हैं कि एक बार प्रशिक्षण शिविर को देखने के लिए एक उच्चाधिकारी वहां आया। वह अधिकारी केवल प्रशिक्षण शिविर का निरीक्षण मात्र करना चाहता था। मगर पावो नूर्मी को सहसा न जाने क्या हो गया। नूर्मी ने छूटते ही उस अधिकारी से पूछा—"इस प्रशिक्षण शिविर का कौन इचाज है ? आप या मैं ?" वह अधिकारी बेचारा चुपचाप खडा रहा। इसके बाद नूर्मी ने गुस्से म आकर कहा—"अच्छा, यह धधा आपका ही है तो फिर सभालिए इसे, मैं चला।" इतना कहकर नूर्मी उस प्रशिक्षण शिविर से बाहर चले गए।

पीटर स्नेल—न्यूजीलड के प्रसिद्ध धावक पीटर स्नेल के नामोल्लेख के बिना एथलेटिक का इतिहास अधूरा रह जाता है। उन्होंने 26 वष की उम्र म ही एथलेटिक के क्षेत्र म अपना डका बजाकर सन्यास लेन की घोषणा कर दी थी। उन्होने कहा था—मेरी पत्नी सैली चाहती थी कि मैं अब घर बसाने और गृहस्थी जमाने की ओर भी कुछ ध्यान दू। तोक्यो ओलम्पिक खेलों मे (1964 म) मेरी पत्नी ने इसी शत पर तयारी करने की इजाजत दी थी कि मैं तोक्यो ओलम्पिक मे भाग लेने के बाद 'दौड धूप' की दुनिया से सन्यास ले लू। तोक्यो ओलम्पिक म पीटर स्नेल ने 800 और 1500 मीटर की दौड़

म स्वण पदक प्राप्त किया था। वस स्नेल ने लम्बी दौडा म चार विश्व कीर्तिमान भी स्थापित किए—800 मीटर (1 मिनट 44 3 सकिंड), 880 गज (1 मिनट 45 1 सकिंड), 1,000 मीटर (2 मिनट 16 6 सकिंड), एक मील (3 मिनट 54 1 सकिंड)।

अपने जमाने म मध्य फासले की दौडा म पीटर स्नेल दुनिया के सबस बडे दौडाक माने गए। 1960 के रोम ओलम्पिक म उन्होने 800 मीटर की दौड म एक नया शानदार रिकाड स्थापित किया था। 1960 म ही आध मील फासले की दौड म पूरे वष तक दुनिया का कोई दौडाक उनस आगे नही निकल सका।

पीटर स्नेल की सफलता का एक बहुत बडा कारण उनका प्रशिक्षक आथर लिडियड था। आथर लिडियड प्रशिक्षण क दौरान इस बात पर बल देते कि दौडाक एक-सी गति से दौड का पूरा करे। पीटर स्नेल अपन देश की निजन सडको पर या ग्रामीण इलाका म पहाडियो की चढाइयो और उतराइयो पर बिना दम लिए 20 से 30 मील तक की दौड लगाते।

एक बार स्नल म 1,500 मीटर की दौड म भी नया विश्व कीर्तिमान स्थापित करने की धुन सवार हुई थी। उस समय 1,500 मीटर की दौड का कीर्तिमान आस्ट्रेलिया के हरब एलियट का था। वस स्नेल 1,500 मीटर की दूरी को 3 मि० 37 6 सकिंड म तय कर चुके थे, लेकिन यह समय एलियट के कीर्तिमान से 2 सकिंड ज्यादा था।

भाग-दौड की दुनिया से सन्यास लेते समय पीटर स्नेल ने घोषणा की थी कि खेल के मैदान से विदा होने के बाद भी मेरा खेल के मैदान स नाता बना रहेगा—पत्रकार और रेडियो भाष्यकार के रूप म।

पेले—यो उनका पूरा नाम एडसन अरातोस नासिमटो है लेकिन दुनिया उन्ह पेल के नाम से ही जानती है। फुटबाल के जादूगर का खेल देखने के लिए लोगो का लालायित हो उठना स्वाभाविक है। उनकी लोकप्रियता का अनुमान तो इसीसे लगाया जा सकता है कि एक बार उनका खेल देखने के लिए बिआफ्रा युद्ध कुछ घटा के लिए रोक दिया गया था। 1960 म उन्ह ब्राजील की राष्ट्रीय सम्पत्ति घोषित किया गया। 39 वर्षीय पेले (कद 5 फुट 8 इच) फुटबाल खेलते-खेलते करोडपति हो गए हैं। यो उन्होने 2 अक्तूबर, 1974 को फुटबाल से सन्यास ले लिया था, लकिन उसके बाद उन्हें अमेरिका क एक क्लब 'कास्मस क्लब' से एक साल खेलने के लिए 50 लाख डालर का प्रलोभन मिला जिसे उन्होने स्वीकार कर लिया और अमेरिका म फुटबाल के खेल को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से वहां चले गए। उनकी देखादेखी और भी कई चोटी के खिलाडी वहा पहुच गए। पेले ने चार विश्व

कप प्रतियोगिताओ मे अपन देश का प्रतिनिधित्व किया। 1958 म स्वीडन मे हुई विश्व कप प्रतियोगिता म जब उन्ह ब्राजील की टीम म पहली बार शामिल किया गया तब उनकी उम्र केवल 17 साल की थी।

पेले का जन्म 23 अक्तूबर, 1940 को सानतोस शहर के निकट एक छोटे-से गाव म हुआ था। पले ने, जो कि 10 न० की जर्सी पहनकर खेलत है, ब्राजील को तीन बार 1958, 62 और 1970 म विश्व कप जिताने म महत्त्वपूण भूमिका निभाई। पेले अब तक 1277 गोल कर चुके है।

पेल के पिता डोनडिनहा स्वय फुटबाल के खिलाडी थे। उनकी देखादेखी पले न भी खेलना शुरू कर दिया। बचपन म वह काफी गरीब थ और मूगफली बेच बेचकर वह खेलने के बूट खरीदा करते थ। जब वह केवल 10 साल क ही थे तो उन्होने नगे पाव गली के दूसरे लडको के साथ फुटबाल खेलना शुरू कर दिया। वह आज भी अक्सर कहत है कि शुरू शुरू म जब हमारे पास फुटबाल नही होता था तो हम कुछ ऊन इकट्ठी करके उसके ऊपर कुछ कपडे लपटकर एक फुटबाल बना लिया करते थे। 11 साल की उम्र म उन्होने पहली बार फुटबाल के बूट खरीद और वाल्देमर द ब्रिटो की सहायता स बाउरू क्लब म फुटबाल सीखन की नीयत स पहुचे। पेले के पिता भी फुटबाल क पेशेवर खिलाडी थे और मिनास गेराइस की अटलेटिको टीम की ओर से खेला करते थे। पले 4 साल तक बाउरू क्लब म छोटे खिलाडियो के साथ अभ्यास करते रहे। 15 साल की उम्र म वह सानतोस क्लब म चले गए और इस प्रकार उन्ह स्कूल की पढाई लिखाई स मुक्ति मिल गई।

वह कहत हैं कि जब मैं केवल 16 वर्ष का ही था तो मुझे ब्राजील की राष्ट्रीय टीम म शामिल कर लिया गया। उस समय मुझे इस बात का एहसास हुआ कि मैं सचमुच अच्छा खिलाडी हू, जो बिना किसी सिफारिश या राजनीतिक दबाव के राष्ट्रीय टीम म चुन लिया गया हू।

1966 म पेले का विवाह हुआ और उनकी पत्नी का नाम राजमेरी डोस रीस कोलबी है। उनका कहना है कि एक बार आप प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि प्राप्त कर लें फिर आपकी काली गोरी चमडी को कोई नही देखता। मुझे ही देखिए, दुनिया भर के लोग (काले, गोरे) मेरी तारीफ करत नही थकत।

पोलो—पोलो विशुद्ध रूप से एक भारतीय खेल है। यदि परम्परा और प्राचीनता की दृष्टि से देखा जाए तो इसका इतिहास हजारो वर्ष पुराना है। इस खेल का पुराना नाम 'चोगान' है और नया नाम 'पोलो'। पोलो शब्द की उत्पत्ति शायद तिब्बत के 'पुलू' शब्द से हुई है। तिब्बत म पुलू

नाम का एक वक्ष पाया जाता है जिसकी जड से पोलो खेलने की गेंद बनाई जाती थी। चौगान उस हाकीनुमा डडे को कहते हैं जिसको हाथ मे पकडकर और घोडे पर बैठकर गेंद को मारा जाता है।

इस खेल की उत्पत्ति कब और कहा हुई, इस बारे मे मतक्य होना असम्भव ही है। कोई कहता है कि दो हजार वप पहले यह खेल ईरान मे खेला जाता था और वहा से भारत आया, तो कोई इसका विरोध करते हुए यह कहता है कि यह विशुद्ध रूप से भारतीय खेल है और भारत से ही समस्त यूरोप म फैला और पनपा है। इतना तो सभी स्वीकार करते हैं कि मणिपुर, कश्मीर और ईरान के प्राचीन साहित्य म इस खेल का उल्लेख किया गया है। भारत म पहली बार पोलो (आधुनिक खेल के रूप मे) प्रतियोगिता का आयोजन 1853-54 म सिलचर म किया गया। भारत म पहला मैच मणिपुरियो के साथ खेला गया था। ससार के सवप्रथम पोलो क्लब 'सिलचर पोलो क्लब' की स्थापना दिसम्बर 1861 म की गई थी।

मुगल बादशाहो के जमाने मे भी पोलो के खेल मे काफी प्रगति हुई। शहशाह बाबर को पोलो का बेहद शौक था। वह कई बार पोलो खेलते समय घोडे से गिरकर चोट भी खा चुके थे। उस जमाने मे दिल्ली और आगरा म चौगान की प्रतियोगिताए होती थी। अकबर के जमाने म भी इस खेल को काफी प्रोत्साहन दिया गया था और इस खेल के लिए कई नये मैदान तैयार किए गए। कहा जाता है कि अकबर अन्त पुर की स्त्रियो के साथ पोलो खेलते थे। उस समय फटे पुराने कपडो के चीथडो की गेंद बनाई जाती थी और एक लम्बी और मुडी हुई लकडी की सहायता से यह खेल खेला जाता था। नूरजहा को इस खेल से विशेप दिलचस्पी थी। राजपूत स्त्रिया भी इस खेल म हिस्सा लेती थी। ईरान की औरता म सुल्तान खुसरो की पत्नी और ईरान की शहजादी का भी यह मनपसन्द खेल था। दिल्ली की कुतुब मीनार के निर्माता कुतुबुद्दीन ऐबक की मौत का कारण चौगान का खेल था। उनकी मत्यु चौगान खेलते समय घोडे से गिरकर हुई थी। ड्यूक आफ एडिनबरा को आज भी इस खेल से इतनी दिलचस्पी है कि उन्होने 'ग्रेट पार्क' मे पोलो का मैदान बना रखा है और जब भी उन्हे अपनी जोड के किसी खिलाडी से टक्कर लेने का शौक उठता है तो वह भारत आ जाते हैं। ड्यूक आफ एडिनबरा भारत आए और पोलो न खेलें यह बात असभव सी है।

पोलो और भारत

भारत को आज भी इस खेल मे विश्व विजेता होने का गौरव प्राप्त है। भारत की विश्व विजयी पोलो टीम के कप्तान महाराज जयपुर का कथन है—

"मैंने विश्व के हर हिस्से मे पोलो के मच खेले हैं, अत मुझे यह कहने मे ज़रा भी सकोच नही कि हमारे देश के खिलाडी किसी भी देश की टीम का बडी आसानी से मुकाबला कर सकते हैं।" उनका कहना है कि भारत म खिलाडियो की कमी नही है। कमी है तो पोलो के मैदानो और अच्छी नस्ल के घोडो की।

भारत के पोलो प्रेमियो की चिता दिन ब दिन बढती जा रही है। उनका कहना है कि पोलो के मैदानो मे नये खिलाडियो के दशन कम होते है। परतु महाराज जयपुर का कहना है—"भारत मे पोलो कभी समाप्त नही हो सकता। हा, इसकी लोकप्रियता कुछ कम ज़रूर हो सकती है और उसका कारण यह है कि पोलो रईसो यानी राजाओ और महाराजाओ का खेल है। साधारण व्यक्ति इस खेल से दिलचस्पी रखने पर भी इसमे भाग नही ले सकता। पहले तो घोडो पर हज़ारो रुपया खच कीजिए, फिर प्रशिक्षण और अ यास मे अपनी सारी पूजी पानी की तरह बहाइए। और यदि प्रशिक्षण और अभ्यास के दौरान म ही कोई घोडा लगडा या जख्मी हो जाए, तो बस समझिए कि किए धरे पर पानी फिर गया।

यहा यह बता देना भी उचित होगा कि पोलो ही ससार का एकमात्र ऐसा खेल है जो जानवर और इसान दोनो के सहयोग से खेला जाता है। भारत को लगातार नौ वर्षों तक यानी 1931 से 1939 तक इस खेल मे विश्व चैम्पियन होने का गौरव प्राप्त हुआ।

प्रदीप कुमार बनर्जी—फुटबाल के क्षेत्र मे प्रदीप कुमार बैनर्जी के नाम से इतने लोग परिचित नही जितने कि 'पी० के०' के नाम से परिचित हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे क्रिकेट मे कोट्टारी कन्कैया नायडू को कोई नही जानता और 'सी० के०' को दुनिया जानती है।

पी० के० का जन्म 23 जून, 1936 को हुआ। बचपन से ही उन्हे खेलकूद म काफी दिलचस्पी थी। क्रिकेट, हाकी, फुटबाल, वालीबाल, बर्डमिटन और एथलेटिक म हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। बचपन म ही उनके मन मे मच जीतने की इच्छा कितनी प्रबल होती थी, इसका अनुमान इस घटना से लगाया जा सकता है—जमशेदपुर मे एक बर्डमिटन प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा था। आठ वर्षीय पी० के० अपने पिता की साझेदारी म खेलते हुए सेमी-फाइनल तक पहुच गए। सेमी-फाइनल मे पिता-पुत्र की जोडी हार गई। इसपर पी० के० को इतना दुख हुआ कि उनकी आखो म आसू आ गए। वह रोता हुआ सीधा अपनी मा के पास पहुचा और अपनी मा से अपने पिता की शिकायत करत हुए कहने लगा कि चूकि पिताजी अच्छी तरह से नही खेले इसीलिए मैं हार गया।

1952 मे जब पी० के० की उम्र केवल 16 वर्ष की ही थी, तो उन्हें

फुटबाल की राष्ट्रीय प्रतियोगिता मे हिस्सा लेने का गौरव प्राप्त हुआ। इसका श्रेय वह आज भी अपने पिताजी को ही देते ह जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन और आशीर्वाद से वह 1952 मे बिहार राज्य की ओर से सन्तोष ट्राफी म हिस्सा ले सके।

पी० के० ने अपने जीवन काल म 84 मैचो मे भारत का प्रतिनिधित्व किया और 60 गोल किए। वह लगातार 12 वर्षों तक (1955 1966) भारतीय फुटबाल टीम के सदस्य रहे। 1956 के मेलबोन ओलम्पिक खेलो मे उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया और 1960 के रोम ओलम्पिक खेलो म भारतीय फुटबाल टीम का नेतत्व सभाला। वह ऐसे पहले फुटबाल खिलाडी हैं जिन्ह 'अजुन पुरस्कार' से अलकृत किया गया।

1966 म बैंकाक म हुए एशियाई खेलो मे भाग लेने के बाद उन्होने फुटबाल के खेल से स यास लेने की घोषणा कर दी। 1955 से लकर 1966 के बीच उन्होंने एशिया के सभी देशो म फुटबाल खेली। उन्होने तीन बार एशियाई खलो म और दो बार ओलम्पिक खेला म भारत का प्रतिनिधित्व किया।

खिलाडी जीवन से रिटायर होने के बाद वह प्रशिक्षक बन गए। काफी समय तक वह ईस्ट बगाल की टीम के प्रशिक्षक रहे और इस समय मोहन बागान की टीम के प्रशिक्षक हैं।

प्रवीन कुमार—एथलेटिक के क्षेत्र मे मिल्खा सिंह के बाद यदि किसी भारतीय एथलीट को अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई है तो वह है प्रवीन कुमार। प्रवीण कुमार का जन्म पजाब म 6 दिसम्बर, 1947 को सरहाली (जिला अमतसर) म हुआ। शुरू शुरू म परिवार के अन्य सदस्यो की देखा देखी उनम भी कुश्ती और भारोत्तोलन का शौक पदा हुआ और इस प्रकार बचपन म उनका कद-बुत इतना बढ गया कि किशोरावस्था म ही वह भरे-पूरे आदमी दीखने लगे। इनका कद 6 फुट 7 इच और वजन 250 पौंड (115 किलो) है।

1966 म बगलौर म हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिता म उन्होंने राष्ट्रीय रिकाड स्थापित किया। उसके बाद पूना और पटियाला म भी उनका प्रदशन बहुत शानदार और जोरदार रहा। 1966 म बकाक म हुए एशियाई खेलो म उन्हें चक्का फेंकने में स्वण पदक और तारगोला में कास्य पदक प्राप्त हुआ। उसके बाद किंग्स्टन खेला म उन्होने तारगोला म भी रजत पदक प्राप्त किया।

शुरू-शुरू म प्रवीन चक्का, गोला और तारगोला सभी मुकाबलो म हिस्सा लते थे, लकिन बाद मे पीठ में दद होने के कारण उन्होंने चक्का फेंकने पर ही सारा ध्यान केंद्रित कर दिया। चक्का फेंकने म उन्होंने 1973 में 56 74 मीटर का जो राष्ट्रीय रिकार्ड स्थापित किया था वह अब भी ज्यो का त्यों

बरकरार है। तारगोला फेंकने में उन्होंने 1969 में 65 76 मीटर का राष्ट्रीय रिकार्ड स्थापित किया था।

प्रसन्ना—जन्म 22 मई, 1940। भारतीय स्पिन गोलदाजी की त्रिमूर्ति बेदी, प्रसन्ना, और चन्द्रशेखर दुनिया में विख्यात है। अगुलियो मे गिने जाने वाले ख्याति प्राप्त घुमावदार गेंदबाजो म से प्रसन्ना ही एकमात्र ऐसे हैं जो कीमत देकर विकेट लेने में विश्वास रखते हैं। प्रसन्ना की फ्लाइटेड गेंदें अच्छे से अच्छे बल्लेबाज को लालच मे ले डूबती हैं। रेडियो एण्ड इलेक्ट्रिकल्स मैन्युफेक्चरिंग कम्पनी बगलौर में वह कायरत हैं।

सर्वश्रेष्ठ प्रदशन न्यूजीलैंड के विरुद्ध आकलैंड में रहा। वहा उन्होंने 76 रनो पर 8 विकेट लिए।

टेस्ट 49, पारी 84, अपराजित 20, रन 735, सर्वाधिक 37, वेस्टइंडीज के विरुद्ध बगलौर में कैच 18। गेंदें 14367 मेडन 600, रन 5742, विकेट 189।

फ

फजल महमूद—जन्म 18 फरवरी, 1927। विभाजन से पूर्व भारत तथा उसके बाद पाकिस्तान के लिए खेला। पाकिस्तान का सफलतम गेंददाज। 1954 के ओवल टेस्ट मे 99 रन देकर 12 विकेट लिए। 34 टेस्टो मे 139 विकेट (पाकिस्तान की ओर से सर्वोच्च) लिए।

फिलिप्स, वी० जे०—ब्यूनस आयर्स म हुई चौथी विश्व कप प्रतियोगिता म भारतीय टीम का नेतृत्व 29 वर्षीय वी० जे० फिलिप्स ने किया था। शारीरिक दृष्टि से सुडौल तथा गेंद के साथ तेज रफ्तार से आगे बढ़ निकलने म माहिर रेलवे कर्मचारी फिलिप्स का जन्म 1 सितम्बर, 1949 को हुआ था। वह राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे रेलवे का प्रतिनिधित्व करते हैं और 1972 व 1976 के ओलम्पिक खेलो म, 1973 व 1975 के विश्व कप तथा 1974 के एशियाई खेलो व अन्तरराष्ट्रीय रैने फ्रैंक प्रतियोगिता (मद्रास) मे वह भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके है।

फुटबाल—भारत म यह खेल अंग्रेजो के साथ-साथ आया। 1878 से भारतीय खिलाडी इस खेल को खेलते आ रहे हैं। यह खेल कई देशो म कई तरीको से खेला जाता है पर ज्यादातर देश फुटबाल एसोसिएशन के नियमो का पालन करते हैं।

फुटबाल के खेल मे दो टीमे होती हैं और दानो टीमो मे ग्यारह-ग्यारह

ओलम्पिक संघ ने मान्यता दी। ओलम्पिक रिकार्ड-पुस्तिकाओं में 1908 ही ओलम्पिक फुटबाल का पहला साल था। इंग्लैंड का यह भी सौभाग्य रहा कि फुटबाल का पहला स्वर्ण पदक भी उसीने जीता। पहले मैच में उसने स्वीडन को 12 1 से हराया और फाइनल में उसने डेनमार्क को 2-0 से हराया। ओलम्पिक फुटबाल में इंग्लैंड ही पहला देश है, जिसने लगातार दो बार स्वर्ण पदक जीता था। 1912 के स्टाकहोम ओलम्पिक खेलों में इंग्लैंड ने फाइनल में डेनमार्क को 4 2 से पराजित किया था।

1916 के खेल प्रथम विश्वयुद्ध के कारण नहीं हुए। पर 1924 और 1928 में उरुग्वे के दल ने हंगामा बरपा कर दिया। यूरोपीय देश फुटबाल पर अपना एकाधिकार-सा माने बैठे थे। पर दक्षिण अमेरिकी देश ने 1924 के पेरिस ओलम्पिक के फुटबाल फाइनल में स्विट्जरलैंड को 3-0 से हराकर सन्नाटा खींच दिया। 1928 के एम्स्टर्डम खेलों के फाइनल में दोनों दल गैर-यूरोपीय थे—उरुग्वे और अर्जेंटीना। उरुग्वे ने मुकाबला 2-1 से जीता और उरुग्वे, इंग्लैंड की तरह लगातार दो बार स्वर्ण पदक जीतने वाला दूसरा दल बना। 1962 के ओलम्पिक में फुटबाल नहीं खेली गई थी।

1936 के बर्लिन ओलम्पिक खेलों में इटली का फुटबाल दल विजयी रहा। इटली ओलम्पिक खेलों से पहले विश्व चम्पियनशिप फुटबाल भी जीत चुका था। फाइनल में इटली ने आस्ट्रेलिया को 2 1 से हराया। 1948 के लन्दन ओलम्पिक में स्वीडन विजयी रहा और यूगोस्लाविया द्वितीय स्थान पर।

1952 में हेलसिंकी खेलों में हंगरी ने यूगोस्लाविया को 2 0 से हराकर स्वर्ण पदक जीता। 1948, '52, '56 की ओलम्पिक फुटबाल में यूगोस्लाविया ने अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया। लगातार तीन ओलम्पिकों में फुटबाल का रजत पदक जीतने वाला यह एकमात्र देश है।

1960 के ओलम्पिक में किसी भी ऐसे खिलाडी को नहीं खेलने दिया गया, जो 1958 की विश्व कप फुटबाल प्रतियोगिता में खेला था। इसका सीधा असर रूस और बल्गारिया पर पडा। ये देश अपने प्रथम श्रेणी के दल रोम ओलम्पिक में नहीं भेज सके। ऐसे ही कुछ विवादों के कारण माण्ट्रियल ओलम्पिक से उरुग्वे के फुटबाल दल को नाम वापस लेना पडा है।

ओलम्पिक फुटबाल स्पर्द्धा के विजेता

1900 के पेरिस और 1904 के सेंट लुईस खेलों में फुटबाल स्पर्द्धा का आयोजन हुआ, किन्तु इन्हें अनधिकृत माना जाता है। 1900 में ब्रिटेन ने फ्रांस को 4-0 से हराकर और 1904 में कैनाडा ने अमेरिका को 4-0 से हराकर यह स्पर्द्धा जीती थी। 1932 को छोडकर 1908 के लंदन खेलों से यह स्पर्द्धा

बराबर हो रही है। विजेताओ का विवरण निम्न प्रकार है

वर्ष	स्थान	स्वर्ण	रजत	कास्य
1908	लदन	ब्रिटेन	डेनमार्क	हालैंड
1912	स्टाकहोम	ब्रिटेन	डेनमार्क	हालैंड
1920	एटवर्प	बेल्जियम	स्पेन	हालैड
1924	पेरिस	उरुग्वे	स्विटजरलैड	स्वीडन
1928	एम्स्टडम	उरुग्वे	अर्जेटीना	इटली
1932	लास एजेल्स	—	प्रतियोगिता नही हुई	—
1936	बर्लिन	इटली	आस्ट्रिया	नार्वे
1948	लदन	स्वीडन	यूगोस्लाविया	डेनमार्क
1952	हेलसिकी	हगरी	यूगोस्लाविया	स्वीडन
1956	मेलबोर्न	सोवियत सघ	यूगोस्लाविया	बुलगारिया
1960	रोम	यूगोस्लाविया	डेनमार्क	हगरी
1964	तोक्यो	हगरी	चैकोस्लोवाकिया	जर्मनी
1968	मैक्सिको सिटी	हगरी	बुलगारिया	जापान
1972	म्यूनिख	पोलैंड	हगरी	सोवियत सघ व पूर्व जर्मनी
1976	मान्ट्रियल	पूर्व जर्मनी	पोलैड	सोवियत सघ

फ्रांसिस, रगानाथन—आज यदि आप किसी भी हाकी टीम के गोलरक्षक से बात करें और पूछें कि वह किसके जैसा गोली बनना चाहता है तो उसका एक ही उत्तर होगा "रगानाथन फ्रासिस जसा।" ठीक भी है फ्रासिस निर्विवाद रूप से इस देश के सवश्रेष्ठ गोली थे।

फ्रासिस का जन्म 15 मार्च, 1920 को बर्मा मे हुआ। उनके माता पिता अभी भी बर्मा म ही रहते हैं। परिवार के तीन भाइयो और दो बहनो मे वह तीसरे थे। नौवी कक्षा से आगे नही पढ सके, लेकिन गोलरक्षण की कला म वह बडो बडो को गुरुमत्र सिखाने की क्षमता रखते थे। 1954 से वह आठ वर्षो तक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे मद्रास का प्रतिनिधित्व करते रहे और तीन ओलम्पिक खेलो (1948—लदन 1952—हेलसिकी और 1956—मेलबोर्न) म भारत का प्रतिनिधित्व किया। इनके अतिरिक्त उन्होंने ध्यानचन्द के नतृत्व म केनिया और पूर्वी अफ्रीका (1947) तथा मलाया और सिंगापुर (1954) और पोलैंड (1955) का भी दौरा किया।

वह जिस आत्मविश्वास से गोल रूपी दुर्ग की रक्षा करते थे उससे कई बार हमे लगा कि उनम गोलरक्षण की जन्मजात प्रतिभा है। गेंद की वय

मजाल कि उनके होते गोल म घुस जाए। तेज से तज आती गेंद को वह बडी आसानी से—कभी दोना पैर जोडकर, कभी डाई मारकर तो कभी दाए या बाए हाथ से किसी न किसी तरह रोक ही लेते। वह देश के सवश्रेष्ठ गोली है इस बात का आभास भले उन्ह रहा हो, लेकिन अहकार नाममात्र को भी नही था। और तो और यदि आज आप लक्ष्मण से भी बात करें तो वह भी आपको यही कहता मिलेगा कि—'फ्रासिस तो मेरे गुरु थे।' फरवरी 1975 की बात है। फ्रासिस पिछले काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे। जब भारतीय हाकी टीम क्वालालपुर जाते समय मद्रास रुकी तो भारतीय टीम और मद्रास राज्य एकादश टीम के बीच एक प्रदशनी मच का आयोजन किया गया। फ्रासिस अस्वस्थ होने के बावजूद मदान म पहुचे। मेलबोर्न ओलम्पिक के कप्तान और भारतीय टीम के मनेजर बलबीर सिंह ने जैसे ही उन्ह देखा तो प्यार से गले लगा लिया।

अपने व्यवहार म फ्रासिस सरल, शात और मितभाषी थे लेकिन गोल मे खडे होते ही वह निर्भीक हो जाते। यही कारण है कि उनकी गिनती भारतीय हाकी के चोटी के खिलाडियो (केवल गोलरक्षको मे ही नही) मे की जाने लगी। वह गोल म खडे रहकर भी अपने साथी खिलाडियो को आदेश और निर्देश देते रहत और कहते 'आक्रमण गोल रक्षक स ही शुरू होता है।'

लदन ओलम्पिक (1948) के कप्तान किशनलाल फ्रासिस की चर्चा करते समय एक घटना का उल्लेख जरूर किया करते हैं। 1953 मे बम्बई म एक हाकी मेले का आयोजन किया गया था। मद्रास और पजाब पुलिस के बीच क्वाटर फाइनल मैच हो रहा था। खेल खत्म होने स एक मिनट पहले बख्शीश सिंह ने गेंद गोल म उछाली। पजाब पुलिस का एक खिलाडी दौडता हुआ 'डी' म घुस गया और फ्रासिस से भिड गया। फ्रासिस के नीचे के चार दात टूट गए, मुह से खून बहने लगा, लेकिन इससे क्या हुआ, मद्रास की टीम तो जीत गई थी। चार दिन बाद वह मुह पर पट्टी बाधे फिर सयुक्त सेना की टीम के विरुद्ध सेमी फाइनल मैच खेलने के लिए मैदान म पहुच गए। फाइनल मे पाक इडिपेडेंट कराची की टीम के विरुद्ध खेलते हुए उन्होने जितना शानदार खेल दिखाया उसकी याद आज भी ताजा हो जाती है।

फ्रासिस की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नही थी, थोडी सी तनख्वाह म वह चार बच्चो (तीन लडकिया और एक लडका) का पालन पोषण करते। पर लोग उन्हें आज भी गोल रक्षको का सम्राट ही मानते हैं।

1 दिसम्बर, 1975 को हृदयगति रुक जाने के कारण 56 वष की उम्र म उनका देहात हो गया। पिछले वष ही वह सुरक्षा पुलिस अधिकारी के रूप म रिटायर हुए थे।

फ्राई चार्ल्स बर्जेस सरे, ससेक्स एव हैम्पशायर—जन्म 25 अप्रैल, 1872, मत्यु 7 दिसम्बर 1956। क्रिकेट म ही नही, फुटबाल मे भी इगलड की ओर से एफ० ए० कप फाइनल खेला। लम्बी कूद का रिकाड बनाकर तीसरा 'ब्लू' प्राप्त किया। खेलो के अतिरिक्त राजनीति से अत्यधिक मोह। आस्ट्रेलिया की यात्रा नही करना चाहता था, इसी कारण केवल 26 टेस्ट मैच खेला। विश्व का पहला बल्लेबाज, जिसने लगातार 6 पारियो में शतक बनाया।

फ्र क वारेल—इस क्रिकेट जादूगर का जन्म बारबाडोस म एक साधारण परिवार में 1 अगस्त, 1924 को हुआ। वारेल का बचपन कष्ट और आर्थिक सकटो से गुजरा। बचपन में एक बार एम्पायर क्लब की दीवार लाघने के प्रयास मे वारेल के दाए हाथ मे फ्रेक्चर हो गया, लेकिन जिस व्यक्ति की नस नस म क्रिकेट समाया हो वह हाथ तुडवाने के बाद चुप कसे बठ सकता था। उसने बाए हाथ से गेद फेकने का अभ्यास शुरू कर दिया। फ्रेक्चर तो ठीक हो गया किन्तु बाद म भी उसने बाए हाथ से ही गेंद फेंकना जारी रखा—क्योकि उसमे उसने इतनी प्रवीणता अर्जित कर ली थी कि उसे छोडना असम्भव था।

वारेल की क्रिकेट प्रतिभा दूसरे विश्व युद्ध के बाद चमकी। अपने पहले ही प्रथम श्रेणी के मच म उसने अपने को सफल गेदबाज के रूप म स्थापित कर लिया। सन 1939 से 1945 के मध्य वह वस्टइडीज का एक सफल आल राउन्डर बन चुका था। एक मैच मे उसने अपराजित रहकर 308 रन ठाक दिए। जॉन गोडाड के साथ इसी मैच मे वारेल ने चौथ विकेट की भागीदारी म 502 रन बनाए—जो एक रिकाड था। बाद म इसी रिकाड को वारेल ने वालकॉट को साथ लेकर 574 रनो की भागीदारी करके तोडा। ऐसा खिलाडी, जिसने दो बार 500 रनो की भागीदारी की हो, क्रिकेट इतिहास म दीया लेकर भी ढूढ़ने पर नही मिलता आज भी नही।

सन् 1948 म जब इग्लंड टीम वेस्टइडीज दौरे पर आई तो दूसरे टस्ट म उसने 97 रन व तीसरे टेस्ट म ही अपराजित 131 रन बनाकर टीम म अपने को गौरवमयी स्थान पर पहुचा दिया।

इग्लड के लीग मैचो म वह खेलने के लिए इग्लंड के रेड क्लीफ क्लब म अनुबन्धित हुआ और लगातार 12 वर्षों तक इगलड के लीग मचो म अपना करिश्मा दिखाता रहा। सन 1951 मे उसने सात शतको की सहायता स 1694 रन बना डाले।

सन् 1951 मे उसने बारबाडोस म अपनी प्रेमिका वल्डा स विवाह रचाया। कुछ समय के बाद श्रीमती वेल्डा वारेल ने एक पुत्री लीना को जन्म दिया—अब वारेल अपने परिवार और उसके भविष्य क प्रति चिंतित हुआ।

वस्टइंडीज के ससार प्रसिद्ध तीन डब्ल्यू का नाम क्रिकेट की दुनिया म स्वण अक्षरो म लिखा जाएगा। वारेल, वीक्स वॉलकाट—इन तीनो ने मिलकर विश्व के अच्छे से अच्छे गेंदबाज क धर्रे बिखेरन म कोई कसर नही छोडी। अकेले इन तीनो खिलाडियो न मन 1951 म इग्लड के विरुद्ध बीस शतक बनाकर इग्लड के खिलाडियो को हतप्रभ कर दिया। इसी शृखला म वारेल न टेंटब्रिज टेस्ट म जो 261 रन बनाए और सन् 1952-53 मे भारत के विरुद्ध किंग्स्टन म अपराजित रहत हुए जो 237 रन बनाए—उसे उन्होने अपने जीवन की सबसे शानदार इनिग्स माना।

सन 1957 म इग्लड के विरुद्ध तो क्रिकेट के इस जादूगर की गदो ने मानो कहर ही ढा दिया—उधर उसका बल्ले न मशीन की तेजी स रन उगल। प्रारम्भ म वह उदघाटक रहा—गद और बल्ले दोनो का। इग्लड के विरुद्ध टेस्ट मैचो म उसने 191 रन बनात हुए 10 विकेट लिए और गेंदबाजी म श्रेष्ठ औसत प्रदान किया।

सन 1960 61 म जब वारेल को पहली बार आस्ट्रेलिया का दौरा करने वाली वेस्टइडीज टीम का कप्तान बनाया गया, तब न केवल उसके जीवन का वह एक सुखद, महत्त्वपूर्ण दिन था वरन हर वस्टइडीज वासी के लिए वह हर्ष का दिन था—क्योकि पहली बार वेस्टइडीज म किसी नीग्रो खिलाडी को नेतत्व का दायित्व सौंपा गया था। वारेल न सिद्ध कर दिया कि केवल गोरे लोगो म ही नेतृत्व के गुण हो यह कतई जरूरी नही है। वारेल अनुभवी कप्तान ही नही वरन एक कडा अनुशासनप्रिय कप्तान भी साबित हुआ। उसन बिखरी हुई वेस्टइडीज टीम का सगठित किया और उसके बेजान क्रिकेट म जान फूक दी। आस्ट्रेलिया क इस दौरे म एक बार वेसली हाल बेहद थक गए थे और उनके परो म बेतहाशा दद था, किन्तु वारेल का निर्देश था इसलिए वह लगातार गेंद फेंकते रहे। मैच के उपरा त हाल न ड्रेसिंग रूम मे आकर जब अपने जूते उतारे तो उनका मोजा खून से लथपथ था—इस स्थिति मे भी पहुचकर अपने कप्तान का निर्देश मानने का क्रिकेट इतिहास मे कोई दूसरा उदाहरण नही मिलता।

वारेल न इग्लड के विरुद्ध अपना अतिम टेस्ट खेला और सन्यास ल लिया। प्रथम श्रेणी के मैचो स भी मन 1963 म सन्यास ले लेने के बाद उसन अपना सारा समय वस्टइडीज क नवयुवको को प्रशिक्षण देने म लगा दिया।

फ्लायड पटसन—भूतपूर्व विश्व हैवी वेट चम्पियनो की सूची का देखने ही नजर एकाएक फ्लायड पटसन क नाम पर टिक जाती है। कारण यह कि उस सूची म केवल यही एक एसा नाम है जो दो बार लिखा गया है।

फ्लायड पटसन का जन्म 4 जनवरी, 1935 को अमेरिका म वाको नामक

स्थान पर हुआ। जब वह केवल एक साल के ही थे तो उनके माता पिता न्यूयाक मे आकर बस गए। मुक्केबाज़ी का शौक उन्हे बचपन से ही था। वह अक्सर अपने भाइयो के साथ व्यायामशाला म जाया करते। 14 वप की उम्र म उन्होने मुक्केबाज़ी के जो दाव पेच दिखाए उससे कास्टेंटाइन नामक पेशेवर मुक्केबाजो के मैनेजर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने पटसन का एक साल तक अपने ढग से प्रशिक्षित किया। सन 1951 तक पैटसन ने मुक्केबाज़ी के क्षेत्र म काफी धाक जमा ली। तब तक वह शौकिया मुक्केबाज़ ही थे। 1952 म उन्होने हेलसिंकी ओलम्पिक खेलो मे भाग लिया और मिडिल वेट म स्वण पदक प्राप्त किया।

ओलम्पिक खेलो मे स्वण पदक प्राप्त करने के बाद पैटसन पेशेवर मुक्केबाज़ बन गए। दो वर्षो म ही उन्होने 13 मुक्केबाज़ो को न केवल चुनौतिया दी, बल्कि एक-एक करके दुनिया के सभी मुक्केबाज़ो को धराशायी करने लगे। 30 नवम्बर, 1956 को पटसन का मुकाबला अमेरिका के ही आर्ची मूर से हुआ। जिसम उन्होने आर्ची मूर को हराकर विश्व विजेता का पद प्राप्त किया।

उसके बाद अपने विश्व विजेता के पद को बरकरार रखने के लिए उन्हे दुनिया के कई नामी मुक्केबाज़ो (जैसे टामी जक्सन, राडी मेचर, राय हेरिस, ब्रायन लन्दन आदि) की चुनौतियो को स्वीकार करना पडा। इसके बाद स्वीडन के इगमर जानसन न पटसन को चुनौती दी।

26 जून, 1959 के दिन न्यूयाक म इस मुकाबले का आयोजन हुआ। उस समय पैटसन का वज़न 198 पौड और जानसन का 182 पौड था। जानसन ने पैटसन को तीसरे राउड मे ही 'नाक आउट' कर दिया।

पैटसन ने इस हार को अपन दिल स लगा लिया। वह एक महीन तक बिना किसीस मिले-जुले अधेरे ब द कमरे म पडा रहा। पटसन न हारकर भी हिम्मत नही हारी और मन ही मन जानसन को हराकर पुन विश्व-विजेता का पद प्राप्त करने का सकल्प किया।

इन दोना मुक्केबाज़ो क बीच 20 जून, 1960 को फिर मुकाबला हुआ। एक साल पहले तक जो लोग यह कहा करते थे कि पटसन को हराना बडा मुश्किल है वे ही सब अब यह कहने लगे कि जानसन को हराना बहुत मुश्किल है। लेकिन उस दिन पटसन न पाचवें राउड म जानसन को नाक-आउट करके अपनी पहली हार का बदला लिया। जानसन केवल एक वप तक ही विश्व विजेता के पद को सभाल सक। लेकिन इगमर उनकी गिनती अमर मुक्केबाज़ो म की जाने लगी।

16 माच 1961 के दिन इन दोनो मुक्केबाज़ो क बीच फिर मुकाबला

हुआ जिसमे फिर पैटसन को विश्व विजेता घोषित किया गया।

बड़े से बड़े मुक्केबाज को भी हराने वाला कोई न कोई पैदा हो ही जाता है। यही दुनिया का दस्तूर है। विश्व विजेता का ताज एक के सिर से उतारकर दूसरे के सिर पर रख दिया जाता है। 1962 में शिकागो में हुए मुकाबले में सानी लिस्टन ने पैटसन को 4 मिनट और 16 सेकिंड में हराकर उनसे विश्व विजेता का पद छीन लिया। लेकिन पैटसन ने इसपर हिम्मत नहीं हारी और मुक्केबाजी का अभ्यास जारी रखा। वह बीच-बीच में नामी मुक्केबाजों को चुनौतियां देते रहते। यहां तक कि उन्होंने एक बार कैसियस क्ले (मोहम्मद अली) को भी चुनौती दे डाली। 22 नवम्बर, 1965 को पैटसन और क्ले के बीच मुकाबला हुआ जो 12 राउंड तक चला। जिसमे रेफरी ने अंकों के आधार पर क्ले को विजयी घोषित कर दिया।

ब

बलबीर सिंह—दिल्ली के बलबीर सिंह ने सर्वप्रथम 1958 में कटक में राष्ट्रीय प्रतियोगिता में मिडिल हैवी वेट चैम्पियनशिप जीती। इसके बाद 1959 में बम्बई में इन्होंने लाइट हैवी वेट चैम्पियनशिप जीती। 1960 दिल्ली, 1962 जबलपुर और 1963 कटक में ये मिडिल हैवी वेट चैम्पियन रहे। इसके बाद ये हैवी वेट वर्ग में आ गए और 1964 कलकत्ता और 1965 कोयम्बतूर की प्रतियोगिताओं में यह राष्ट्रीय चैम्पियन रहे। 1965 में दिल्ली राज्य भारोत्तोलन प्रतियोगिता में इन्होंने 'प्रेस' में 130 5 किलो वजन उठाकर के० ईश्वरराव का रिकार्ड तोड दिया।

यह देश के एक ऐसे अनोखे भारोत्तोलक हैं जिसने 1958 से लगातार 13 वर्ष तक राष्ट्रीय चैम्पियन का गौरव प्राप्त किया। इस बीच उन्हे अपना कोई प्रतिद्वंद्वी तक नहीं मिला। उन्होंने 37 बार अपने ही रिकार्डों में सुधार किया। अंतिम रूप से उन्होंने 422 5 किलो का रिकार्ड स्थापित किया।

बलबीर सिंह का जन्म 31 अगस्त, 1935 को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने दिल्ली के मोरी गेट गवर्नमेंट स्कूल में प्राप्त की। एफ० ए० की परीक्षा उन्होंने प्राइवेट रूप से (कैंप कालेज) से प्राप्त की। लोग खेलकूद को स्कूल और कालेजों में अनिवार्य विषय बनाने की दुहाई देते हैं, लेकिन इसी बलबीर सिंह को बी० ए० में प्रवेश पाने के लिए दर दर भटकना पड़ा था, क्योंकि वह केवल 1 प्रतिशत कम नम्बर प्राप्त कर पाए थे। तब वह

दिल्ली राज्य के भारोत्तोलन चम्पियन थे। उनका कहना है, "एफ० ए० म पढ़त समय ही मैंने भारोत्तोलन का अभ्यास शुरू कर दिया था। जो 'पीरियड' खाली होता मैं पचकुइया रोड पर भारोत्तोलन का अभ्यास करने चला जाता।" 1954 म खाद्य मन्त्रालय म एल० डी० सी० के रूप म उ होने नौकरी शुरू की। उन्हें भारत सरकार ने अजुन पुरस्कार से भी अलकृत किया। वह अब खाद्य निगम मे सहायक निदेशक है।

बलराम, टी०—27 वर्षीय फुटबाल खिलाडी टी० बलराम ने कई वर्षो तक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ म बगाल की टीम का प्रतिनिधित्व किया। वह भारतीय फुटबाल टीम के साथ कई अतरराष्ट्रीय मैचो म भाग ले चुके है तथा जकार्ता म आयोजित एशियाई खेलो मे स्वण पदक जीतने वाली भारतीय टीम की विजय मे इनका बहुत बडा हाथ था। 1962 म फुटबाल की राष्ट्रीय चम्पियनशिप जीतने वाली बगाल की टीम के वह कप्तान थे। खेल जगत म की गई उनकी सेवाओ पर उन्हे 1962 म भारत सरकार द्वारा अर्जुन पुरस्कार से अलकृत किया गया।

बहादुर सिह—यह एक सुखद सयोग की ही बात थी कि 1973 म मनीला म हुई एशियाई एथलेटिक प्रतियोगिता म गोला फेंकने (शाट पुट) की प्रतियोगिता म प्रथम तीन स्थान भारतीय खिलाडियो को ही प्राप्त हुए। उस समय विजय मच पर जो तीन खिलाडी खडे थ उनके नाम थे जगराज सिंह, गुरदीप सिह और बहादुर सिह। जगराज को स्वण पदक, गुरदीप को रजत और बहादुर को रजत पदक मिले थे। जगराज, जिसने स्वण पदक हासिल किया था, टेल्को (जमशेदपुर) म आज भी बहादुर सिंह के साथ कायरत है। इन तीनो प्रतियोगिताओ म बहादुर ही सबसे छोटी उम्र वाला था। तब उसकी उम्र महज 23 वष की थी। 1975 म सियोल म आयोजित एशियाई एमेच्योर एथलेटिक चम्पियनशिप मे बहादुर सिंह ने सोने का तमगा हासिल कर एशिया मे अपनी सर्वोच्चता प्रकट की।

वह ऐसा पहला भारतीय एथलीट है जिसने शाट पुट को 18 मीटर से कही ज्यादा दूर फेंका है। तेहरान के एशियाई खेलो के लिए 1974 म बगलौर म आयोजित चयन प्रतियोगिता मे बहादुर सिंह ने 18 44 मीटर शाट पुट फका था।

सुरतिया (हरियाणा) मे 1946 मे जन्मे बहादुर सिंह ने 1967 से टेल्को मे नौकरी प्रारम्भ की। वहा वह आटोमोबाइल विभाग म असिसटेंट फोरमैन हैं।

बाब बीमन—जमैका मे जन्म अमेरिकी नीग्रो खिलाडी बाब बीमन ने मैक्सिको ओलम्पिक खेलो (1968) मे 8 90 मीटर (29 फुट 2.5 इच) लम्बी

छलाग लगाई तो लोगो को इस बात पर यकीन नही हुआ। निर्णायक और अन्य खेल अधिकारी पाच मिनट तक फीता हाथ म लेकर यह दूरी मापते रहे और बडे ध्यान से यह देखते रहे कि कही फीते म तो कोई गडबड नही है। मगर कही भी कुछ गडबड नही थी। बाब बीमन ने सचमुच 29 फुट 2.5 इच लम्बी छलाग लगाई थी। 1896 से लेकर 1964 तक लम्बी कूद की प्रतियोगिता म अमेरिका का ही बोलबाला रहा, लेकिन 1964 म तोक्यो ओलम्पिक म ब्रिटेन के लिन डेविस ने इस खेल म स्वण पदक प्राप्त किया, मगर 1968 म अमरिका ने इम खेल म फिर अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुन प्राप्त कर लिया। बाब बीमन द्वारा स्थापित इस कीर्तिमान को टूटने म अब कई वप लगेंगे। इस खेल के कीर्तिमानो मे अब तक खिलाडी इचो के हिसाब से सुधार करते थे, मगर दुनिया म सबसे लम्बी टागो वाले इस खिलाडी ने तो पिछले कीर्तिमान म फुटो क हिसाब से सुधार कर डाला। इस प्रतियोगिता का पिछला रिकाड 27 फुट 4 75 इच का था जो कि राल्फ बोस्टन और तेर ओवानेस्यान द्वारा सयुक्त रूप से स्थापित किया गया था।

अमेरिका के राल्फ बोस्टन ने कुछ ही दिन पहले यह भविष्यवाणी की थी कि बाब बीमन 28 फुट 10 इच लम्बी छलाग लगाने की क्षमता रखता है। मगर जब मैक्सिको ओलम्पिक खेलो मे यह घोषणा की गई कि बीमन ने 29 फुट से भी ज्यादा लम्बी छलाग लगाई है तो राल्फ बोस्टन सबसे पहले मैदान मे अपने परिचित और प्रतिद्वन्द्वी 21 वर्षीय बाब बीमन को बधाई देने के लिए पहुचे। राल्फ बोस्टन ने, जो 1960 में लम्बी कूद प्रतियोगिता म स्वण पदक और 1964 मे रजत पदक प्राप्त कर चुके थे, 1968 में केवल कास्य पदक प्राप्त करन म ही सफल हो सके। लेकिन उन्हे अपनी हार का इतना गम नही था जितनी अपने साथी की इस असाधारण जीत पर खुशी। इस खेल के जानकारो का कहना है कि बाब बीमन को कूदने की प्राकृतिक देन प्राप्त है। वसे उन्होने इस खल में कोई विशेष साधना या अभ्यास नही किया है और यह भी कि खेल खेल मे वह अक्सर कई बार 'फाउल' भी कर जाते हैं।

बाब बीमन ने कुछ दिन पहले बास्केटबाल का एक पेशेवर खिलाडी बनने की भी इच्छा व्यक्त की थी। 16 वप की उम्र म ही बीमन ने जब 24 फुट 1 इच लम्बी छलाग लगाई थी तभी लोगो ने यह कहना शुरू कर दिया था कि एक न-एक दिन यह खिलाडी अवश्य अपना और अपने देश का नाम रोशन करगा। जानकारो का यह भी कहना है कि बीमन ने लोगो की उस धारणा को, कि 29 फुट स ज्यादा लम्बी छलाग लगाना इन्सान के बस या बूते की बात नही है गलत साबित कर दिया है।

बाब मथियास—17 वप की उम्र म भी किसी खिलाडी को ओलम्पिक

चम्पियन होने का गौरव प्राप्त हो सकता है, यह बात सुनकर कुछ भारतीय खेल प्रेमियो को हैरानी हो सकती है मगर यह सच है कि एक खिलाडी ने 17 वर्ष की उम्र म ही 1948 म ल दन म हुए ओलम्पिक खेलो म डिकथलन जसी कठिन प्रतियोगिता म स्वण पदक प्राप्त किया और उसके बाद 1952 म हेलसिंकी म हुए ओलम्पिक खेलो म लगातार दूसरी बार फिर डिकेथलन प्रतियोगिता म स्वण पदक प्राप्त किया। छोटी सी उम्र म ही खेलकूद क क्षेत्र में अपनी धाक जमाकर 21 वर्ष की उम्र में इस सूरमा ने खेलकूद की दुनिया से सन्यास ले लिया। अमेरिका के इस चमत्कारी और विचित्र खिलाडी का नाम है बाब मैथियास। जिसके बारे में यह कहा जाता है कि यदि उसने भाग दौड की प्रतियोगिता में हिस्सा न लेकर मुक्केबाजी में मन लगा लिया होता तो वह आज मुक्केबाजी का हैवी वेट चम्पियन होता। मैथियास ने जिस खेल म हाथ डाला उसीम अपना कमाल हासिल किया। एथलेटिक, मुक्केबाजी, फुटबाल टेनिस आदि खेलो म तो मथियास ने अपना कमला दिखाया ही, वह फिल्मी अभिनेता भी बने और फिर टेलीविज़न कलाकार।

1948 म ल दन ओलम्पिक खेलो म हिस्सा लेना उनके लिए एक सयोग की ही बात थी। इसके लिए उन्होने केवल तीन महीने पहले अभ्यास शुरू किया था। मई 1948 म मैथियास ने भाग दौड म हिस्सा लेने का फसला किया और डिकेथलन दौड, जिसे ओलम्पिक खेलो की सबसे कठिन प्रतियोगिता माना जाता है म दिलचस्पी लेन की घोषणा की। उनके प्रशिक्षक ने एक बार उनसे यह पूछा भी कि एकाएक डिकेथलन के प्रति तुम्हारे मन म इतना मोह कैसे जाग गया है ? तो उन्होने कहा—"यह नाम मुझे कुछ अच्छा लगता है, पर यह तो बताइए कि यह डिकेथलन होती क्या बला है ?'

प्रशिक्षक ने उन्हे बहुत समझाया-बुझाया कि डिकेथलन प्रतियोगिता बडी कडी प्रतियोगिता होती है, इसम 10 मुकाबले होते हैं। इसमे खिलाडी को 400 मीटर की दौड, लम्बी कूद, गोला फेंकना, ऊची कूद, 100 मीटर की दौड चक्का फेंकना, 110 मीटर की बाधा दौड, बास कूद (पोल वाल्ट), भाला फेंकना और 1500 मीटर की लम्बी दौडो म हिस्सा लेना पडता है।

लेकिन अपनी धुन के धनी 17 वर्षीय मैथियास ने डिकेथलन मे ही हिस्सा लेने का निश्चय किया। कुछ दिनो बाद अमेरिका म हुई प्रतियोगिताओ म मैथियास ने डिकेथलन मे हिस्सा लिया। फिर एकाएक जब उन्हे यह समाचार मिला कि लन्दन ओलम्पिक खेलो मे हिस्सा लेने वाली अमेरिकी टीम में उनका भी चुनाव हो गया है तो वह एकदम हैरान से रह गए। इस प्रकार मैथियास ने केवल तीन महीने के अभ्यास से लन्दन ओलम्पिक खेलो मे डिकेथलन प्रतियोगिता जीती।

छलाग लगाई तो लोगो को इस बात पर यकीन नही हुआ । f
खेल अधिकारी पाच मिनट तक फीता हाथ म लेकर यह
बडे ध्यान से यह देखते रहे कि कही फीते मे तो कोई ग
कही भी कुछ गडवड नही थी । बाब बीमन ने सचमुच 29
छलाग लगाई थी । 1896 से लेकर 1964 तक लम्बी कूद
अमरिका का ही वोलवाला रहा, लेकिन 1964 म तोक्या
के लिन डेविस ने इस खेल मे स्वण पदक प्राप्त किया, म
ने इम खेल म फिर अपनी खोई प्रतिष्ठा को पुन प्रा
बीमन द्वारा स्थापित इस कीर्तिमान को टूटने मे अब
खेल के कत्तिमानो म अब तक खिलाडी इचो के हिस
मगर दुनिया म सबसे लम्बी टागो वाले इस खिलाडी ने त
फुटो के हिसाव से सुधार कर डाला। इस प्रतियोगिता
फुट 4 75 इच का था जो कि राल्फ बोस्टन और
सयुक्त रूप स स्थापित किया गया था ।

अमेरिका के राल्फ वोस्टन ने कुछ ही दिन पहले
कि बाव बीमन 28 फुट 10 इच लम्बी छलाग लगा
मगर जब मैक्सिको ओलम्पिक खेला मे यह घोषणा
फुट से भी ज्यादा लम्बी छलाग लगाई है तो राल्फ
में अपने परिचित और प्रतिद्वन्द्वी 21 वर्षीय बाव बी
पहुचे। राल्फ वोस्टन ने, जो 1960 में लम्बी कूद प्र
और 1964 में रजत पदक प्राप्त कर चुके थे,
प्राप्त करन म ही सफल हो सके । लेकिन उन्हे अप
था जितनी अपने साथी की इस असाधारण जीत
जानकारो का कहना है कि बाब बीमन को कूदन
वस उन्होने इस खल में कोई विशप साधना या
यह भी कि खल खेल म वह अक्सर कई बार फा

बाब बीमन ने कुछ दिन पहले वास्केटवाल
की भी इच्छा व्यक्त की थी । 16 वप की उम्र
1 इच लम्बी छलाग लगाई थी तभी लोगो न
कि एक न एक दिन यह खिलाडी अवश्य अपना
करगा । जानकारो का यह भी कहना है कि बी
को, कि 29 फुट स ज्यादा लम्बी छलाग लगान
बात नही है गलत साबित कर दिया है ।

बाब मथियास—17 वप की उम्र म भी मि

योगिताओ मे लोगो की जितनी दिलचस्पी हैवी वेट वग म होती है उतनी दूसरे वर्गों मे नही होती। अर्थात हैवी वेट चम्पियन के नाम से तो हर कोई परिचित रहता है, लेकिन दूसरे वर्गों के चम्पियनो के बारे मे लोगो को बहुत कम जानकारी रहती है। 1976 मे जिन 10 खिलाडियो को अजुन पुरस्कार से अलकृत किया गया उनमे एक नाम बालमुरुगनदम् का भी था। मदिरो की नगरी मदुरै के निवासी 25 वर्षीय केमिकल इजीनियर बालमुरुगनदम् को 1974 से लगातार वार बार मिडिल वेट मे राष्ट्रीय चम्पियन का गौरव प्राप्त हो चुका है और अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे वह तीन कास्य पदक प्राप्त कर चुके है।

लातविया (सोवियत सघ) म उन्होने दो कास्य पदक (एक क्लीन और जक म 147 5 किलो भार उठाने पर और दूसरा दोनो वर्गों मे कुल 262 5 किलो भार उठाने पर) प्राप्त किए। अकरा मे हुई एक अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता मे उन्होने 260 किलो (147 5 और 112 5 किलो) भार उठाकर कास्य पदक प्राप्त किया था। इस प्रतियोगिता म भाग लेनेवाले छह देश थे हगरी, पोलैंड, इराक, इटली तुर्की और भारत।

1974 मे जबलपुर म राष्ट्रीय प्रतियोगिता मे उन्होने कुल 255 किलो भार उठाकर नया रिकाड स्थापित किया। उससे पहले का रिकाड 252 5 किलो का था। उसके बाद वह अपने ही रिकाड मे लगातार सुधार करते रहे। 1975 मे हैदराबाद मे हुई प्रतियोगिता मे उन्होने 260 किलो वजन उठाया। और 1976 में इर्नाकुलम मे वह 265 किलो वजन उठाने मे सफल रहे। इसके साथ उन्होने क्लीन और जक मे 152 5 किलो का नया रिकाड स्थापित किया। 1977 मे बनपुर मे वह अपने रिकाड में सुधार भले नही कर पाए, लेकिन राष्ट्रीय चम्पियन का पद उन्होने ही प्राप्त किया।

शुरू-शुरू मे वह बहुत अच्छे एथलीट थे और गोला और चक्का फेंकने की प्रतियोगिताओ मे हिस्सा लेते थे। मदुर के सौराष्ट्र सेकेंडरी स्कूल के छात्र के रूप म 1966 म उन्होने गोला फेंकने का रिकाड स्थापित किया।

1971 से उन्होने भारोत्तोलन मे हिस्सा लेना शुरू कर दिया और 1972 म ही वह मदुर जिले के मिडिल वेट चम्पियन बन गए। 1973 मे पहली बार उन्होने तमिलनाडु भारोत्तोलन चम्पियनशिप में हिस्सा लिया और अपने वग मे दूसरा स्थान प्राप्त किया। 1973-74 मे हैदराबाद मे हुई अन्तरविश्व-विद्यालय प्रतियोगिता म प्रथम स्थान प्राप्त किया और 1973 मे ही वह दक्षिण भारत के चम्पियन घोषित किए गए।

बालू—इस शताब्दी के पहले दो दशकों म भारतीय क्रिकेट पर एक हरिजन नवयुवक छाया रहा। वह पहला भारतीय था जिसने इगलैंड के एक

1957 में हेलसिंकी ओलम्पिक खेलो मे मैथियास ने न केवल डिकेथलन मे स्वण पदक प्राप्त किया बल्कि इस प्रतियोगिता का एक नया विश्व कीर्तिमान भी स्थापित किया। वह दुनिया के एकमात्र ऐसे खिलाडी हैं जिन्हे लगातार दो बार डिकेथलन प्रतियोगिता मे स्वण पदक जीतने का गौरव हुआ है।

बायकाट, ज्योफ—ज्योफ बायकाट का जन्म 21 अक्तूबर, 1940 को याकशायर के फिट्ज़विलियम स्थान मे हुआ। बायकाट ने प्रथम श्रेणी की क्रिकेट मे 1962 मे कदम रखा और 1963 मे वह याकशायर टीम का सदस्य बना। 1963 मे ही उसे इग्लैंड का वष का सवश्रेष्ठ खिलाडी घोषित किया गया। 1964 मे उसने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध टेस्ट क्रिकेट मे कदम रखा और उस वष बाबी सिम्पसन की टीम के विरुद्ध शृखला के 4 टेस्ट मैचो की 6 पारियो मे 48 50 रन के औसत से कुल 291 रन बनाए, जिनमे एक शतक (ओवल के अतिम टेस्ट मे) और एक अद्ध शतक (ओल्ड ट्रफड मे हुए चौथे टेस्ट मे) शामिल था। तब से लेकर बायकाट वतमान शृखला के लीडस टेस्ट तक 65 टेस्ट मैचो मे खेल चुका है और 4957 रन बना चुका है, जिनमे 14 शतक शामिल हैं। बायकाट का उच्चतम टेस्ट स्कोर 246 रन (आउट नही) है, जो उसने 1967 मे ममूरअली खा पटौदी की भारतीय टीम के विरुद्ध लीडस टेस्ट मे बनाया था। इग्लैंड की ओर से टेस्ट क्रिकेट मे बायकाट से अधिक रन केवल सात बल्लेबाजो ने बनाए है। ये है कोलिन काउड्रे, वाली हैमड, लेन हटन केन बरिंगटन, डेनिस काम्पटन, जक होब्ज और जान एड्रिच।

काटकट लेंस पहनकर खेलने वाला बायकाट 1971 से यार्कशायर का कप्तान है। उसके क्रिकेट जीवन का सबसे शानदार सत्र 1971 का रहा, जब उसने 100 12 रन प्रतिपारी की औसत से 2503 रन बनाए, जिनमे 13 शतक शामिल थे। काउटी क्रिकेट मे आज तक इग्लड के किसी खिलाडी की इतनी ऊची औसत नही रही। प्रथम श्रेणी के मचो मे बायकाट का उच्चतम स्कोर 261 रन (आउट नही) है, जो उसने 1973 74 मे वस्टइडीज प्रेजीडेंट इलेविन के विरुद्ध ब्रिजटाउन मे बनाया था। प्रथम श्रेणी के मचो मे बायकाट अब तक 30,000 से अधिक रन बना चुका है। उसने अब अपने क्रिकेट जीवन के सौ शतक पूरे कर लिए हैं।

बा स, सिडनी फ्रासिस (वारविकशायर, लकाशायर)—जन्म 29 अप्रल, 1873 मत्यु 26 दिसम्बर, 1967। 16 13 औसत से 189 टेस्ट विकेट लेने का रिकाड अब तक अटूट। 1913 14 मे दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध केवल चार टेस्टो मे 49 विकेट लेकर विश्व रिकाड। 1911 मे मलबोर्न टस्ट मे 6 रन दकर 5 विकेट लिए।

बालसुब्रमनयम के०—कुश्ती मुक्केबाजी या फिर भारोत्तोलन जैसी प्रति-

योगिताओ मे लोगो की जितनी दिलचस्पी हैवी वेट वग मे होती है उतनी दूसरे वर्गों म नही होती। अर्थात हैवी वेट चम्पियन के नाम से तो हर कोई परिचित रहता है, लेकिन दूसरे वर्गों के चम्पियनो के बारे मे लोगो को बहुत कम जानकारी रहती है। 1976 म जिन 10 खिलाडियो की अर्जुन पुरस्कार से अलकृत किया गया उनम एक नाम बालमुरुगनदम का भी था। मदिरा की नगरी मदुरै के निवासी 25 वर्षीय केमिकल इजीनियर बालमुरुगनदम को 1974 से लगातार चार बार मिडिल वेट मे राष्ट्रीय चम्पियन का गौरव प्राप्त हो चुका है और अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे वह तीन कास्य पदक प्राप्त कर चुके हैं।

लातविया (सोवियत सघ) मे उन्होने दो कास्य पदक (एक क्लीन और जक म 147 5 किलो भार उठाने पर और दूसरा दोनो वर्गों मे कुल 262 5 किलो भार उठाने पर) प्राप्त किए। अकरा मे हुई एक अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता म उन्होने 260 किलो (147 5 और 112 5 किलो) भार उठाकर कास्य पदक प्राप्त किया था। इस प्रतियोगिता म भाग लेनेवाले छह देश थे हगरी, पोलैंड, इराक, इटली तुर्की और भारत।

1974 मे जबलपुर म राष्ट्रीय प्रतियोगिता म उन्होने कुल 255 किलो भार उठाकर नया रिकाड स्थापित किया। उससे पहले का रिकाड 252 5 किलो का था। उसके बाद वह अपने ही रिकाड मे लगातार सुधार करते रहे। 1975 मे हैदराबाद म हुई प्रतियोगिता मे उन्होने 260 किलो वजन उठाया। और 1976 में इर्नाकुलम मे वह 265 किलो वजन उठाने मे सफल रहे। इसके साथ उन्होने क्लीन और जक मे 152 5 किलो का नया रिकाड स्थापित किया। 1977 मे बनपुर मे वह अपने रिकार्ड म सुधार भले नही कर पाए, लेकिन राष्ट्रीय चम्पियन का पद उन्होने ही प्राप्त किया।

शुरू-शुरू मे वह बहुत अच्छे एथलीट थे और गोला और चक्का फेंकने की प्रतियोगिताओ म हिस्सा लेते थे। मदुर के सौराष्ट्र सेकेंडरी स्कूल के छात्र के रूप मे 1966 म उन्होने गोला फेंकने का रिकाड स्थापित किया।

1971 से उन्होने भारोत्तोलन म हिस्सा लेना शुरू कर दिया और 1972 म ही वह मदुर जिले के मिडिल वेट चम्पियन बन गए। 1973 मे पहली बार उन्होने तमिलनाडु भारोत्तोलन चैंम्पियनशिप में हिस्सा लिया और अपने वग मे दूसरा स्थान प्राप्त किया। 1973 74 मे हैदराबाद म हुई अन्तरविश्व-विद्यालय प्रतियोगिता म प्रथम स्थान प्राप्त किया और 1973 म ही वह दक्षिण भारत के चम्पियन घोषित किए गए।

बालू—इस शताब्दी के पहले दो दशको मे भारतीय क्रिकेट पर एक हरिजन नवयुवक छाया रहा। वह पहला भारतीय था जिसने इग्लड के एक

क्रिकेट मौसम मे 100 स अधिक विकेट लिए। इस नौजवान का नाम था बालू।

बालू ने क्रिकेट के क्षेत्र मे जितनी प्रतिष्ठा प्राप्त की वह सब अपनी ही साधना और सकल्प के सहारे प्राप्त की। जो लोग यह मानते हैं कि क्रिकेट रईसो का खेल है उनकी धारणा बालू ने गलत साबित कर दिखाई। पूना की 112वी इ फेंटरी रेजिमेट के एक सिपाही के पुत्र बालू को 10 वप की उम्र म ही 4 रुपये महीना की नौकरी करनी पड गई थी। यह एक सयोग की ही बात थी कि बालू को पूना के पारसी जीमखाना मैदान पर ही नौकरी मिली। बाल सुलभ मन पर वहा खेलने वालो के हाव भाव का गहरा असर पडा। उनका हर काय बालू के मन पर गहरा असर करने लगा। खासतौर से क्प्तान बाटन की गेंददाजी की कलाबाजी को तो बालू ने पूरी तरह अपने मन पर उतार लिया। उधर बाटन ने भी उस बाल सुलभ और भोले-भाले बालक की भावनाओ को समझ लिया। बाटन की देखरेख म बालू तरक्की करने लगा। जब उसे हिदू क्लब मे शामिल करने की बात उठी तो जात पात की सकीणता की दीवारें आडे आइ, पर कुछ उदारमना लोगो ने बालू को हिदू क्लब मे शामिल करने की ठान ही ली। अपन पहले ही मच म सतारा जीमखाना के विरुद्ध खेलते हुए बालू ने 7 विकेट लेकर ऐसा कमाल दिखाया कि यायमूर्ति रानाडे ने धर्माध लोगो की परवाह किए बिना बालू को मुबारको और बधाई सदेशो से लाद दिया। ऐसे ही एक अवसर पर लोकमाय तिलक ने उसे हार पहनाकर सम्मानित किया। बालू का नाम, उसका खेलने का कमाल और उसकी शोहरत ने उसे बम्बई पहुचा दिया। तत्कालीन हिदू समाज मे प्रेरणा की नई लहर दौड गई। एक बार तो उसने रणजी को दोनो पारियो मे आउट करके बेहद तहलका मचा दिया। अखबारो म मोटी मोटी सुखिया म उसका नाम और चित्र छापा गया। उधर अग्रजो न बालू की छिपी क्षमताओ को परख लिया और बालू 1911 म भारतीय टीम के साथ विलायत पहुचा तो वही का होकर रह गया। अदभुत गेंददाजी, भव्य व्यक्तित्व और विनम्रता से युक्त बालू जब भी गेंद हाथ म लेकर बल्लेबाज के सामने खडा होता तो अच्छे से अच्छा बल्लेबाज भी एक बार तो अपना आत्म विश्वास खो ही बठता।

बास्केट बाल—विश्व म बास्केट बाल का आरम्भ सवप्रथम अमरिका म 1891 म हुआ। उसका जमदाता एक अमेरिकी डाक्टर जेम्स नायस्मिथ माना जाता है, जो कि अन्तरराष्ट्रीय स्वास्थ्य शिक्षा स्कूल वाई० एम० सी० ए० म प्राध्यापक थे। वह इस खेल को जाडे की ऋतु मे बद कमरे म खलते थे तथा इस बात का ध्यान रखते थे कि किन परिवतनो से इस खेल को अमेरिकन

फुटबाल की तरह प्रोत्साहनप्रद बनाया जा सकता है।

1931 तक यह खेल अमेरिका के अन्य राज्यों में भी लोकप्रिय हो गया तथा 1936 में बर्लिन में हुए ओलम्पिक खेलों में बास्केट बाल को भी शामिल कर लिया गया। तभी से अन्य खेलों की बिरादरी में शामिल होकर बर्डमिंटन ने लोकप्रियता पाई और अब अपनी अलग पहचान बना ली है।

भारत में इस खेल के आरम्भ की एक रोचक गाथा है कि आज से लगभग 57 वर्ष पूर्व सर्वप्रथम वाई० एम० सी० ए० स्वास्थ्य स्कूल द्वारा मद्रास स्वास्थ्य शिक्षा कालेज में इस खेल का प्रारम्भ किया गया तथा इसी कालेज से प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों ने बास्केट बाल को भारत के अन्य राज्यों में लोकप्रिय बनाया। एक प्रोत्साहित खेल होने के कारण अनेक प्राइवेट क्लबों, सशस्त्र सेनाओं तथा अन्य संगठनों ने इस अपने खेल कार्यक्रमों में शामिल किया।

1950 में द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् भारतीय बास्केट बाल फैडरेशन का प्रादुर्भाव हुआ। जबकि इसके पूर्व इस खेल पर भारतीय ओलम्पिक संघ का नियन्त्रण था। भारतीय बास्केट बाल फेडरेशन के सर्वप्रथम अध्यक्ष मद्रास के वाई० एम० सी० ए० कालेज के प्रधानाचार्य मि० सी० सी० अब्राहम थे। तत्पश्चात प्रत्येक राज्य में राज्य बास्केट बाल संघ का निर्माण किया गया, जिन्होंने महिला, पुरुष तथा युवकों को इस खेल में शरीक होने के लिए प्रोत्साहित किया। भारतीय बास्केट बाल ने सन 1951 में प्रथम एशियाई खेलों में भाग लिया, जिनका आयोजन दिल्ली में किया गया था।

बिली जीन किंग—खेलकूद की दुनिया में श्रीमती बिली जीन किंग का नाम काफी जाना-पहचाना है। दुनिया का शायद ही कोई ऐसा खेल प्रेमी हो जिसने अमेरिका की प्रसिद्ध टेनिस खिलाड़ी श्रीमती बिली जीन किंग का नाम न सुना हो। श्रीमती किंग को लगातार छह बार 'महिलाओं की सिंगल्स' विम्बलडन प्रतियोगिता (1966 से 1975 तक) जीतने का गौरव प्राप्त है।

विम्बलडन के 92 वर्ष के इतिहास में 1968 की विम्बलडन प्रतियोगिता से एक नये अध्याय का सूत्रपात हुआ। 1968 से पहले विम्बलडन में केवल शौकिया (गैर-पेशेवर) खिलाड़ी ही भाग ले सकते थे, मगर 1968 में पहली बार विम्बलडन को खुली प्रतियोगिता का रूप दिया गया और इसमें पेशेवर और गैर-पेशेवर (शौकिया) सभी तरह के खिलाड़ियों को भाग लेने की छूट दे दी गई। इस पहली खुली विम्बलडन प्रतियोगिता में 'पुरुषों का सिंगल्स' जीतने का गौरव राड लेवर और महिलाओं का सिंगल्स' जीतने का गौरव 24 वर्षीय श्रीमती किंग को प्राप्त हुआ।

बिली किंग का जन्म 1943 में लास एंजेल्स में हुआ था। जब वह केवल 11 वर्ष की ही थीं तभी से उन्होंने टेनिस खेलना शुरू कर दिया था। पहली

बार तो उन्होंने अपने ही जेब खर्च से बचाए और कुछ इधर-उधर छोटा-मोटा काम करके कमाए पैसा से रैकेट खरीदा था। 18 वर्ष की उम्र में तो इस खिलाड़िन ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर ली थी। 1962 में जब बिली किंग ने आस्ट्रेलिया की कुमारी मारग्रेट स्मिथ को पहले ही राउंड में हरा दिया तो टेनिस जगत में एक हलचल सी मच गई। उस वर्ष मारग्रेट स्मिथ को खेल की श्रेष्ठता के आधार पर पहले स्थान पर रखा गया था। 1963 और 1965 में भी बिली किंग विम्बलडन की महिलाओं की सिंगल्स' प्रतियोगिताओं के फाइनल में पहुंची। 1963 में वह कुमारी मारग्रेट स्मिथ से और 1965 में ब्राजील की कुमारी मारिया बुइना से फाइनल में हार गईं।

श्रीमती किंग की उम्र 35, कद 5 फुट 5 इंच और वजन 140 पौंड (63 किलो) है।

विशम्भर—रेलवे के विशम्भर बैंटम वेट वर्ग में विश्व विख्यात पहलवान है। 1967 में नयी दिल्ली (नेशनल स्टेडियम) में हुई विश्व कुश्ती प्रतियोगिता में उन्हें रजत पदक प्राप्त हुआ। वह भारत के बहुत ही भरोसे वाले पहलवान माने जाते हैं और बचाव व आक्रमण दोनों ही कलाओं में माहिर हैं। 1963 में जालन्धर में हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में वह बैंटम वेट वर्ग के राष्ट्रीय चैम्पियन बने। उसके बाद 1964 में दिल्ली में हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में अपने चैम्पियन के पद को बरकरार रखा। इससे पहले 1962 में दिल्ली में हुई भारतीय ढंग की कुश्ती में उन्हें 'गुर्ज' प्राप्त हुआ। 1963 में श्रीलंका में हुई प्रतियोगिताओं में और 1964 में काजखस्तान (ईरान) में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया। इन दोनों ही देशों में इनका प्रदर्शन बहुत ही शानदार रहा। 1964 में तोक्यो में हुए ओलम्पिक खेलों में इन्हें छठा स्थान प्राप्त हुआ। 1965 में मानचेस्टर (इंग्लैंड) में हुई विश्व प्रतियोगिता में भी उन्होंने भाग लिया और वहां उन्हें चौथा स्थान प्राप्त हुआ। 1965 में उन्हें अर्जुन पुरस्कार से अलंकृत किया गया और 1966 में राष्ट्रकुल खेलों (जमैका) में बैंटम वेट वर्ग में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। बैंकाक में हुई पांचवीं एशियाई प्रतियोगिताओं में उन्हें कांस्य पदक प्राप्त हुआ। 1967 में उन्हें फैदर वेट वर्ग में राष्ट्रीय चैम्पियन घोषित किया गया। अब वह कुश्ती से सन्यास ले चुके हैं और रेलवे में कुश्ती के प्रशिक्षक हैं।

बुजकशी—बुजकशी अफगानिस्तान का राष्ट्रीय खेल है। यह खेल बड़ा ही कठिन और जोखिम से भरा होता है। यह अफगानों की बहादुरी, साहस तथा उनके हठ की झांकी प्रस्तुत करता है। इस खेल को खेलने का बड़ा ही अनोखा और नया तरीका है। एक बहुत खुला सा मैदान होता है। उस मैदान के बीचोबीच एक खड्डा खोदा जाता है और उस खड्डे में बछड़े की

एक लाश रख दी जाती है। घुडसवारो की दो टीमें मैदान में डट जाती हैं। इन टीमो को लाश को गड्ढे से निकालकर फिर गड्ढे में फेंकना होता है। लाश को निकालने और उसे सभालने के इस दौर में दोनो टीमो की मुठभेड और छीना-झपटी होती है। छीना झपटी म कौन-सी टीम अधिक तेज और चुस्त साबित होती है इसके अनुसार अलग-अलग टीमो को नम्बर दिए जाते हैं। यह सचमुच बडा ही जोशीला खेल होता है।

एक टीम मे छह से पद्रह खिलाडी होते हैं। कभी-कभी तीन टीमें भी मिलकर खेलती हैं। सकेत मिलने पर सभी टीमें एक साथ इकट्ठे हमला कर गड्ढे से बछडे की लाश निकालने के लिए टूट पडती हैं। बछडे की लाश को अपने अधिकार मे करने के लिए कशमकश होती रहती है। इस खेल के लिए घोडो और घुडसवारो को खास ढग से प्रशिक्षित किया जाता है। सवार जरा उखडा नहीं कि घोड़े से गिरकर कई खुरो तले कुचलकर जख्मी हो जाता है। यही कारण है कि इस खेल के दौरान कई खिलाडी बुरी तरह घायल हो जाते हैं और कई बार तो कई खिलाडियो को अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ जाता है।

यह खेल हर साल 15 अक्तूबर को शाह जाहिर शाह के जन्म दिन पर काबुल मे खेला जाता है। यह खेल विशिष्ट लोगो, सरदारो, राजनयिक अधिकारियो को दिखाकर अफगान अपने शौय, बल और वीरता का परिचय देते हैं। फैज़ाबाद, मजारे शरीफ और मैमना की अपनी अलग-अलग टीमें हैं। जब किसी विशेष अतिथि के सामने इस खेल का प्रदशन किया जाता है तो टीम का चुनाव करने में बडी मुश्किल हो जाती है। साल म एक बार तो यह खेल खेला ही जाता है, कभी-कभी दो दो या तीन-तीन बार भी इसका आयोजन हो जाता है।

यो तो अफगानिस्तान म एक साधारण घोडे की कीमत तीन से पाच सौ रुपये तक है, लेकिन बुजकशी के घोडे की कीमत पाच हजार से भी अधिक होती है।

बेडसर, एलक विक्टर (सरे)—जन्म 4 जुलाई, 1918। केवल 51 टेस्टों म 24 89 औसत से 236 विकेट। इग्लिश सत्र मे 11 बार 100 से अधिक विकेट। 1953 की एशेज शृखला म 39 विकेट। 1962 से चयन-समिति के सदस्य और 1967 68 से अध्यक्ष के रूप मे कायरत।

बेदी, बिशनसिंह—भारत के 19वें कप्तान बिशनसिंह बेदी का जन्म 25 सितम्बर, 1946 को अमृतसर मे हुआ। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा अमृतसर के सेंट फ्रांसिस हाई स्कूल मे हुई और बाद मे वह पजाब विश्वविद्यालय का स्नातक बना। साढ़े पन्द्रह साल की अल्पायु मे ही उसने उत्तर पजाब की

ओर से रणजी ट्राफी म कदम रखा। रोहिंटन बेरिया ट्राफी और रणजी ट्राफी म ही उसकी असाधारण प्रतिभा का समुचित प्रमाण मिल गया था और फलस्वरूप उसने 20 वष की आयु म टेस्ट क्रिकेट में पदापण किया। बेदी के जीवन का पहला टेस्ट था गैरी सोबस की वेस्टइडीज टीम के विरुद्ध 1966-67 की तीन टेस्ट मैचो की शृखला का कलकत्ता म हुआ दूसरा टेस्ट। इस टेस्ट मे उसने बेसिल बूचर और क्लाइव लायड के विकेट लिए। इस तरह वह लाल सिंह, कृपाल सिंह और मिल्खा सिंह के बाद अधिकृत टेस्ट मैचो मे भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला चौथा सिख खिलाडी बना।

31 दिसम्बर, 1966 को बिशनसिंह बेदी ने टेस्ट क्रिकेट म प्रवेश किया। आयु उस समय 20 वर्ष 97 दिन थी। टेस्ट की शुरुआत वेस्टइडीज के विरुद्ध कलकत्ता म हुई। 5 और 0 शून्य रन बनाए, लेकिन 92 रन देकर 2 विकेट पाने म सफलता प्राप्त की।

7 नवम्बर, 1969 को टेस्ट क्रिकेट म अपना 50वा शिकार डग वाल्टर्स (आस्ट्रेलिया) को बम्बई म बनाया। यह उसका 15वां टेस्ट था।

14 दिसम्बर, 1969 को बेदी को टेस्ट क्रिकेट मे जीवन की सर्वाधिक उल्लेखनीय गोलदाजी करने का अवसर मिला। कलकत्ता टेस्ट म उसने 98 रन देकर 7 आस्ट्रेलियाई बल्लेबाजों को पवेलियन भेजा।

10 मई, 1972 को इग्लैंड की काउटी चैम्पियनशिप म नाथम्पटन शायर की टीम मे शामिल हुआ और इसेक्स के विरुद्ध नार्थम्पटन मे खेला।

24 दिसम्बर, 1972 को टेस्ट क्रिकेट का अपना 100वा शिकार दिल्ली टेस्ट म इग्लंड के कीथ फ्लेचर को बनाया। यह उसके क्रिकेट जीवन का 28वां टेस्ट था। 31 अगस्त 1973 को 1973 के सत्र म 100 विकेट उखाडे। 105 विकेट 17 94 रनो के औसत से प्राप्त किए।

3 सितम्बर, 1974 को पुन इग्लड की क्रिकेट मे 100 विकेट चटकाने का गौरव प्राप्त। 112 विकेट 24 64 रन का औसत देकर प्राप्त किए।

5 फरवरी, 1976 को भारतीय क्रिकेट टीम का कप्तान नियुक्त। और कप्तानी मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध क्राइस्टचर्च से खेला गया मैच अनिर्णीत रहा।

15 फरवरी, 1976 को वेलिंगटन मे न्यूजीलैंड के वडसवर्थ का विकेट गिराकर 150वा विकेट लेने का श्रेय प्राप्त किया। यह उसके जीवन का 41वां टेस्ट था।

19 नवम्बर, 1976 को टेस्ट क्रिकेट मे अपने बल्ले से सर्वाधिक 50 रन अविजित रहकर निकाले। 66 मिनट की पारी मे उसने 3 छक्के और 5 चौके भी मारे। यह रिकाड उसने कानपुर टेस्ट मे न्यूजीलंड के खिलाफ कायम किया।

14 जनवरी, 1977 को उसने मद्रास टेस्ट मे इग्लैंड के लम्बू कप्तान टोनी ग्रेग को आउट कर 200 विकेट पूरे किए। यह बेदी का 51वा टेस्ट था।

बेदी अब तक कुल 64 टेस्ट खेल चुके हैं और टेस्ट मैचो म 259 विकेट ले चुके हैं।

बेली, ट्रेवर (कम्ब्रिज, एसेक्स)—जन्म 3 दिसम्बर, 1923। *वेस्टक्लिफ* म। इग्लैंड का एक सफलतम आल राउडर। 61 टेस्ट मैचो म 2290 रन तथा 132 विकेट। *कम्ब्रिज की ओर से फुटबाल तथा क्रिकेट दोनो का 'ब्लू'* प्राप्त। इग्लिश सत्र मे आठ बार 'डबल' बनाया। प्रसिद्ध 'सर गैरी' पुस्तक का लेखक।

बर्डमिटन—बैंडमिटन के खेल को साधारण बोलचाल की भाषा मे 'चिडी छिक्के' के नाम मे पुकारा जाता है। यह कोट के खेलो मे सबसे ज्यादा तेज खेला जाता है। इस खेल की लोकप्रियता के कई कारण हैं। एक तो इस खेल म सभी आयु के लोग यानी बच्चे, बूढे, जवान, लडकिया और स्त्रिया आसानी से भाग ले सकते हैं, दूसरे, यह खेल अन्य खेलो की तुलना मे ज्यादा सुविधाजनक और कम खर्चीला है। जिस प्रकार क्रिकेट और टेनिस के खेल को रईसो का खेल माना जाता है उसी प्रकार बैंडमिटन के खेल को जन साधारण का खेल समझा जाता है। सुविधा की दृष्टि से यह खेल घर के अन्दर (इनडोर) और घर के *बाहर (आउटडोर) खेला जा सकता है। वसे* अधिकतर लोग इसे 'इनडोर खेल' ही मानते हैं। इस वग का कहना है कि खुले म हवा के कारण कई बार खेल का मजा किरकिरा हो जाता है। फिर यह खेल किसी भी समय दिन म या रात मे गर्मी म या सर्दी म खेला जा सकता है।

बैंडमिटन का कोट बहुत थोडी-सी जगह मे बन सकता है। आमतौर पर इसका कोट 44 फुट लम्बा और 20 फुट चौडा होता है। कोट के बीचो-बीच एक रेखा के द्वारा इसको दो भागो म बाट देते हैं। वर्डमिटन का नट जमीन से 2½ फुट की ऊचाई पर बाधा जाता है। इस नेट की लम्बाई 20 फुट और चौडाई 2 फुट 6 इच होती है। इसके अलावा एक रकेट और शटल काक लीजिए और खेल शुरू कर दीजिए।

बर्डमिटन के खेल का इतिहास ज्यादा पुराना नही है। इसपर इस खेल की शुरुआत पर काफी मतभेद हैं। कुछ लोगो का कहना है कि इस खेल की शुरुआत भारतवष म हुई। यह खेल सबसे पहले पूना शहर मे खेला गया। वहा पर कुछ अग्रेज सनिक अधिकारियो ने इस खेल को शुरू किया था। पहले ये लोग आमने-सामने खड़े होकर 'शटल काक' को एक छोटे-से

बल्ले से एक दूसरे की ओर फेंकते थे। तब शटल काक को जमीन पर नहीं गिरने दिया जाता था। धीरे धीरे बीच म नेट लगा दिया गया और इस खेल के नियम और उप नियम तय कर दिए गए।

कुछ विद्वानों का मत है कि इस खेल की शुरुआत 200 वर्ष पूर्व इंग्लैंड म हुई। इस वर्ग का कहना है कि 1870 म यह खेल ग्लासेस्टर शायर' के 'बर्डमिंटन हाल' म खेला जाता था, इसीलिए इस खेल का नाम बैडमिंटन पड गया। बर्डमिंटन के खिलाडी बैडमिंटन गाव को उतना ही महत्त्व देते हैं जितना कि टेनिस के खिलाडी विम्बलडन को या कि क्रिकेट के खिलाडी लार्ड्स को।

यह खेल आज भी अपनी जन्मभूमि इंग्लैंड म बहुत लोकप्रिय है। कहा जाता है कि इंग्लैंड म बर्डमिंटन के दो हजार आठ सौ स भी अधिक क्लब हैं और अखिल इंग्लैंड बैडमिंटन प्रतियोगिता को, जिसका आरम्भ 1899 म माना जाता है, ससार की सबसे बडी अन्तरराष्ट्रीय बैडमिंडन प्रतियोगिता माना जाता है।

भारत म भी यह खेल काफी लोकप्रिय हो गया है। शुरू-शुरू म इस खेल को बहुत ही मामूली खेल समझा जाता था और इसके विकास की तरफ भी कोई विशेष ध्यान नही दिया जाता था। मगर आज ऐसी स्थिति नही है। भारत म सवप्रथम 1934 म कलकत्ता म अखिल भारतीय बर्डमिंटन एसोसिएशन की स्थापना हुई। उसी वर्ष कलकत्ता म पहली बार राष्ट्रीय प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता महाराष्ट्र के विजय मदगावकर ने जीती। भारत मे इस खेल के प्रचार और प्रसार म मदगावकर का विशेष स्थान है।

टामस कप प्रतियोगिता मे भी, जिसे बर्डमिंटन की सबसे बडी प्रतियोगिता माना जाता है, कई बार भारतीय खिलाडियो ने भाग लिया। 1948 की टामस कप प्रतियोगिता म भारतीय टीम का नेतृत्व लुई ने किया था और 1952 म देवेन्द्र मोहन ने। 1952 को टामस कप प्रतियोगिता म भारतीय खिलाडियो का प्रदशन बहुत ही शानदार रहा। लुई और देवेन्द्र मोहन अपने जमाने के मशहूर खिलाडी माने जाते हैं। लेकिन मानना होगा कि इस खल म जितनी प्रतिष्ठा प्रकाश पादुकोने ने प्राप्त की है उतनी और किसी खिलाडी ने प्राप्त नही की।

जहा तक अखिल इंग्लड प्रतियोगिता म भारतीय खिलाडियो के प्रदर्शन का सवाल है 1947 मे प्रकाशनाथ ने और 1949 म लुई ने कमाल ही कर दिया। 1940 1950 तक के समय को भारतीय बैडमिंटन का स्वण युग कहा जा सकता है। पर यह सच है कि भारतीय खिलाडियो को कभी विश्व की

बड़ी प्रतियोगिता जीतने का गौरव प्राप्त नही हुआ। दिनेश खन्ना को एशियाई प्रतियोगिता जीतने का गौरव अवश्य प्राप्त हुआ था। इन दिनों जिस खिलाड़ी ने अपने नाम की धूम मचा रखी है उसका नाम है प्रकाश पदुकोने। वह भारत के एकमात्र ऐसे खिलाडी हैं जो 1971 से लगातार आठ वर्ष तक राष्ट्रीय चम्पियन होने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं।

बैरिंग्टन, केनिथ फ्रैंक (सरे)—जन्म 14 नवम्बर, 1930, सरे मे। बैरिंग्टन से अधिक टेस्ट केवल तीन खिलाडियो ने इग्लैंड के लिए खेले। 82 टेस्ट मैचो मे 58 67 औसत से 6806 रन। क्रिकेट मैदान म अपन नाक-नक्श और हाव-भाव क कारण 'मसखरे' के रूप म लोकप्रिय।

ब्रैडमैन, सर डोनाल्ड—किसी भी सफल बल्लेबाज की कसौटी उसकी अधिक से अधिक तथा निरन्तर रन बनाने की क्षमता होती है। अब चाहे क्रिकेट धीमे हो या तेज, गेदबाज स्पिन करते हो या स्विंग, घडी की सुइयो का साथ देना हो या सामना करना हो, गेंद फेंकने वाले का इरादा रनो की गति को रोकना हो या आउट करना—उसके बल्ले से रनो का प्रवाह नहीं रुकना चाहिए। इस कसौटी पर केवल एक ऐसा बल्लेबाज है जो बाकी सभी को मात देता दीखता है। बिना किसी हिचक के उसको सार्वकालिक श्रेष्ठ बल्लेबाज की संज्ञा दी जा सकती है। यह खाली जबानी जमा-खर्च नही है। आकडो का विशाल जाल इसकी गवाही देने को तैयार है।

ब्रडमैन के पूर्ववर्ती बल्लेबाज रनो की औसत क हिसाब मे मुश्किल से 50 अक छू पाते थे, लेकिन ब्रैडमैन न अपने 20 वर्षों के टेस्ट जीवन मे 52 टेस्ट मैचो की 80 पारियो मे इस औसत को 99 94 के गौरवशाली शिखर तक पहुचा दिया। पूरे क्रिकेट जीवन म 211 बार सौ से अधिक रन—412, जिनमे से 41 दुहरे शतक, 8 तिहरे और 1 चौहार। 669 पारियो मे 50,731 रन—औसत 90 27। ब्रैडमैन का टेस्ट मैचो मे शतक का औसत पाने का सपना 99 94 के फेर मे रह गया।

ब्रडमैन का जन्म न्यू साउथवेल्स के छोटे-से कस्बे कूटामुदरा म 27 अगस्त, 1908 को हुआ था। उसके पिता एक साधारण किसान थे। अभी वह दो ही वर्ष के थे कि उनका परिवार सिडनी से 50 मील दूर बोराल नामक स्थान पर आकर बस गया। समय पर उन्होने हाई स्कूल पास किया तथा अन्य आस्ट्रेलियाई नौजवानो की भाति पढ़ाई-लिखाई के साथ साथ खेल मे भी अपने चमत्कार दिखाने लगे।

क्रिकेट से उनका परिचय हमारी-आपकी तरह नही हुआ। उन्होंने गोल्फ की गेंद ली और क्रिकेट की विकेट। वह उस विकेट से गेंद को दीवार से और लौटती गेंदो को अलग-अलग दिशाओ म मारकर शाट लगाने का अभ्यास

करने लगे। उनकी हमेशा यह कोशिश रहती कि गेंद कभी उनसे बचकर न निकलने पाए। यह क्रम कई वर्षों तक चलता रहा। जब डॉन स्कूल म भर्ती हुए तब वहा क्रिकेट सीमेट वाले फर्श पर खेली जाती थी। टेस्ट केन्द्रों को छोडकर आस्ट्रेलिया म सभी स्थानो पर क्रिकेट ऐसे ही पक्के फर्श पर खेली जाती थी। वास्तव म यह सीमेंट नही होती बल्कि वहा की बुली नदी की ऐसी रेत होती है जो गेंद की गति तथा उठान को सीमित करती है। एसे मैदानो तथा ऐसे उपकरणो से क्रिकेट सीखा हुआ डॉन जब असली गेंद और बल्ले के सम्पर्क म आया तो उसे इस खेल म कुशलता और पूर्णता हासिल करने म अधिक समय नही लगा।

युवक ब्रैडमेन के शतको का खाता अपने स्कूल की ओर स खेलते हुए शुरू हुआ। उस मैच म उन्होने अपनी टीम द्वारा बनाए गए 156 रनो म स 115 रन बनाए और अपनी सफलता पर कुछ जरूरत स ज्यादा जोश म आकर अपनी पारी समाप्त करने के साथ बल्ला फेंककर पैवेलियन लौट पड़े। अगले दिन इस बात का एहसास हुआ कि शायद कुछ गलती हो गई थी। प्रार्थना सभा म प्रिंसिपल ने कहा—'मुझे बताया गया है कि किसी लडके ने एक शतक जमाया था। लेकिन केवल इसी वजह स उसने बल्ला भी फेंक दिया था। अच्छे खिलाडी को इस तरह की हरकतें शोभा नही देती।"

स्कूल छोडकर डान ने जमीन जायदाद बिकवाने का धधा शुरू किया। उन्ही दिनो उन्ह सिडनी क्रिकेट सप्ताह मे खेलने का अवसर मिला। इसम देश-भर स छोटे बडे खिलाडी खेलने के लिए आते थे और नये खिलाडियो के खेल प्रदर्शन को देखने के बाद उन्ह राष्ट्रीय टीम म शामिल कर लिया जाता था। डान ने न्यू साउथवेल्ज की ओर से खेलते हुए दो मैचो म 118 33, 73 तथा 134 रन बनाए। उसके बाद से वह आस्ट्रलियाई टीम के स्थायी सदस्य बन गए। 1928 का वर्ष। इसी वर्ष एम० सी० सी की टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गई। टीम सिडनी पहुची और जसी कि आशा थी डॉन उनके विरुद्ध खेला तथा 87 और 132 रन बनाकर पहले टेस्ट के लिए दावेदार बन गया लेकिन बदकिस्मती देखिए कि केवल 18 और 1 रन बनाकर अगले टेस्ट के लिए टीम मे बाहर हो गया। लेकिन जिसके बगर आस्ट्रेलियाई क्रिकेट का इतिहास अधूरा रहता उसे टेस्ट टीम से बाहर कसे रखा जाता। तीसरे टेस्ट म उसे पुन ले लिया गया। इस बार डान नही चूके। 79 और 112 चौथे मे 40 और 58 तथा अन्तिम म 123 और 37। शृखला की समाप्ति के पश्चात आस्ट्रेलियाई चयनकर्ताओ को केवल 10 टेस्ट खिलाडी चुनने की सिरदर्दी रह गई थी। इग्लड का दौरा समाप्त हुआ। डॉन तथा इग्लड दोनो का शायद एक दूसरे पर विशेष प्रभाव नही पडा।

लेकिन अपने देशवासियो की निगाहो मे वह चढ़ता गया। 1929-30 सीजन म क्वींसलैंड के विरुद्ध उन्होने 452 रन बनाकर अपने आत्म-बल और आत्म विश्वास का परिचय दिया।

डॉन 1930 मे वुडफुल के नेतृत्व मे इग्लैंड पहुचे। इस दौरे म पहली बार क्रिकेट समीक्षको तथा जानकारो को आने वाले तूफान का एहसास हुआ। उन्होंने 215 तथा 185 रनो से यह दौरा प्रारम्भ किया। उन्होने पहले टेस्ट की दूसरी पारी म 131 तथा दूसरे टेस्ट की पहली पारी मे 254 रन बनाकर ही सन्तोष नही किया, अगले टेस्ट मे 334 का विशाल स्कोर भी अर्जित कर इग्लैंड को सकते मे ला खडा किया। क्रिकेट के मक्का-मदीना इग्लैंड के चयनकर्ता, कप्तान, पत्रकार, समीक्षक तथा गेंददाज सभी अपना माथा पकड़कर बैठ गए। सभी ब्रैडमैन को एक मुसीबत समझने लगे थे। इन 334 रनो म से 301 तो उन्होने पहले ही दिन बना लिए थे। 102 रन लच से पहले, 118 लच के बाद तथा 81 चाय के बाद। इसी टेस्ट मे एक धीमे गेंददाज को उडाने के चक्कर मे ब्रडमैन अपने पैरो का सतुलन खो बठे। जमीन पर गिरने के बावजूद उनकी निगाह गेद पर ही रही। उन्होने गेद को अपने बराबर से गुजरने दिया तथा लेट कट लगा दिया। फिर इत्मीनान मे उठे और दो रन और बटोर गए। इस नजारे को कई वर्षों तक क्रिकेट प्रेमियो ने याद रखा। मैदान मे ब्रैडमैन जितना तेज, जोशीला और भयकर हो उठता था मदान से बाहर उतना ही शान्त और एकान्तप्रिय रहता।

समय गुजरता गया और ब्रैडमैन के रनो का कारवा चलता रहा। 1932 मे दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध टेस्ट शृखला मे 1190 रन जुटाकर उन्होने एक कीर्तिमान स्थापित किया। उन्ही दिनो इग्लड मे जारडीन के नेतृत्व म आक्रामक गेंददाजी का आविष्कार हुआ। इस तरह की गेंद फेंकने वालो का एकमात्र उद्देश्य बल्लेबाज पर गेद से आक्रमण करना होता था और यदि वह बचने के उद्देश्य से बल्ला अडाता था तो क्षेत्ररक्षण इस प्रकार रखा जाता कि उसका कैच आउट होना लगभग तय होता। ब्रडमैन भी इसका शिकार हुए बिना न रह सके। उनके रनो का औसत 100 से घटकर 56 आ गया था। इतना ही नहीं जारडीन को उस शृखला मे अभूतपूव सफलता प्राप्त हुई थी।

इसी टेस्ट शृखला के दूसरे टेस्ट का एक किस्सा इस प्रकार है। ब्रडमैन नम्बर चार पर खेलने आए। मेलबोन स्टेडियम म बठे 70 000 दर्शक सास रोके अगले क्षणो का इतजार कर रहे थे। डॉन अपने को धूप से बचाने के लिए गोलाकार रास्ता अपनाया। उसके हर कदम पर कर्णभेदी करतल ध्वनि हो रही थी। रोमन सम्राटो को भी ऐसा अभिनदन क्या मिला होगा। इधर बिल वाव्स गेंद लेकर बढा, उधर शोर और भी बढ़ गया।

कानोकान सुनाई पडना मुश्किल हो रहा था। बिल रुक गया, पीछे लौटा। पुन भागना शुरू किया, पर फिर वही हाल। ब्रैडमन विकेट से हट गए। बिल पुन लौटा। तीसरी बार दर्शक शान्त रहे। बिल के चेहरे पर तनाव था। लगा, वह तेज गेंद फेंकेगा। ब्रैडमैन गेंद को घुमाने के लिए तैयार हो गए। लेकिन गेंद कधे की बजाए विकेट तक मुश्किल से उठी। ब्रैडमैन ने बल्ला नीचे करके गेंद को रोकना चाहा, पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। गेंद और विकेट का मिलन हो चुका था। दर्शक स्तब्ध, वातावरण खामोश, विपक्षी तक हैरान। ब्रैडमैन जिन्दगी म पहली बार पहली गेंद पर आउट हुए थे। दूसरी पारी म ब्रडमैन ने 103 रन जरूर बनाए, लेकिन पहली पारी की वह कसक आज भी ब्रैडमैन और आस्ट्रेलियाई क्रिकेट प्रेमिया को काफी दुखी करती है।

1936 मे ब्रडमैन को आस्ट्रेलिया की बागडोर सौंपी गई। मुकाबला इग्लैंड के जी० ओ० एलन की टीम से था। ब्रडमैन के बल्ले ने भी धोखा दिया और उसके नेतत्व ने भी। उसकी टीम 322 रनो स हारी। दूसरे टेस्ट का भी यही हाल और यही अन्त हुआ। लेकिन जिसके सस्कारो मे क्रिकेट हो वह कब तक धोखा खा सकता था। अगले टेस्ट म उन्होने 270 रन बनाए। टेस्ट भी जीता और रबड भी। उन्होने अपने कुशल नेतृत्व से यह सिद्ध कर दिया कि वह केवल खिलाडी ही नही, होशियार जानकार, समझदार तथा मेहनती कप्तान भी है। उनकी कप्तानी दूसरे विश्व-युद्ध के बाद भी जारी रही। उन्होने 46 म हैमड की टीम को पीटा तथा 48 म इग्लड म जाकर टेस्ट श्रृखला जीती। यहा यह बता देना उचित होगा कि इस दौरे के अन्तिम टेस्ट मे वह दूसरी ही गेंद पर आउट हो गए थे। यह एक सयाग ही था कि ब्रैडमैन ने इस असफलता के बाद टेस्ट जीवन से स यास ले लिया। शायद इसलिए कि उन्होने दूसरी बार चोट खाई थी।

1949 म उ हे नाइट' की उपाधि से विभूषित किया गया। यो तो उसके बाद भी वह कई बार इग्लड गए लेकिन खिलाडी के रूप म नही, बल्कि खेल समीक्षक के रूप म। उसक बाद उ ह आस्ट्रेलियाई क्रिकेट बोड का चयनकर्ता चुना गया। आज वह चयन समिति के अध्यक्ष हैं। उन्होने क्रिकेट पर कई महत्वपूण पुस्तकें भी लिखी है जो क्रिकेट-साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

भ

भारोत्तोलन—एथलेटिक म जिस प्रकार 100 मीटर की फासले की दौड के विश्व चैम्पियन को दुनिया का सबसे तेज इसान माना जाता है उसी प्रकार भारोत्तोलन मे भी सबसे अधिक वजन उठाने वाले विश्व चैम्पियन को दुनिया का सबसे ताकतवर इसान माना जाता है। इस समय दुनिया के सबसे ताकतवर इसान का नाम है वासिली एलेक्जीव। सुपर हैवी वेट वग के विश्व चम्पियन रूस के वासिली एलेक्जीव 645 किलो वजन उठाते हैं और भारत का सबसे ताकतवर इन्सान बलबीर सिंह 422½ किलो। भारोत्तोलन मे भारतीय चम्पियन और विश्व चम्पियन मे कितना अन्तर है यह इन आकडो से स्पष्ट हो जाता है।

भारत के हैवी वेट चैम्पियन बलबीर सिंह 1958 से राष्ट्रीय चम्पियन का गौरव प्राप्त करते आ रहे हैं और 13 बार राष्ट्रीय चम्पियन का गौरव प्राप्त कर चुके हैं। वह स्वय ही रिकार्ड बनाते हैं और स्वय ही उसमे सुधार करते हैं। जाहिर है कि भारत मे भारोत्तोलन म उनका कोई दूसरा प्रतिद्वन्द्वी नही है।

भारोत्तोलन मे भारत की विश्व से तुलना नही की जा सकती। हमारे खिलाडी तो एशिया मे भी कही नही टिकते। हमारे देश मे जो फ्लाई वेट का राष्ट्रीय चम्पियन है, वह क्रम से विश्व चैम्पियन की तुलना म 100 पौंड पीछे है। इसी क्रम से आप आगे बढते जाइए। हमारे देश का हैवी वेट चैम्पियन विश्व चम्पियन से 400 या 500 पौड पीछे है।

भारोत्तोलन म इस समय सोवियत सघ, हगरी, जापान, और पोलैंड के खिलाडियो का ही बोलबाला है।

ओलम्पिक और भारोत्तोलन

1896 मे एथेन्स मे हुए प्रथम आधुनिक ओलम्पिक खेलो मे भारोत्तोलन को भी शामिल किया गया था, लेकिन तब इसका रूप आज से भिन्न था। उस समय प्रतियोगिताओ मे वजन के आधार पर कोई वर्गीकरण नही किया जाता था और जो व्यक्ति सबसे अधिक भार उठाता वही चम्पियन विश्व-चैम्पियन माना जाता। 1900 मे पेरिस मे हुए ओलम्पिक खेलो म भारोत्तोलन को शामिल नहीं किया गया। 1920 मे अन्तरराष्ट्रीय भारोत्तोलन सघ की स्थापना हुई और 1924 मे वजन के आधार पर प्रतियोगियो को पाच वर्गों मे बांटा गया। लेकिन अब शरीर के वजन के अनुसार 9 विभिन्न प्रतियोगिताओ का आयोजन किया जाता है। फ्लाई वेट (52 किलो), बैंटम वेट (56 किलो),

फदर (60 किलो), लाइट (67½ किलो), मिडिल (75 किलो), लाइट हैवी (82½ किलो), मिडल हैवी (90 किलो) और हैवी वेट (90 किलो से अधिक)। अ तरराष्ट्रीय भारोत्तोलन सघ ने अब सुपर हैवी वट की प्रतियोगिता रखी है। इसम 110 किलो स अधिक वजन के प्रतियोगियो को रखा जाता है।

लोहा उठाने की इस प्रतियोगिता म कितनी जल्दी-जल्दी कीर्तिमान स्थापित होते रह है, इसका अ दाजा तो इसी बात से लगाया जाता है कि 1924 म इटली के एक भारोत्तोलक ने 342 5 किलो वजन उठाकर विश्व चम्पियन का गौरव प्राप्त किया था और अब रूस के एलेक्जीव 645 किलो वजन उठाते हैं, यानी पिछले 48 वर्षों के इतिहास मे कीर्तिमान दो गुणा अधिक हो गया है।

जहा तक भारत का सवाल है, भारत भारोत्तोलन के क्षेत्र मे बहुत पीछे है। या डॉ० पी० मनी, ईश्वर राव, बलबीर सिंह, आलोकनाथ घोष, लक्ष्मीकात दास, अरुणकुमार दास और मोहनलाल घोष जैसे भारोत्तोलक राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ म काफी सफलता प्राप्त कर चुके है। 1940 म बम्बई मे पहली बार राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसम पजाब के मोहम्मद नाकी ने 340 किलो वजन उठाकर सबसे शक्तिशाली पुरुष कहलाने का गौरव प्राप्त किया। बलबीर सिंह ने 422 5 किलो का राष्ट्रीय रिकाड स्थापित कर रखा है। लेकिन हम विश्व चैम्पियनो से कितने पीछे हैं इसका अनुमान 1977 म हुए ओलम्पिक खेलो के परिणामो को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है।

भीमसिह—हैवी वेट वग मे भीमसिह को विशेष सफलता प्राप्त हुई है। उनका ज म रामपुर (जिला बुल दशहर) म एक किसान परिवार म हुआ। उ होने लगातार कई वर्षों तक राष्ट्रीय चम्पियन बनने का गौरव प्राप्त किया। पहली बार कुश्ती के अखाडे म उतरने पर उ हे रनर अप (यानी दूसरा स्थान) प्राप्त हुआ। 1963 के बाद से वह कई वर्षों तक लगातार राष्ट्रीय चम्पियन बनते रहे। उ ह भारत सरकार द्वारा सास्कृतिक आदान प्रदान कायक्रम के अ तगत सोवियत सघ (1963) और ईरान (1964) भी भेजा गया। इन दोनो स्थानो पर उनकी कुश्ती कला को विशेष सराहा गया। 1966 म वह हैवी वेट वग म राष्ट्रीय चम्पियन बने। 1966 म बकाक म हुई पाचवी एशियाई प्रतियोगिताओ म उ होने भारत का प्रतिनिधित्व किया और स्वण पदक प्राप्त किया। जमैका म हुए राष्ट्रकुल खेलो मे भी उ हे पदक प्राप्त हुआ। उसी वर्ष यानी 1966 म उ हे अजुन पुरस्कार से अलकृत किया गया।

भुवनेश्वरी कुमारी—कोटा की कुमारी भुवनेश्वरी, जिनका ज म 29 मई, 1945 को हुआ था, 1968 म महिलाओ की ओलम्पिक ट्रैप निशानेबाजी

म और 1969 म महिलाओ की ट्रप निशानेबाजी (भारतीय नियम) मे, महिलाओ की स्कीट निशानेबाजी आई० एस० यू० और महिलाओ की स्कीट निशानबाजी (भारतीय नियम) मे राष्ट्रीय चैम्पियन थी। 1969 मे वह सिगापुर निशानबाजी प्रतियोगिताओ म भारत की ओर से भाग लेने वाली खिलाडी थी और ओलम्पिक ट्रप निशानेबाजी म मैच म सातवे स्थान पर रही। वह उस भारतोय स्कीट टीम की एक सदस्या थी, जिसने इन मैचो मे स्वण पदक जीता। अक्तूबर 1969 म सेन सेवस्तिया म आयोजित विश्व निशानेबाजी चम्पियनशिपो म भी वह भारत की ओर से भाग लेने वाली खिलाडी थी और विश्व महिला ओलम्पिक ट्रप म चौथे स्थान पर रही। महिला ओलम्पिक ट्रप म उनका राष्ट्रीय रिकाड है।

म

मसूर अली खा (नवाब पटौदी)—मसूर अली खा (नवाब पटौदी) का जन्म भोपाल म 5 जनवरी, 1941 को हुआ। यह क्रिकेट के मशहूर खिलाडी नवाब पटौदी के सुपुत्र हैं। इनके पिता भी नवाब पटौदी के नाम से ही प्रसिद्ध थे। उनकी मत्यु आज से कोई 20 साल पहले दिल्ली म पोलो खेलते समय हुई थी। क्रिकेट के इतिहास म पहली बार ऐसा हुआ जब बाप-बेटे ने भारतीय क्रिकेट का प्रतिनिधित्व और नेतृत्व किया है। यहा यह बता देना भी उचित होगा कि बाप-बेटे दोनो को 'विस्डन' का सम्मान प्राप्त हुआ।

नवाब पटौदी जब केवल 21 वष के ही थे, तब एक कार दुर्घटना मे उनकी दाईं आख जखमी हो गई थी। यह दुर्घटना इग्लैंड म हुई थी, लेकिन इस दुघटना के बावजूद उन्होने अपने असाधारण खेल से यह साबित कर दिया कि उनकी एक आख की ज्योति भले कम हो गई हो, परन्तु गेद उन्हे अब भी 'फुटबाल' जितनी नजर आती है। 1962 म वेस्टइडीज के दौरे मे जब भारतीय कप्तान कट्रक्टर घायल हो गए तब मसूर अली को भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया। उस समय इनकी आयु केवल 21 वष की थी। सच तो यह है कि उन्हे भारतीय टीम का सबसे कमसिन कप्तान होने का गौरव प्राप्त हुआ।

इग्लैंड मे स्कूल और आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के क्रिकेट कप्तान के रूप मे मसूर अली ने टाइगर' अर्थात् शेर की उपाधि प्राप्त की। तब यह

समझा जाने लगा कि अपने पिता की तरह वह भी किसी दिन इंग्लैंड की ओर से टेस्ट मैच खेलेंगे। लेकिन वह भारत लौट आए। इनकी सर्वश्रेष्ठ रन संख्या 203 (और आउट नहीं) रही। यह रन संख्या उन्होंने 1964 में इंग्लैंड के विरुद्ध खेलते हुए बनाई थी। इसी टेस्ट शृखला म नवाब पटौदी ने लगातार पाच बार टॉस जीता था।

मंसूर अली ऐसा पहला खिलाड़ी है जिसे 1961 और 1963 मे आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का कप्तान बनने का गौरव प्राप्त हुआ। इसी विद्यालय म इनके पिता ने 238 रन (और आउट नहीं) बनाए थे।

मदनलाल—जन्म 20 मार्च, 1951। मध्यम तेज गति के सफल गेंदबाज। मदनलाल ने शुरुआत म ही अच्छे विकेट चटकाकर अपना स्थान भारतीय क्रिकेट म बना लिया। लेकिन मोहिन्दर अमरनाथ, घावरी और अब कपिल देव के समक्ष उन्हे टीम म अपना स्थान निश्चित करने के लिए कडा सघष करना पड रहा है।

नीचे के क्रम से अच्छी बल्लेबाजी और तूफानी क्षेत्ररक्षण का काय वे ईमानदारीपूर्वक निभाते हैं। गाजियाबाद (उ० प्र०) के मोहन मीकिन्स म कायरत।

टेस्ट 16, पारी 30, रन 428, अपराजित 6, अद्धशतक 1, कच 8। गेंदबाजी 1803 मेडन 71 रन 977, विकेट 29।

महिला खिलाडी—स्त्री जाति को अपने अधिकारो के लिए बहुत लम्बा सघष करना पडा है। यूनान की प्राचीन सभ्यता म भी स्त्री जाति को समाज म दूसरे दर्जे का नागरिक समझा जाता था। प्राचीन ओलम्पिक खेलो म महिलाओ का न केवल भाग नही लेने दिया जाता था, बल्कि उन्हें ओलम्पिक खेलो को देखने तक के अधिकार से वचित रखा गया। लेकिन फिर भी कुछ महिलाए भेस बदलकर दर्शको म जा बैठती थी, जबकि उन्हे यह मालूम रहता था कि पकडे जाने पर मृत्युदड मिल सकता है।

खैर किसी तरह 1900 म पेरिस म हुए ओलम्पिक खेलो मे महिलाओ को भाग लेने की अनुमति मिल गई। उन दिनो महिलाओ म केवल लान टेनिस का खेल ही बहुत लोकप्रिय था। पहली बार छह महिला खिलाडियो ने लान टेनिस की प्रतियोगिता म भाग लिया और ब्रिटेन की कुमारी कूपर को पहली बार ओलम्पिक खेलो म एकल चैम्पियन बनने का गौरव प्राप्त हुआ। उसके बाद धीरे धीरे करके एथलेटिक तराकी, जिम्नास्टिक और दूसरी प्रतियोगिताओ म भी महिलाओ ने भाग लेना शुरू कर दिया।

आज महिलाए भागने दौडने, उछलने, कूदने तैरने चक्का-गोला, भाला फेंकने या पर्वतारोहण म पुरुषो के साथ बराबरी करने को तयार हैं। ओलम्पिक खेलो म जो विकसित देश ढेरा पदक प्राप्त करते हैं उनम से अधिकांश पदक

महिला खिलाडी प्राप्त करती हैं। ओलम्पिक खेलो के इतिहास मे कुछ खिलाडिनो के नाम स्वण अक्षरो म लिखे हुए हैं। अमेरिका की एक नीग्रो तूफानी लडकी विल्मा ग्लोडीन रूडोल्फ (जिन्हे ससार की सबसे तेज दौडने वाली लडकी कहा जाता था) ने रोम ओलम्पिक मे एक साथ तीन स्वण पदक प्राप्त किए। तैराकी के क्षेत्र मे आस्ट्रेलिया की डान फ्रेजर, अमेरिका की डेवी मायर जैसी खिलाडिनो ने एक एक ओलम्पिक खेलो म तीन-तीन स्वर्ण पदक प्राप्त किए।

कुछ समय पहले तक आम धारणा यह थी कि महिलाओ मे पुरुषो के मुकाबले शारीरिक शक्ति कम होती है। लेकिन बहुतो को यह जानकर हैरानी हो सकती है कि एथलेटिक मे 100 मीटर के फासले मे पुरुषो का रिकार्ड 9 9 सकिड है और महिलाओ का 11 0 सकिड यानी दोनो मे अब केवल एक सैकिड का ही अन्तर रह गया है। लेकिन *1896* मे पुरुष खिलाडी भी 100 मीटर की दूरी को 12 सकिड मे पार किया करते थे। जिस तेजी से दुनिया की खिलाडिनें नये नये कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं उसे देखते हुए पुरुष खिलाडियो को अभी से सावधान हो जाना चाहिए। लबी कूद म 22 फुट, ऊची कूद मे 6 फुट 3 इच, गोला फेंकने मे *66* फुट, चक्का फेंकने मे 200 फुट आदि खिलाडिनो के कुछ ऐसे कीर्तिमान हैं जहा तक बहुत से देशो के खिलाडी भी नही पहुच सकते। ओलम्पिक खेलो मे जहा एक ओर 13, 14 या 15 साल की युवतियो ने ढेरो स्वण पदक प्राप्त किए हैं वहां दूसरी ओर कुछ बच्चो की माताओ ने भी 35 या 40 साल की उम्र म विजय मच पर खडे होने का गौरव प्राप्त किया है।

लेकिन जहा तक भारतीय महिलाओ का सवाल है, मानना होगा कि राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय जगत मे उनका योगदान उत्साहवद्धक नही रहा। यो इसके कई कारण हैं। हमारे देश की सामाजिक व्यवस्था, रीति-रिवाज, परम्परावादी परिवार, सकीर्ण विचारधारा, पर्दा प्रथा, शीघ्र विवाह आदि कुछ सामाजिक कुरीतियों के कारण भारतीय महिलाए खेलकूद की दुनिया मे वह स्थान प्राप्त नही कर सकी है जो उन्हें करना चाहिए था। लेकिन इतने बधनो और प्रतिबधो के बावजूद कुछ भारतीय महिला खिलाडिनो ने खेल-कूद के क्षेत्र मे उल्लेखनीय प्रगति की।

अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र मे भारत का नाम ऊचा करने का श्रेय सबसे पहले आरती साहा (विवाह के बाद इनका नाम आरती गुप्ता हो गया है) को प्राप्त हुआ। वह *भारत की एकमात्र ऐसी महिला तराक हैं जिन्होंने इगिलश* चैनल पार करके अपना तथा अपने देश का गौरव बढ़ाया। वह एशिया की पहली महिला हैं जिन्हे इगलिश चैनल पार करने का गौरव प्राप्त हुआ।

समझा जाने लगा कि अपने पिता की तरह वह भी किसी दिन इंग्लैंड की ओर से टेस्ट मैच खेलेंगे। लेकिन वह भारत लौट आए। इनकी सर्वश्रेष्ठ रन संख्या 203 (और आउट नहीं) रही। यह रन संख्या उन्होंने 1964 में इंग्लैंड के विरुद्ध खेलते हुए बनाई थी। इसी टेस्ट शृंखला में नवाब पटौदी ने लगातार पांच बार टास जीता था।

मंसूर अली ऐसा पहला खिलाड़ी है जिसे 1961 और 1963 में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का कप्तान बनने का गौरव प्राप्त हुआ। इसी विद्यालय में इनके पिता ने 238 रन (और आउट नहीं) बनाए थे।

मदनलाल—जन्म 20 मार्च, 1951। मध्यम तेज गति के सफल गेंदबाज। मदनलाल ने शुरुआत में ही अच्छे विकेट चटकाकर अपना स्थान भारतीय क्रिकेट में बना लिया। लेकिन मोहिन्दर अमरनाथ, घावरी और अब कपिल देव के समक्ष उन्हें टीम में अपना स्थान निश्चित करने के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा है।

नीचे के क्रम से अच्छी बल्लेबाजी और तूफानी क्षेत्ररक्षण का कार्य वे ईमानदारीपूर्वक निभाते हैं। गाजियाबाद (उ० प्र०) के मोहर्न मीकिन्स में कार्यरत।

टेस्ट 16, पारी 30 रन 428, अपराजित 6, अर्द्धशतक 1, कैच 8। गेंदबाजी 1803 मेडन 71, रन 977, विकेट 29।

महिला खिलाड़ी—स्त्री जाति को अपने अधिकारों के लिए बहुत लम्बा संघर्ष करना पड़ा है। यूनान की प्राचीन सभ्यता में भी स्त्री जाति को समाज में दूसरे दर्जे का नागरिक समझा जाता था। प्राचीन ओलम्पिक खेलों में महिलाओं को न केवल भाग नहीं लेने दिया जाता था, बल्कि उन्हें ओलम्पिक खेलों को देखने तक के अधिकार से वंचित रखा गया। लेकिन फिर भी कुछ महिलाएं भेस बदलकर दर्शकों में जा बैठती थीं, जबकि उन्हें यह मालूम रहता था कि पकड़े जाने पर मृत्युदंड मिल सकता है।

खैर किसी तरह 1900 में पेरिस में हुए ओलम्पिक खेलों में महिलाओं को भाग लेने की अनुमति मिल गई। उन दिनों महिलाओं में केवल लान टेनिस का खेल ही बहुत लोकप्रिय था। पहली बार छह महिला खिलाड़ियों ने लान टेनिस की प्रतियोगिता में भाग लिया और ब्रिटेन की कुमारी कूपर को पहली बार ओलम्पिक मेला में एकल चैम्पियन बनने का गौरव प्राप्त हुआ। उसके बाद धीरे-धीरे करके एथलेटिक, तैराकी, जिम्नास्टिक और दूसरी प्रतियोगिताओं में भी महिलाओं ने भाग लेना शुरू कर दिया।

आज महिलाएं भागने-दौड़ने, उछलने, कूदने, तैरने, धक्का-गोला, भाला फेंकने या पर्वतारोहण में पुरुषों के साथ बराबरी करने को तैयार हैं। ओलम्पिक मेला में जो विकसित देश ढेरों पदक प्राप्त करते हैं उनमें से अधिकांश पदक

महिला खिलाडी प्राप्त करती हैं। ओलम्पिक खेलो के इतिहास मे कुछ खिलाडिनो के नाम स्वण अक्षरो म लिखे हुए हैं। अमेरिका की एक नीग्रो तूफानी लडकी विल्मा ग्लोडीन रूडोल्फ (जिन्ह ससार की सबसे तेज दौडने वाली लडकी कहा जाता था) ने रोम ओलम्पिक मे एक साथ तीन स्वण पदक प्राप्त किए। तैराकी के क्षेत्र मे आस्ट्रेलिया की डान फ्रेजर, अमेरिका की डेबी मायर जैसी खिलाडिनो ने एक एक ओलाम्पक खेलो म तीन-तीन स्वण पदक प्राप्त किए।

कुछ समय पहले तक आम धारणा यह थी कि महिलाओ म पुरुषो के मुकाबले शारीरिक शक्ति कम होती है। लेकिन बहुतो को यह जानकर हैरानी हो सकती है कि एथलेटिक मे 100 मीटर के फासले मे पुरुषो का रिकाड 9 9 सैकिड है और महिलाओ का 11 0 सकिंड यानी दोनो मे अब केवल एक सैकिड का ही अन्तर रह गया है। लेकिन 1896 म पुरुष खिलाडी भी 100 मीटर की दूरी को 12 सकिंड म पार किया करते थे। जिस तेजी से दुनिया की खिलाडिनें नये नये कीर्त्तिमान स्थापित कर रही है उसे देखते हुए पुरुष खिलाडियो को अभी से सावधान हो जाना चाहिए। लबी कूद म 22 फुट, ऊची कूद मे 6 फुट 3 इच, गोला फेंकने म 66 फुट, चक्का फेंकन मे 200 फुट आदि खिलाडिनो के कुछ ऐसे कीर्त्तिमान हैं जहा तक बहुत से देशो के खिलाडी भी नही पहुच सकते। ओलम्पिक खेलो म जहा एक ओर 13, 14 या 15 साल की युवतियो ने ढेरो स्वण पदक प्राप्त किए हैं वहां दूसरी ओर कुछ बच्चो की माताओ ने भी 35 या 40 साल की उम्र मे विजय मच पर खडे होने का गौरव प्राप्त किया है।

लेकिन जहा तक भारतीय महिलाओ का सवाल है, मानना होगा कि राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय जगत मे उनका योगदान उत्साहवद्धक नही रहा। या इसके कई कारण हैं। हमारे देश की सामाजिक व्यवस्था, रीति-रिवाज, परम्परावादी परिवार, सकीर्ण विचारधारा, पर्दा प्रथा, शीघ्र विवाह आदि कुछ सामाजिक कुरीतियो के कारण भारतीय महिलाए खेलकूद की दुनिया म वह स्थान प्राप्त नही कर सकी है जो उन्ह करना चाहिए था। लेकिन इतने बन्धनो और प्रतिबन्धो के बावजूद कुछ भारतीय महिला खिलाडिनो ने खेल-कूद के क्षेत्र मे उल्लेखनीय प्रगति की।

अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र मे भारत का नाम ऊचा करने का श्रेय सबसे पहले आरती साहा (विवाह के बाद इनका नाम आरती गुप्ता हो गया है) को प्राप्त हुआ। वह भारत की एकमात्र ऐसी महिला तराक हैं जिन्होंने इगलिश चैनल पार करके अपना तथा अपने देश का गौरव बढ़ाया। वह एशिया की पहली महिला हैं जिन्हे इग्लिश चैनल पार करने का गौरव प्राप्त हुआ।

उनकी इस साहसिक उपलब्धि को देखते हुए उन्हे पद्मश्री की उपाधि से अलकृत किया गया।

तराकी के क्षेत्र म रीमा दत्त ने भी विशेष सफलता प्राप्त की। सोलह वष की उम्र म ही तराकी के क्षेत्र म कमाल कर दिखाने वाली कुमारी रीमा दत्त न आठ-नौ साल की उम्र से ही पानी से खिलवाड करना शुरू कर दिया था। उनका कहना है कि इस खेल म भाग लेने की प्रेरणा उन्हे अपने बडे भाई से मिली। 13 वष की उम्र म तो रीमा दत्त ने जिला और राज्य की तराकी प्रतियोगिताओ मे हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। 1964 मे राष्ट्रीय तराकी प्रतियोगिता जब जयपुर विश्वविद्यालय के तरणताल म हुई तो रीमा न 100 मीटर फ्री-स्टाइल म चौथा स्थान प्राप्त किया था। लेकिन उसके बाद तो हर प्रतियोगिता म उन्होने देश की जानी-मानी तराको को पीछे छोडना शुरू कर दिया और हर प्रतियोगिता म अपने ही कीर्तिमान मे सुधार करती गइ। बाद म उन्हे प्रशिक्षण के लिए अमरिका भी भेजा गया। अमरिका से लौटने के बाद उन्होने पिछले रिकार्डों म चार चार, पाच-पाच सकिड का सुधार किया। लकिन जस ही कुछ लोगो ने उनस अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने की आशाए लगानी शुरू की उन्होने खेलकूद से सन्यास ल लिया।

एथलटिक के क्षेत्र म स्टेफी डीसूजा (अब स्टेफी सिक्वेरा) एलिजाबेथ डवनपोट, लीलाराव आदि के नाम उल्लेखनीय है। 1963 म 100 मीटर और 200 मीटर का स्टफी ने जो राष्ट्रीय रिकाड स्थापित किया वह अभी तक बरकरार है। इसी वष उन्होंने 800 मीटर की दौड म 2 मिनट 24 6 सकिड का नया राष्ट्रीय रिकाड स्थापित किया था। यो तोक्यो म 400 मीटर की दौड 58 सकिड म पूरी करके अपने ही पिछले रिकाड म सुधार किया था, लेकिन वह सेमी फाइनल से आगे नही बढ सकी। 1963 म ही एडवड सैनीरा ने 1500 मीटर की दौड म 3 मिनट 48 6 सैकिड का नया राष्ट्रीय रिकाड स्थापित किया था।

1964 म एलिजाबेथ डेवनपोट का भाला फेंकने का रिकाड कोई खिलाडिन अभी तक तोड नही पाई। मेलबोन म ओलम्पिक म भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली मेरी लीलाराव कई वर्षों तक अस्सी मीटर हर्डल्स (बाधा) की राष्ट्रीय चम्पियन रही। अब उनका स्थान मनजीत वालिया ने ले लिया है।

कुमारी मनजीत वालिया का जन्म 25 दिसम्बर, 1946 म हुआ और वह एक सवश्रेष्ठ महिला खिलाडी हैं। उन्होने 1966 म बकाक म आयोजित पाचवें एशियाई खेलो म 80 मीटर की बाधा म भारत का प्रतिनिधित्व

किया। उन्होने 11 4 सैकिंड मे दौड पूरी करके कास्य पदक प्राप्त किया, जबकि रजत पदक विजेता ने भी इस फासले को इतने ही समय मे पूरा किया था।

कमलेश छतवाल ने 1966 मे गोला और चक्का फेकने म विशेष सफलता प्राप्त की। भाला फेकने मे भी उन्होंने 113 फुट 10 इच का रिकाड स्थापित किया। गोला फेंकने मे उनका रिकाड 10 67 मीटर का है। उनके बाद कुमारी फरुखा खानूम ने चक्का फेंकने मे 32 46 मीटर का नया रिकार्ड स्थापित किया था।

हाकी के खेल म भी कुछ भारतीय महिला खिलाडियो का योगदान उल्लेखनीय रहा। दिल्ली मे आयोजित एशियाई महिला हाकी प्रतियोगिता मे भारत को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ था। जिस प्रकार पजाब के खिलाडी हाकी के खेल मे सबसे आगे रहते हैं उसी प्रकार मैसूर की खिलाडिनें महिला हाकी मे सबसे आगे रहती हैं। महिला हाकी खिलाडिनो म एल्वेरा ब्रिटो ने काफी ख्याति अर्जित की है। खिलाडिन मां की खिलाडिन बेटी एल्वेरा ब्रिटो को अपने अद्भुत खेल-प्रदर्शन के कारण अर्जुन पुरस्कार से भी अलकृत किया गया। मैसूर की 24 वर्षीया एल्वेरा ब्रिटो (कद पाच फुट तीन इच, वजन एक सौ दस पौंड) का कहना है कि मुझे खेल मे आज जो मान और सम्मान प्राप्त हुआ है उसका श्रेय मेरी खिलाडिन मा, जो मैसूर राज्य महिला हाकी एसोसिएशन की सचिव भी हैं, को ही प्राप्त है। जो माताए अपनी बेटियो को खेलकूद की तग पोशाक पहनने पर आपत्ति करती हैं उन्हे मेरी माता से प्रेरणा ग्रहण करनी चाहिए।

16 साल की उम्र म अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने वाली राजकुमारी राज्यश्री ने निशानेबाजी के क्षेत्र म अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। 1967 म राज्यश्री केवल चौदह वर्ष की ही थी, जब उसने तोक्यो (जापान) म हुई पहली एशियाई निशानेबाजी प्रतियोगिता म भाग लिया और अपनी तेज फायरिंग से सबको चकित कर दिया। 1971 मे सियोल (दक्षिण कोरिया) म हुई दूसरी एशियाई शूटिंग प्रतियोगिता मे उसने काम्य पदक जीता था।

बीकानेर के महाराजा डा० कर्णी सिंह की सुपुत्री राज्यश्री का जन्म 4 जून, 1953 को हुआ। सात साल की उम्र में ही उसने राइफल चलाना शुरू कर दिया था। दस साल की उम्र म तो वह बड-बडे निशानेबाजो से भी होड लेने लगी थी।

कोटा की कुमारी भुवनेश्वरी कुमारी, जिनका जन्म 29 मई, 1945 को हुआ था, 1968 म महिलाओ की ओलम्पिक ट्रैप निशानेबाजी मे और 1969 मे महिलाओ की ट्रैप निशानेबाजी (भारतीय ढग) मे राष्ट्रीय चम्पियन

बनी। 1969 मे सिंगापुर निशानेबाजी प्रतियोगिता मे उन्होने भाग लिया और सातवें स्थान पर रही। 1969 मे उन्हे अर्जुन पुरस्कार से भी अलकृत किया गया।

आज से बीस साल पहले राइफल की निशानेबाजी म भारत की महिला चैम्पियन श्रीमती गीताराय का भी काफी बोलबाला था। बगाल के एक मध्यवर्गी परिवार मे जन्मी गीताराय ने 1956 मे 22 बोर राइफल प्रतियोगिता म 700 मे से 686 अक प्राप्त करके स्वण पदक जीता। सन् 1956 के ओलम्पिक खेला से पहले कलकत्ता मे जो चयन प्रतियोगिता हुई उसम भी गीताराय ने 600 म से 589 अक प्राप्त किए। परन्तु किसी कारणवश वह मेलबोन ओलम्पिक म भाग न ले सकी। निशानेबाजी के अतिरिक्त श्रीमती गीता ने अन्य कई खेलो मे भी नाम पैदा किया। वह नाव खेने, तैरने तथा टेबल टेनिस खेलने म भी काफी निपुण थी।

बैडमिटन का खेल महिलाओ का बहुत ही मनपसन्द खेल माना जाता है। इस खेल म कुछ समय पहले तक मीना शाह का बहुत नाम था। मीना शाह का जन्म 31 जनवरी, 1937 को हुआ। सन 1958 म लखनऊ विश्व विद्यालय म एम० ए० पास करने के बाद वह रेलवे म चली गई। अजन पुरस्कार प्राप्त मीना शाह लगातार कई वर्षों राष्ट्रीय चम्पियन रही। उनके बाद सरोजिनी आप्टे ने काफी नाम कमाया। कलकत्ता म हुई 34वी राष्ट्रीय बैडमिटन प्रतियोगिता म उत्तर प्रदेश की कुमारी दमयन्ती सूबेदार को राष्ट्रीय चैम्पियन होने का गौरव प्राप्त हुआ।

टेबल टेनिस के खेल म गुल नासिकवाला, रूबी सातारावाला, सईदा सुनन्ना करदीकर, नीला कुलकर्णी, मीना परादे, सुल्ताना, ब्रिस्का नन्स, बन्नू कामा और उषा सुन्दरराज आदि कुछ नाम गिनाए जा सकते हैं। मैसूर निवासिनी उषा सुन्दरराज काफी लम्बे समय तक टेबल टेनिस की चैम्पियन रही। उन्होने कई अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे भी भाग लिया और उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की।

यह ठीक है कि भारतीय खिलाडिनो के नाम उगलियो पर गिनाए जा सकते हैं और उन्हे अन्तरराष्ट्रीय जगत मे वह मान सम्मान नही मिल पाया, जितना की विदेशो की खिलाडिनो को मिला है, लेकिन भारतीय खिलाडिनो की अपनी सीमाए हैं। हमारे देश मे यो भी खेलकूद को कभी सामाजिक प्राथमिकता (सोसियल प्रायर्टी) नही दी गई। बीच-बीच म कुछ परम्परावादी और पुरातनपथी लोग यह भी कह देते हैं कि खेलकूद का खिलाड़िन के पारिवारिक जीवन पर प्रतिकूल असर पडता है। लेकिन यह धारणा एकदम बेबुनियाद और बेमतलब है।

माइकेल फरेरा—भारत का कोई खिलाड़ी किसी व्यक्तिगत खेल म विश्व चम्पियन का पद प्राप्त कर सकता है इस बात पर आसानी से विश्वास नहीं होता, क्योंकि भारत के खेलकूद के पूरे इतिहास म दो चार खिलाड़िया से ज्यादा नाम नही ढूढ़े जा सकते।

1977 म मेलबोन म हुई विश्व बिलियड प्रतियोगिता के फाइनल म भारत के 40 वर्षीय माइकेल फरेरा ने इग्लड के बाब क्लोज को 2,683—2,564 से हराकर विश्व चम्पियन का पद प्राप्त किया था। इनसे पहले विल्सन जोस ने 1958 और 1964 म दो बार विश्व चम्पियन का पद प्राप्त किया था।

11 दिसम्बर, 1958 को बिलियड के खल म विश्व चैम्पियन का पद प्राप्त करने वाले विल्सन जोस पहले भारतीय थे।

बम्बई के 40 वर्षीय वकील फरेरा ने इससे पहले छह बार विश्व प्रतियोगिताओ मे भारत का प्रतिनिधित्व किया जिसमे तीन बार वह फाइनल तक पहुचे और दो बार उन्ह तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। उनका जन्म 1 अक्तूबर, 1938 को हुआ और 1969 म उन्होने विश्व एमेच्योर बिलियड चम्पियनशिप म भाग लिया। श्री फरेरा ही ऐसे खिलाडी थे जिन्होने उस खेल म वह एक गेम जीता जिसम इग्लड के चैम्पियन श्री जे० कारनेहन की हार हुई थी। उस समय उन्ह भारत का नम्बर-2 का खिलाडी माना जाता था। तब उन्ह दो विश्व चम्पियनशिप ट्राफिया प्रदान की गइ—एक रनर-अप की तथा दूसरी सबसे अच्छे ब्रेक की। उनके इसी खेल प्रदर्शन के आधार पर उन्हे 1970 म अर्जुन पुरस्कार से भी अलकृत किया गया।

माजिद, जहांगीर—जन्म 28 सितम्बर, 1946। भूतपूव भारतीय टेस्ट-खिलाडी डा० जहागीर खान का पुत्र। 1977 मे ग्लेमोरगन काउटी का कप्तान पद त्यागा। 1967 म ग्लेमोरगन के विरुद्ध लच से पहले (पाकिस्तान की ओर से) 89 मिनट मे अविजित 147 रन—जिसम 13 छक्के तथा 10 चौक्के। 37 टेस्टो मे 2651 रन।

माक स्पिटज—ओलम्पिक खेलो मे एक स्वण पदक प्राप्त करना बहुत बडी बात होती है। लेकिन कुछ खिलाडी ऐसे भी होते हैं जो एक ही ओलम्पिक मे ढेरा स्वण पदक प्राप्त कर लेते हैं। अमेरिका के 22 वर्षीय मार्क स्पिट्ज भी ऐसे ही खिलाडियो म से एक हैं। उन्होने म्यूनिख ओलम्पिक खेलो म एक साथ सात स्वण पदक प्राप्त किए। ओलम्पिक खेलो के इतिहास मे आज तक किसी भी खिलाडी ने एक साथ इतने स्वण पदक प्राप्त नही किए। इसलिए कहा जा सकता है कि उन्होने कभी न टूटने वाला रिकाड स्थापित कर दिया है। इससे पहले एक बार इटली के नेदो नाडी ने तलवार-

बाजी मे एक साथ पाच स्वण पदक प्राप्त किए थे। यो एक ही ओलम्पिक मे चार स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले छह खिलाडी और भी हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं फिनलैंड के पावो नूर्मी (1924, पेरिस ओलम्पिक), अमेरिका के नीग्रो खिलाडी जेसी ओवन्स (1936, बर्लिन ओलम्पिक), नीदरलैंड के फेनी ब्लकस कोयन (1948, ल दन ओलम्पिक), सोवियत सघ के बोरिस शैखलिन (1960, रोम ओलम्पिक), अमेरिका के डान शोलेण्डर (1964, तोक्यो ओलम्पिक) और चैकोस्लोवाकिया की खिलाडिन वीरा कास्लावस्का (1968, मैक्सिको ओलम्पिक)। वीरा ने जिम्नास्टिक की अलग-अलग प्रतियोगिताओ मे चार स्वण पदक प्राप्त किए थे।

म्यूनिख ओलम्पिक खेलो में माक स्पिट्ज ने 100 मीटर फ्री-स्टाइल, 100 मीटर बटरफ्लाई, 200 मीटर बटरफ्लाई और 200 मीटर फ्री-स्टाइल के अलावा 400 मीटर फ्री रिले, 800 मीटर फ्री रिले और 400 मीटर मेडली म स्वण पदक प्राप्त किए और इन सबमे नये विश्व रिकाड स्थापित किए। सबसे पहले उन्होने 200 मीटर बटरफ्लाई मे 2 मिनट 00 70 सकिंड का विश्व रिकाड स्थापित किया और उसके 40 मिनट बाद ही उ हे 400 मीटर फ्री-स्टाइल रिले मे भाग लेना पडा और उसमे भी उ होने विश्व रिकार्ड स्थापित किया।

मार्क स्पिटज का ज म 10 फरवरी, 1950 को मोडेस्टो (कलिफोर्निया) मे हुआ। 8 साल की उम्र मे ही उन्होने तरना शुरू कर दिया था। वह प्रतिदिन 75 मिनट तैरने का अभ्यास करते। उनके पिता आनल्ड स्पिटज यहूदी धम को मानने वाले हैं। 10 साल की उम्र मे माक स्पिटज ने हिब्रू की शिक्षा प्राप्त की। इस कारण तैराकी की तैयारी मे थोडी बाधा भी पडी। लेकिन एक बार उनके पिता ने यहूदी धमशास्त्री से कहा था—'भगवान भी विजेता को ही प्यार करता है।' यह बात माक स्पिट्ज के मन पर गहरा असर कर गई। 14 साल की उम्र मे वह राष्ट्रीय चम्पियन बन गए।

स्कूली शिक्षा समाप्त करने के बाद वह इण्डियेना विश्वविद्यालय मे दाखिल हुए। वहा उ ह अमेरिका के मशहूर प्रशिक्षक जेम्स कौंसिलमान ने तराकी के गुरुम त्र सिखाने शुरू किए। स्पिटज (कद 6 फुट और वजन 160 पौंड) एक के बाद एक कई नये-नये रिकाड स्थापित करने लगे। इण्डियेना विश्वविद्यालय म रहते हुए उन्होने 36 रिकाड स्थापित किए। 1967 मे उन्हें अमेरिका का सवश्रेष्ठ खिलाडी घोषित किया गया।

म्यूनिख ओलम्पिक खेलों म शानदार सफलता के बाद उन्होंने तैराकी की प्रतियोगिताओ से अवकाश ले लिया।

मारग्रेट कोट—आस्ट्रेलिया की लान टेनिस की मशहूर खिलाडिन

33 वर्षीया श्रीमती मारग्रेट कोट ने 1976 मे लान टेनिस से स यास ले लिया।

तीन बार विम्बलडन चम्पियन का गौरव प्राप्त करने वाली श्रीमती काट पहली बार 1963 म (तब वह कुमारी मारग्रेट स्मिथ थी) विम्बलडन चम्पियन बनी। 1961 म जब वह पहली बार विम्बलडन मे भाग लने गइ तब उनकी उम्र 18 वष की थी और वह क्वाटर फाइनल मे इग्लड की क्रिस्तीन ट्रूमैन स हार गइ। उसके अगले वप वह अमरिका की बिली जीन मोफिन (जो विवाह के बाद मे बिली जीन किग बन गइ) से हारी। तब उन्हे यो तो खेल की श्रेष्ठता के आधार पर पहले स्थान पर रखा गया था, लेकिन वह पहले ही राउड म बिली जीन से हार गइ। लेकिन अगले वप उ होने बिली जीन को फाइनल मे हराकर अपनी हार का बदला ले लिया। उसके बाद वह 1965 और 1970 म भी विम्बलडन चैम्पियन बनी। उन्होने कुल मिलाकर 80 बडी प्रतियोगिताए जीती। शायद ही किसी अन्य खिलाडिन को इतनी सफलता प्राप्त हुई हो। 1970 म उन्ह ग्रड स्लम का गौरव प्राप्त हुआ। तब उ होने आस्ट्रेलिया, अमेरिका, फ्रास, विम्बलडन की सभी प्रतियागिताए जीती थी। इससे पहले यह गौरव अमेरिका की स्वर्गीय मोरीन कोनोली ने प्राप्त किया था। कोट ने फ्रास की प्रतियोगिता चार बार, इटली की तीन बार, अमेरिका की पाच बार और आस्ट्रेलिया की 11 बार जीती और लान टेनिस से उन्हाने 5 लाख से भी अधिक आस्ट्रेलियाई डालर प्राप्त किए। 1967 मे उन्होने बेरी कोट से विवाह कर लिया। सर चाल्स कोट क सुपुत्र बरी कोट अक्सर श्रीमती कोट क साथ ही देश विदेश का दौरा करते रहते हैं।

मासिआनो, राकी—यो तो हर व्यक्ति के जीवन का अन्त मृत्यु ही है, मगर दुनिया म कुछ अभागे इ सान ऐसे भी होते है जिनका जन्म दिन ही मृत्यु-दिन बन जाता है। एस अभाग व्यक्तियो म ही एक थ राकी मासिआनो। राकी मासिआनो का ज म 1 सितम्बर, 1923 को इटली के एक मूल परिवार म हुआ जो बाद म अमरिका म आकर बस गया। बाल्यावस्था म ही राकी ने अपने पिता स यह कह दिया था कि मैं एक दिन विश्व का हैवी वेट चम्पियन बनूगा। भरी जवानी म उन्हे 'दुनिया का सबस शक्तिशाली निहत्था इ सान' कहा जाता था। लेकिन 1 सितम्बर, 1969 को ही उनकी एक विमान-दुघटना म मृत्यु हो गई।

आज से लगभग 24 साल पहल तक मुक्केबाजी की दुनिया म उनका एकछत्र राज्य था। 1952 से 1956 तक वह विश्व के अविजित हैवी वट चैम्पियन रहे। एक के बाद एक दुनिया के सभी मुक्केबाजो का चुनौतिया को स्वीकार करने वाले राकी मासिआनो को जब पाच वष तक दुनिया का कोई मुक्केबाज नही हरा सका तो उन्होने अविजित चम्पियन के रूप मे स यास भने

का निश्चय किया। उनका भाव शायद यही था कि मेरे मैदान से हट जाने के बाद दूसरो को प्रकाश म आने का अवसर मिलेगा। 23 सितम्बर, 1952 को उन्हे जो विश्व विजेता का पद प्राप्त हुआ उसे उन्होने 1956 तक बराबर सभाल कर रखा और अचानक 27 अप्रैल, 1956 को खेल से सन्यास लेने की घोषणा कर डाली। दूसरे मुक्केबाजो की तुलना मे मार्सिआनो की सबसे बडी विशेषता यह थी कि जहा दूसरे मुक्केबाज सन्यास (या अवकाश-ग्रहण) की घोषणा के बाद भी पैसो के प्रलोभन मे आ गए वहा वह इस प्रलोभन स कोसो दूर रहे और सन्यास की घोषणा के बाद फिर कभी रिंग म नही उतरे। उन्होंने अपने जीवनकाल मे 49 पेशेवर मुकाबलो मे भाग लिया और उनम स 43 मुकाबले 'नाक आउट' से जीते। अपनी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता की पराकाष्ठा पर पहुचने पर उन्होने दो कारणो से सन्यास लिया। एक तो यह कि वह अपनी पत्नी बारबरा और बेटी मेरी के लिए एक अच्छा-सा घर बनाना चाहते थे और दूसरे यह कि उनकी पीठ मे निरन्तर पीडा रहने लग गई थी।

उनके हाथो मे कितनी ताकत थी इसका अन्दाजा तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि रस निकालने वाली मशीन के बिना वह अपने हाथो से ही अनानास का रस निकाल लेते थे। किशोरावस्था मे राकी को फुटबाल और बेसबाल का बहुत शौक था। कहा जाता है कि एक बार बेसबाल के खेल मे ही जूली नामक एक बहुत तगडे लडके ने, जो अपने इलाके म मारपीट के लिए बहुत ही कुख्यात था, राकी से बेसबाल की गेंद छीन ली। इसपर दोनो मे काफी देर तक झगडा होता रहा और आखिर मे राकी ने जूली पर एक ऐसा घूसा रसीद किया कि वह एक घटे तक बेहोश ही पडा रहा।

राकी मार्सिआनो को अपना जीवन काफी सघर्ष म शुरू करना पडा। हाई स्कूल की शिक्षा समाप्त करने के तुरन्त बाद ही उन्हे कई छोटे मोटे धधे (खाइया खोदना, बतन साफ करना, ट्रक मे खलासी का काम करना, आदि-आदि) करने पडे। इसके बाद वह सेना म भरती हो गए। बचपन से ही मेहनत के काम (खाइया खोदना, बर्फ हटाना) करते-करते उनके हाथ इस्पात की तरह मजबूत हो गए थे। विचित्र बात तो यह थी कि उनकी भुजाओ की लम्बाई दूसरे मुक्केबाजो की तुलना मे थोडी छोटी थी। उनकी पहुच केवल 67 इच थी, जबकि कुछ हैवी वेट के चम्पियनो की पहुच 75 इच से 80 इच के बीच तक होती है। इसपर भी उन्होने कभी अपने मन म हीनभाव नही आने दिया। पहली बार 1948 मे जब उनका मुकाबला फ्लोरेडा के भारी-भरकम मुक्केबाज बाडे चासी से हुआ तो उन्होने विपक्षी के मुह पर दाए हाथ का जो घूसा जमाया उसीसे वह बेजान होकर धरती पर गिर पडा। उसके बाद राकी के प्रशिक्षक चार्ली गोल्डमैन ने उन्हे नियमित रूप से प्रशिक्षण देना

शुरू कर दिया। 1951 में उन्होंने रेक्स लेन नामक मुक्केबाज को हराया। इसी बीच राकी के संयोजकों ने उनकी लोकप्रियता की चरम सीमा तक पहुंचाने का एक सीधा और सरल उपाय खोज निकाला और उनका मुकाबला भूतपूर्व विश्व चम्पियन जो लुई, जो एक बार संन्यास की घोषणा के बाद फिर मैदान में आ गए थे, के साथ करवाने का निश्चय किया। राकी स्वयं भी बचपन में जो लुई को एक वीर पुरुष (हीरो) की भांति पूजा किया करते थे। 26 अक्तूबर, 1951 को यूयार्क में इन दोनों के बीच ऐतिहासिक मुकाबला हुआ। लुई एक तरह से ढलता हुआ और राकी उभरता हुआ सूर्य था। शुरू-शुरू में लुई का पलड़ा भारी रहा। राकी के पास केवल ताकत थी और जो लुई के पास अनुभव था। एक बार तो राकी के नाक से खून का फव्वारा छूट पड़ा, लेकिन राकी ने इसकी परवाह नहीं की और मुकाबला जारी रखा। पांचवें राउंड में राकी के एक मुक्के से लुई का सिर चकराने लगा। सातवें राउंड तक दोनों मुक्केबाज बराबर पर चलते रहे, लेकिन आठवें राउंड में पहुंचते ही लुई की शक्ति काफी क्षीण हो गई थी। इसी राउंड के अन्त में राकी ने लुई को नाक आउट कर दिया। संसार का सबसे बड़ा घूसेबाज राकी के सामने धराशायी हुआ पड़ा था। लगातार 12 वर्ष तक (1937 से 1949) तक विश्व विजेता कहलाने वाले मुक्केबाज को आखिर राकी के सामने हथियार डालने पड़े। जो लुई का मुक्केबाजी का जीवन एक प्रकार से उसी दिन से समाप्त हो गया, लेकिन राकी मार्सिआनो उसी दिन से महान मुक्केबाज कहा जाने लगा। उसके बाद राकी के प्रशंसकों और आलोचकों की संख्या में वृद्धि होने लगी। आलोचकों का कहना था कि राकी एकदम गंवार और अनाड़ी मुक्केबाज है और उलटे सीधे हाथ मारता है। खैर, 23 सितम्बर, 1952 को फिर उनका मुकाबला तत्कालीन हैवी वेट चम्पियन जर्सी जो वेल्काट के साथ फिलाडेल्फिया में हुआ। इस मुकाबले में भी लोगों की बड़ी दिलचस्पी थी। एक ओर अधेड़ उम्र का वल्काट और दूसरी ओर उभरती जवानी वाला राकी। वेल्काट तब तक राकी को अपना बच्चा समझता था। लेकिन जो लुई को हराने के बाद राकी का आत्मविश्वास और आत्मबल और भी बढ़ गया था। स्टेडियम में 50 हजार से अधिक दर्शक उपस्थित थे। पहले राउंड में वेल्काट का पलड़ा भारी रहा। वेल्काट ने राकी के जबड़े पर बाएं हाथ का मुक्का जमाया और वह धरती पर गिर गया। राकी के जीवन में यह ऐसा पहला अवसर था जब किसी मुक्केबाज ने उसे धरती पर गिराया था। लेकिन वेल्काट के होश हवास उस समय उड़ गए जब राकी चार की गिनती पर ही उठ खड़ा हुआ। दूसरे राउंड में राकी गुस्से से पागल हो उठा और उसने वेल्काट पर मुक्कों की बौछार शुरू कर दी। छठे राउंड में राकी

के एक मुक्के से वेल्काट की बाईं आख के ऊपर घाव हो गया। उसके बाद वेल्काट ने गुस्से मे इतने जोर से घूसा मारा कि राकी का माथा फट गया। दोनो मुक्केबाज खून से लथपथ थे। बारहवें राउड तक पहुचते-पहुचते ऐसा लग रहा था जसे वल्काट अको के आधार पर राकी को हरा देगा। इसी बीच राकी के समथको ने चिल्लाना शुरू किया—'राकी जल्दी कुछ चमत्कार दिखाओ, वरना हार जाओगे।'

तेरहवा राउड शुरू हुआ। राकी ने हाथ उठाया और वेल्काट बचाव के लिए रस्सी के पास पहुच गया। फिर रस्सी की सहायता से बिजली की तरह राकी पर झपटा, लेकिन राकी का भयकर दाया हाथ उठ चुका था और राकी ने अपनी पूरी शक्ति के साथ अपने प्रतिद्वन्द्वी की खुली ठोडी पर मुक्का जमा दिया। मुकाबला वही समाप्त हो गया। वेल्काट ऐसे धरती पर लट गया जैसे उसमे कोई जान ही न हो। रैफरी ने दस तक गिनना शुरू कर दिया, लेकिन वह तो हिल भी नही पा रहा था। इसी बीच राकी ने खून से सनी अपनी दाईं मुट्ठी को चूम लिया। अब राकी मार्सिआनो हैवी वेट का विश्व चैम्पियन बन गया था। उस समय लोगो ने एक स्वर से कहा कि राकी का प्रहार जैक डम्पसी और जो लुई से भी जबदस्त है।

आठ महीने बाद शिकागो म एक बार फिर राकी और वाल्काट का आमना-सामना हुआ। लोगो ने सोचा था कि मुकाबला काफी जोरदार और शानदार रहेगा, लेकिन मुकाबला एकतरफा ही रहा और राकी ने पहले ही राउड मे वाल्काट को लिटा दिया। जैसाकि अक्सर होता है, विश्व विजेता का पद प्राप्त करने के बाद उसे सुरक्षित रखने के लिए और ज्यादा साधना करनी पडती है। दुनिया के मुक्केबाजो ने एक-एक करके राकी को चुनौतिया देनी शुरू कर दी, लेकिन राकी ने एक एक करके सबको ठिकाने लगाना शुरू कर दिया। राकी के जीवन का अतिम मुकाबला 21 सितम्बर, 1955 को लाइट हैवी वेट चैम्पियन आर्ची मूर के साथ न्यूयाक मे हुआ। जिसमे नवे राउड म राकी ने उसे भी नाक आउट कर दिया। अपने विश्व विजेता के पद को बरकरार रखने के लिए राकी ने 49 चुनौतिया स्वीकार की और अन्त तक अविजित ही रहे। राकी एकमात्र ऐसे मुक्केबाज हैं जिन्होने अपराजित रहकर रिंग से अवकाश ग्रहण किया।

मालवा—फ्लाई वेट वग के भारत के नामवर पहलवान मालवा का जन्म 1946 मे दिल्ली म हुआ। उन्होने [illegible] [illegible]नी काफी ख्याति अर्जित कर ली है। 1961 म [illegible] [illegible]ई राष्ट्री[illegible] मे उन्हे अपने वग का राष्ट्रीय चैम्पि[illegible] [illegible] वष योकोहामा (जापान) मे हुई [illegible] [illegible] प्रति[illegible]

किया। उसके बाद 1962 म जबलपुर म हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं म दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। 1959 म वह भारत-श्रीलंका प्रतियोगिता म भाग लेने के लिए श्रीलंका गए, वहां उन्ह मोस्कीटो वेट का सवश्रेष्ठ पहलवान घोषित किया गया। अगले वष ही दिल्ली म भारत-श्रीलंका के पहलवानों की कुश्ती हुई, जिसम उन्ह बटम वेट मे पहला स्थान प्राप्त हुआ। उनकी ताकत, चुस्ती और फुर्ती देखते ही बनती है। 1962 म जकार्ता मे हुए एशियाई खेलो मे उन्होंने फ्री स्टाइल और ग्रीको रोमन स्टाइल कुश्तियो मे भाग लिया जिसमे उन्ह ग्रीको रोमन म स्वण पदक और फ्री-स्टाइल कुश्ती म कास्य पदक प्राप्त हुआ। 1966 म वह राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं म फिर राष्ट्रीय चम्पियन बने।

मिल्खा सिंह—भारतीय दौडाकों मे जितनी लोकप्रियता मिल्खा सिंह को प्राप्त हुई, उतनी और किसी अन्य दौडाक को प्राप्त नही हुई। सच तो यह है कि भाग-दौड के क्षेत्र म आज भारत को जो भी स्थान प्राप्त है उसका श्रेय मिल्खा सिंह को है। उन्ह उडाकू सिख (फ्लाइंग सिख) भी कहा जाता है।

भारत विभाजन से पहले मिल्खा सिंह लायलपुर म रहते थे। 1947 म जब वह अपने परिवार के अन्य सदस्यो के साथ दिल्ली आए तब उनकी उम्र केवल 12 वष की ही थी। मिल्खा सिंह के परिवार के अधिकतर लोग सेना म भरती होते आए थे। उनके बडे भाई माखन सिंह सेना मे हवलदार थे। उन्हींके पास रहकर मिल्खा सिंह ने नवी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। 1950 म वह कारो और ट्रको की मरम्मत करने वाली एक मामूली सी दुकान मे काम करने लगे। लेकिन इस काम म मिल्खा का मन नहीं लगा। उनके भाई ने 1953 म मिल्खा सिंह को सनिक के रूप मे भरती करा दिया। यह एक सयोग की ही बात थी कि जिस यूनिट म मिल्खा भरती हुए उसकी बास्केट बाल, हाकी और फुटबाल की अच्छी खासी टीमे थी। वैसे भी खेलकूद के इतिहास मे सेना की टीमो और सेना के खिलाडियों का महत्वपूण स्थान है।

खेलकूद के प्रति अपने साथियो का शौक और रुझान देखकर मिल्खा सिंह भी खेलो म भाग लेने लगे। लेकिन मिल्खा की रुचि अन्य खेलो की अपेक्षा भागने दौडने म अधिक थी। पहले-पहल वह लम्बे फासले की दौडो म हिस्सा लेने लगे। एक बार वह पाच मील की दौड प्रतियोगिता मे दूसरे स्थान पर रहे। लेकिन यूनिट के प्रशिक्षको ने मिल्खा को यह सुझाव दिया कि उन्हे छोटे फासले की दौडो म हिस्सा लेना चाहिए और सारा ध्यान 400 मीटर की दौड पर ही केंद्रित करना चाहिए। मिल्खा सिंह ने अपने प्रशिक्षको की यह बात मान ली। और वह दिन रात एक करके 400 मीटर की दौड का अभ्यास करने लगे।

1956 मे उन्होने मेलबोन ओलम्पिक मे हिस्सा लिया, मगर वहा उनका प्रदश । निराशाजनक रहा। वहा उन्होने 400 मीटर की दौड को 48 9 सकिड मे पूरा किया। उनकी इस असफलता का एक कारण यह भी था कि उह अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे भाग लेने का कोई विशेष अनुभव नही था। लेकिन मिल्खा निराश नही हुए। मेलबोन ओलम्पिक मे 400 मीटर के विश्व-विजेता अमेरिकी दौडाक जैकिन्स ने उहे कुछ मूल्यवान सुझाव दिए और मिल्खा ने उनपर पूरी तरह अमल करना शुरू किया।

उसके बाद भारत आकर मिल्खा ने फिर कमाल दिखाना शुरू कर दिया। 1957 मे बगलौर मे हुई 22वी राष्ट्रीय एथलेटिक प्रतियोगिता म उन्होने 400 मीटर की दौड को 47 5 सकिड मे परा करके नया राष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित किया।

1958 मे तोक्यो मे हुई तीसरी एशियाई खेल प्रतियोगिता मे उन्होने इस 400 मीटर के फासले को 47 0 सैकिड मे पूरा करके एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। 200 मीटर का फासला उन्होने 21 6 सैकिड मे तय किया। और इस प्रकार इन दोनो फासलो की प्रतियोगिताओ मे उन्हें प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। उसी वष कार्डिफ (वेल्स) मे हुए पाचवें राष्ट्रमण्डलीय खेलो म भी उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया और 440 गज की दौड को 46 6 सैकिड मे पूरा किया।

इस प्रकार मिल्खा सिंह ने अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र मे भी काफी ख्याति अर्जित कर ली। 1959 म उनकी इन सेवाओ के लिए उन्हे पदमश्री की उपाधि से अलकृत किया गया।

1960 मे जब उन्होने रोम ओलम्पिक खेलो मे हिस्सा लिया तब हर भारतवासी यह उम्मीद लगाए बैठा था कि वह रोम मे कोई न कोई पदक अवश्य जीत लाएगे। मिल्खा सिंह भी पूरे उत्साह मे थे। लेकिन तकदीर ने उनका साथ नही दिया और अपनी हर मुमकिन कोशिश के बावजूद भी वह अफ्रीकी प्रतिद्वन्द्वी स्पेन्स को नही हरा सके। अन्तर केवल एक गज का ही रहा। यानी यदि मिल्खा केवल एक गज से पीछे न रहते तो कास्य पदक अवश्य जीत जाते।

रोम म मिल्खा का प्रदशन सवश्रेष्ठ था। इसका एकमात्र प्रमाण यह है कि रोम मे उन्होने इस फासले को तय करने मे अपने जीवन काल म सबसे कम समय लगाया। यह उनका दुर्भाग्य ही था कि उनके प्रतिद्वन्द्वियों ने इस फासले को जितने कम म दौडकर दिखाया, वह सचमुच आश्चर्यजनक ही था (ओटिस डेविस 44 9 सैकिड, काल काफमैन 44 9 सैकिड, और स्पेन्स 45 5 सैकिड)। लेकिन मिल्खा सिंह की असफलता के लिए उन्हें किसी प्रकार

दोषी नही ठहराया जा सकता। मिल्खा सिंह अपनी ओर से पूरे वेग के साथ दौड़े और वह चौथे स्थान पर रहे।

उसके बाद मिल्खा सिंह ने दौड धूप की दुनिया से सन्यास लेने की घोषणा की और एक प्रशिक्षक बनकर सारी शक्ति से नये और नवयुवक खिलाडियो को तैयार करने मे जुट गए। इस समय वह पजाब खेलकूद विभाग के सयुक्त निदेशक के पद पर कार्य कर रहे है।

मिहिर सेन—एक जमाना था जब इग्लिश चनल (इग्लड और फ्रास के बीच का 21 मील लम्बा सागर) तैरकर पार करना एक तरह से असम्भव काम माना जाता था और एक जमाना यह है कि आए दिन यह समाचार सुनने को मिलते हैं कि अमुक-अमुक तैराक ने इग्लिश चैनल पार कर लिया। 1925 से लेकर 1963 के आरम्भ तक जिन 90 तैराको ने इग्लिश चनल पार करने का अपना स्वप्न साकार किया उनम चार भारतीय तराक भी है। इनके नाम हैं मिहिर सेन, आरती साहा, विमलचन्द दास और नितीन्द्र-नारायण राय। मिहिर सेन इग्लिश चैनल पार करने वाले पहले भारतीय और एशियाई विजेता हैं। मिहिर सेन उन तैराका मे नही हैं जो केवल इग्लिश चैनल पार करके ही सन्तुष्ट हो जाते है और मन ही मन यह मान लेते हैं कि अब जीवन मे उनको और कुछ नही करना है। मिहिर सेन ने एक के बाद एक सात समुद्र पार करने का सकल्प किया और उस सकल्प को पूरा करके दिखाया। तराकी के क्षेत्र म मिहिर सेन ने जो साहस, शौर्य और पराक्रम दिखाया है उससे हमारे देश क नवयुवक हमेशा प्रेरणा ग्रहण करते रहेगे।

इग्लिश चैनल पार करने के आठ वर्ष बाद उन्होने पाक-जल-सन्धि (श्रीलका और भारत के बीच का सागर, जिसे पाक जलडमरूमध्य भी कहते हैं) को तैरकर पार करने का फसला किया। पाक-जल सधि की दूरी लगभग 22 मील है परन्तु पूर्णिमा और समुद्र की तेज लहरो के कारण उन्हें 30 मील से भी अधिक की दूरी तय करनी पडी। इस दूरी को उन्होने 25 घटे और 36 मिनट म पूरा किया।

7 अप्रैल को मडापम के निवासियो ने मिहिर सेन का सावजनिक स्वागत किया। इस अवसर पर उन्हे मैरिन बायोलाजिकल एसोसिएशन आफ इडिया की ओर से 'सेतु कप' (जिसपर हनुमान द्वारा सेतु पार किए जाने के प्रतीक रूप मे हनुमान जी का चित्र अकित था) प्रदान किया गया।

पाक जलडमरूमध्य पार करने के बाद मिहिर सेन ने यह दावा किया कि वह इस सागर को पार करने वाले दुनिया के पहले तैराक हैं। उन्होंने कहा—"इसके पहले, लका के दो तराकों द्वारा प्रयास किए जाने की बात

मुझे मालूम है, पर उन्होंने पाक जलडमरूमध्य नहीं, वरन पाक खाड़ी को पार किया था।"

1966 म उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया। इससे पहले 1959 म उन्हें पद्मश्री की उपाधि से भी विभूषित किया गया था। मिहिर सेन के अद्भुत शौर्य और साहस की कहानी ने भारतीय खेलकूद के इतिहास को चार चांद लगा दिए हैं।

मिहिर सेन की उपलब्धिया एक झलक

तारीख	समुद्र का नाम	दूरी	समय
27 दिसम्बर, 1958	इंग्लिश चैनल	21 मील	14 घ० 45 मि०
5 6 अप्रैल, 1966	पाक जलडमरूमध्य	22 मील	25 घ० 36 मि०
24 अगस्त, 1966	जिब्राल्टर सागर	25 मील	8 घ० 1 मि०
21 सितम्बर, 1966	दारेदानयाल	40 मील	13 घं० 55 मि०
16 सितम्बर, 1966	बासफोरस	16 मील	4 घं०
29 30, अक्तूबर, 1966	पानामा नहर	50 मील	35 घ० 20 मि०

मुक्केबाजी—मुक्केबाजी शायद विश्व की सबसे पुरानी खेल प्रतियोगिता है। खेल के जानकारो का कहना है कि जबसे आदमी दुनिया मे आया, तब से ही वह मुक्केबाजी के जरिए जानवरो और दुश्मनो से अपनी रक्षा करता आ रहा है। ईसा से 4000 वर्ष पहले, मिस्र के सैनिक मुक्केबाजी म निपुण होते थे, यह प्राचीन चित्रों से मालूम पडता है। मिस्र से मुक्केबाजी की कला यूनान ने सीखी। यूनान के प्राचीन ओलम्पिक खेलो म मुक्केबाजी की प्रतियोगिता भी होती थी। यह पुराने बीसवें ओलम्पिक खेलो से शुरू हुई। इसम मुक्केबाज जिस ग्लव' (दस्ताना) को पहनकर मुक्केबाजी करते थे, उसमे नुकीली कीलें लगी होती थी, जिनकी वजह से कभी कभी मुक्केबाजो की जानें भी चली जाती थीं।

आगे चलकर, पुराने ओलम्पिक खेलो म पक्रेशम' नाम की एक बेरहम प्रतियोगिता शामिल हुई, जिसमे मुक्केबाजी के अलावा कुश्ती भी शामिल थी। इस प्रतियोगिता ने भी न जान कितने खिलाडियो की जानें ली। पर क्रूर होने के बावजूद यह प्रतियोगिता प्राचीन यूनान मे इतनी लोकप्रिय थी कि लडके भी उसमे भाग लेते थे। यूनान से यह प्रतियोगिता रोम मे फली और रोम से सारी दुनिया म।

तब से अब तक मुक्केबाजी की प्रतियोगिता मे कोई खास तब्दीली नही हुई है। आज भी मुक्केबाज पहले के मुक्केबाजो की तरह चमडे के दस्ताने

दुनिया म लोकप्रिय बना दिया था। इसी कारण 1920 के ओलम्पिक खेलो की मुक्केबाजी प्रतियोगिता मे मुकाबला काफी तगडा रहा। ब्रिटेन के मुक्केबाज पहले नम्बर पर, और अमेरिका के मुक्केबाज दूसरे नम्बर पर आए। 1924 के ओलम्पिक खेलो मे 29 देशो के मुक्केबाजो ने भाग लिया। इस बार जीतने वाले मुक्केबाजो का प्रदर्शन का स्तर पहले ओलम्पिक खेलो से कही अच्छा था। ग्यारह देशो—अमेरिका, ब्रिटेन, डेनमार्क, अर्जेंटीना, हालड, बेल्जियम, नार्वे, स्वीडन, दक्षिण अफ्रीका, फ्रास और कैनाडा के मुक्केबाजो ने अलग अलग वग की प्रतियोगिताओ मे पहले से तीसरा स्थान तक पाया।

1928 के ओलम्पिक खेलो म मुक्केबाजी की प्रतियोगिताओ म भाग लेने वाले देशो की सख्या बढकर तीस हो गई। इस बार इटली और अर्जेंटीना के मुक्केबाजो का बोलबाला रहा। 1932 के ओलम्पिक खेलों मे भाग लेने वाले मुक्केबाज ही अधिकाश प्रतियोगिताओ पर छाए रहे। 1936 के ओलम्पिक खेलो म भाग लेने के लिए फिर अनेक देशो के मुक्केबाज बर्लिन आए, पर जीत जमनी के मुक्केबाजो की ही रही। उन्होंने ही ज्यादा पदक जीते।

लडाई की वजह से ओलम्पिक मेल, बारह साल बाद, 1942 मे लन्दन म हुए। इस बार भी मुक्केबाजी का स्तर काफी ऊचा रहा और मुक्केबाजो की सख्या भी ज्यादा थी। इटली और दक्षिण अफ्रीका के मुक्केबाजो ने सबसे ज्यादा पदक जीते।

1952 म मुक्केबाजी प्रतियोगिताओ मे भाग लेने वाले देशो की सख्या सबसे अधिक थी। इस बार अमेरिकी मुक्केबाजो ने अन्य देशो के मुक्केबाजो को अपने ऊपर हावी नही होने दिया और अधिकाश पदक जीतकर अपनी सर्वोच्चता फिर कायम की। मिडिल वेट मे जीतने वाले मुक्केबाज फ्लायड पटरसन आगे चलकर दुनिया के सबसे कम उम्र के पेशेवर हैवी वेट मुक्केबाज बने। वे दुनिया के प्रसिद्ध मुक्केबाजों म से एक हैं।

1956 के ओलम्पिक खेलो म मुक्केबाजी का स्तर पहले की अपेक्षा काफी नीचा रहा। इस बार रूस के मुक्केबाजों ने सवश्रेष्ठ प्रदर्शन करके सबसे अधिक पदक जीते।

1960 म रोम म हुए ओलम्पिक खेला म 54 देशों के मुक्केबाजों ने भाग लिया। इससे जाहिर है कि यह प्रतियोगिता कितनी अधिक लोकप्रिय हो चुकी है। पर बदकिस्मती से इस बार भी मुक्केबाजी का प्रदर्शन-स्तर काफी नीचा रहा। जजो ने भी कई अजीब फैसले किए। पर कई मुक्केबाजो ने, जिनम अमेरिका के कैसियस क्ले (मोहम्मद अली) और इटली के बेनो बनोवो

मुख्य थे, शानदार प्रदर्शन किया। इटली के मुक्केबाजो ने सबसे अधिक पदक जीते। 1964 और 1958 के ओलम्पिक खेलो म सबसे शानदार प्रदर्शन हगरी के बोरिस हागुलिन का रहा।

ओलम्पिक खेला के इतिहास म हगरी के हैचले पाप अकेले मुक्केबाज हैं, जिन्होने लाइट वेल्टर वेट, लाइट मिडिल वेट और मिडिल वेट प्रतियोगिताए जीती हैं। ग्रेट ब्रिटेन के हैरी मालिन ने 1920 और 1924 म मिडिल वेट प्रतियोगिताए जीती।

मुक्केबाजी का आमतौर पर बेरहम खेल प्रतियोगिता माना जाता है, पर अच्छे ढग से की गई मुक्केबाजी आदमी को ताकतवर तो बनाती ही है, उसके चरित्र निर्माण मे भी सहायक होता है।

भारत म मुक्केबाजी के आरम्भ का लिखित प्रमाण 1884 से मिलता है, जिसकी पहली प्रतियोगिता का आयोजन कलकत्ता मे किया गया था तथा बगाल के श्री पी० एल० राय कैम्ब्रिज बाक्सिग ब्ल्यू तथा भारतीय चम्पियन बने थे। 1950 म भारतीय मुक्केबाजी फडरेशन की ओर से बम्बई के बोरबन स्टेडियम मे प्रथम भारतीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता का आयाजन किया गया तथा 1948 म, फडरेशन प्रतियोगिता से पूव भारतीय मुक्केबाजो ने प्रथम बार ओलम्पिक खेलो म भाग लिया था। 1952 म दूसरी बार भारतीय मुक्केबाज पुन ओलम्पिक खेलो मे गए, किन्तु दोनो बार ही इन्ह खाली हाथ लौटना पडा। तत्पश्चात् 1952 से 1972 तक पूरे 20 वष तक भारत ओलम्पिक खेला की मुक्केबाजी म भाग न ले सका, जिसका कारण भारतीय बाक्सिग सघ का ढीलापन बताया जाता है।

एशियाई मुक्केबाजी—एशियन मुक्केबाजी प्रतियोगिता 1963 मे आरम्भ हुई तथा भारत ने प्रथम बार 1971 में चौथी एशियन मुक्केबाजी स्पर्धा म भाग लिया। जिसका आयोजन तेहरान मे किया गया था। इसमे भारतीयो ने दो स्वण, एक रजत तथा एक कास्य पदक प्राप्त किया था और कुल सात खिलाडियो ने भाग लिया था।

1973 मे बैंकाक म हुई प्रतियोगिता मे मेहताब सिह ने एक स्वण तथा दो रजत पदक प्राप्त किए थे। सातवी प्रतियोगिता म—जिसका आयोजन 1975 म हेलसिकी नगर मे किया गया था—भारत के पाच खिलाडियो ने भाग लिया था तथा एक रजत और एक कास्य पदक प्राप्त किया था।

पूर्व इतिहास से पता चलता है कि भारतीय मुक्केबाजी दल की पदक प्राप्त करने की क्षमता, श्री ओमप्रकाश भारद्वाज जस निपुण प्रशिक्षक होने के बावजूद भी घटती चली गई तथा 1973 म स्वण पदक प्राप्त करने के बाद

1975 मे कास्य तथा रजत पदक पर आ गए।

विश्व हैवी वेट मुक्केबाजी चैम्पियन

1882	जान सुलीवन	1949	एजाड चाल्स
1892	जेम्स कोरबेट	1951	जर्सी जो वाल्काट
1897	बाब फिटसीमोस	1952	राकी मासियानो
1899	जेम्स जेफ्रीज़	1956	फ्लायड पटसन
1905	माविन हाट	1959	इन्गमर जान्सन
1906	टामी ब स	1960	फ्लायड पटसन
1908	जैक जा सन	1962	सानी लिस्टन
1915	जेस विलाड	1974	कैसियस क्ले
1919	जैक डेम्पसी		(मोहम्मद अली)
1926	जेने टनी	1967 69	विवादपूर्ण
1930	मक्स श्मेलिंग	1970	जो फ्रेज़ियर
1932	जक शार्की	1973	जाज फोरमन
1933	प्राइमी कारनेरा	1974	मोहम्मद अली
1934	मक्स बेएर	1978	लियोन स्पिन्क्स
1935	जेम्म ब्रैडोक	1978	मोहम्मद अली
1937	जो लुईस		

(उपर्युक्त चैम्पियनो मे सिफ जेने टनी और राकी मासियानो ही एसे हैं जो बिना हारे रिटायर हुए है।)

मुश्ताक अली—भारत के भूतपूव टेस्ट मैच खिलाडी मुश्ताक अली का ज म 16 दिसम्बर, 1914 को हुआ। शुरू शुरू म उन्होने इ दौर की आर से खेलना शुरू किया। इ दौर मे ही उ होने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। मुश्ताक अली के खिलाडी जीवन की सबसे अनोखी विशपता यह थी कि उ होंने अपने क्रिकेट मे मैच खेलने की शुरुआत ही टेस्ट मैच खेल कर की। उन्हें 1933-34 मे कलकत्ता म भारत और इग्लड के बीच टेस्ट मे शामिल किया गया। मुश्ताक अली कुल 11 टेस्ट खेले हैं और उनम उनकी सवश्रेष्ठ रन सख्या 112 थी।

मुश्ताक अली उन इने गिने भारतीय खिलाडियो म से हैं, जि हे मेलबोर्न क्रिकेट क्लब की सम्माननीय आजीवन सदस्यता प्रदान की गई है। 1936 म इग्लैंड के दौरे पर भी उनका प्रदशन बहुत शानदार रहा। मानचेस्टर टेस्ट म मुश्ताक और मर्चेंट ने पारी शुरू की और अपने जीवन का विशालतम स्कोर बनाया। उसकी सफलता को यदि सख्या की दृष्टि से भी आका जाए तो वह

भारतीय क्रिकेट के स्मरणीय अवसरो म से एक है। उस समय इग्लैंड के पास लारवुड जसे तेज गेंददाज थे। लेकिन मुश्ताक हमेशा सावधानी, निडरता और दिलचस्पी स खेलते। 1936 के ओल्डट्रेफड-टेस्ट में माकड के साथ पहले विकेट के लिए 203 रन बनाए जो विदेशो मे भारत का रिकार्ड था। 11 टेस्ट खेले और 612 रन दनाए।

1963 म उन्ह पद्मश्री से भी अलकृत किया गया।

मुश्ताक मोहम्मद—दाए हाथ के बल्लेबाज लेग, ब्रेक और गुगली गेंदबाज। 22 नवम्बर, 1943 को जूनागढ़ मे जन्म।

2 जनवरी, 1957 को प्रथम श्रेणी की क्रिकेट म प्रवेश किया। उस समय उम्र सिफ 13 साल 41 दिन थी। पहला प्रथम श्रेणी मैच कराची व्हाइट की तरफ से हैदराबाद (सि ध) के विरुद्ध हैदराबाद में खेला और 87 रन बनाए जबकि 28 रन देकर 5 विकट हथियाए।

26 माच 1959 को टेस्ट क्रिकेट में प्रवेश किया। आयु उस समय 15 वष 124 दिन थी। टेस्ट का प्रारम्भ लाहौर में वेस्टइडीज के विरुद्ध हुआ 14 और 4 रन बनाए, जबकि 34 रन देकर एक भी विकट पाने में असफल रहा।

मुश्ताक मोहम्मद को टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने वाला सबसे कम उम्र का नौजवान खिलाडी माना जाता है।

12 फरवरी, 1961 को टेस्ट क्रिकेट के इतिहास मे सबसे कम उम्र का शतकीय प्रहार करने वाला खिलाडी बना। यह शतक उसने दिल्ली टेस्ट में भारत के विरुद्ध बनाया।

1964 मं इग्लड की काउटी चम्पियनशिप में नार्थम्पटनशायर की टीम में शामिल हुआ और 1966 से काउटी चम्पियनशिप में खेलने की शुरुआत की। 26 अगस्त, 1967 को एक हजार रन अपने 17वें टेस्ट में इग्लैंड के खिलाफ ओवल टेस्ट में पूरे किए।

10 फरवरी, 1973 को अपने टेस्ट जीवन का सर्वोच्च स्कोर 201 रन (अपराजित) और 49 रन देकर 5 विकेट भी हासिल किए। यह करिश्मा उसने 30वें टेस्ट में दिखलाया। 18 माच, 1973 को टेस्ट क्रिकेट में 2 हजार रन पूरे किए। यह उपलब्धि उसने इग्लैंड के खिलाफ 32वें टेस्ट में हैदराबाद ग्राउड पर अर्जित की।

1975 में नाथम्पटनशायर का कप्तान नियुक्त हुआ, जिसके नेतृत्व से बेदी ने, उसके टीम के सदस्य के रूप म, इग्लड की काउटी चैम्पियनशिप में खेला।

9 अक्तूबर 1976 को पहली बार पाकिस्तान का कप्तान नियुक्त हुआ। पहला टेस्ट उसने अपनी कप्तानी में न्यूजीलैंड के विरुद्ध लाहौर में खेला और पाकिस्तान को विजय दिलाई।

5 मार्च, 1977 को टेस्ट क्रिकेट मे 150वी विकेट की उपलब्धि के साथ वेस्टइडीज के शिलिंग फोर्ड को पोर्ट आफ स्पेन के टेस्ट म आउट किया। यह उसका 46वा टेस्ट था।

6 मार्च, 1977 को उसने टेस्ट क्रिकेट मे अपने 3 हजार रन पूरे किए। यह रन सख्या उसने वेस्टइडीज के विरुद्ध पोर्ट आफ स्पेन टेस्ट म प्राप्त की। 6 अप्रल, 1977 को 121 और 56 रन बनाए जबकि 28 रन पर 5 और 69 रन देकर 3 विकेट लेकर अपने टेस्ट जीवन का सर्वोच्च प्रदर्शन किया। यह करिश्मा उसने वेस्टइडीज के विरुद्ध पोर्ट आफ स्पेन मे किया।

1978 मे पाकिस्तान की टीम का नेतृत्व किया और भारत के विरुद्ध तीन टेस्ट मैचो की शृखला 2 0 से जीत ली।

मथ्यू वेब—जिस तैराक ने सबसे पहले इग्लिश चैनल को पार किया था उसका नाम कप्तान मैथ्यू वेब था।

वेब का जन्म 1848 को शिरोपशायर मे हुआ। उसके पिता एक डाक्टर थे। जब वह 10 साल का ही था तो उसने अपने भाई को सेवन नदी म डूबते हुए बचाया था। उसके बाद उसने एक बार अपने एक साथी तराक को और एक मल्लाह को भी डूबने से बचाया था। उसके इस साहस के कारण ही उसे एक समुद्री जहाज मे पहले तो मामूली सिपाही की नौकरी मिली, पर बाद में उसे जहाज का कप्तान बना दिया गया। वेब को जहाज चलाने मे इतना मजा नही आता था जितना कि समुद्र में छलाग लगाने मे। अचानक एक दिन उसके मन मे इग्लिश चनल पार करने की धुन सवार हो गई। पहले तो उसने 12 अगस्त, 1875 को इग्लिश चैनल मे छलाग लगाई, लेकिन सात मील की दूरी पार करने के बाद ही तूफानी लहरो ने उसे घेर लिया और उसने अपना इरादा बदल दिया।

23 अगस्त, 1875 को जब वह दोबारा इग्लिश चनल मे छलाग लगाने के लिए तयार हुए तो कुछ लोगो ने कहा कि क्यो अपनी जान पर खेलते हो।

लेकिन इस बार वब न मन ही मन यह ठान लिया था कि इस बार या तो वे इग्लिश चनल पार करके ही रहेगे या फिर सदा-सदा के लिए समुद्र म ही समा जाएगे। दूसरी कोशिश म भी उन्ह काफी दिक्कतो का सामना करना पडा। समुद्र की तेज लहरें, मछलिया, जहरीले साप और कुछ अन्य चिपले जीव-जतुओ के कारण उन्हे काफी परेशानिया उठानी पडी। जब मजिल सिर्फ एक मील दूर रह गई तो उनकी शारीरिक शक्ति जवाब दे गई। लेकिन मन की शक्ति शरीर की शक्ति स कही ज्यादा होती है। और व इग्लिश चैनल पार करन म सफल हुए। उन्होंने इग्लड और फ्रांस की ओर का 21 मील का

सागर 21 घटे और 45 मिनट म तय किया । उस समय उनकी उम्र 27 वष की थी ।

लेकिन विचित्र सयोग की वात है कि पहली वार इग्लिश चनल पार करने वाला साहसी तराक वव ज्यादा देर तक जिंदा नही रह सका । 1883 म नियाग्रा से सात मील दूर एक जलप्रपात म तैरते समय उनकी मत्यु हो गई । जव पार करने पर आए तो सागर (इग्लिश चनल) पार कर गए और जव डूबने पर आए तो एक जलप्रपात म तरत हुए डूब गए । दूसरा को डूबने से बचाने वाला मथ्यू वव जव स्वय डूबन लगा तो उसको बचाने क लिए वहा कोई नही आया ।

लेकिन मैथ्यू वेब डूबा कहा ? वह तो डूबकर भी अमर हो गया ।

मराथन दौड—ओलम्पिक खेला म मैराथन दौड का एक विशेष महत्व है । इस दौड म दौडाक को 26 माल 385 गज की दूरी पार करनी होती है । इस दौड म खिलाडी के दमखम, धैय, शक्ति और सकल्प की असली परीक्षा हो जाती है । दुनिया के खेल प्रमियो की इस दौड म सबसे ज्यादा दिलचस्पी होती है । ओलम्पिक खेलो के इतिहास म इस दौड के साथ कई हषपूण, शोकपूण और विचित्र घटनाए जुडी हुई हैं ।

यह दौड एक यूनानी सिपाही की स्मति म आयोजित की जाती है । 490 ई० पूव की बात है । फारस के एक शासक ने यूनान पर हमला कर दिया । उसके पास बहुत ज्यादा सनिक थे । एथे स से 26 मील दूर मराथन नामक स्थान पर उसने अपना पडाव डाला और एथे स पर आक्रमण की योजना बनाने लगा । एथेन्स के सिपाहियो की सख्या सीमित थी । एथेन्स की सेना का नेतृत्व मिल्टीडिएस कर रहे थे । उन्होने एथे स के ओलम्पिक चम्पियन फेइडीपीड्स को दूत क रूप मे स्पार्टा भेजा । फेइडीपीड्स पहाडो को लाघता और नदिया को पार करता हुआ मदद के लिए स्पार्टा पहुचा । स्पार्टा ने एथेन्स की सहायता करना स्वीकार कर लिया ।

इधर एथेन्स के हर घर और बाजार म लोग सिर झुकाए खडे थे । व युद्ध क समाचार जानने के लिए बचैन हो रहे थे । सेनापति मिल्टीडिएस ने बडी चालाकी से दुश्मना पर हमला बोल दिया और उनके लगभग 20 हजार सनिको का मार डाला । इससे डेरियस की फौज के पाव उखड गए और वह बची खुची सेना लकर वहा से भाग खडा हुआ । जब यूनान की विजय पक्की हो गई तो सेनापति मिल्टीडिएस ने अपने यूनानी सनिक दौडाक फेइडीपीड्स को यह आदेश दिया कि वह दौडकर एथे स जाए और नगरवासियो को यूनान की विजय का शुभ समाचार सुनाए । यद्यपि फेइडीपीड्स पहले ही बहुत थका हुआ था, फिर भी वह आदेश पात ही एथेन्स की ओर रवाना हो गया । इधर

थकावट और उधर विजय का उत्साह। वह बिना कही रुके दौडता रहा। उसके होठ झुलस गए थे, पाव खून से लथपथ हो गए थे, लेकिन वह रुका कही भी नही। एक बार वह गिरने ही वाला था कि उसे एथे`स की चारदिवारी दिखाई दी। उसमे पुन उत्साह लहर दौड गई। वह एथेन्स पहुच तो गया, लेकिन बुरी तरह हाफ रहा था। वह एक व्यक्ति के सामने गिर गया। वह चिल्लाया, 'खुशिया मनाओ, हम जीत गए हैं।' उसके बाद वह नही उठ सका। यह उसके अन्तिम शब्द थे।

आधुनिक ओलम्पिक खेलो मे मैराथन दौड उसी महान दौडाक की अमर याद है। 1896 म एथेन्स मे ही पहले आधुनिक ओलम्पिक खेलो का आयोजन किया गया। इस बार अधिकाश प्रतियोगिताए अमेरिका ने जीती थी। यूनानी दशक इस बात से बहुत निराश थे कि उनके देश का कोई भी एथलीट कोई चैम्पियनशिप प्राप्त नही कर सका। आखिरी दिन मैराथन दौड का आयोजन किया गया। इसमे 25 धावको ने भाग लिया, इनमे से एक दौडाक यूनानी भी था—25 वर्षीय स्पिरिडान लुईस। लुईस नाटे कद का दौडाक था और पेशे से चरवाहा था। उसने मैराथन म भाग लेने का पक्का फसला किया। वह दो दिन पहले ही मन्दिर मे गया और बिना कुछ खाए पिए घुटनो के बल बैठकर प्राथना करता रहा।

10 अप्रैल, 1896 को दोपहर 2 बजे मैराथन दौड शुरू हुई। पहले काफी दूर तक फ्रास का दौडाक सबसे आगे रहा, लेकिन जब मजिल केवल पांच मील दूर थी तभी यूनानी धावक लुईस सब को पीछे छोडकर आगे निकल गया। कुछ घुडसवार सैनिको ने स्टेडियम मे जाकर जब यह समाचार सुनाया तो यूनानी दशक खुशी से झूम उठे। आखिर लुईस विजयी हुआ। उसने यह दूरी 2 घटे 55 मिनट और 20 सकिड म तय की थी। यूनान के लोगो ने लुईस को पुरस्कारो से लाद दिया। एक महिला ने अपनी सोन की जजीर वाली घडी दे दी और एक कपडे के व्यापारी ने आजीवन लुईस को मुफ्त कपडा देने का फैसला किया। एक मोची ने जीवन भर के लिए लुईस के जूते चमकाने का और एक नाई ने जीवन भर उसकी मुफ्त दाढ़ी बनाने का फसला किया।

मैराथन दौड के इतिहास म इथियोपिया के अबेबे बिकिला के नाम का एक अलग अध्याय है। वह पहले ऐसे दौडाक हैं, [illegible] लगातार दो बार ओलम्पिक खेलो मे रोम ([illegible] और तोक्यो ([illegible] पांव मैराथन दौड़कर दुनिया को चौंका[illegible]

मोइसुदुबौसा स्वण [illegible] स्वर्ण [illegible] की एक रगीन प्रतियोगिता मा [illegible] है।

लेकिन इस प्रतियोगिता के इतिहास के बारे में आज की नई पीढ़ी की जानकारी बहुत कम है।

नवाब मोईनुद्दौला बहादुर का युग हैदराबाद की क्रिकेट का स्वर्ण युग था।

1920 में हैदराबाद में क्रिकेट का खेल बहुत लोकप्रिय था। निजाम हैदराबाद के प्रधानमंत्री महाराजा सर किशन प्रसाद बहादुर, नवाब बहरामुद्दौला, राजा लोचन चंद और राजा धनराजगिरी आदि लोग इस खेल में व्यक्तिगत दिलचस्पी ले रहे थे। यह वह जमाना था जब देश की विभिन्न रियासतों के नवाब और राजा खेलकूद के विकास में अपने अपने ढंग से सक्रिय थे। उन्हीं दिनों नवाब मोइनुद्दौला का भी क्रिकेट के प्रति प्रेम प्रबल हो उठा।

1924 और 1927 में बेहरामुद्दौला प्रतियोगिता का काफी बोलबाला था। उस प्रतियोगिता में प्रोफेसर डी० बी० देवधर और सी० के० नायडू जैसे खिलाड़ी भी भाग लेते थे। जैसे ही इस प्रतियोगिता का आयोजन समाप्त मा हो गया, मोइनुद्दौला के मन में इसी प्रकार की एक प्रतियोगिता के आयोजन का विचार आया और जनवरी 1931 में पहली बार मोइनुद्दौला स्वर्ण कप प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रांत के लोगों की भी इस तरह की प्रतियोगिता में विशेष दिलचस्पी थी क्योंकि वे विजय मर्चेंट, अमर सिंह, मोहम्मद निसार जैसे खिलाड़ियों का खेल देखने के लिए आतुर रहते थे।

नवाब मोइनुद्दौला ने इस प्रतियोगिता के विजेता के लिए जो स्वर्ण ट्राफी तैयार की थी वह एक 'रनिंग ट्राफी' थी, लेकिन जब विजयानगरम के महाराज की टीम यह प्रतियोगिता जीत गई तो उसने सदा के लिए वह ट्राफी अपने पास रखने की इच्छा व्यक्त की।

प्रतियोगिता के प्रति लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। वे तो अगली प्रतियोगिता के लिए ज्यादा दिन तक प्रतीक्षा भी नहीं कर सकते थे। उसी वर्ष दिसम्बर में फिर उस प्रतियोगिता का आयोजन किया और नवाब ने जो दूसरी ट्राफी भेंट की उसकी उस समय 7,000 रुपये कीमत थी (आज की कीमत का अनुमान लगाया जा सकता है—यानी यही 50 हजार के आसपास)। तब से अब तक इस प्रतियोगिता में न केवल देश के चोटी के खिलाड़ियों ने, बल्कि विदेशों के खिलाड़ियों ने भी भाग लिया।

दिसम्बर 1931 में बम्बई की टीम फ्रीलूटस ने, जिसका नेतृत्व अलीराजपुर के महाराजकुमार ने किया था इस कप पर अपना अधिकार जमाया। विजेता टीम में विजय मर्चेंट ने शतक भी बनाया था। अगले वर्ष यानी 1932 में फिर इसी टीम (फ्रीलूटस) इस कप पर अपना अधिकार जमाया।

कुछ कारणों से 1933 में इस प्रतियोगिता का आयोजन नहीं हो सका और

अक्तूबर 1934 मे रोटरिवस नामक टीम ने, जिसका नेतृत्व पटियाला क युवराज ने किया था, इस कप पर अपना अधिकार जमाया। इस बार रोटरिवस की ओर से खेलते हुए लाला अमरनाथ ने शतक बनाकर टीम को जिताने म महत्त्वपूण भूमिका निभाई। उसके बाद 1936 म भारतीय टीम को इग्लड का दौरा करना था, इसलिए सभी खिलाडी उसकी तैयारी म जुट गए और दो-तीन वष तक इस प्रतियोगिता का आयोजन नही हो सका। इस प्रतियोगिता के बीच-बीच मे कई उतार-चढाव भी आए। इसका क्रम भी टूटता रहा, लेकिन इसके बावजूद बिखरे सूत्र किसी न किसी तरह जुडते गए।

मोटर रेस—मोटर रेस खतरे से भरी तथा रोमाचपूण प्रतियोगिता है। यूरोप, अमेरिका तथा ससार के अ य भागो के देशो म प्रति वष इन दौडा को देखने के लिए लाखो दशक उमड पडते है। मोटरो की बनावट तथा आकार के आधार पर मोटर रेस के अनेक वर्गीकरण किए गए हैं। आम इस्तेमाल म आने वाली स्टाक कारो, खेल कारो तथा विशेष आकडो के अनुसार बनी ग्राडप्रिक्स कारो मे अलग अलग प्रतियोगिताए होती हैं। कार रलिया तथा पहाडियो पर चढने की प्रतियोगिताए भी कार दौडो के ही अ य रूप हैं। इनमे से कुछ दौडों मे शौकिया ड्राइवर तथा कुछ मे केवल पेशेवर ड्राइवर ही भाग लेते हैं।

मोटर रेस के आयोजन के लिए विभि न देशो मे राष्ट्रीय सगठन हैं। कई देशो म अलग-अलग प्रकार की मोटर रेस की व्यवस्था के लिए अलग अलग राष्ट्रीय सगठन हैं। मोटर रेस का आयोजन करने वाले विश्व सगठन का नाम है 'फेडरेशन इटरनेशनल डि आटोमोबील'। इसका कार्यालय पेरिस म है।

स्वचालित मोटर गाडियो का निर्माण 1880 के लगभग शुरू हो चुका था। उसी समय से मोटर रेस भी शुरू हो गई। प्रारभिक मोटर रेस मे न केवल उनकी चाल का ही मुकाबला होता था, वरन यह भी दखा जाता था कि कौन सी गाडी अधिक पाएदार और अधिक निरापद है। 1895 से मोटर रेस विधिवत होने लगी थी। इसके पश्चात् तो इनकी लोकप्रियता निरतर बढती ही गई। ससार भर मे लाखो व्यक्ति इन दौडो को देखने के लिए उमड पडते हैं। इनके आयोजन पर विपुल धनराशि खच की जाती है। इनकी उपयोगिता मनोरजन के अतिरिक्त यह भी है कि इनम नवीनतम नमूनो की गाडियो की क्षमता की परख हो जाती है।

प्रथम मोटर रेस सन् 1895 म फ्रास म हुई थी। इसम भाग लने वाला गाडियों को पेरिस से बोर्दे (Bordeaux) तक जाना था। फ्रास म निर्मित पानहाड गाडी इस दौड म प्रथम आई। प्रथम स्थान पाने वाली इस मोटर गाडी की औसत चाल 15 मील प्रति घटा थी। इसक बाद ही परिस स बिएना

ग्राइप्रिक्स दौडों का आयोजन किया जाता है। अमेरिका के इंडियानापोलिस में आयोजित की जाने वाली पांच सौ मील की दौड भी ग्राइप्रिक्स स्तर की ही मानी जाती है। यद्यपि इस दौड में भाग लेने वाली मोटर कारें अन्तरराष्ट्रीय संघ द्वारा निर्धारित आंकडों के अनुसार नहीं बनी होतीं।

अन्तरराष्ट्रीय संघ द्वारा निर्धारित प्रथम वर्ग के आंकडों के अनुसार बनाई मोटरों की दौड प्रतियोगिताओं में कुछ निश्चित संख्या में भाग लेने वाला जो ड्राइवर अधिकतम अंक प्राप्त करता है उसे विश्व चैम्पियन की उपाधि दी जाती है। प्रत्येक दौड में पहले पांच स्थान पाने वाले ड्राइवरों को क्रमशः 8, 6, 4, 3 तथा 2 अंक दिए जाते हैं। दौड परिपथ की एक परिक्रमा जो ड्राइवर सबसे कम समय में पूरी करता है उसे एक अतिरिक्त अंक दिया जाता है। विश्व चैम्पियन ड्राइवर का निर्णय अर्जेन्टीना, मोनेको बेल्जियम, हालैंड, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी तथा इंडियानापोलिस की प्रतियोगिताओं के आधार पर किया जाता है।

विश्व चैम्पियनशिप का प्रारंभ 1950 में हुआ। इटली के गिसेप्पे फारिना (Giuseppe Farina) एल्फरों तथा अर्जेन्टीना के विख्यात ड्राइवर जुआन मैनुअल फांगियो इस प्रतियोगिता को जीत चुके हैं।

खेल कार (स्पोर्ट्स कार) दौड

इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाली गाड़ियों की बनावट ग्रांप्रिक्स दौड में भाग लेने वाली गाड़ियों से भिन्न होती है। ग्राइप्रिक्स में गाड़ियों में ड्राइवर के ही बैठने का स्थान होता है। उनमें मात्र वही कलपुर्जे और उपकरण होते हैं जिनकी दौड के लिए अनिवार्यता होती है। इसके विपरीत स्पोर्ट्स कारों की बनावट सामान्य मोटरों जैसी ही होती है। ये सडकों पर [illegible] के उपयुक्त होती हैं। इनमें दो या चार व्यक्तियों के बैठने का स्थान भी होता है। [illegible] इन गाड़ियों की बनावट [illegible] में इस्तेमाल की जाने वाली गाड़ियों की [illegible]

[illegible] कारों की कुछ [illegible] [illegible] का निर्णय होता है। [illegible] हजार [illegible] को [illegible] अमरिका [illegible] हजार [illegible] [illegible] [illegible] को 24 घंटे को [illegible] [illegible]

कार प्रतियोगिताओ मे विजय का सेहरा कार निर्माता के सिर बधता है। इनम विशेष 'मेक' की कार को ही विजयी घोषित किया जाता है।

स्टाक कार दौड

इन दौडा म भाग लेने वाली गाडिया को ग्राडप्रिक्स तथा खेल कार दौडो म भाग लेने वाली गाडियो के समान विशेष बनावट का नही बनाया जाता। इसमे तो वही गाडिया भाग लेती हैं जो आम उपयोग म आने वाली गाडियो के समान बनी होती है। इन दौडो के आयोजन म कार निर्माता विशेष रुचि लेते है। इन दौडो मे सफल रहने वाली कार के निर्माता को व्यापारिक दृष्टि स बडा लाभ होने की सभावना होती है।

प्रति वष मोनेको के माटेकार्लो म आयोजित की जाने वाली स्टाक कार दौड ससार की सबमे प्रमुख स्टाक कार प्रतियोगिता है। इसम स्टाक कारो के आकार अथवा बनावट के आधार पर अलग अलग वर्गों म दौडें होती हैं। डार्लिग्टन म आयोजित की जाने वाली पाच सौ मील की स्टाक कार दौड प्रतियोगिता भी विश्व स्तर की है। इसके अतिरिक्त अन्य देशो म राष्ट्रीय स्टाक कार दौडो का आयोजन किया जाता है।

हाट राड दौड

मोटरकारो क शौकीन लाग निजी डिजाइनो के अनुसार बनाई मोटरो म जो प्रतियोगिताए आयोजित करते है उन्ह ही हाट राड दौड कहा जाता है। आमतौर पर इन दौडो के लिए बनाई गई गाडिया म पुरानी और बेकार हुई मोटर गाडिया के अच्छे पुर्जों का इस्तेमाल किया जाता है। रोडस्टर, टूर, सीडान, पिकअप, स्ट्रीमलाइन, इत्यादि डिजाइन इस प्रकार की कारो के कुछ मानक डिजाइन है। चाल और निश्चित चाल पर निश्चित दूरिया पार करने की प्रतियोगिताओ के अतिरिक्त गाडियो की सहनशक्ति को परखने के लिए भी मुकाबले किए जाते हैं।

ड्रैग दौड

इन दौडो म कुछ निश्चित दूरी यथा, चौथाई मील के लिए गाडी द्वारा लिया समय मापा जाता है। खेल कारें स्टाक कारें तथा हाट राड दौड म भाग लेने वाली गाडिया भी इन प्रतियोगिताओ म शामिल होती हैं।

मोटर दौड अत्यत खतरनाक खेल है। जिस समय स य दौडें प्रारभ हुई हैं तभी से समय समय पर इन दौडो म भाग लेने वाले ड्राइवरों को तथा

देखने के लिए जमा दर्शकों में से अनेकों को दुर्घटनाओं के कारण अपनी जान से हाथ धोना पड़ा है। यही कारण है कि प्राय यह माग की जाती है कि इन दौड़ों को बद कर दिया जाए।

1903 म पेरिस से मड्रिड तक की कार दौड प्रतियोगिता म अनेक ड्राइवर तथा दौड माग के साथ साथ बठे अनेक दर्शक दुर्घटनाओ के कारण मारे गए। मरने वालो की सख्या बहुत अधिक थी। यह दुघटना इतनी भीषण थी कि लक्ष्य से पूव ही दौड को समाप्त कर देना पडा। इसी प्रकार इटली म दूसरे महायुद्ध के दौरान मिले मिगलिया (हजार मील की दौड) म हुई दुघटना से तानाशाह मुसोलिनी इतना स्तभित हो गया था कि उसन इन दौडो को समाप्त करने का आदेश दे दिया। फ्रास के ला मस म आयोजित की जाने वाली खेल कार दौड प्रतियोगिता मे 1955 म अत्यन्त ही भीषण दुघटना हुई। प्रतियोगिता मे भाग लेने वाली एक कार दर्शका म जा टकराई और 83 व्यक्ति मरे तथा अनेक घायल हुए।

नये रिकार्ड

ग्राडप्रिक्स कारें स्टाक कारें तथा खेल कारे अपने विशिष्ट वर्गों की प्रतियोगिताओ म भाग लेने के अतिरिक्त दूरियो को न्यूनतम समय म पार कर नये कीर्तिमान स्थापित करने का भी प्रयास करती हैं। आकार तथा इजन के माप के आधार पर दस वग बनाए गए हैं। इस प्रकार एक ही दूरी क लिए कार विशेष के हिसाब से दस रिकाड होते हैं। प्रथम वग की गाडियो के आकार तथा इजन के आकार पर किसी प्रकार प्रतिबध नही। इन्ही गाडियो द्वारा स्थापित किए रिकार्डों पर लोगो का विशेष ध्यान रहता है।

इग्लड के जानकाब ने उटाह (Utah) के बोनविले साल्ट बेड दौड पथ पर 16 सितम्बर 1947 को 349 2 मील प्रति घटा का कीर्तिमान स्थापित किया था। अमेरिका के क्रेग ब्रीडलेव ने 5 सितम्बर, 1963 को 407 45 मील प्रति घटा का रिकाड स्थापित किया था।

विश्व चैम्पियन ड्राइवर ग्राडप्रिक्स दौडो के विजेता

1 गिसेपे फारिना, इटली—1950
2 जुआन मनुअल फागियो, अर्जेंटीना—1951
3 एलर्व्टो अस्कारी, इटली—1952 53
4 जुआन मैनुअल फागियो, अर्जे टीना—1954 57
5 माइक हाथान—1958

6 जैक ब्रावहाम, आस्ट्रेलिया—1959 60
7 फिलिप हिल, अमरीका—1961
8 ग्राहम हिल, इग्लड—1962

मोहम्मद अली (कसियस क्ले)--मुक्केबाजी के इतिहास म मोहम्मद अली (कसियस क्ले) का इतिहास जितना दिलचस्प, विवादास्पद, और सनसनीखेज है, उतना शायद ही दुनिया के किसी दूसरे मुक्केबाज का हो। 1964 म सानी लिस्टन को हरान के बाद और 1971 म जो फ्रेजियर से हार जाने के बाद तक देश विदेश के समाचार पत्रो मे मोटी मोटी सुर्खिया म उनका नाम, उनके बयान और उनके किस्से कहानिया छपती रही हैं। मोहम्मद अली इस शताब्दी का सबसे बडा विवादास्पद मुक्केबाज माना जाता है। उनका व्यक्तित्व सचमुच ही बडा निराला है।

18 वष की उम्र म मोहम्मद अली ने राष्ट्रीय चम्पियनशिप जीतने का अभूतपूर्व गौरव अर्जित कर लिया था। उसी समय नाम और पैसा कमाने की इच्छा स प्रेरित होकर क्ले ओलम्पिक (1960) के मदान म उतरने के लिए रोम गया और स्वर्ण पदक लेकर ही लौटे। उसके बाद उन्होने पेशेवरो म सवश्रेष्ठ होने का मौका पाने के लिए वह आन्दोलन छेडा जो विज्ञापन और जन सम्पक विज्ञान के देश म भी अपूव माना गया।

सबसे पहले कसियस क्ले ने सानी लिस्टन को 25 फरवरी, 1964 को 1 मिनट स भी कुछ कम समय म हराकर विश्व विजेता का पद प्राप्त किया। उसके बाद सानी लिस्टन ने 24 मई, 1965 को एक बार फिर क्ले के सामने खडे होने की हिम्मत की, लेकिन कैसियस ने उन्हे पहले राउड मे ही धर दबाया। उसके बाद फ्लायड पटर्सन और क्ले के बीच 22 नवम्बर, 1965 को एक मुकाबला हुआ। फ्लायड पैटसन भूतपूर्व हैवी वेट चम्पियन थे। यह मुकाबला 12 राउड तक चला और उसके बाद पटर्सन काफी बुरी तरह से जख्मी हो गए और अन्त मे रफरी ने क्ले को विजयी घोषित कर दिया। 29 मार्च, 1966 को मोहम्मद अली को अपने पद की रक्षा के लिए कनाडा के चम्पियन जाज चुवालो की चुनौती को स्वीकार करना पडा और चुवालो भी 'जान बची और लाखो पाए' वाले अन्दाज स मैदान स बाहर निकला।

21 मई, 1966 को मोहम्मद अली और इग्लैंड के हैवी वेट चम्पियन हेनरी कूपर म एक दिलचस्प मुकाबला हुआ। मुकाबला शुरू होने से पहले जैसे ही दोनो खिलाडियो को मच पर लाया गया मोहम्मद अली ने वडी आश्वस्त मुद्रा म जन समूह स साक्षात किया और लीडराना अन्दाज म हाथ हिलाकर आश्वासन दिया कि मुझे हराने का दम खम ससार के किसी व्यक्ति मे नही है।

छठे राउंड के शुरू होने के कुछ ही क्षण बाद मोहम्मद अली ने कूपर की बाईं आंख की भौं पर इतनी जोर से मुक्का मारा कि उसकी भौं फट गई और खून की धारा बहने लगी। कूपर खून से लथपथ हो गया और छठे राउंड मे 1 मिनट और 28 सकिंड के पश्चात मुकाबला रोक दिया गया। इस प्रकार क्ले को लगातार चौथी बार अपना विश्व विजेता का पद बरकरार रखने का गौरव मिला।

उसके बाद 6 अगस्त, 1966 को (लन्दन म) मोहम्मद अली ने ब्रायन लन्दन को तीसरे चक्र म हरा दिया। 10 सितम्बर, 1966 को फ्रैंकफुर्त म हुए मुक्केबाजी के मुकाबले मे मोहम्मद अली ने जमनी के काल मिल्डनबगर को बारहवें राउंड म हरा दिया।

14 नवम्बर, 1966 को उन्होने क्लीवीलैंड विलियम को किनारे लगाया और 6 फरवरी, 1967 को एरनी टेरल को। 22 माच, 1967 को जोरा फाली को विश्व चैंम्पियन बनने की धुन सवार हुई। 34 वर्षीय जोरा फोली विश्व चैम्पियन पद प्राप्त करने का स्वप्न पिछले 10 वर्षों से देखते आ रहे थे। पर चम्पियनो के चैम्पियन मोहम्मद अली ने उनके सपनो पर पानी फेर दिया।

इससे पहले 6 फरवरी को हुए मोहम्मद अली और एरनी टेरेल का मुकाबला 15 राउंड तक चला और उसम अकों क आधार पर मोहम्मद अली को विजेता घोषित किया गया।

और इसके बाद मोहम्मद अली और जो फ्रेजियर के बीच विश्व विजेता के पद के लिए ऐतिहासिक मुकाबला हुआ। यह मुकाबला 8 माच, 1971 को मेडिसन गाडन (न्यूयाक) मे हुआ। यह मुकाबला इस शताब्दी का सबसे सनसनीखेज और रोमाचकारी मुकाबला था। इसमे जो फ्रेजियर को अकों के आधार पर विजयी घोषित किया गया। उसके बाद उन्होने फोरमैन और फ्रेजियर को हराकर पुन विश्व चैंम्पियन का पद प्राप्त किया।

मोहम्मद अली अब तक 56 मुकाबले जीत चुके हैं। वह अपने जीवन काल म हमेशा जीतते ही रह हो, ऐसी बात नही है, 3 बार हारे भी हैं। पहली बार जो फ्रेजियर से, दूसरी बार केन नाटन से और तीसरी बार लिओन स्पिंक्स से। स्पिंक्स ने उन्हे 15 फरवरी, 1978 को अकों के आधार पर हराया था और उसके बाद 15 सितम्बर, 1978 को मोहम्मद अली ने स्पिंक्स को अकों के आधार पर हरा कर न केवल अपनी हार का बदला लिया, बल्कि एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित किया जो आज तक मुक्केबाजी के इतिहास मे कभी स्थापित नही हुआ। वह दुनिया के ऐसे पहले मुक्केबाज हैं जिन्होने 3 बार अपने खोए हुए पद को पुन प्राप्त किया। उनसे पहले केवल एक मुक्केबाज

था जिसने दो बार अपने खोए खिताब की रक्षा की और उसका नाम था फ्लायड पटर्सन। इसीलिए कहा जाता है कि अली ऐसे मुक्केबाज हैं जिनकी गली-गली मे चर्चा है।

मोहम्मद अस्लम—मुक्केबाजी की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे लम्बे अरसे से सेना के मुक्केबाजो का ही बोलबाला रहा है। बगलौर म हुई 21वी राष्ट्रीय मुक्केबाजी प्रतियोगिता म सेना की टीम ने चम्पियनशिप प्राप्त की। सच तो यह है कि जब से सेना ने (1956 मे पहली बार सेना की टीम ने भाग लिया था) राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ म भाग लेना शुरू किया तब से सेना की ही टीम को चम्पियनशिप प्राप्त होती रही। 1962 म सेना की टीम कुछ कारणो से प्रतियोगिता म भाग नही ले सकी और 1965 से सेना और रेलवे की टीम को सयुक्त विजेता घोषित किया गया था।

इस समय भारत के हैवी वेट वग के राष्ट्रीय चम्पियन 29 वर्षीय मोहम्मद अस्लम हैं। वह अपनी सामथ्य और सीमाओ को बखूबी समझते और पहचानते हैं और उनके इरादे यदि ओलम्पिक चम्पियन बनने के नही तो एशियाई चैंम्पियन बनने के जरूर हैं।

उनका जन्म 1 जनवरी, 1945 को तियरा (यह स्थान इलाहाबाद से लगभग 9 मील दूरी पर है) म हुआ। कद 6 फुट 1 इच और वजन 90 या 92 किलो के आसपास। बचपन म ही मोहम्मद अस्लम पिता के आशीर्वाद स वचित हो गए और इसीलिए 8वी कक्षा के बाद उन्ह पढाई छोडनी पड गई।

उन्होने 27 नवम्बर, 1963 को सेना म एक मामूली सिपाही के रूप म नौकरी स्वीकार कर ली और उसके बाद सेना मे रहते हुए ही मुक्केबाजी का अभ्यास शुरू कर दिया। शुरू से ही कद-बुत और वजन अच्छा था इसलिए शुरू से ही हैवी वेट वग म अभ्यास किया।

इस समय वह सेना मे हवलदार हैं। उन्हे सेना म जितनी भी तरक्की मिली है वह केवल मुक्केबाजी के कारण ही मिली है।

य

यशपाल शर्मा—यशपाल शर्मा का जन्म 11 अगस्त, 1954 को हुआ था। 1978 में पाकिस्तान का दौरा करने वाली क्रिकेट टीम म इन्ह शामिल किया गया। इस दाएं हाथ के बल्लेबाज ने उस वर्ष ईरानी ट्राफी म शेष भारत की ओर से खेलते हुए 99 रन बनाए।

1979 मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए उन्होने अपने जीवन का पहला शतक बनाया था और अन्त तक आउट नही हुए थे।

यादवेन्द्र सिंह, महाराजा पटियाला—भारतीय खेलकूद के इतिहास और विकास मे भूतपूर्व पटियाला नरेशो का योगदान किसीस छिपा नही है। ले० जनरल यादवेन्द्र सिंह ने खिलाडी, खेल अधिकारी, सफल सेनापति, कूट राजनीतिज्ञ होने के साथ साथ सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रो म भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उनका जन्म 7 जनवरी, 1913 को हुआ। स्कूली जीवन से ही उन्होने क्रिकेट खेलना शुरू कर दिया था और एक अच्छे बल्लेबाज के रूप मे उन्होने काफी ख्याति अर्जित की थी।

1933 34 मे महाराजा पटियाला यादवेन्द्र सिंह को इग्लड के विरुद्ध मद्रास मे खले जाने वाले तीसरे टेस्ट मैच के लिए चुना गया। हालाकि यह टेस्ट भारत 202 रनो से हार गया था, लेकिन महाराजा पटियाला का क्रमश 24 और 60 रनो का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। 1935 मे जब राइडर के नेतृत्व म आस्ट्रेलिया की टीम से 'अनआफिशियल टेस्ट' खेलने के लिए भारत का दौरा किया तो यादवेन्द्र सिंह ने उस टीम का नेतत्व किया। तब भारतीय टीम मे सी० के० नायडू, वजीर अली, अमर सिंह, विजय मर्चेन्ट, अमरनाथ, मुश्ताक अली और मोहम्मद निसार जसे खिलाडी भाग ल रहे थे। दुख की बात यही है कि वह अधिक समय तक क्रिकेट नही खेल सके।

1948 मे लन्दन ओलम्पिक खेलो मे भाग लेने वाली भारतीय टीम को भिजवाने म उन्होने आर्थिक सहायता दी थी।

1951 मे नई दिल्ली मे हुए प्रथम एशियाई खेलो के शानदार आयोजन का श्रेय महाराजा पटियाला को ही प्राप्त था। पटियाला स्थित राष्ट्रीय खेलकूद सस्थान, जो आज भारतीय खिलाडियो का तीर्थस्थल माना जाता है, उनके खेलप्रेम और उदारता का जीता जागता प्रमाण है। 1958 म भारत सरकार ने महाराजा पटियाला की अध्यक्षता मे एक खेलकूद अन्वेषण समिति का गठन किया था। उन्होने अपना ऐतिहासिक मोतीमहल पजाब सरकार को बेच दिया, जिसे बाद म पजाब सरकार ने ठीक उतनी ही कीमत पर भारत सरकार को दे दिया।

1937 से 1960 तक वह भारतीय ओलम्पिक एसोशिएशन के अध्यक्ष, और 1960 से 1965 तक वह अखिल भारतीय खेलकूद परिपद के अध्यक्ष रहे। 1965 स 1966 तक वह इटली म भारतीय राजदूत, 1967 68 मे पजाब विधान सभा के सदस्य, 1965 से पजाब गुरुनानक प्रतिष्ठान और 1964 से गुरु गोविन्द सिंह प्रतिष्ठान के अध्यक्ष रहे।

1971 से वह नीदरलैंड मे भारतीय राजदूत थे। 17 जून, 1974 को हेग मे 61 साल की उम्र मे हृदय गति रुक जाने से उनका देहान्त हो गया। उनके निधन से भारतीय खेल-जगत एक और खेल-महारथी से वंचित हो गया।

याशिन, लेव इवानोविच—फुटबाल के खेल मे दुनिया का सर्वश्रेष्ठ गोली कौन है, इस प्रश्न का उत्तर बहुत आसान है। यह बात हर कोई जानता है कि सोवियत संघ के 42 वर्षीय लेव इवानोविच याशिन अब से नही, बल्कि पिछले 15 वर्षों से दुनिया के सवश्रेष्ठ गोली माने जाते रहे।

याशिन कई बार वल्ड कप और युरोपियन प्रतियोगिताओ मे हिस्सा ले चुके हैं। 1956 मे मेलबोन ओलम्पिक मे सोवियत संघ की जिस फुटबाल टीम ने स्वण पदक प्राप्त किया था वह उसके सदस्य थे।

याशिन का जन्म मास्को म 1929 को हुआ। 14 वष की उम्र मे उन्होने पढाई छोड दी और हवाई जहाज बनाने की फक्टरी मे काम करना शुरू कर दिया। शुरू-शुरू मे उन्हे बफ की हाकी (आइस हाकी), बास्केट बाल, वालीबाल, एथलेटिक मे भी बहुत दिलचस्पी रही। लेकिन सबसे ज्यादा साधना उन्होने फुटबाल म की।

आज भी फुटबाल का कोई बडा मैच खेलने से पहले वह फुटबाल को छूते हैं। उन्हे नीला रग बहुत पसन्द है। केवल फुटबाल साधना करके उन्होने सोवियत सघ का बडे से बडा *'मास्टर आफ स्पोट स', 'आडर आफ लेनिन'* का सम्मान प्राप्त किया है। बहुत से लोग उन्हें फुटबाल का कवि भी कहते हैं।

येलेना वेत्सेखोव्स्काया—माट्रियल की ओलम्पिक प्रतियोगिता म सोवियत तैराक येलेना वेत्सेखोव्स्काया ने ऊचाई से गोताखोरी म स्वण पदक प्राप्त किया था। यह खेल बहुत कठिन होता है, क्योकि इसके लिए साहस, श्रेष्ठतम कौशल और खतरा उठाने की क्षमता का होना जरूरी है। इसम उठाया जाने वाला खतरा खास ही तरह का होता है। 10 मीटर ऊचे मच से कूदकर गोता लगाने के तकनीकी मानक बहुत सख्त हैं। इसम सात जज होते हैं जो लगाए जाने वाले गोतों का जिम्नास्टिक्स से कही ज्यादा सख्ती के साथ मूल्यांकन करते हैं। जिम्नास्टिक्स और गोताखोरी दोनो ही म 10 अका की प्रणाली के अनुसार अक देने की प्रथा है, लेकिन अगर जिम्नास्टिक्स (मिसाल के लिए) म एक जिम्नास्ट सीधे पर और सीधे अगूठे के साथ सिर के बल कूदते समय अगर एक तत्व की गलती करे तो उसके बहुत थोड़े अक (एक अक के कुछ ही दशमांशों के बराबर) काटे जाते हैं लेकिन ऊचाई से गोता लगाने मे ऐसी ही गलती करने पर लगभग चार पूरे अक कट जाते हैं। इसस

खिलाड़ी पर मनोवैज्ञानिक दबाव बढ़ जाता है। जब येलेना मांट्रियल की प्रतियोगिता म भाग लेने गई थी तब वह सिर्फ 18 वर्ष की थी और महिला गोताखोरी म उसका ओलम्पिक प्रशिक्षण क्रम सर्वाधिक कठिन होने के बावजूद मन, स्वभावत बहुत आशंकित था।

येलेना एक खिलाड़ी परिवार की बेटी है—उसके माता पिता दोनों ही तराकी के प्रशिक्षक हैं। बचपन म उसने तराकी म भाग लिया, लेकिन बाद म फँसी गोताखोरी म अपने कौशल की आजमाइश की और उसम जल्द महारत हासिल कर ली। 1973 म वे ऐसी प्रथम महिला खिलाड़ी बन गई जिसकी गोताखोरी म ठीक वसी ही दनिक चर्या सम्मिलित हो गई थी, जसी कि विश्व व ओलम्पिक चैम्पियन वग के पुरुष खिलाड़ियों की होती है। मांट्रियल के खेलों के बाद उसने राष्ट्रीय प्रतियोगिता तथा सोवियत-अमेरिका व सोवियत-जमन जनवादी गणतंत्र की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं म प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस समय वे 1980 की मास्को-ओलम्पिक प्रतियोगिता के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं।

येलेना के प्रशिक्षण का क्रम बहुत श्रमसाध्य है। व प्रतिदिन 150 से लेकर 170 तक गोते लगाती हैं। मास्को क शारीरिक प्रशिक्षण संस्थान म वह तीसरे वष की छात्रा हैं।

योहानन, टी० सी०—तेहरान एशियाई खेलों म जब से 27 वर्षीय टी० सी० योहानन ने 8 07 मीटर लंबी कूद कर स्वण पदक प्राप्त किया है तब से यह कहा जाने लगा है कि यदि योहानन को उचित प्रशिक्षण और प्रोत्साहन मिलता रहे तो कोई ताज्जुब नहीं कि वह आगामी ओलिम्पक खेलों म लंबी कूद मे कोई पदक जीतने मे सफल हो जाए।

उनका कहना था कि म्यूनिख ओलम्पिक मे कांस्य पदक प्राप्त करने वाला खिलाडी भी 8 07 मीटर लंबा नहीं कूदा था। इसलिए मेरा उत्साह और ज्यादा बढ़ गया है और मैं अभी से आगामी ओलम्पिक तयारी म जुट जाना चाहता हूं। केरलवासी योहानन अच्छी हिंदी बोल लेते हैं।

शुरू शुरू मे योहानन लंबी कूद और त्रिकूद दोनो प्रतियोगिताओं मे भाग लेते थे जिसके कारण उनके दाए पैर के अंगूठे की हड्डी थोडी बढ़ गई और दोनों प्रतियोगिताओं मे भाग लेना उनके लिए असंभव हो गया। इसलिए उन्होंने सारा ध्यान लंबी कूद पर ही केंद्रित किया।

उनका कहना है कि मक्सिको ओलम्पिक खेलों म बाब बीमन ने जब 8 90 मीटर (29 फुट 2 5 इंच) का रिकार्ड स्थापित किया था तो अधिकारियों ने सात-आठ बार फीता लेकर उसकी दूरी को मापा था और इस बात पर आसानी से कोई विश्वास भी नहीं कर सकता था कि कोई इन्सान इतना

लबा कूद सकता है। ऐसा चमत्कार कभी-कभी ही होता है। लेकिन म्यूनिख ओलम्पिक खेलो म तो 8 24 मीटर लबा कूदने पर ही खिलाडी स्वण पदक लेन म सफल हो गया था।

र

रणजी ट्राफी—रणजी ट्राफी प्रतियोगिता भारत की प्रमुख क्रिकेट खेल प्रतियोगिता मानी जाती है। सन् 1934 की गर्मियो म शिमला म भारतीय क्रिकेट कट्रोल बोड की बठक हुई। सर सिकन्दर हयात खां (उस समय पजाब के एक्टिग गवनर और भारतीय क्रिकेट कट्रोल बोड के अध्यक्ष) ने इस बठक की अध्यक्षता की। इस बैठक मे पटियाला के महाराजा भूपिन्दर सिंह, के० एस० हिम्मतसिंह तथा ए० एस० डि मेलो ने भी भाग लिया। इस बैठक म ए० एस० डि मेलो ने यह प्रस्ताव रखा कि भारत म हर साल 'रणजी ट्राफी' की प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिए। पटियाला के महाराजा ने तुरन्त इस प्रस्ताव का समथन किया और वह प्रस्ताव उसी वप प्रतियोगिता का रूप धारण कर गया। इससे लगभग एक वर्ष पूव ही (2 अप्रल, 1933 को) भारतीय क्रिकेट के जादूगर नवानगर के जामसाहब कुमार श्री रणजीत सिंह जी की मृत्यु हुई थी।

रणजी ट्राफी रिकार्ड

सन्	विजेता	रनस-अप
1934-35	बम्बई	नादन इडिया,
1935-36	बम्बई	मद्रास
1936-37	नवानगर	बगाल
1937 38	हैदराबाद	नवानगर
1938 39	बगाल	सदन पजाब
1939-40	महाराष्ट्र	यूनाइटेड प्राविंस
1940-41	महाराष्ट्र	मद्रास
1941-42	बम्बई	मैसूर
1942-43	बडौदा	हैदराबाद
1943-44	वेस्टर्न इडिया	बगाल
1944-45	बम्बई	होल्कर

सन्	विजेता	रनस-अप
1945-46	होल्कर	बड़ौदा
1946-47	बड़ौदा	होल्कर
1947-48	होल्कर	बम्बई
1948-49	बम्बई	बड़ौदा
1949 50	बड़ौदा	होल्कर
1950-51	होल्कर	गुजरात
1951-52	बम्बई	होल्कर
1952-53	होल्कर	प० बंगाल
1953-54	बम्बई	होल्कर
1954 55	मद्रास	होल्कर
1955 56	बम्बई	प० बंगाल
1956-57	बम्बई	सेना
1957 58	बड़ौदा	सेना
1958-59	बम्बई	बंगाल
1959 60	बम्बई	मैसूर
1960 61	बम्बई	राजस्थान
1961 62	बम्बई	राजस्थान
1962 63	बम्बई	राजस्थान
1963-64	बम्बई	राजस्थान
1964-65	बम्बई	हैदराबाद
1965-66	बम्बई	राजस्थान
1966-67	बम्बई	राजस्थान
1967-68	बम्बई	मद्रास
1968-69	बम्बई	राजस्थान
1969-70	बम्बई	राजस्थान
1970-71	बम्बई	महाराष्ट्र
1971-72	बम्बई	बंगाल
1972-73	बम्बई	तमिलनाडु
1973-74	कर्नाटक	राजस्थान
1974-75	बम्बई	कर्नाटक
1975-76	बम्बई	बिहार
1977-78	कर्नाटक	उत्तर प्रदेश
1978-79	दिल्ली	कर्नाटक

रणजीतसिंह—कुमार रणजीतसिंह को भारतीय क्रिकेट का जादूगर कहा जाता है और उन्हें भारत का सवश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाड़ी माना जाता है। राजकुमार रणजीतसिंह जी का जन्म 10 सितम्बर, 1875 को जामनगर के पास के एक गाव म हुआ। अपने छात्र जीवन मे वे क्रिकेट के अतिरिक्त फुटबाल और टेनिस भी खेलते थे। 'रणजी' (इसी नाम से वह ज्यादा लोकप्रिय हुए) ने अपने जीवन काल मे क्रिकेट क टेस्ट मैचा म 72 शतक बनाए। अंग्रेज उन्हे रणजी के नाम से ही पुकारते थे। उन्होने सन् 1899 म 3,159 और 1900 म 3,069 रन बनाए थे। 1896 म मानचेस्टर म इंलड की ओर से आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए इन्होने पहले टेस्ट म ही अपना शतक पूरा कर लिया था। अपनी निराली बल्लेबाजी के कारण उन्होने क्रिकेट के इतिहास म एक नया अध्याय जोड दिया। विश्व-विख्यात क्रिकेट-समीक्षक नेविल काडस ने श्री रणजीतसिंह का खेल देखने के बाद लिखा था—"ब्रिटेन क मैदानो म पहली बार पूव की किरण दिखाई दी। उन दिना क्रिकेट का खेल बिलकुल सीधा खेल माना जाता था। यानी वह गुड लेंग्थ का गेंद और सीधी बल्लेबाज़ी का खेल था। तब क्रिकेट के खेल को केवल अंग्रेजो का ही खेल माना जाता था। अचानक इंग्लड के मैदान मे पूव के एक व्यक्ति ने ऐसा रग जमाया कि सब न एक मत होकर यह स्वीकार किया कि ऐसा खिलाड़ी तो आज तक इंग्लड म भी पदा नही हुआ। इस व्यक्ति का खेल सचमुच ही अद्भुत था। अपनी निराली बल्लेबाज़ी के कारण वह सीधे बाल को ऐसा घुमाता था कि देखने वाले देखते रह जाते थे। और कहते—'लो वह बाल आया और लो वह बाउड्री भी पार कर गया।' उस अदभुत बल्लेबाजी का रहस्य कोई नही जान सका। गेंददाज स्तब्ध खडा हो जाता और अपनी दोनो बाहा म बाल को दबाकर यह सोचने लगता कि आखिर यह कस हो गया ?"

सन् 1900 रणजी के जीवन का ऐतिहासिक और महत्त्वपूण वष माना जाता है। इसी वष उन्होने पाच अवसरो पर 200 से अधिक और छह अवसरा पर सौ से अधिक रन बनाए। अपने क्रिकेट जीवन म उन्होने 500 पारिया खेली। इनमे से 62 बार वह आखिर तक आउट नही हुए। उन्हाने 56 27 की औसत से कुल 24,642 रन बनाए। रन बनाने की उनकी औसत रफ्तार 50 रन प्रति घंटा थी। यहा यह बता देना भी अनुचित नही होगा कि रणजी जीवन भर अविवाहित रहे। जब-जब भी विवाह का प्रसग आता तब-तब वह मजाक म यह कहत कि क्रिकेट ही मेरी जीवन सगनी है।' उनकी मृत्यु 2 अप्रैल, 1933 को हुई।

भारत म उनकी स्मृति म रणजी ट्राफी प्रतियोगिता शुरू की गई। इसे क्रिकेट की राष्ट्रीय प्रतियोगिता माना जाता है।

राज्यश्री, राजकुमारी—बीकानेर के महाराजा डा० कर्णीसिंह की सुपुत्री राज्यश्री का जन्म 4 जून, 1953 को हुआ और सात साल की उम्र मे ही उन्होने राइफल चलाना शुरू कर दिया था। 10 साल की उम्र मे तो वह बडे बडे निशानेबाजो को भी पीछे छोड गई। 12 साल की उम्र मे उन्होने ट्रैप शूटिंग शुरू की और 16 साल की उम्र मे उन्होने अर्जुन पुरस्कार प्राप्त कर लिया।

जब कुमारी राज्यश्री केवल 14 वर्ष की थी तब उन्होने 1967 म तोक्यो (जापान) मे हुई प्रथम एशियाई निशानेबाजी की प्रतियोगिता मे भाग लिया और अपनी तेज फायरिंग से उन्होने सबको चकित कर दिया था। पुरुषो की प्रतियोगिता मे भाग लेने वाली वह अकेली खिलाडिन थी। इतनी कम उम्र मे इतना बडा कमाल और इतना बडा हौसला देखकर सब लोग हैरान हो गए थे। उन्होन 400 मे 342 अक बनाए। उस समय जब उनसे यह पूछा गया कि आप दनादन गोलिया कैसे चला लेती हैं तो उन्होने कहा था कि मुझे इसकी आदत है। मुझे निशाना साधने म कुछ देर नही लगती।

राजर बनिस्टर—आज से कोई 24 साल पहले तक यह माना जाता था कि एक मील के फासले को 4 मिनट से कम समय म तय करना दुनिया के किसी इन्सान के वस या बूते की तो बात है नही, हां, यदि कोई सुपरमैन (अतिमानव) ही धरती पर उतर आए तो दूसरी बात है। मगर 6 मई, 1954 को इग्लड के चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थी राजर बैनिस्टर ने जब पहली बार एक मील के फासले को 3 मिनट 59 4 सकिंड म तय कर दिखाया तो 30 वर्षों से चली आ रही उक्त धारणा गलत सिद्ध हो गई। असम्भव को सम्भव कर दिखाने के कारण राजर बनिस्टर एक मील के इतिहास मे अमर हो गए और इस प्रकार इतनी दूरी को पहली बार चार मिनट से कम समय में तय करने का तिलक इग्लैड के राजर बैनिस्टर के माथे लगा। राजर बैनिस्टर ने अपनी उस दौड को अपने जीवन की अविस्मरणीय दौड स्वीकार करते हुए लिखा है—"दिसम्बर 1942 म आस्ट्रेलिया के जान लण्डी ने एक मील की दौड को 4 मिनट 2 1 सकिंड में दौडकर दुनिया म एक तरह से हलचल-सी मचा दी थी। जाहिर था कि उसका लक्ष्य एक मील की दौड को 4 मिनट म या कि उससे भी कम समय म पूरा करने का था, क्योकि इस लक्ष्य की प्राप्ति पिछले 30 वर्षों से ससार भर के दौडाको के लिए एक प्रकार का सपना बनी हुई थी। मैंने भी मन ही मन जान लण्डी के लक्ष्य को प्राप्त करने का निश्चय किया और इसके लिए दिन रात एक करके अपना प्रशिक्षण और अभ्यास शुरू कर दिया।

"6 मई, 1954 को जब एक मील की दौड शुरू हुई तब मैं भी उस

प्रतियोगिता म शामिल हो गया। दौड कब शुरू हुई यह तो मुझे याद है मगर वह दौड कब खत्म हुई इस बारे म मुझे कुछ याद नही। दौड खत्म होने के बाद मुझे जरा भी होश नही था। मेरे सारे शरीर का अग अग मारे पीडा के फटा जा रहा था। थोडी देर बाद जब मुझे होश आया और मैंने परिणाम की घोषणा सुनी तो पता चला मेरे जीवन का स्वप्न साकार हो गया है। मैन वह दौड चार मिनट से कम समय (3 मिनट 59 4 सकिड) म जीत ली है।"

बैनिस्टर का कहना है कि एक मील के इतिहास म पहली बार यह दौड चार मिनट के कम समय म तय करने का श्रेय मुझे प्राप्त हुआ मगर मेरे प्रतिद्वन्द्वी जान लण्डी ने भी हिम्मत नही हारी और कवल 46 दिनो बाद ही मेरे रिकाड को तोडकर दम लिया। उसने यह फासला 3 मिनट 58 सकिड म तय कर दिखाया। जब मुझे यह खबर मिली तो मैं हैरान सा रह गया। मैंने फिर सोचा कि जब तक मैं जान लैण्डी से बाजी न मार लू मेरे रिकाड का कोई महत्त्व नही और इस प्रकार मेरी और जान लण्डी की प्रतिद्वंद्विता फिर शुरू हो गई। कभी वह आगे रहता और कभी मैं। जान लैण्डी सचमुच अपने जमाने का एक महान दौडाक था। उसने मुझे दिखा दिया कि दौड प्रतियोगिता की पराकाष्ठा क्या होती है। मैं उस जसा महान दौडाक तो नही बन सकता और इसीलिए उसकी सराहना करता हू।

मैं जानता हू कि जिस प्रकार एक मील की दौड म चार मिनट का घेरा या भ्रम टूट गया है उसी प्रकार हमारे द्वारा स्थापित किए गए रिकाड भी टूट जाएगे। जब तक लोग दौडो म भाग लेते रहेगे तब तक पुराने रिकाड टूटते रहगे और नए नये रिकाड स्थापित होते रहगे क्योकि मनुष्य के अलौकिक साहस की कोई सीमा नही है।

इस प्रकार राजर बनिस्टर के बाद एक मील की दौड की लोकप्रियता दिन ब दिन बढने लगी। एक दिलचस्प बात यह है कि ओलम्पिक खेलो म एक मील की दौड प्रतियोगिता का आयोजन नही होता और बाकी कई छोटी-लम्बी दौड प्रतियोगिताए होती है। ओलम्पिक मेलो म 1500 मीटर की दौड प्रतियोगिता होती है (एक मील की नही) मगर आश्चय की बात यह है कि लोगो की जितनी दिलचस्पी एक मील की दौड से है उतनी और किसी दौड स नही।

राड लेवर—लान टेनिस के क्षेत्र म केवल एक खिलाडी एसा है जिसे निर्विवाद और निविरोध रूप से दुनिया का सवश्रेष्ठ खिलाडी कहा जा सकता है और उसका नाम है राड लेवर। दूसरी बार ग्रड स्लम का गौरव प्राप्त करने के बाद आस्ट्रेलिया के 31 वर्षीय राड लेवर न लान टेनिस के इतिहास का एक नया अध्याय जोड दिया है। एक वर्ष म दुनिया की सभी महत्त्वपूर्ण लान

टेनिस प्रतियोगिताए (आस्ट्रेलियाई, फ्रास, विम्बलडन और अमेरिकी) जीतने वाले खिलाडी को 'ग्रैंड स्लैम' का गौरव प्राप्त होता है। राड लेवर दुनिया के ऐसे पहले खिलाडी है, जिन्होने दो बार ग्रैंड स्लम का गौरव प्राप्त किया। मूल रूप से 'ग्रैंड स्लैम' शब्द का प्रयोग ब्रिज के खेल मे किया जाता है। ब्रिज के खेल मे जब कोई खिलाडी सभी 13 ट्रिक जीत जाता है तो उसे 'ग्रड स्लैम' कहते हैं। राड लेवर चार बार विम्बलडन चम्पियन का गौरव प्राप्त कर चुके हैं। उन्होने 1961, 1962, 1968 और 1969 मे विम्बलडन चम्पियन का गौरव प्राप्त किया था।

राड लेवर (छोटा कद, चकत्तेदार चेहरा, लाल सर) ने 21 वप की उम्र मे ही विम्बलडन म अपना सिक्का जमा लिया था। 1959 मे विम्बलडन प्रतियोगिता म लेवर का नाम श्रेष्ठता के क्रम मे नही था—तब वह एक नया खिलाडी था। लेकिन बिना किसी सीडिंग के वह मजबूत खिलाडियो के घरे को तोडता हुआ फाइनल तक पहुच गया। सेमी-फाइनल मे लेवर ने अमेरिका के बेरी मैक्के को 11 13, 11-9, 10 8,7-9, और 6 3 से हराया था। वैसे मैच के स्कोर अपने आप मे ही बेमिसाल हैं। ओलमेडो जैसे अनुभवी खिलाडी के कारण 1959 का विम्बलडन लेवर जीत नही पाया, पर उसकी ताकत का अन्दाजा लगभग सभी नये पुराने खिलाडियो को हो गया। मुसीबत मे लेवर का खेल अपनी ऊचाई पर होता है। नील फ्रेज़र ने एक बार उनके खेल की विशेषता की चर्चा करते हुए कहा था कि उसके लिए प्वाइट और मैच प्वाइट मे कोई फक नही होता।

राड लेवर को लान टेनिस मे लाने का श्रेय उनके पिता को ही है। छोटी सी अवस्था मे ही इन्हें आस्ट्रेलिया के मशहूर प्रशिक्षक चार्ली होलिस से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ। राड लेवर के पिता ने अपने घर मे ही छोटा-सा कोट बनवा दिया था, जहा चार्ली होलिस लेवर के दो बडे भाइयो ट्रेवर और बाब को सिखाने के लिए थे। लेवर अपने भाइयो को देखते देखते और आठ वप की अवस्था म ही रैकेट हाथ मे लेकर मैदान म आ गया। लेवर के पिता हमेशा यही कहते कि मेरा बेटा ट्रेवर एक दिन चम्पियन बनेगा, मगर प्रशिक्षण होलिस हमेशा यही कहते कि नही आपके नाम को केवल आपका लेवर ही दुनिया म रोशन करेगा। आखिर लेवर ने अपने प्रशिक्षक की भविष्यवाणी को सही साबित कर दिखाया। लान टेनिस म 'ग्रैंड स्लैम' प्राप्त करना सचमुच बहुत मुश्किल काम होता है। राड लेवर से पहले अमेरिका के डोनल्ड बुज का यह गौरव प्राप्त हुआ था। अमेरिका के डोनल्ड बुज दुनिया के ऐसे पहले खिलाडी थे जिन्होंने पहली बार 1938 म ग्रैंड स्लम' का गौरव प्राप्त किया था।

अमर धावकों (एमिल जातोपेक और व्लादीमिर कुटस) में की जाने लगेगी। कुछ समय पहले ही क्लाक ने मैक्सिको की ऊंचाई म 5,000 मीटर के फासले को 14 मिनट 20 सकिंड म तय किया था। तब उनम एक प्रकार का आत्म-विश्वास जाग गया था। मगर वहा भी अफ्रीका और लातिनी अमेरिका के धावकों ने उनकी सारी आशाओ पर पानी फेर दिया। ट्यूनीसिया के मोहम्मद गामोदी ने 5,000 मीटर की दौड को 14 मिनट 5 0 सैकिंड मे पूरा कर स्वण पदक प्राप्त किया और केइनो को इसमे रजत पदक प्राप्त हुआ। केइनो ने इस फासले को 14 मिनट 5 2 सकिंड मे पूरा किया था। 10,000 मीटर की दौड का विश्व रिकाड तो रान क्लाक का था, लेकिन मैक्सिको ओलम्पिक मे केनिया के नफतली तेमू न इस फासले को 29 मिनट 27 4 सकिंड मे पूरा कर स्वण पदक प्राप्त किया। यहा यह बता देना उचित होगा कि इस फासले को 27 मिनट 29 4 सकिंड म पूरा कर कभी रान क्लाक ने *विश्व कीर्तिमान स्थापित किया था।*

रान क्लाक एकदम मायूस हो गए। अपनी बुरी तकदीर के आगे उन्हे आखिर हार माननी पडी और अगस्त 1970 मे उन्होने खेलकूद की दुनिया से सन्यास ले लिया। तब शायद उन्होने यह सोचा होगा कि जब चार ओलम्पिक म मेरी मुराद पूरी नही हुई, तब पाचव म भाग लेकर ही क्या चमत्कार कर लूगा।

लेकिन इन सबके बावजूद उनकी गणना महान धावकों मे की जाने लगी। 10 जुलाई, 1965 को लन्दन म तीन मील की दौड का आयोजन हो रहा था। दुनिया के चोटी के खिलाडी इस दौड मे हिस्सा लेने के लिए आए हुए थे। 3 मील की दौड को कोई 13 मिनट से कम समय मे तय कर सकता है, इसकी कल्पना तक नही की जा सकती थी। अमेरिका के गरी लिंडग्रेन (जो कुछ ही समय पहले 6 मील मे विश्व कीर्तिमान स्थापित कर चुके थे), माइक विग और हगरी के लाजोस मेकसेर जसे खिलाडी अपनी-अपनी ताकत आजमाने के लिए वहा पहुचे हुए थे। प्रतिकूल मौसम (तेज हवा और बारिश) के कारण यह सोचा तक नही जा सकता था कि इसम कोई खिलाडी विश्व रिकाड स्थापित कर पाएगा।

लम्बे फासले की दौडो म धावक के दम खम की असली अग्नि-परीक्षा हो जाती है। लिंडग्रेन ने पहले आधे मील की दूरी को 2 मिनट 7 2 सकिंड म तय किया। लिंडग्रेन और क्लाक दोनो साथ साथ ही थ। पहले मील को उन्होने 4 मिनट 15 4 सकिंड म तय किया और उसके बाद तो क्लार्क ने और भी तेजी पकड ली और तीन मील के फासले को 12 [illegible] 51 4 सैकिंड म पूरा कर नया कीर्तिमान [illegible]

रान क्लार्क का जन्म विक्टोरिया में एक साधारण परिवार में हुआ। छोटी सी उम्र में ही उन्हें रोटी रोजी की फिक्र शुरू हो गई और काम धंधा शुरू कर देना पड़ा। न उन्होंने कहीं से वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षण प्राप्त किया और न ही उन्हें गुरु से कोई गुरुमन्त्र ही प्राप्त हुआ। वह नियमित रूप से अपने शहर की सड़कों पर दौड़ने के लिए निकल पड़ते और इस प्रकार अभ्यास करते-करते उन्होंने एक एक करके नये विश्व रिकार्ड स्थापित करने शुरू कर दिए। उन्होंने पहला विश्व कीर्तिमान 10 000 मीटर की दौड़ में 1963 में स्थापित किया और अंतिम विश्व कीर्तिमान 2 मील के फासले की दौड़ में 1968 में किया। वह अपने जीवन काल में कितना दौड़े, इसका ठीक से हिसाब नहीं लगाया जा सकता। लेकिन अनुमान के रूप में कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन काल में केवल अपनी टांगों के सहारे 50,000 मील का सफर तय किया होगा, तब जाकर कहीं उनको यह सफलता प्राप्त हुई।

रामनाथन कृष्णन—अन्तरराष्ट्रीय लान टेनिस में भारत को आज जो मान, सम्मान और स्थान प्राप्त हुआ है उसका श्रेय टेनिस के महारथी रामनाथन कृष्णन् को प्राप्त है। 1954 में रामनाथन कृष्णन ने विम्बलडन की जूनियर प्रतियोगिता जीती थी। उसके बाद से वह लगातार विम्बलडन चैम्पियन बनने की जी तोड़ कोशिश करते रहे, लेकिन विम्बलडन चैम्पियन बनने का स्वप्न आज तक पूरा नहीं हुआ।

29 जून, 1960 का दिन भारतीय लान टेनिस के इतिहास का स्वर्णिम दिन माना जाता है। इस दिन भारत के सर्वश्रेष्ठ खिलाडी कृष्णन विम्बलडन की सेमी-फाइनल प्रतियोगिता में खेलने के लिए मैदान में आए। इससे पहले किसी भी भारतीय टेनिस खिलाडी को सेमी-फाइनल तक पहुंचने का सौभाग्य नहीं हुआ। वैसे कृष्णन प्रायः विश्व के सभी चोटी के खिलाडियों को कभी न कभी हरा चुके हैं, लेकिन विम्बलडन में उनकी किस्मत उनका साथ नहीं देती।

डेविस कप के इतिहास में चुनौती मुकाबले (चैलेंज राउंड) का विशेष महत्त्व है। भारत को एक बार चुनौती मुकाबले में पहुंचने का भी गौरव प्राप्त हुआ। अपने जीवनकाल के गौरवपूर्ण क्षणों की चर्चा करते हुए कृष्णन् स्वयं कहते हैं कि जब 1966 में अंतरक्षेत्रीय डेविस कप के फाइनल में ब्राजील को हराकर भारतीय टीम डेविस कप के चलेंज राउंड में पहुंची उसे मैं अपने और अपने देश का गौरवपूर्ण क्षण मानता हूं। उस दिन मैं कितना खुश था, इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। व्यक्तिगत मैच जीतने की बजाय या व्यक्तिगत प्रतिष्ठा प्राप्त करने की बजाय अपने देश की

प्रतिष्ठा बढाना कही ज्यादा सुखदाई होता है ।

कृष्णन् का जन्म 11 अप्रैल, 1926 को मद्रास के एक सम्पन्न परिवार म हुआ। उन्होने अपनी उच्च शिक्षा लोयोल्ला कालेज मद्रास मे प्राप्त की। कृष्णन् के पिता स्वय भी टेनिस के अच्छे खिलाडी थे। वह अपने पुत्र को भी मशहूर टेनिस खिलाडी के रूप मे देखना चाहते थे। फिर भी बचपन मे कृष्णन् को टेनिस से खास लगाव नही था। उन दिनो कृष्णन् की रुचि दूसरे खेलो मे थी। लेकिन उनके पिता उन्हे जबदस्ती पकडकर टेनिस सिखाया करते थे। आज वह स्वय भी यह बात स्वीकार करते हैं कि इस बारे म मैं अपने आपको बडा भाग्यशाली मानता हू कि मुझे एक टेनिस प्रेमी, टेनिस-खिलाडी पिता मिला। उनके पिता ने घर मे ही टेनिस की कोर्ट बना दी थी। उनके पिता उन्हे टेनिस का प्रशिक्षण देते समय कहते, 'बेटे तुम वहा से टेनिस शुरू कर रहे हो जहा से मैंने उसे छोडा था। मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि तुम मेरे स आगे निकलोगे और अपना और अपने देश का नाम ऊचा करोगे।'

कृष्णन् जब केवल 13 वष के थे तो उन्होने अन्तर-कालेज प्रतियोगिताओ मे हिस्सा लेना शुरू कर दिया था और 1950 मे उक्त प्रतियोगिता म जीत भी हासिल कर ली थी। 1952 मे वह पहली बार जूनियर विम्बलडन प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए विदेश गए। 1953 मे उन्होने कलकत्ता मे नेशनल चम्पियनशिप जीतकर सबको आश्चयचकित कर दिया। उस समय दशको मे शायद ही किसीको यह आशा हो कि यह 16 साल का लडका देश के अनुभवी और प्रवीण खिलाडियो के छक्के छुडा देगा। गेंद पर अपने अचूक और निर्दोष नियन्त्रण के कारण कृष्णन ने प्रतिद्वन्द्वियो को हैरान और परेशान कर दिया। 1954 मे उन्होने विम्बलडन की जूनियस प्रतियोगिता जीती। इस विजय ने उनकी हिम्मत को इतना बढ़ा दिया कि वह किसी भी बडे से बडे खिलाडी से टक्कर लेने का साहस करने लगे। कृष्णन् स पहले गौस मुहम्मद को भारत का सवश्रेष्ठ टेनिस खिलाडी माना जाता था। उन्ह एक बार विम्बलडन मे क्वाटर फाइनल तक पहुचने का गौरव प्राप्त हुआ था।

1956 मे उन्होने जब ड्राबनी को हराया तब उनकी खुशी का कोई ठिकाना नही रहा। उस समय स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू का उन्ह एक बधाई तार भी प्राप्त हुआ। जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रकुल प्रधानमन्त्री सम्मेलन म भाग लेने के लिए लन्दन गए हुए थे। उन्होने कृष्णन् और नरेश को अगले दिन खाने पर भी बुलाया था। कृष्णन् का कहना है कि वह तार उन्होंने अब तक अपने पास सभाल कर रखा हुआ है।

1959 मे रामनाथन कृष्णन् को विम्बलडन प्रतियोगिता म तीसरे स्थान

राममूर्ति अपनी छाती पर हाथी खडा कर लेते, चलती मोटर रोक देते, रुकी रेलगाडी को चलने नही देते, पूरी भैंस उठाकर सीढ़िया चढ जाते, 25 अश्व-शक्ति की दो मोटरगाडिया को रोक लेते, छाती पर बडी-सी चट्टान रखवाकर उस चट्टान को तुडवाते, आधी इच मोटी लोहे की जजीर को अपने हाथो स आसानी से तोड देते, 50 आदमियो से लदी गाडी को अपनी देह से गुजार देते और नारियल के वृक्ष को नीचे से हिलाकर ही दो तीन नारियल गिरा देते, आदि। उनकी वीरता भरी कहानिया म सच्ची घटनाओ का सिलसिला यदि एक बार शुरू हो जाता तो कभी खत्म होने का नाम नही लेता।

राममूर्ति की यह अलौकिक शक्ति ईश्वरीय देन नही, बल्कि अपनी साधना और सकल्प द्वारा अर्जित की गई थी। बचपन म प्रोफेसर राममूर्ति बहुत ही दुबले पतले थे। दो ही वप की उम्र मे उनकी माता परलोक सिधार गई थी, पाच वप की उम्र म उन्हें दमा हो गया था। उनका चेहरा एकदम पीला पड गया। वह अपने कमजोर शरीर और रोगी चेहरे को देखकर बहुत दुखी होते और मन ही मन मन सोचते—काश, मैं भी भीम, लक्ष्मण, हनुमान और भीष्म जैसा योद्धा होता। रोग से मुक्ति पाने के बाद वह अपने चि तन को कम मे बदलने लगे। उन्होने कसरत शुरू कर दी। डड, बठक और कुश्ती म मन लगाया और देखते ही देखते वह देश के नामी पहलवान बन गए। भरी जवानी मे उनका वक्षस्थल 48 इच था और फुलाने पर सीने का घेरा 56 इच हो जाता था।

राममूर्ति ने अपने बाल्यकाल मे ही कसरत करनी शुरू कर दी थी। अपने स्कूल की टीम म नाम लिखाकर वह फुटबाल आदि खेलने लगे थे। कुछ दिनो तक शौक से सडो के डम्बेल्स भी घुमाए, विलायती ढग की कसरत भी की, लेकिन जब इस सबसे उन्हे कोई विशेप लाभ नही पहुचा तो उन्होने अखाडे की शरण ली, डड-बठक, कुश्ती म मन लगाया। वह कहते है—"शुरू-शुरू म कसरत करने म शरीर अकडने लगता था। बहुत बार मैं आधी कसरत करके ही छोड देता। अखाडे मे आना दूभर मालूम पडने लगा। किन्तु तुरन्त ही मेरे मन के देवता जाग पडते। अपने आदश को सिद्ध करने की मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी। यदि ऐसा न कर सकू तो मृत्यु अच्छी है, यह समझकर कई बार मरने का भी निश्चय कर लिया था। अन्त मे दुबलताओ पर मुझे विजय मिली। मेरी कसरत का सिलसिला शुरू हो गया। भोर म ही उठकर घर से तीन कोस तक दौडता। एक फौजी अखाडा था, वहां जाकर खूब कुश्ती लडता। लडकर फिर तीन कोस दौडते हुए घर आता। वहां अपने चेलो के साथ कुश्ती लडता। उस समय मेरे अखाडे म डेढ सौ जवान थे। उनसे कुश्ती करने के बाद मुस्ताकर मैं तैरने जाता। फिर पन्द्रह सो से लेकर तीन हजार

दंड और पांच हजार से लेकर दस हजार तक बैठक कर लेते। वह देसी व्यायाम के भक्त थे। इसका फल यह हुआ कि सोलह वर्ष की उम्र में उनमें इतनी ताकत आ गई कि नारियल के पेड़ पर जोर से धक्का मारकर दो-तीन नारियल टूटकर नीचे-नीचे गिर पड़ते।

उस समय राममूर्ति का भोजन भी बदल गया। यही उनका सारा भोजन था। दिन के बारह बजे कमरा बन्द करके वह बादाम का सरबत पीते। पीछे दो-तीन सेर दही, तरकारी और चार-पांच सेर दूध पी जाते। रात में फिर थोड़ा-सा भात और दही। दिन में दो-तीन सेर बादाम उनके पेट में जाता और कभी-कभी एकाध सेर मलाई भी पानी के बदले में चाट जाते। दूध की बजाय उन्हें दही से ज्यादा लगाव था और हां, मांस, मछली, शराब आदि से कोसों दूर रहते।

देखते ही देखते उनका शरीर फौलाद का हो गया। संयोग की ही बात थी कि उसी समय यूजेन सैंडो नामक सुप्रसिद्ध यूरोपीय पहलवान संसार भर में अपने नाम का डंका बजाता और संसार के सभी नामी पहलवानों को पछाड़ता हुआ हिन्दुस्तान आ पहुंचा।

राममूर्ति ने सैंडो को चुनौती दे डाली। लेकिन सैंडो ने अपनी इज्जत बचाने के लिए यह कह दिया कि वह काले आदमी से कुश्ती नहीं लड़ सकता। एक बार जब वजन उठाने की होड़ चली तो राममूर्ति ने सैंडो से दो गुना अधिक वजन उठा लिया था।

भारत में अपने नाम का डंका बजाने के बाद वह विदेशों में गए। इंग्लैंड, फ्रांस और दूसरे यूरोपीय देशों में उनकी धाक जम गई। यही नहीं, उनकी वीरता देखकर कितने विदेशी जलने लगे। उन लोगों ने राममूर्ति को मार डालने के लिए भी कोशिश की। मलाका द्वीप में इन्हें दो बार जहर दिया गया। पहली बार तो जहर का कोई लक्षण तक न मालूम हुआ। उनकी जबरदस्त अंतड़ी उसे साफ पचा गई। किन्तु दूसरी बार उन्हें इतना जहर दिया गया जिससे बलवान घोड़ा तक मर सकता था। जहर के लक्षण मालूम होते ही राममूर्ति ने लंगोट बांधकर पांच हजार दंड खींच डाला। इस प्रकार पसीने के साथ बहुत कुछ जहर निकल गया, तो भी वह बहुत दिनों तक खाट पर ही पड़े रहे।

वह किसी सर्कस में भरती होकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना चाहते थे, लेकिन लोकमान्य तिलक की सहायता और सहयोग से उन्होंने अपना ही सर्कस कायम किया। यह सर्कस बहुत लोकप्रिय हुआ। खास तौर से छाती पर एक मजबूत तख्ता रखकर उसपर हाथी को खड़ा करने का खेल। एक बार की बात है कि जब वह फ्रांस में अपने इसी खेल का

प्रदर्शन कर रहे थे तो वहां पर कुछ दुष्टों ने सर्कस के मैनेजर को घूस देकर मजबूत तख्ते की बजाय एक कमजोर तख्ता रखवा दिया। उस तख्ते को बीचों-बीच दो टुकड़े करके फिर सरेस से जोड़ा गया था। ज्यों ही राममूर्ति की छाती पर हाथी आया, सरेस भला कब तक टिकता, तख्ता कड़क से टूट गया। हाथी का एक पैर राममूर्ति की छाती पर पड़ा, और राममूर्ति की तीन हड्डियां चटक गईं। फ्रांस के कुशल डाक्टरों की कृपा से वह डेढ़ मास के इलाज के बाद ठीक हो सके। बाद में उन्होंने खेल दिखाना छोड़ दिया और भारतीय नवयुवकों को तन और मन से स्वस्थ रहने की प्रेरणा देने लगे। उन्होंने भारत में जगह जगह अखाड़े भी बनवाए।

राममूर्ति का जन्म आन्ध्र प्रदेश में वीरघट्टम नामक गाव में हुआ था। उनके पिता पुलिस में इंस्पेक्टर थे। राममूर्ति केवल पहलवान ही नहीं, बल्कि बहुत ही ज्ञानवान और विवेकशील व्यक्ति भी थे। अंग्रेजी और संस्कृत का उन्हें अच्छा ज्ञान था। हिन्दी भी अच्छी बोल लेते थे। ब्रह्मचर्य के वह कट्टर पक्षपाती थे। राममूर्ति की मृत्यु सन् 1938 में हुई। उस समय वह 60 वर्ष के थे।

राल्फ बोस्टन—राल्फ बोस्टन के नामोल्लेख के बिना लम्बी कूद का इतिहास अधूरा है और राल्फ बोस्टन के दो महत्त्वपूर्ण कारनामों के बिना उनका व्यक्ति चरित अधूरा रह जाएगा। एक तो यह कि वह ऐसे पहले इन्सान हैं जिन्होंने 27 फुट से ज्यादा लम्बा कूदा और दूसरा यह कि उन्होंने लम्बी कूद में 25 वर्ष पुराना रिकार्ड भंग किया।

अमेरिका के राल्फ बोस्टन ने लम्बे अरसे तक एथलेटिक-जगत में (खास कर लम्बी कूद में) अपने नाम की पताका लहराई और आजकल स्वयं खेलने की बजाय रेडियो और टेलीविज़न पर खेल-समीक्षाएं करते हैं।

अमेरिका के 29 वर्षीय नीग्रो खिलाड़ी (कद 6 फुट 1 इंच) राल्फ बोस्टन ने सन्यास लेने से पहले आखिरी बार फिलडेल्फिया में आयोजित 'मार्टिन लूथर किंग स्मारक' प्रतियोगिता में भाग लिया था। 1960 में जब बोस्टन ने लम्बी कूद का 25 साल पुराना रिकार्ड तोड़ा तो वह एक ही दिन में महान खिलाड़ी की संज्ञा पा गए। उन्होंने 26 फुट 11 75 इंच लम्बा कूदकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। उसी वर्ष रोम ओलम्पिक प्रतियोगिता में भी उन्होंने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। वहां वह अपने प्रतिद्वन्द्वी राबर्टसन से केवल एक सेंटीमीटर ही ज्यादा कूद पाए। रोम ओलम्पिक में उन्होंने 26 फुट 3 इंच लम्बी छलांग लगाई थी। तब तक यह समझा जाता था कि 27 फुट से लम्बा कूदना इन्सान की सीमा और उसकी शक्ति से बाहर की चीज है, लेकिन 1964 में उन्होंने 27 फुट से लम्बा कूदकर लोगों की उक्त धारणा को गलत साबित कर दिखाया।

लेकिन इसे आप भाग्य कहिए या सयोग, वह 1964 मे तोक्यो म हुए आलम्पिक खेला म स्वण पदक स वचित रह गए और ब्रिटेन के लिन डेविस उनसे पौन इच आगे निकल गए। तोक्यो ओलम्पिक म लिन डेविस ने 26 फुट 4 75 इच लम्बी छलाग लगाई और बोस्टन अपनी लाख कोशिश के बावजूद 26 फुट 4 इच से आगे नही निकल सके। इसलिए कहते है कि विश्व चम्पियन बनना और ओलम्पिक खेलो म स्वण पदक प्राप्त करना यह दोनो अलग अलग बातें हैं। 1965 मे उ होने फिर 27 फुट 4 75 इच का नया कीर्तिमान स्थापित किया। उसके बाद दो साल तक वह अकेले ही विश्व चम्पियन कहलाते रहे, लेकिन उनके बाद लम्बी कूद म दो विश्व चम्पियन बन गए। उनके परिचित मित्र और प्रतिद्व द्वी के इगोर तेर ओवानेस्यान ने उनके बराबर कूदकर विश्व रिकाड की बराबरी की।

मई 1959 से नवर अगस्त 1967 तक बोस्टन ने 166 राष्ट्रीय और अतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ म हिस्सा लिया और उनम से 148 बार विजय प्राप्त की। 1967 म अमेरिकी बनाम पश्चिमी जमन की एक प्रतियोगिता के दौरान उनकी टाग जख्मी हो गई थी जिसके कारण काफी देर तक वह अभ्यास नही कर सके। कुछ लोगो न तो यहा तक कहा कि अब वह लगातार तीसरी बार मक्सिको मत्रो म भाग नही लेगे। लेकिन उ होने किसीकी एक न सुनी और मक्सिका ओलम्पिक म भी भाग लिया।

राष्ट्रकुल प्रतियोगिता—जहा तक खेला की लोकप्रियता और महत्त्व का प्रश्न है ओलम्पिक प्रतियोगिताओ के बाद राष्ट्रकुल प्रतियोगिताओ का ही नम्बर आता है। इसका इतिहास बहुत पुराना नही है। कहा जाता है कि 1911 म किंग जाज पचम के राज्याभिषेक के अवसर पर ब्रिटिश साम्राज्य स सम्ब धित देशा की सहायता से एक खेल मेले का आयोजन किया गया। परन्तु इसके बाद 1930 म जाकर राष्ट्रकुल खेलो के लिए एक निश्चित रूप रेखा तैयार की गई और यह फसला किया गया कि यह खेल भी, ओलम्पिक खेलो की तरह, हर चार साल बाद होगे। इस तरह से आयोजन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य स सम्ब धित देशा को एक स्थान पर इकट्ठा करना और उनम मैत्री भाव जगाना था ताकि वे सभी देश यह समझें कि वे एक ही परिवार के सदस्य हैं। इस प्रतियोगिता म रग या जाति का भी कोई ध्यान नही रखा जाता था और राष्ट्रकुल स सम्ब धित कोई भी देश इसम भाग ले सकता था। यही कारण है कि इन प्रतियोगिताओ म अफ्रीकी देशा के खिलाडी भी काफी सख्या म भाग लेते है।

भारत ने 1954 म पहली बार इस प्रतियोगिता म भाग लिया था। उस वष भारत का कोई खिलाडी कोई भी पदक नही जीत पाया था। उसके

बाद कार्डिफ प्रतियोगिताओं म भारत के मिल्खा सिंह ने 440 गज की दौड मे स्वण पदक प्राप्त किया। भारत के दो पहलवान—लीलाराम और लक्ष्मीकात पाण्डे भी इस प्रतियोगिता म स्वण पदक और रजत पदक प्राप्त कर चुके है। 1966 म हुई आठवी राष्ट्रकुल प्रतियोगिता म भारत को तीन स्वण पदक, 4 रजत पदक और 3 कास्य पदक प्राप्त हुए। तीनों स्वण पदक भारतीय पहलवानों ने जीते। स्वण पदक प्राप्त करने वाले भारतीय पहलवानो के नाम इस प्रकार थे भीमसिंह (हैवी वेट), विशम्भर सिंह (बैंटम वेट) और मुख्तियार सिंह (लाइट वेट)।

1978 मे एडमटन म हुए 11वें राष्ट्रकुल खेलों म भारतीयो ने कुल 5 स्वण, 4 रजत और 6 कास्य पदक प्राप्त किए। राष्ट्रकुल खेल कब-कब और कहा कहा हुए, इसका विवरण इस प्रकार है

1930 हैमिल्टन, 1934 लदन, 1938 सिडनी 1950 ऑक्लड, 1954 वैंकोवर, 1958 कार्डिफ, 1972 पथ, 1966 किंगस्टन, 1970 एडिनबग, 1974 क्राइस्टचच, और 1978 एडमटन।

1978 मे एडमटन राष्ट्रकुल खेलो के भारतीय पदक विजेता

स्वण

1 अशोक कुमार (कुश्ती—48 किलो, लाइट फ्लाई वेट)
2 सतबीर सिंह (कुश्ती—57 किलो बटम वेट)
3 राजेन्द्रसिंह (कुश्ती—74 किलो, वल्टर वट)
4 इगाथुर करुणाकरन (भारोत्तोलन, 52 किलो, फ्लाई वेट)
5 पादुकोने प्रकाश (बडमिंटन—सिंगल्स फाइनल)

रजत

1 सुदेश कुमार (कुश्ती—52 किलो, फ्लाई वेट)
2 जगमिंदर (कुश्ती—62 किलो, फेदर वेट)
3 सतपाल (कुश्ती—100 किलो, हैवी वेट)
4 तमिल सेल्वान (भारोत्तोलन—56 किलो, बटम वेट)

कांस्य

1 जगदीश कुमार (कुश्ती—68 किलो, लाइट वट)
2 करतार सिंह (कुश्ती—90 किलो, लाइट वट)
3 ईश्वर सिंह (कुश्ती—100 किलो स ऊपर, सुपर हैवी वेट)
4 सुरेश बाबू (एथलेटिक, लबी कूद)

5 अमी घिया और
कवल ठाकुर (बर्डमिंटन)
6 वीरेंद्र थापा (मुक्केबाजी, लाइट फ्लाई वेट)

राष्ट्रीय खेलकूद सस्थान (नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेलकूद सस्थान, पटियाला)—शायद ही कोई भारतीय खेल प्रेमी हो जिसने राष्ट्रीय खेल-कूद सस्थान (एन० आइ० एस०) का नाम न सुना हो और शायद ही कोई एसा खिलाडी हो जिसने इस तीर्थ की यात्रा और दशन न किए हो। जब भी किसी खिलाडी या टीम को अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता म भाग लेने के लिए चुना जाता है तो उस अवसर कुछ दिनो के लिए इसी सस्थान मे आयोजित प्रशिक्षण शिविरो म प्रशिक्षित किया जाता है।

इस सस्थान का मुख्य उद्देश्य विभिन्न खेलो के योग्य और कुशल प्रशिक्षक तयार करता है। ऐसे प्रशिक्षक जो अपने खेल विशेष की तकनीको और बारीकियो स पूरी तरह परिचित हो और युवा खिलाडियो को वज्ञानिक ढग स उस खल म प्रशिक्षित कर सकें, ताकि युवा और होनहार खिलाडियो का सही दिशा म मार्गदर्शन किया जा सके। इसके अतिरिक्त इस सस्थान का उद्देश्य भारतीय खेलकूद के स्तर म सुधार करना और जनसाधारण म खेलकूद के प्रति रुचि उत्पन्न करना तथा खेलकूद का प्रसार करना है, ताकि दूसरे देशो की तरह भारत मे भी खेलकूद का सामाजिक प्राथमिकता (सोशियल प्रायरटी) प्राप्त हो सके। आज जो लोग यह कहते है कि भारतीय खेलकूद के स्तर म इसलिए सुधार नही हो रहा क्योकि यहा सुविधाओ और साधनो की कमी है, उन्ह एक बार इस तीर्थ की यात्रा जरूर करनी चाहिए। कहा जा सकता है कि भारत म वज्ञानिक ढग से खिलाडियो को प्रशिक्षित करने की प्रथा का शुभारम्भ उसी दिन से हुआ जब से पटियाला म राष्ट्रीय खेलकूद सस्थान की स्थापना की गई।

इस सस्थान की स्थापना अखिल भारतीय खेलकूद परिषद के सुझाव पर भारत सरकार द्वारा की गई। भारतीय खेलकूद के गिरते स्तर के कारणो की जाच करने तथा खेलकूद की प्रगति की गति को और तेज करने और उसे लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक साधनो, सुविधाओ की समुचित व्यवस्था करने के उद्देश्य स 1958 म भारत सरकार न महाराजा पटियाला की अध्यक्षता मे एक खेलकूद अन्वेषण समिति का गठन किया। उस वर्ष वसे भी तोक्यो म एशियाई खलो म हाकी म भारत की हार के कारण देश भर म एक निराशा की लहर दौड गई थी। उस अन्वेषण समिति न ही एक एसे राष्ट्रीय खेलकूद सस्थान का सुझाव दिया जिसम वज्ञानिक ढग स

खिलाडियो और प्रशिक्षकों को तैयार किया जा सके। इ ही सुझावो और सिफारिशो के आधार पर भारत सरकार ने राष्ट्रीय खेलकूद सस्थान की स्थापना की।

भारतीय खेलकूद के विकास म महाराजा पटियाला श्री यादवेन्द्र सिंह का योगदान किसीसे छिपा नही है। स्वाधीनता के बाद ऐतिहासिक नगर पटियाला मे स्थित मोतीबाग महल को महाराजा पटियाला ने पजाब सरकार को 26 7 लाख रुपये मे बेच दिया था। उसके बाद पजाब सरकार न इस ऐतिहासिक महल को ठीक उतनी ही कीमत पर भारत सरकार को दे दिया। राष्ट्रीय खेलकूद सस्थान 350 एकड भूमि म फले इसी मोतीबाग म स्थित है। पटियाला रेलवे स्टेशन से यह संस्थान लगभग तीन मील दूरी पर है। इसके चारो ओर का वातावरण (बाग-बगीचे, खेल के मैदान, तरण-ताल, व्यायामशाला आदि) इसकी शोभा को और भी बढ़ाता है। पूरे एशिया भर मे अपने ढग का केवल मात्र यही एक ऐसा सस्थान है जहां वैज्ञानिक ढग से प्रशिक्षको को तैयार किया जाता है। इस सस्थान म माच 1961 से काम शुरू हो गया था। 7 मई, 1961 को तत्कालीन केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री के० एल० श्रीमाली ने इसका विधिवत् उद्घाटन किया था। अवकाश-प्राप्त लैफ्टिनेंट जनरल सतसिंह इस सस्थान के पहले निदेशक बने। बाद म राजकुमारी अमत कौर कोचिग योजना का भी इसी सस्थान म विलय कर दिया गया।

इन दस वर्षों मे इस सस्थान ने विभिन्न खेलो के लगभग 3000 प्रशिक्षको को वैज्ञानिक ढग से प्रशिक्षित किया जो अब देश के कोने कोने म युवा खिलाडियो को प्रशिक्षित कर रहे हैं। इस समय 240 प्रशिक्षक केवल राष्ट्रीय खेलकूद सस्थान म ही काम कर रहे हैं। एशिया और अफ्रीकी देशो मे भारतीय प्रशिक्षको की (विशेपकर ऐसे प्रक्षिक्षको की जो एन० आई० एस० द्वारा प्रशिक्षित किए गए हो) बहुत माग है। इतना ही नही, कुछ देशो ने अपने प्रशिक्षको को भी यहा प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए भेजने की इच्छा व्यक्त की है।

अपने उद्देश्यो की प्राप्ति हेतु यह सस्थान

1 उच्चकोटि के प्रशिक्षक तैयार करता है।
2 वतमान प्रशिक्षको के तकनीकी विकास मे सहायता करता है।
3 क्रीडा क्षत्र की विशिष्ट उपलब्धियो की सूचना के केन्द्रीयकरण के रूप मे काय करता है।
4 विभिन्न क्रीडा सस्थाओ को होनहार खिलाडियो की प्राप्ति म सहायता करता है तथा सभागीय (रिजनल) प्रशिक्षण केन्द्रो द्वारा

उन्हें उत्तम प्रशिक्षण प्रदान करता है।

5 अन्तरराष्ट्रीय क्रीडा प्रतियोगिताओ मे भाग लेने वाली टीमो को प्रशिक्षण देकर तैयार करता है।
6 क्रीडा सम्बन्धी साहित्य का प्रकाशन करता है।
7 शारीरिक शिक्षा के शिक्षक शिक्षिकाओ आदि के लिए अल्पावधि प्रशिक्षण की व्यवस्था करता है।
8 विभिन्न क्रीडा पत्र पत्रिकाओ मे खेल सम्बन्धी अन्वेषण प्रकाशित करता है।
9 गोष्ठियो (सेमिनार्स), सभाओ, क्लिनिक्स एव प्रतियोगिताओ का आयोजन करता है।
10 एशियाई एथलेटिक प्रशिक्षक समिति, भारतीय स्पोर्टस मेडिसिन समिति एव भारतीय धावपथ क्षेत्र (ट्रैक एण्ड फील्ड) समिति आदि के सचिवालय के रूप मे काय करता है।

सस्थान मे निम्नलिखित विषयो का प्रशिक्षण दिया जाता है—

1 एथलेटिक्स	2 बैडमिंटन
3 बास्केट बाल	4 क्रिकेट
5 फुटबाल	6 जिमनास्टिक्स
7 हाकी	8 लान टेनिस
9 तैराकी (स्विमिंग)	10 टेबल टेनिस
11 वालीबाल	12 कुश्ती
13 भारोत्तोलन (वेट-लिफ्टिंग)	

भारतीय खेलो के प्रचार व प्रसार के लिए कबड्डी व खो-खो खेलो मे अल्पावधि प्रशिक्षण दिया जाता रहा है।

प्रारम्भ के कुछ वर्षों तक सस्थान ने विदेशो से विभिन्न खेलो के कुशल प्रशिक्षक आमन्त्रित कर अपने देश के प्रशिक्षको को प्रशिक्षण दिलवाया। अब सस्थान के सभी प्रशिक्षक पूर्ण रूप से भारत के ही हैं। फिर भी समय-समय पर विदेशी कुशल प्रशिक्षको से अल्पावधि प्रशिक्षण काय अथवा नवीनतम् उपलब्धियो को प्राप्त करने हेतु आमन्त्रित किया जाता है।

राष्ट्रीय प्रशिक्षण योजना के अन्तगत सस्थान द्वारा दिल्ली, हैदराबाद, जयपुर, लखनऊ, नागपुर, बगलौर, गाधी नगर (गुजरात), जबलपुर, पटना, अमृतसर, चण्डीगढ, गोआ, पोटब्लेयर, जम्मू एव श्रीनगर मे सभागीय (रिजनल) प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किए गए हैं।

इनमे से अधिकाश केन्द्रो पर कार्य आरम्भ हो चुका है। सस्थान द्वारा इन सभागीय प्रशिक्षण केन्द्रो पर पर्याप्त सख्या मे प्रशिक्षक नियुक्त किए गए

हैं। इसके साथ-साथ प्रशिक्षण केन्द्रों को 10,000 रुपये की क्रीडा सामग्री भी प्रदान की जाती है।

लगभग 60 प्रशिक्षकों की नियुक्तियां नेहरू युवक केन्द्रों हेतु की जा चुकी हैं।

अन्तरराष्ट्रीय विभिन्न क्रीडा प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले राष्ट्रीय दलों के लिए संस्थान में प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। संस्थान द्वारा दिए गए सुव्यवस्थित प्रशिक्षण से राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के उत्थान में सहायता मिलती है।

शिक्षा मंत्रालय एवं समाज कल्याण विभाग द्वारा अनुमोदित एवं पुनर्गठित व्यवस्था के अन्तर्गत सीनियर एवं जूनियर खिलाड़ियों को संस्थान प्रशिक्षण शिविरों के समय निःशुल्क आवास एवं भोजन की सुविधा प्रदान करता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में खेलकूद प्रचार व प्रसार हेतु संस्थान ने फरवरी 1971 में प्रथम अखिल भारतीय ग्रामीण क्रीडा प्रतियोगिता का आयोजन पटियाला में किया। द्वितीय अखिल भारतीय ग्रामीण क्रीडा प्रतियोगिता का आयोजन मार्च 1972 में संस्थान के तत्त्वावधान में जयपुर (राजस्थान) में किया गया और तृतीय अखिल भारतीय ग्रामीण क्रीडा प्रतियोगिता का आयोजन फरवरी 1973 में दिल्ली में आयोजित हुआ।

पानी पर आश्रित परिवारों के 12 से 14 वर्ष के बालकों की ग्रामीण तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन अप्रैल 1973 में किया गया।

राज्य क्रीडा परिषदों के अंतर्गत नियुक्त संस्थान के क्षेत्रीय प्रशिक्षकों द्वारा उनके परामर्श पर महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के क्रीडा कलापों में उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में प्रमुख रूप से सहयोग दिया जाता है। हमारे प्रशिक्षकों द्वारा विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के प्रशिक्षण कार्य, राष्ट्रीय स्तर पर क्रीडा आयोजनों में सक्रिय सहयोग दिया जाता है।

संस्थान ने सन् 1972 में 3 सहायक छात्रवृत्तियां (फलोशिप) स्पोर्ट्स मैडिसिन विषय में प्रदान की हैं। अन्य क्रीडा क्षेत्रों में भी अनुसंधान सहायक छात्रवृत्तियां दी जाने की सम्भावना है।

नेताजी सुभाष राष्ट्रीय क्रीडा संस्थान द्वारा देश में क्रीडा प्रचार एवं प्रसार हेतु निम्नतम मूल्यों में क्रीडा साहित्य का प्रकाशन किया जाता है, जिससे सभी सम्बन्धित व्यक्ति लाभान्वित हो सकें।

संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य—

1 प्लेइंग फील्ड मैनुअल 2 बैडमिंटन 3 बास्केट बाल
4 कबड्डी 5 लान टेनिस 6 क्रिकेट
7 एथलेटिक्स।

एन० आई० एस० की एक त्रमासिक पत्रिका भी नियमित रूप से प्रकाशित की जाती है।

डा० डी० एन० माथुर की देखरेख म संस्थान के अन्तगत स्पोट स मैडिसिन विभाग सस्थापित है। डा० माथुर पश्चिम जमनी से 18 माह की अवधि का प्रशिक्षण प्राप्त करके आए हैं। राष्ट्रीय स्तर पर स्पोट स मैडिसिन की प्रथम गोष्ठी (सेमिनार) का आयोजन सन् 1971 म सस्थान द्वारा किया गया—जिसम बहुत स फिजिशियन्स, सरजन्स, फिजियोथरापिस्टस, मनोवैज्ञानिकों, प्रशिक्षकों और शारीरिक शिक्षकों ने भाग लिया। माच 1972 म द्वितीय राष्ट्रीय गोष्ठी (सेमिनार) का आयोजन हैदराबाद म किया गया। भारतीय स्पोट्स मैडिसिन समिति, जो कि अन्तरराष्ट्रीय समिति से मान्यता प्राप्त है, का सचिवालय एन० आई० एस० म है।

इस योजना के अन्तगत राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के आधार पर 200 छात्रवृत्तिया 50 रुपये प्रति छात्र प्रति माह और राज्यस्तर की प्रतियोगिता के आधार पर 400 छात्रवृत्तिया 25 रुपय प्रति छात्र प्रति माह की दर से सस्थान द्वारा प्रति वष दी जाती हैं। इसके साथ-साथ पूव सत्र म दी गई छात्रवृत्तियों का नवीनकरण इस आधार पर किया जाता है कि छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ता की प्रगति सन्तोषजनक हो, ताकि वह अपनी शिक्षा उच्चतर माध्यमिक स्तर तक पूण कर सके।

राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिता—भारत मे हाकी की राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन पहली बार 1928 म किया गया था। उस समय इसे अन्तर-प्रान्तीय प्रतियोगिता कहा जाता था। 1928 से लेकर 1944 तक हर दो साल म एक बार इसका आयोजन होता था। 1944 के बाद से हर साल इसका आयोजन किया जाने लगा। 1928 मे पहली बार उत्तर प्रदेश की टीम को राष्ट्रीय चम्पियन बनने का गौरव प्राप्त हुआ। तब ध्यानचन्द उत्तर प्रदेश की ओर से खेला करते थ।

1968 से राष्ट्रीय प्रतियोगिता, लीग और नाक-आउट के आधार पर खेली जाती है। अर्थात पहले सारी टीमो का चार ग्रुपो म बाट दिया जाता है। शुरू-शुरू मे सभी टीमे अपने अपने ग्रुप म लीग-आधार पर खेलती है। इस प्रकार अपने-अपने ग्रुप म पहला और दूसरा स्थान पाने वाली टीम क्वाटर फाइनल म पहुची मान ली जाती हैं। फिर नाक-आउट पर मुकाबले होते हैं।

राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिता विवरण

वर्ष	स्थान	विजेता	रनर्स अप	कुल टीमों का प्रवेश
1928	कलकत्ता	यूनाइटिड प्रोविंस	राजपूताना	5
1930	लाहौर	संयुक्त रेलवे	पंजाब	4
1932	कलकत्ता	पंजाब	बंगाल	10
1934	प्रतियोगिता का आयोजन नहीं हो सका			
1936	कलकत्ता	बंगाल	मानवादर	12
1938	कलकत्ता	बंगाल	भोपाल	4
1940	बम्बई	बम्बई	दिल्ली	12
1942	लाहौर	दिल्ली	पंजाब	
1944	बम्बई	बम्बई	ग्वालियर	
1945	गोरखपुर	भोपाल	यूनाइटिड प्रोविंस	8
1946	कलकत्ता	पंजाब	दिल्ली	11
1947	बम्बई	पंजाब	बम्बई	13
1948	बम्बई	भोपाल	बम्बई	16
1949	दिल्ली	पंजाब	बंगाल	16
1950	भोपाल	पंजाब	भोपाल	18
1951	मद्रास	पंजाब	सेना	18
1952	कलकत्ता	बंगाल	पंजाब	18
1953	बंगलौर	सेना	पंजाब	17
1954	हैदराबाद	पंजाब	सेना	19
1955	मद्रास	सेना और मद्रास (संयुक्त विजेता)		19
1956	जालंधर	सेना	उत्तर प्रदेश	21
1957	बम्बई	रेलवे	बम्बई	22
1958	बम्बई	रेलवे	बम्बई	22
1959	हैदराबाद	रेलवे	सेना	24
1960	कलकत्ता	सेना	उत्तर प्रदेश	22
1961	हैदराबाद	रेलवे	सेना	23
1962	भोपाल	पंजाब	भोपाल	24
1963	मद्रास	रेलवे	सेना	20
1964	दिल्ली	रेलवे	सेना	22
1965	बम्बई	पंजाब	बम्बई	23
1966	पूना	सेना और रेलवे (संयुक्त विजेता)		23
1967	मदुरै	रेलवे और मद्रास (संयुक्त विजेता)		25

वर्ष	स्थान	विजेता	रनस-अप	कुल टीमो का प्रवेश
1968	वेलिंगटन	रेलवे	मसूर	23
	(यह मैच पूल आधार पर खेला गया)			
1969	इर्नाकुलम (कोचीन)	पजाब	रेलवे	24
1970	जालधर	पजाब और रेलवे (सयुक्त विजेता)		25
1971	बगलौर	पजाव	वम्बई	25
1972	जालधर	पजाब	रेलव	25
1973	वम्बई	सेना	रेलवे	25
1974	पूना	रेलवे	तमिलनाडु	27
1975	भोपाल	रेलवे	तमिलनाडु	2[illegible]
1976	कटक	रेलवे	सेना	29
1977	मद्रास	रेलवे और इडियन एयरलाइस (सयुक्त विजेता)		26
1978	मदुरै	इडियन एयरलाइस	रेलव	26
1979	हैदराबाद	इडियन एयरलाइस	रेलवे	25

रूप सिंह—भारतीय हाकी के मशहूर खिलाडी कप्टन रूप सिंह हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचन्द के छोटे भाई थे और उनका जन्म 9 सितम्बर, 1909 को जबलपुर मे हुआ था। लास एजेल्स (1932) मे हुए ओलम्पिक खेलो मे उन्होने पहली बार ओलम्पिक खेलो म भाग लिया था और अमेरिका के विरुद्ध खेलते हुए भारत ने अमेरिका को 24-1 से हराया था। इनमे 12 गोल अकेले रूप सिंह ने ही किए जो कि अपने आप म एक रिकाड है। उसके बाद उन्होने 1936 मे हुए बर्लिन ओलम्पिक खेलो मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। उसके बाद 1944 म भी उन्हे भारतीय टीम मे शामिल कर लिया गया था, लेकिन तब युद्ध के कारण खलो का आयोजन नही हो सका था।

1972 म म्यूनिख ओलम्पिक खेल शुरू होने स पहले भारतीय खेल प्रेमियो को यह समाचार सुनन को मिला था कि म्यूनिख ओलम्पिक गाव म जिन 22 मार्गो का नामकरण खेल जगत की महान् हस्तियो के नाम पर किया जाएगा उनमे एक माग का नाम रूप सिंह माग रखा जाएगा। बर्लिन ओलम्पिक मे दोनो भाइयो (ध्यानचन्द और रूप सिंह) ने 11-11 गोल किए थे।

भारतीय हाकी के इस अदभुत सितारे का देहान्त 10 दिसम्बर, 1977

कन्हाई ने किसीसे प्रशिक्षण नही लिया, पर न्तु 19 वष की उम्र मे
माने लिडवॉल, मिलर, बेनो, डेविडसन तथा जॉनसन
याई टीम के विरुद्ध गयाना के लिए 51 और 27 रन
र क सफल खिलाडी की लिस्ट म लिखवा दिया।
बल्ले ने रन उगलना प्रारम्भ कर दिया। जमैका
क्रमश 129 और 195 रन ठोक दिए। 1957 के
ए गए ट्रायल्स मैच म उन्होने क्रमश 62 और 90
ो को चौंका दिया। परन्तु इस इग्लड दौरे म वे

लड के विरुद्ध उन्होने अपने जीवन की सवश्रेष्ठ
राय मे कन्हाई की अपनी सुप्रसिद्ध शली, लगन,
र था। 6 घटे और 18 मिनट तक विकेट पर
न बनाकर अत म उन्होने अपनी टीम को सकट से

या के ऐतिहासिक दौरे म कुल 503 रन बनाकर
। इस आस्ट्रेलिया दौरे मे उन्होने एक असाधारण
, जिसके परिणामस्वरूप गेंद स्क्वेरलेग की ओर
ती और कन्हाई अपनी पीठ के बल जमीन पर।
ई छोटे कद के, गठीले और मजबूत देहयष्टि के
विशेषता है अपने पावो की आश्चयजनक गति
वे अल्पभाषी हैं। 1963 म उन्होने विवाह किया
की टीम के साथियो तक को अखबारो से मालूम

के आकडे इस प्रकार हैं कुल टेस्ट 79, पारी
7, सर्वाधिक 256, औसत 47 53 शतक 15,
।

ओलम्पिक मे भारतीय हाकी टीम के
र फुर्ती से पाकिस्तान आदि देशो के
ल समीक्षको को यह मानना पडा कि

को हृदय गति रुक जाने से हो गया। उस समय कैप्टन रूप सिंह की आयु 68 वर्ष थी।

रैंडी मटसन—अमरिका के रैंडी मैटसन दुनिया के ऐसे पहले खिलाडी हैं जिन्ह 16 पौंड वजन का गोला 70 फुट से ज्यादा दूर फेंकने का गौरव प्राप्त है। रैंडी मैटसन ने, जिनका कद 6 फुट 6½ इंच वजन 263 पौंड है, 8 मई, 1965 को 21 वर्ष की उम्र म ही 71 फुट 5¼ इंच गोला फेंककर इस प्रतियोगिता म नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। कुछ समय पहले तक किसीके ख्याल या ख्वाब म भी यह बात नही थी कि कोई व्यक्ति 16 पौंड वजन के गोले को 70 फुट स भी ज्यादा दूर तक फक सकता है।

खेलकूद के कीर्तिमानो और आंकड़ो की पोथियां लिखने वाले पंडित अक्सर कहा करते हैं कि आखिर इंसान की शक्ति की कोई सीमा है। ज्यो-ज्यो समय बीतता जाएगा त्यो-त्यो नए विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का सिलसिला कम होता जाएगा। मगर मटसन ने इन आंकड़ेबाजो के सारे सिद्धान्तो पर पानी फेर दिया। मैटसन के अनुसार 40 फुट (सन 1871) से 50 फुट (सन 1909) तक पहुचने म 38 वर्ष लगे। 50 फुट स 60 फुट पहुचने मे 45 वर्ष लगे और 60 फुट स 70 फुट तक पहुचने म केवल 11 वर्ष लगे। यहा यह बता देना उचित होगा कि 11 वर्ष पहले परी ओ ब्रीयन को 60 फुट गोला फेंकने का गौरव प्राप्त हुआ था।

1964 म तोक्यो ओलम्पिक खेलो म मटसन को गोला फेंक प्रतियोगिता म रजत पदक प्राप्त हुआ था। वहा उन्होने 66 फुट 3 25 इंच गोला फेंका था और इस प्रतियोगिता म डलस लाग न मैटसन से 5 इंच ज्यादा दूर गोला फेंककर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तोक्यो ओलम्पिक की विजय के बाद डलस लाग ने खेलकूद से अवकाश ले लिया।

मैटसन को बचपन से ही एथलेटिक का कोई बहुत शौक हो ऐसा नही है। छात्र जीवन म वह अमेरिका की फुटबाल और बास्केट बाल की टीमो मे हिस्सा लिया करते थे।

1962 मे जब किसी प्रशिक्षक न उनके भव्य शरीर को देखा तो उसने मन ही मन सोचा यह छात्र एक दिन अपना और अपने देश का नाम अवश्य रोशन करेगा।

रोहन कन्हाई—रोहन बाबूलाल कन्हाई वेस्टइंडीज क्रिकेट खिलाडियो म सबसे विशिष्ट रह हैं और यही उनकी विशेषता है।

टेस्ट क्रिकेट म पदार्पण उन्होने इंग्लड के विरुद्ध 1957 म किया, जब वे मात्र 22 वर्ष के थे—यह एक ऐसा अनुभव था जो किसी भी साधारण खिलाडी को हिला देता है।

कन्हाई ने किसीसे प्रशिक्षण नही लिया, परन्तु 19 वष की उम्र मे उन्होंने विश्व के जाने माने लिंडवॉल, मिलर, बेनो, डेविडसन तथा जॉनसन से सुसज्जित आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध गयाना के लिए 51 और 27 रन बनाकर अपना नाम एक सफल खिलाडी की लिस्ट म लिखवा दिया।

इसके वाद तो उनके बल्ले ने रन उगलना प्रारम्भ कर दिया। जमैका और बारवाडोस के विरुद्ध क्रमश 129 और 195 रन ठोक दिए। 1957 के इग्लैंड के दौरे के लिए बुलाए गए ट्रायल्स मैच म उन्होने क्रमश 62 और 90 रन एकत्र कर चयनकर्ताओ को चौंका दिया। परन्तु इस इग्लैंड दौरे मे वे जम नही पाए।

पोट ऑफ स्पेन म इग्लड के विरुद्ध उन्होने अपने जीवन की सवश्रेष्ठ पारी खेली। समीक्षको की राय म कन्हाई की अपनी सुप्रसिद्ध शली, लगन, क्षमता का इस पारी म समावेश था। 6 घटे और 18 मिनट तक विकेट पर वे जूझते रहे और 110 रन बनाकर अत म उन्होने अपनी टीम को सकट से उबार ही दिया।

1961 62 के आस्ट्रेलिया के ऐतिहासिक दौरे म कुल 503 रन बनाकर विश्वख्याति अर्जित कर ली। इस आस्ट्रेलिया दौरे मे उन्होने एक असाधारण 'स्ट्रोक' का आविष्कार किया, जिसके परिणामस्वरूप गेंद स्क्वेरलेग की ओर आसमान को छूती नजर आती और कन्हाई अपनी पीठ के बल जमीन पर।

ब्रैडमन के समान कन्हाई छोटे कद के, गठीले और मजबूत देहयष्टि के खिलाडी हैं। उनकी एक बडी विशेषता है अपने पावो की आश्चयजनक गति व स्ट्रोक्स की निश्चितता। वे अल्पभाषी हैं। 1963 म उन्होने विवाह किया और इस बात की खबर उनकी टीम के साथिया तक को अखवारो से मालूम हुई।

कन्हाई के खेल जीवन के आकडे इस प्रकार हैं कुल टेस्ट 79, पारी 137, अपराजित 6 रन 6227, सर्वाधिक 256, औसत 47 53, शतक 15, अद्धशतक 28, कच पकडे 50।

ल

लक्ष्मण शकर—1964 म तोक्यो ओलम्पिक म भारतीय हाकी टीम के गोली शकर लक्ष्मण ने अपनी चुस्ती और फुर्ती से पाकिस्तान आदि देशो के पैनल्टी प्रवीणो को पानी पिला दिया।' खेल समीक्षको को यह मानना पडा कि

को हृदय गति रुक जाने से हो गया। उस समय कप्तान रूप सिंह की आयु 68 वर्ष थी।

रडी मटसन—अमेरिका के रडी मैटसन दुनिया के ऐसे पहले खिलाडी हैं जिन्हे 16 पौड वजन का गोला 70 फुट से ज्यादा दूर फेंकने का गौरव प्राप्त है। रैंडी मैटसन ने, जिनका कद 6 फुट 6½ इच वजन 263 पौड है, 8 मई, 1965 को 21 वर्ष की उम्र म ही 71 फुट 5½ इच गोला फेंककर इस प्रतियोगिता म नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। कुछ समय पहल तक किसीके ख्याल या ख्वाब म भी यह बात नही थी कि कोई व्यक्ति 16 पौड वज़न के गोले को 70 फुट से भी ज्यादा दूर तक फक सकता है।

खेलकूद के कीर्तिमानो और आकडो की पोथियाँ लिखने वाले पडित अक्सर कहा करते है कि आखिर इसान की शक्ति की कोइ सीमा है। ज्यो ज्यो समय बीतता जाएगा त्यो त्यो नये विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का सिलसिला कम होता जाएगा। मगर मटसन न इन आकडबाजो के सारे सिद्धा तो पर पानी फेर दिया। मैटसन के अनुसार 40 फुट (सन 1871) से 50 फुट (सन 1909) तक पहुचने मे 38 वर्ष लगे। 50 फुट स 60 फुट पहुचने मे 45 वर्ष लगे और 60 फुट स 70 फुट तक पहुचने म केवल 11 वर्ष लगे। यहा यह बता देना उचित होगा कि 11 वर्ष पहले परी ओ ब्रीयन को 60 फुट गोला फेंकने का गौरव प्राप्त हुआ था।

1964 मे तोक्यो आलम्पिक खलो म मटसन को गोला फेंक प्रतियोगिता म रजत पदक प्राप्त हुआ था। वहा उन्होने 66 फुट 3 25 इच गोला फेंका था और इस प्रतियोगिता म डलस लाग ने मैटसन स 5 इच ज्यादा दूर गोला फेंककर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तोक्यो ओलम्पिक की विजय के बाद डलस लाग ने खेलकूद स अवकाश ले लिया।

मैटसन को बचपन से ही एथलेटिक का कोई बहुत शौक हो ऐसा नही है। छात्र जीवन म वह अमेरिका की फुटबाल और बास्केट बाल की टीमो मे हिस्सा लिया करते थ।

1962 मे जब किसी प्रशिक्षक ने उनके भव्य शरीर को देखा तो उसने मन ही मन सोचा यह छात्र एक दिन अपना और अपने देश का नाम अवश्य रोशन करेगा।

रोहन कन्हाई—रोहन बाबूलाल कन्हाई वेस्टइडीज क्रिकेट खिलाडियो म सबसे विशिष्ट रह हैं और यही उनकी विशेषता है।

टेस्ट क्रिकेट म पदार्पण उन्होने इग्लड के विरुद्ध 1957 म किया, जब वे मात्र 22 वर्ष क थ—यह एक ऐसा अनुभव था जो किसी भी साधारण खिलाडी को हिला देता है।

कन्हाई ने किसीसे प्रशिक्षण नही लिया, परन्तु 19 वष की उम्र मे उन्होंने विश्व के जाने माने लिडवॉल, मिलर, बेनो, डेविडसन तथा जॉनसन से सुसज्जित आस्ट्रेलियाई टीम के विरुद्ध गयाना के लिए 51 और 27 रन बनाकर अपना नाम एक सफल खिलाडी की लिस्ट म लिखवा दिया।

इसके बाद तो उनके बल्ले ने रन उगलना प्रारम्भ कर दिया। जमैका और बारबाडोस के विरुद्ध क्रमश 129 और 195 रन ठोक दिए। 1957 के इगलंड के दौरे के लिए बुलाए गए *ट्रायल्स मैच म उन्होने क्रमश 62 और 90* रन एकत्र कर चयनकर्ताओ को चौंका दिया। परन्तु इस इग्लड दौरे मे वे जम नही पाए।

पोट आफ स्पन म इग्लड के विरुद्ध उन्होने अपने जीवन की सवश्रेष्ठ पारी खेली। समीक्षको की राय मे कन्हाई की अपनी सुप्रसिद्ध शली, लगन, क्षमता का इस पारी म समावेश था। 6 घटे और 18 मिनट तक विकेट पर वे जूझते रहे और 110 रन बनाकर अत मे उन्होने अपनी टीम को सकट से उबार ही दिया।

1961 62 के आस्ट्रेलिया के ऐतिहासिक दौरे म कुल 503 रन बनाकर विश्वख्याति अर्जित कर ली। इस आस्ट्रेलिया दौरे म उन्होने एक असाधारण 'स्ट्रोक' का आविष्कार किया, जिसके परिणामस्वरूप गेद स्क्वेरलेग की ओर आसमान को छूती नजर आती और कन्हाई अपनी पीठ के बल जमीन पर।

ब्रडमन के समान कन्हाई छोटे कद के, गठीले और मजबूत देहयष्टि के खिलाडी हैं। *उनकी एक बडी विशेषता है अपने पावो की आश्चयजनक गति* व स्ट्रोक्स की निश्चितता। वे अल्पभाषी हैं। 1963 म उन्होने विवाह किया और इस बात की खबर उनकी टीम के साथियो तक को अखबारो से मालूम हुई।

कन्हाई के खेल जीवन के आकडे इस प्रकार हैं कुल टेस्ट 79, पारी 137, अपराजित 6 रन 6227, सर्वाधिक 256, औसत 47 53, शतक 15, अद्धशतक *28*, कच पकडे *50*।

ल

लक्ष्मण, शकर—1964 मे तोक्यो ओलम्पिक मे भारतीय हाकी टीम के गोली पाकर लक्ष्मण ने अपनी चुस्ती और फुर्ती से पाकिस्तान आदि देशो के पैनल्टी प्रवीणो को 'पानी पिला दिया।' खेल समीक्षको को यह मानना पडा कि

मदान में सबसे पीछे खड़ा हुआ गोली लक्ष्मण ही भारत को जिताने म सवम आगे रहा। 48 वर्षीय लक्ष्मण का ज म इन्दौर के एक गरीब घरान म हुआ। पैसे की तगी के कारण 13 14 साल की उम्र म ही लक्ष्मण न स्कूल स सदा के लिए छुट्टी पा ली। स्कूल से अलग हो जाने के बावजूद लक्ष्मण ने मेनकूद स अपनी दिलचस्पी कम नही होने दी। शुरू म लक्ष्मण फुटबाल का शौकीन रहा और 'बैक' के रूप म उसने काफी अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली। उन्ही दिनो महू रेजीमट के प्रशिक्षण निदेशक मेजर सावलसिंह ने जो लक्ष्मण के खल स बहुत प्रभावित थे, लक्ष्मण को सेना म एक मामूली स्थान पर रख लिया। सेना की फुटबाल टीम को चार चाद लगाने के बाद 1952 म लक्ष्मण न मेजर मालवसिंह की सलाह स हाकी स्टिक पर हाथ साधना शुरू किया। तीन चार वष म ही लक्ष्मण ने गोल रक्षण म गजब की दक्षता प्राप्त कर ली। गोल की ओर बढती हुई गेद को गुमराह करने वाले लक्ष्मण को सेना की उस टीम की रहनुमाई सौपी गई जिसने 1955 म पोलड का दौरा किया। राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ के अतिरिक्त उन्हे 1957 मे अफगानिस्तान, 1960 में रोम ओलम्पिक, 1962 मे एशियाई प्रतियोगिता (जकार्ता) और 1964 मे तोक्यो ओलम्पिक मे अपना कमाल दिखाने का मौका मिला।

लक्ष्मीकात दास—लक्ष्मीकात दास रेलव के भारोतोलक हैं। इन्होने 1954 मे भारोत्तोलन का अभ्यास आरम्भ किया था और जब यह 16 वष के ही थे तो इन्होने 18 वष से कम आयु वालो के मुकाबले मे 440 पौड वजन उठा लिया। इसके पश्चात इन्होने 1955 तथा 1956 में अपनी श्रणी म बगाल की चम्पियनशिप जीती। सन 1958 मे इन्होने प्रथम बार अपनी श्रणी मे राष्टीय चम्पियनशिप जीती और तब स यह प्रति वष राष्ट्रीय चम्पियन बनत आ रहे हैं। खेल जगत मे की गई उनकी सेवाओ पर उन्हें 1962 में भारत सरकार द्वारा अजुन पुरस्कार स अलकृत किया गया।

लान टेनिस—लान टेनिस का खेल 'आउट डोर' खल भी है और 'इनडोर' भी यानी यह घर के अ दर भी खेला जा सकता है और घर के बाहर भी। यह खेल दिन को भी खेला जा सकता है और बिजली की रोशनी मे रात को भी। यह खेल जितना पुरुषो म लोकप्रिय है उतना स्त्रियो म भी। इसम शौकिया और पशेवर दोनो तरह के खिलाड़ी भाग लत ह। जिस मैदान म यह खल खला जाता ह वह कई प्रकार का होता है जस घास कोर्ट, बल कोर्ट, लकडी का कोट इत्यादि।

यह खेल कब और कहा शुरू हुआ इसपर काफी मतभेद है। कहा जाता है कि तरहवी सदी म ईरान और मिस्र के लोग टेनिस के मस से मिलता जुलता एक खेल खेला करते थे। फ्रास मे भी एक ऐसा ही खल खला जाता

जिसे 'ज्यू द पाम' कहा जाता था। इस खेल म खिलाड़ी हाथो से गेंद नेट के ऊपर उछालते थे। बाद म हाथो के स्थान पर दस्तानो का और र दस्तानो के स्थान पर रैकट का प्रयोग किया जाने लगा। सबसे पहले 00 में इस खेल का नाम टेनिस रखा गया। 1600 म फ्रांस म यह खेल बहुत लोकप्रिय हो गया। फ्रांस के बाद यह खेल इग्लैंड मे भी लोकप्रिय हुआ।

अग्रेजों का दावा है कि यह खेल मेजर वाल्टर विंगफील्ड नामक एक ज ने शुरू किया था। अमेरिका वाले अपने देश म इस खेल को शुरू ने का श्रेय कुमारी मेरी ई० आउटब्रिज को देते हैं। उनका कहना है कि ारी आउटब्रिज ने बेरमूडा मे कुछ अग्रेजो को यह खेल खेलते देखा था र वह उस खेल से इतना प्रभावित हो गई थी कि अमेरिका आते समय अपने साथ इस खेल का सारा सामान यानी नेट, रैकट और गेंद भी ीद लाई थीं।

टेनिस के खेल म दो मैच होते हैं एक सिंगल्स मैच' जिसम दोनो ओर एक एक खिलाड़ी भाग लेता है और दूसरी 'डबल्स', जिसम दोनो ओर से दो खिलाड़ी भाग लेत हैं। सिंगल्स मैच' म कौन खिलाड़ी पहले सर्विस गा इसका फैसला टॉस करके किया जाता है। जिस खिलाड़ी ने टॉस ा हो यदि वह यह निर्णय करता है कि वह पहले सर्विस करेगा तो ऐसी ति म दूसरे खिलाड़ी को 'साइड' चुनने का अधिकार होता है। टॉस ने वाला यदि साइड चुनता है तो सवर या रिसीवर बनने का अधिकार रे को होता है। 'सव' करने वाले को 'सवर' कहते हैं। खेल शुरू करते प सवर, सर्विस करने के लिए बेस-लाइन के पीछे और सेंटर प्वाइट के दाईं ओर खडा हो जाता है। सर्विस शुरू करन के लिए वह पहले गेंद ऊपर उछालता है और फिर उसपर रैकट से प्रहार करता है। ऐसी त मे यदि गेंद पर राकेट न लगे या फिर गेंद नेट म जा लग ता उस ल्ट' माना जाता है। इस प्रकार यदि दोनो खिलाड़ी तीन-तीन प्वाइट लें तो स्कोर को ड्यूस कहा जाता है और अगला प्वाइट जीतने वाले को वांटेज प्वाइट' जीतन वाला माना जाता है। यदि पहली सर्विस म कुछ रह जाय या वह अम्पायर द्वारा 'फाल्ट' करार दे दी जाए तो खिलाड़ी उसी स्थान से एक और सर्विस करन का मौका दिया जाता है और खिलाड़ी की दूसरी सर्विस भी खराब हो जाए तो सवर एक प्वाइट हार ा है।

यदि खिलाड़ी सर्विस के बाद पहला प्वाइट जीत जाता है तो उस 15 अक ात हैं और स्कोर 'पन्द्रह लव' होता है। यदि वह दूसरा प्वाइट भी जीत

मदान म सबस पीछे खडा हुआ गोनी लक्ष्मण ही भारत को जितान म सबस आगे रहा। 48 वर्षीय लक्ष्मण का ज म इन्दौर के एक गरीब घराने म हुआ। पैसे की तगी क कारण 13 14 साल की उम्र म ही लक्ष्मण न स्कूल स सदा क लिए छुट्टी पा ली। स्कूल से अलग हो जाने के बावजूद लक्ष्मण ने खेलकूद स अपनी दिलचस्पी कम नही होने दी। शुरू म लक्ष्मण फुटबाल का शौकीन रहा और बैक के रूप मे उसने काफी अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली। उन्ही दिनो महू रेजीमट के प्रशिक्षण निदेशक मेजर सावलसिंह ने, जो लक्ष्मण के खेल से बहुत प्रभावित थे, लक्ष्मण को सेना म एक मामूली स्थान पर रख लिया। सेना की फुटबाल टीम को चार चाद लगाने के बाद 1952 म लक्ष्मण न मेजर सालवसिंह की सलाह से हाकी स्टिक पर हाथ साधना शुरू किया। तीन चार वष म ही लक्ष्मण ने गोल रक्षण म गजब की दक्षता प्राप्त कर ली। गोल की ओर बढती हुई गेद को गुमराह करने वाले लक्ष्मण का सेना की उस टीम की रहनुमाई सौपी गई जिसन 195‍ म पोलड का दौरा किया। राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ के अतिरिक्त उन्हे *1957* मे अफगानिस्तान, *1960* में रोम ओलम्पिक, 1962 में एशियाई प्रतियोगिता (जकार्ता) और 1964 में तोक्यो ओलम्पिक मे अपना कमाल दिखाने का मौका मिला।

लक्ष्मीकात दास—लक्ष्मीकात दास रेलवे के भारोत्तोलक हैं। इन्होने 1954 मे भारोत्तोलन का अभ्यास आरम्भ किया था और जब यह 16 वष के ही थे तो इन्होने 18 वष स कम आयु वालो के मुकाबल मे 440 पौड वजन उठा लिया। इसके पश्चात इन्होने 1955 तथा 1956 में अपनी श्रेणी मे बगाल की चम्पियनशिप जीती। सन 1958 मे इन्होने प्रथम बार अपनी श्रेणी म राष्ट्रीय चैम्पियनशिप जीती और तब से यह प्रति वष राष्ट्रीय चम्पियन बनते आ रहे हैं। खेल जगत मे की गई उनकी सेवाओ पर उन्हें 1962 में भारत सरकार द्वारा अजुन पुरस्कार स अलकृत किया गया।

लान टेनिस—लान टेनिस का खेल 'आउट डोर' खल भी है और 'इनडोर' भी यानी यह घर के अ दर भी खेला जा सकता है और घर के बाहर भी। यह खेल दिन को भी खेला जा सकता है और बिजली की रोशनी म रात को भी। यह खेल जितना पुरुषो म लोकप्रिय है उतना स्त्रियो म भी। इसमे शौकिया और पेशेवर दोनो तरह के खिलाडी भाग लेत ह। जिस मैदान म यह खल खला जाता ह वह कई प्रकार का होता है जस घास कोर्ट, क्ले कोर्ट लकडी का कोट इत्यादि।

यह खेल कब और कहा शुरू हुआ इसपर काफी मतभेद है। कहा जाता है कि तेरहवी सदी म ईरान और मिस्र के लोग टेनिस के खल से मिलता जुलता एक खेल खेला करते थे। फ्रास मे भी एक ऐसा ही खेल खेला जाता

था जिसे 'ज्यू द पाम' कहा जाता था। इस खेल मे खिलाडी हाथो से गेंद को नेट के ऊपर उछालते थे। बाद मे हाथो के स्थान पर दस्तानो का और फिर दस्तानो के स्थान पर रैकट का प्रयोग किया जाने लगा। सबसे पहले 1400 मे इस खेल का नाम टेनिस रखा गया। 1600 मे फ्रास मे यह खेल बहुत ही लोकप्रिय हो गया। फ्रास के बाद यह खेल इग्लैंड मे भी लोकप्रिय हुआ।

अग्रेजो का दावा है कि यह खेल मेजर वाल्टर विगफील्ड नामक एक अग्रेज ने शुरू किया था। अमेरिका वाले अपने देश मे इस खेल को शुरू करने का श्रेय कुमारी मेरी ई० आउटब्रिज को देते हैं। उनका कहना है कि कुमारी आउटब्रिज ने बेरमूडा मे कुछ अग्रेजो को यह खेल खेलते देखा था और वह उस खेल से इतना प्रभावित हो गई थी कि अमेरिका आते समय वह अपने साथ इस खेल का सारा सामान यानी नेट, रैंकट और गेंद भी खरीद लाई थी।

टेनिस के खेल म दो मैच होते हैं एक सिगल्स मैच' जिसमे दोनो ओर से एक एक खिलाडी भाग लेता है और दूसरी 'डबल्स, जिसमे दोनो ओर से दो-दो खिलाडी भाग लेते हैं। सिगल्स मैच' मे कौन खिलाडी पहले सविस करेगा इसका फैसला टॉस करके किया जाता है। जिस खिलाडी ने टॉस जीता हो यदि वह यह निणय करता है कि वह पहले सर्विस करेगा तो ऐसी स्थिति मे दूसरे खिलाडी को 'साइड' चुनने का अधिकार होता है। टॉस जीतने वाला यदि साइड चुनता है तो सवर या रिसीवर बनने का अधिकार दूसरे को होता है। 'सव' करने वाले को 'सवर' कहते हैं। खेल शुरू करते समय सर्वर, सर्विस करने के लिए बेस लाइन के पीछे और सेंटर प्वाइट के बीच दाई ओर खडा हो जाता है। सर्विस शुरू करने के लिए वह पहले गेंद को ऊपर उछालता है और फिर उसपर रैंकट से प्रहार करता है। ऐसी हालत म यदि गेंद पर राकेट न लगे या फिर गेंद नेट म जा लगे तो उसे 'फाल्ट' माना जाता है। इस प्रकार यदि दोनो खिलाडी तीन-तीन प्वाइट जीत लें तो स्कार को ड्यूस कहा जाता है और अगला प्वाइट जीतने वाले को 'एडवाटेज प्वाइट' जीतने वाला माना जाता है। यदि पहली सर्विम मे कुछ कमी रह जाय या वह अम्पायर द्वारा 'फाल्ट' करार दे दी जाए तो खिलाडी को उसी स्थान से एक और सर्विस करने का मौका दिया जाता है और यदि खिलाडी की दूसरी सर्विस भी खराब हो जाए तो सवर एक प्वाइट हार जाता है।

यदि खिलाडी सर्विस के बाद पहला प्वाइट जीत जाता है तो उसे 15 अक मिलते हैं और स्कोर 'पन्द्रह लव' होता है। यदि वह दूसरा प्वाइट भी जीत जाता है तो उस 30 अक मिलते हैं और स्कोर 'तीस लव' हो जाता है।

यदि वह तीसरा प्वाइंट भी जीत तो उसे 40 अंक मिल जाते हैं और स्कोर हो जाता है 'चालीस नव' और चौथा प्वाइंट जीतने को गेम कहते हैं। सबसे पहले 6 गेम जीतने वाले खिलाड़ी को सेट जीतने वाला कहा जाता है। परन्तु उसे दूसरे खिलाड़ी से दो गेम अधिक जीतने पड़ते हैं। और जब तक वह अपने प्रतिद्वन्द्वी खिलाड़ी से दो गेम अधिक नहीं जीतता सेट समाप्त नहीं होता।

लान टेनिस की अमेरिका ओपन प्रतियोगिता विजेता

(पुरुष)

वर्ष	विजेता	रनर्स अप
1968	आर्थर ऐश (अमेरिका)	टाम ओक्कर (हालैंड)
1969	राड लेवर (आस्ट्रेलिया)	टोनी रोश (आस्ट्रेलिया)
1970	केन रोजवाल (आस्ट्रेलिया)	टोनी रोश (आस्ट्रेलिया)
1971	स्टन स्मिथ (अमेरिका)	जान कोडस (चेकोस्लोवाकिया)
1972	इली नस्तासे (रूमानिया)	आर्थर ऐश (अमेरिका)
1973	जान न्यूकाम्ब (आस्ट्रेलिया)	जान कोडस (चेकोस्लोवाकिया)
1974	जिम्मी कोनर्स (अमेरिका)	केन रोजवाल (आस्ट्रेलिया)
1975	मैनुअल ओरान्तीज (स्पेन)	जिम्मी कोनर्स (अमेरिका)
1976	जिम्मी कोनर्स (अमेरिका)	बिओन बोर्ग (स्वीडन)
1977	गीलर्मो वीलास (अर्जेंटीना)	जिमी कोनर्स (अमेरिका)
1978	जिम्मी कोनर्स (अमेरिका)	बिआन बोर्ग (स्वीडन)

(महिला)

वर्ष	विजेता	रनर्स अप
1968	वर्जीनिया वेड (ब्रिटेन)	बिली जीन किंग (अमेरिका)
1969	मारग्रेट कोर्ट (आस्ट्रेलिया)	नन्सी रिची (अमेरिका)
1970	मारग्रेट कोर्ट (आस्ट्रेलिया)	रोजमेरी कसाल्स (अमेरिका)
1971	बिली जीन किंग (अमेरिका)	रोजमेरी कसल्स (अमेरिका)
1972	बिली जीन किंग (अमेरिका)	केरी मेलविल (आस्ट्रेलिया)
1973	मारग्रेट कोर्ट (आस्ट्रेलिया)	इवोन गुलागाग (आस्ट्रेलिया)
1974	बिली जीन किंग (अमेरिका)	ईवोन गुलागाग (आस्ट्रेलिया)
1975	क्रिस एवर्ट (अमेरिका)	ईवोन गुलागाग (आस्ट्रेलिया)
1976	क्रिस एवर्ट (अमेरिका)	इवोन गुलागोग (आस्ट्रेलिया)
1977	क्रिस एवर्ट (अमेरिका)	वेन्डी टर्नबुल (आस्ट्रेलिया)
1978	क्रिस एवर्ट (अमेरिका)	पैम श्राइवर (अमेरिका)

लायड, क्लाइव हुबट—जन्म 31 अगस्त, 1944। विश्व के सबसे धुआधार बल्लेबाजो मे एक। कन्हाई के बाद सफलतापूवक वेस्टइडीज का नेतृत्व कर रहा है। भारत के विरुद्ध 1974 शृखला के बम्बई टेस्ट मे अविजित 242 रन ठोके। 1976 म ग्लेमरगन के विरुद्ध 120 मिनट मे 201 अविजित बनाकर विश्व रिकाड की समानता। 63 टेस्टो मे 4466 रन।

लाला अमरनाथ—भारतीय क्रिकेट के इतिहास मे लाला अमरनाथ का महत्वपूण स्थान है। उन्हे पहला भारतीय शतक बनाने का गौरव प्राप्त हुआ। 1933 34 मे बम्बई मे इग्लैंड के विरुद्ध पहला टेस्ट खेलते ही उन्होने शतक बनाया था। उनके खेल से तत्कालीन वायसराय लाड विलिंगडन इतने प्रभावित हुए कि उन्होने स्वय मैदान म आकर लाला अमरनाथ की शानदार बल्लेबाजी की प्रशसा की। उस समय भारतीय टीम म नायडू, मर्चेंट, मुश्ताक अली जसे चोटी के बल्लेबाज थे, मगर टेस्ट मैच मे सबसे पहले शतक बनाने का श्रेय लाला अमरनाथ को ही प्राप्त हुआ। इस टेस्ट मे भारतीय खिलाडी पहली पारी म केवल 219 रन बनाकर आउट हो गए थे और इग्लैंड ने पहली पारी म 438 रन बना रखे थे। जब भारतीय खिलाडियो ने दूसरी पारी शुरू की तब भारतीय टीम ने 2 विकेट पर केवल 17 रन बनाए। पर इसके बाद लाला अमरनाथ ने बल्ला सभाला और हर गेंद पर चौके मारने शुरू कर दिए। तब इग्लड के गेंददाजो के हाथ पाव फूलने लगे। इग्लड की टीम के कप्तान जारडाइन परेशान दिखाई देने लगे। इग्लैंड की टीम मे वरिटी, निकोलस क्लाक और लैंग्रिज जैसे गेंददाज थे, मगर लाला अमरनाथ को आउट करने मे सब अपने आपको बेबस पा रहे थे। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक लाला अमरनाथ ने 102 रन बना लिए थे और आउट नही हुए थे। चौथे दिन वह 118 रन बनाकर आउट हुए। उस समय भारतीय टीम का नेतृत्व सी० के० नायडू कर रहे थे।

उसके बाद लाला अमरनाथ क्रिकेट के खेल मे निरतर आगे और आगे बढ़ते रहे। 1947-48 म आस्ट्रेलिया का दौरा करने वाली भारतीय टीम का नेतृत्व भी लाला अमरनाथ न ही किया। आस्ट्रेलिया के दौरे पर भी इनका प्रदर्शन बहुत शानदार रहा। जब भारत के तीन खिलाडी बिना कोई रन बनाए आउट हो गए तो लाला अमरनाथ ने 228 रन बनाकर भारत की स्थिति को मजबूत बनाया। उन्होने 228 रन बनाए और इसपर भी आउट नही हुए। इनके इस अभूतपूर्व प्रदशन पर आस्ट्रेलिया की जनता और आस्ट्रेलिया क क्रिकेट समीक्षको ने इनकी भूरि-भूरि प्रशसा की।

1936 म महाराज कुमार विजयनगरम् क नेतृत्व म जिस भारतीय टीम ने इंग्लैंड का दौरा किया लाला अमरनाथ उस टीम के भी महत्वपूण सदस्य

यदि वह तीसरा प्वाइट भी जीत तो उसे 40 अक मिल जाते हैं और स्कोर हो जाता है 'चालीस नव' और चौथा प्वाइट जीतने को गेम कहते हैं। सबसे पहले 6 गेम जीतने वाले खिलाड़ी को सेट जीतने वाला कहा जाता है। परन्तु उसे दूसरे खिलाड़ी से दो गेम अधिक जीतने पडते हैं। और जब तक वह अपने प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी से दो गेम अधिक नही जीतता सेट समाप्त नही होता।

लान टेनिस की अमेरिका ओपन प्रतियोगिता विजेता

(पुरुष)

वर्ष	विजेता	रनर्स अप
1968	आर्थर ऐश (अमरिका)	टाम आकर (हालैंड)
1969	राड लेवर (आस्ट्रेलिया)	टोनी रोश (आस्ट्रेलिया)
1970	केन रोजवाल (आस्ट्रेलिया)	टोनी रोश (आस्ट्रेलिया)
1971	स्टैन स्मिथ (अमरिका)	जान कोडस (चेकोस्लोवाकिया)
1972	इली नस्तासे (रूमानिया)	आर्थर ऐश (अमेरिका)
1973	जान न्यूकाम्ब (आस्ट्रेलिया)	जान कोडस (चेकोस्लोवाकिया)
1974	जिम्मी कोनर्स (अमरिका)	केन रोजवाल (आस्ट्रेलिया)
1975	मैनुअल ओरान्तीज (स्पेन)	जिम्मी कोनर्स (अमरिका)
1976	जिम्मी कोनर्स (अमरिका)	बिओन बोर्ग (स्वीडन)
1977	गोरीलो वीलास (अर्जेंटीना)	जिमी कोनर्स (अमरिका)
1978	जिम्मी कोनर्स (अमरिका)	बिओन बोर्ग (स्वीडन)

(महिला)

वर्ष	विजेता	रनर्स अप
1968	वर्जीनिया वेड (ब्रिटेन)	बिली जीन किंग (अमरिका)
1969	मारग्रेट कोर्ट (आस्ट्रेलिया)	नैंसी रिची (अमरिका)
1970	मारग्रेट कोर्ट (आस्ट्रेलिया)	रोजमेरी कसल्स (अमरिका)
1971	बिली जीन किंग (अमेरिका)	रोजमेरी कसल्स (अमरिका)
1972	बिली जीन किंग (अमरिका)	केरी मेलविल (आस्ट्रेलिया)
1973	मारग्रेट कोर्ट (आस्ट्रेलिया)	इवोन गुलागाग (आस्ट्रेलिया)
1974	बिली जीन किंग (अमरिका)	ईवोन गुलागाग (आस्ट्रेलिया)
1975	क्रिस एवर्ट (अमरिका)	ईवोन गुलागाग (आस्ट्रेलिया)
1976	क्रिस एवर्ट (अमेरिका)	इवोन गुलागाग (आस्ट्रेलिया)
1977	क्रिस एवर्ट (अमेरिका)	वेन्डी टर्नबुल (आस्ट्रेलिया)
1978	क्रिस एवर्ट (अमरिका)	पैम श्राइवर (अमरिका)

लायड, क्लाइव हुबट—जन्म 31 अगस्त, 1944। विश्व के सबसे धुआधार बल्लेबाजो मे एक। कन्हाई के बाद सफलतापूवक वेस्टइडीज का नेतृत्व कर रहा है। भारत के विरुद्ध 1974 शृखला के बम्बई टेस्ट मे अविजित 242 रन ठोके। 1976 म ग्लेमरगन के विरुद्ध 120 मिनट मे 201 अविजित बनाकर विश्व रिकाड की समानता। 63 टेस्टा म 4466 रन।

लाला अमरनाथ—भारतीय क्रिकेट के इतिहास म लाला अमरनाथ का महत्वपूण स्थान है। उन्ह पहला भारतीय शतक बनाने का गौरव प्राप्त हुआ। 1933 34 म बम्बई म इग्लैंड के विरुद्ध पहला टेस्ट खेलते ही उन्होने शतक बनाया था। उनके खेल से तत्कालीन वायसराय लार्ड विलिगडन इतने प्रभावित हुए कि उन्हाने स्वय मैदान मे आकर लाला अमरनाथ की शानदार बल्लेबाजी की प्रशसा की। *उस समय भारतीय टीम म नायडू, मर्चेंट, मुश्ताक* अली जसे चोटी के बल्लेबाज थे, मगर टेस्ट मैच मे सबसे पहले शतक बनाने का श्रेय लाला अमरनाथ को ही प्राप्त हुआ। इस टेस्ट म भारतीय खिलाडी पहली पारी म केवल 219 रन बनाकर आउट हो गए थे और इग्लड ने पहली पारी म 438 रन बना रखे थे। जब भारतीय खिलाडियो ने दूसरी पारी शुरू की तब भारतीय टीम ने 2 विकेट पर केवल 17 रन बनाए। पर इसके बाद लाला अमरनाथ ने बल्ला सभाला और हर गेंद पर चौके मारने शुरू कर दिए। तब इग्लैंड के गेंददाजो के हाथ पाव फूलने लगे। इग्लड की टीम के कप्तान जारडाइन परेशान दिखाई देने लगे। इग्लड की टीम मे वेरिटी, निकोलस क्लाक और लैंग्रिज जैसे गेंददाज थे मगर लाला अमरनाथ को आउट करने मे सब अपने आपको बेबस पा रहे थे। तीसरे दिन का खेल *समाप्त होने तक लाला अमरनाथ ने 102 रन बना लिए थे और आउट नही* हुए थे। चौथे दिन वह 118 रन बनाकर आउट हुए। उस समय भारतीय टीम का नेतृत्व सी० के० नायडू कर रहे थे।

उसके बाद लाला अमरनाथ क्रिकेट के खेल मे निरन्तर आगे और आगे बढ़ते रहे। 1947-48 म आस्ट्रेलिया का दौरा करने वाली भारतीय टीम का नेतत्व भी लाला अमरनाथ ने ही किया। आस्ट्रेलिया के दौरे पर भी इनका प्रदशन बहुत शानदार रहा। जब भारत के तीन खिलाडी बिना कोई रन बनाए आउट हो गए तो लाला अमरनाथ ने 228 रन बनाकर भारत की स्थिति को मजबूत बनाया। उन्होने 228 रन बनाए और इसपर भी आउट नही हुए। इनके इस अभूतपूर्व प्रदशन पर आस्ट्रेलिया की जनता और आस्ट्रेलिया के क्रिकेट समीक्षको ने इनकी भूरि-भूरि प्रशसा की।

1936 म महाराज कुमार विजयनगरम् के नेतृत्व म जिस भारतीय टीम ने **इग्लैंड** का दौरा किया लाला अमरनाथ उस टीम के भी महत्त्वपूण सदस्य

भारत के कुछ क्रिकेट प्रेमियो को फरवरी 1953 की वह बात अब भी याद होगी जब मद्रास के चेपक मैदान मे कास्टेंटाइन ने मद्रास क्रिकेट क्लब के लिए दो दिवसीय मैच मे श्रीलका के विरुद्ध भाग लिया। बेशक तब उनकी आयु 50 वर्ष से ऊपर थी, लेकिन खेल पर उनका वैसा ही अधिकार था जैसा कि अपनी जवानी के दिनो मे था। कार्स्टेंटाइन मे एक कुशल और उत्साही कप्तान की खुबियां थी। 1928 मे वेस्टइडीज की टीम के इग्लैंड के दौरान कार्स्टेंटाइन जख्मी हो गए थे। लेकिन डाक्टरो की सलाह और साथियो के अनुरोध के बावजूद वह मैदान म आ गए। मिडिलसेक्स ने छह विकेटो पर 352 रन बनाकर पारी समाप्ति की घोषणा कर दी। उसके बाद वेस्टइडीज ने खेलना शुरू किया और उसके पाच खिलाडी केवल 79 रनो पर ही उड गए। तब कार्स्टेंटाइन ने बल्ला सभाला और 55 मिनट मे 86 रन बनाकर अपनी टीम के गिरते हुए मनोबल को सभाला। उसके बाद उन्होंने गेंददाजी का कमाल दिखाया और केवल 11 रन देकर इग्लैंड की छह विकेटें ली। इसपर तुर्रा यह कि दूसरी पारी म कार्स्टेंटाइन ने एक घटे मे एक शतक मारा और हारती हुई बाजी को तीन विकेटो से जीत लिया। 69 वर्ष की उम्र मे 1 जुलाई, 1971 को उनका देहात हो गया।

व

वर्ल्ड कप (फुटबाल)—वर्ल्ड कप (फुटबाल) प्रतियोगिता पेशेवर खिलाडियो के लिए दुनिया की सबसे बडी प्रतियोगिता मानी जाती है। फुटबाल पेशेवर खिलाडियो का खेल है। यह बात सुनकर भारतीय फुटबाल प्रेमियो को थोडा-सा आश्चर्य हो सकता है, पर यह एक सत्य है। भारतीय खेल प्रेमी यदि चाहे तो इसे 'कटु सत्य' भी मान सकते हैं। वे सभी देश (ब्राजील, चिली, स्वीडन, इग्लैंड, उरुग्वे, पश्चिम जर्मनी और इटली) जो फुटबाल के क्षेत्र मे दूसरे देशो की तुलना मे बहुत आगे हैं, फुटबाल को पेशेवर खिलाडियो की चीज मानते हैं। यहा एक बात और स्पष्ट कर देना उचित होगा कि वर्ल्ड कप प्रतियोगिता मे कोई भी खिलाडी भाग ले सकता है, परन्तु एक बार उसमे भाग लेने के बाद उसपर पेशेवर खिलाडी की मोहर लग जाती है, यानी उसमे भाग लेने के बाद वह किसी ओलम्पिक जैसी गैर-पेशेवर प्रतियोगिताओ मे भाग नहीं ले सकता। यही कारण है कि इग्लैंड जिस टीम को ओलम्पिक प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए भेजता है वह 'वर्ल्ड कप' की टीम के मुकाबले

प्राप्त करना हमारे लिए एक सपना बन गया था। लेकिन इस बार हमारे खिलाड़ियों ने तीसरी विश्व कप प्रतियोगिता में जितने शानदार खेल का प्रदर्शन किया उससे न केवल भारत को पहली बार विश्व कप जीतने का गौरव प्राप्त हुआ, बल्कि विश्व में भारतीय कलात्मक हाकी की एक बार फिर धाक भी जम गई।

फाइनल मैच

15 मार्च, 1975 को जिस समय भारत और पाकिस्तान के बीच फाइनल मुकाबला शुरू हुआ उस समय मर्डेका स्टेडियम 45 हजार दर्शकों से ठसाठस भरा हुआ था। मैच शुरू होने से पहले पाकिस्तान का पलड़ा थोड़ा भारी दिखाई दे रहा था, क्योंकि भारत ने अपने ग्रुप 'बी' के प्रारम्भिक मैचों में पश्चिमी जर्मनी को 3-1 से हराया था, जबकि पाकिस्तान ने सेमी-फाइनल के मुकाबले में पश्चिम जर्मनी को 5 1 से हराया था।

पूर्वार्द्ध के खेल में पाकिस्तान का पलड़ा भारी रहा। 20वें मिनट में पाकिस्तान के लेफ्ट-इन मोहम्मद सईद ने भारत पर एक गोल कर दिया। मध्यांतर तक पाकिस्तान की टीम 1 0 से आगे थी। मध्यांतर के थोड़ी ही देर बाद भारत को एक शार्ट कार्नर मिला और सुरजीत ने उस अवसर का पूरा लाभ उठाया और भारत 1-1 की बराबरी पर आ गया। बराबर हो जाने पर भारतीय खिलाड़ियों का उत्साह और आत्म विश्वास बढ़ गया।

51वें मिनट में भारत को एक लाग कार्नर मिला। इसके लिए अस्लम को बुलाया गया। अस्लम से चूक हो गई और गेंद किसी तरह 'डी' के अन्दर ही अशोक के पास आ गई। अशोक ने फिलिप्स को पास दिया, फिलिप्स ने गेंद फिर अशोक को लौटा दी और अशोक ने गेंद को ज़ोर से दाइं ओर के पट्टे के भीतरी भाग पर मारा। गेंद 'स्पिन' कर गई और गोल-लाइन को पार कर गई। अम्पायर विजयनाथन ने गोल का संकेत दिया, लेकिन पाकिस्तानी खिलाड़ियों ने इसका विरोध करना शुरू कर दिया पर विजयनाथन अपने फैसले पर अडिग रहे और इस प्रकार भारत 2-1 से आगे बढ़ गया। भारत ने यह मुकाबला 2 1 से जीत लिया।

चौथा विश्व-कप (1978)

मार्च 1978 को ब्यूनस आयर्स (अर्जेंटीना) में हुई चौथी विश्व कप प्रतियोगिता में भारत सेमी-फाइनल तक भी नहीं पहुंच सका।

विश्व कप प्रतियोगिता के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ है जब

चार विश्व कप प्रतियोगिताओ के परिणाम

पहला विश्व कप (बारसेलोना—1971)	दूसरा विश्व कप (एम्स्टडम—1973)	तीसरा विश्व कप (क्वालालम्पुर—1975)	चौथा विश्व कप (ब्यूनस आयस—1978)
1 पाकिस्तान	1 हालड	1 भारत	1 पाकिस्तान
2 स्पेन	2 भारत	2 पाकिस्तान	2 हालैंड
3 भारत	3 पश्चिम जमनी	3 पश्चिम जमनी	3 आस्ट्रेलिया
4 केनिया	4 पाकिस्तान	4 मलयेसिया	4 प० जमनी
5 पश्चिम जमनी	5 स्पेन	5 आस्ट्रेलिया	5 स्पेन
6 हालड	6 इग्लड	6 इग्लड	6 भारत
7 फ्रांस	7 यूजीलैंड	7 न्यूज़ीलैंड	7 इग्लैंड
8 आस्ट्रेलिया	8 बेल्जियम	8 स्पेन	8 अर्जेंटीना
9 जापान	9 अर्जेन्टीना	9 हालैंड	9 पोलैंड
10 अर्जेंटीना	10 जापान	10 पोलैंड	10 मलयेसिया
	11 मलयेसिया	11 अर्जेन्टीना	11 मैना
	12 केनिया	12 घाना	12 आयरलड
			13 इटली
			14 बेल्जियम

वालेरी ब्रूमेल ने 1963 मे ऊची कूद का एक नया विश्व कीर्तिमान 7 फुट 3 75 इच (2 28 मीटर) स्थापित किया और ऊची कूद के क्षेत्र म अमेरिका का 40 वर्ष पुराना प्रभुत्व समाप्त हो गया। इससे अमेरिका की परेशानी और सोवियत सघ की प्रसन्नता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

ब्रूमेल का ज म 14 अप्रैल, 1942 को साइबेरिया के एक छोटे से गाव मे हुआ। ऊची कूद के बारे म लोगो की यह भी धारणा थी कि खिलाडी अपने कद से ज्यादा ऊचा नही कूद सकता, लेकिन उन्होने तो अपने कद से भी 16 875 इच ज्यादा ऊची कूद लगाई। उनका कद 6 फुट 875 इच और वजन 170 पौड है। बचपन मे ही उ हें ऊची कूद का काफी शौक था। 11 वष की उम्र मे ही उ होने ऊची कूद का अभ्यास शुरू कर दिया, लेकिन 1956 और 1957 तक उनकी प्रगति बहुत धीमी रही। लेकिन 18 साल की उम्र म (यानी 1960 मे) उन्होने 7 फुट 2 75 इच ऊचा कूदकर नया युरोपियन रिकाड स्थापित किया। उसी वर्ष रोम म हुए ओलम्पिक खेलो मे उन्होंने रजत पदक प्राप्त किया।

उसके बाद उ होंने 1964 म तोक्यो मे हुए ओलम्पिक खेलो मे स्वण पदक प्राप्त किया। मुकाबला शुरू होने से पहले सभी ने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि विजय रूस के खिलाडी की ही होगी। आशा के अनुरूप अन्त मे मुकाबला केवल रूस के ब्रूमेल और अमेरिका के जान टामस मे रह गया। अमेरिका के ही जान राम्वो केवल तीसरा स्थान पाने मे सफल हुए। जान राम्वो के निकल जाने के बाद ब्रूमेल और टामस मे स्वण और रजत पद के लिए मुकाबला हुआ। उल्लेखनीय बात यह थी कि चार वष पहले रोम मे भी टामस के स्वण पदक जीतने की पूरी सम्भावना थी लेकिन ब्रूमेल के ही साथी, परिचित और मित्र रूस के राबट शावलाकाडेज ने ऊची कूद की प्रतियोगिता जीतकर स्वण पदक प्राप्त किया था।

ब्रूमेल ने तब 7 फुट 1 75 इच ऊचाई आसानी से पार कर ली। टामस का भी यह ऊचाई पार करने मे सफलता मिली। तब ऊचाई 7 फुट 2 75 इच कर दी गई। दोनो ही एथलिट इसे पार न कर सके, परन्तु ब्रूमेल को पिछली कुदानो मे कम गलतियो के कारण स्वर्ण पदक मिला। 1963 मे उन्होंने 7 फुट 5 75 इच का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया था।

जब ब्रूमेल 16 वर्ष के थे तभी उन्होंने एक बार 6 फुट 6 75 इच यानी 2 मीटर ऊची कूद दिखाई थी। कहने वालो ने तभी यह कह दिया था कि वह एक-न-एक दिन सोवियत सघ का नाम अवश्य ऊचा करेंगे। ब्रूमेल ने स्वय भी एक बार कहा था कि मेरा उद्देश्य ऊची कूद में ऐसा कीर्तिमान स्थापित करना है जो वर्षों तक कायम रहे। उनका कहना था कि मैं अपने जीवन-

काल मे 7 फुट 6 625 इच (2 30 मीटर) का रिकाड स्थापित करूगा। जिसे तोडने मे अमेरिकावासियो को काफी सालो तक साधना करनी पडेगी।

मगर इसान सोचता कुछ है और होता कुछ है। 5 अक्तूबर, 1965 को एक मोटर साइकिल दुघटना म ब्रूमेल की दाए पैर की हड्डी टूट गई। इसके बाद ब्रूमेल काफी दिनो तक अस्पताल मे पडे रहे।

ब्रूमेल का पूरा नाम वालेरी निकोलाएविच ब्रूमेल है। वसे अब उनकी टांग बिलकुल ठीक हो गई है और कहा जाता है कि वह अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे अपना कमाल दिखाने की स्थिति म पहुच गए हैं।

विक्तोर सानेयेव—विक्तोर सानेयेव सोवियत सघ के अत्यधिक विशिष्ट ट्रैक तथा फील्ड एथलीटो म से हैं। वह तीन बार 1968, 1972 तथा 1976 मे ओलम्पिक चैम्पियन बने और तिहरी कूद मे विश्व रिकाड होल्डर हैं।

यद्यपि विक्तोर की आयु 35 वर्ष की है, लेकिन वह खेलो को छोडना नहीं चाहते। वे कहते हैं कि उनका 1980 मे मास्को के ओलम्पिक खेलो मे भाग लेने का इरादा है। यद्यपि इस समय तक वह 35 वप के हो चुके हैं और उनके लिए मुकाबला करना सरल नही होगा, फिर भी उन्होने अपनी असाधारण योग्यताओ का बार-बार प्रदर्शन किया है। मैक्सिको मे जीतने से पहले, उन्हें दो विश्व रिकाड स्थापित करने पडे। म्यूनिख मे विजय के लिए एक ही प्रयास काफी था। और वह जब 31 वप के थे, तीसरी बार ओलम्पिक चम्पियन बने।

विक्तोर सानेयेव काकेशियाई काला सागर-तट स्थित स्वायत्त जनतत्र आब्खाजिया मे रहते हैं। जब वह माट्रियल के ओलम्पिक खेलो से लौटे, उनके सुखुमी नगर के निवासियो ने उन्हें पके फलो वाली सन्तरे की टहनियो से बनी एक माला भेंट की, क्योकि व्यवसाय से विक्तोर एक कृषि विज्ञानी हैं और सन्तरा उत्पादन म वह विशिष्टता प्राप्त कर रहे हैं।

प्रत्येक वप 17 अक्तूबर को, जिस दिन विक्तोर ने मैक्सिको के ओलम्पिक खेलो म अपना पहला स्वण-पदक प्राप्त किया था, सुखुमी मे एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस प्रतियोगिता मे पूरे देश के ट्रैक तथा फील्ड एथलीट भाग लेते हैं जो सानेयेव के नाम पर सस्थापित पुरस्कार के लिए मुकाबला करत हैं।

विजय मजरेकर—विजय मजरेकर का भारतीय क्रिकेट मे महत्वपूण स्थान है। कुछ ही साल पहले उन्होने क्रिकेट के टेस्ट मैचो से रिटायर हो जाने की घोषणा की। मजरेकर ने क्रिकेट से सयास लेते समय कहा था—"1951-52 मे लीड्स मे इग्लैंड के खिलाफ मैंने जो शतक बनाया था, वही मेरे जीवन का सवश्रेष्ठ खेल था। अपने देखे हुए खिलाडियो मे इग्लैंड

वालेरी ब्रूमेल ने 1963 मे ऊची कूद का एक नया विश्व कीर्तिमान 7 फुट 3 75 इच (2 28 मीटर) स्थापित किया और ऊची कूद के क्षेत्र मे अमेरिका का 40 वर्ष पुराना प्रभुत्व समाप्त हो गया। इससे अमेरिका की परेशानी और सोवियत सघ की प्रसन्नता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

ब्रूमेल का जन्म 14 अप्रल, 1942 को साइबेरिया के एक छोटे से गाव मे हुआ। ऊची कूद के बारे म लोगो की यह भी धारणा थी कि खिलाडी अपने कद से ज्यादा ऊचा नही कूद सकता, लेकिन उन्होने तो अपने कद से भी 16 875 इच ज्यादा ऊची कूद लगाई। उनका कद 6 फुट 875 इच और वजन 170 पौंड है। बचपन मे ही उन्हें ऊची कूद का काफी शौक था। 11 वर्ष की उम्र मे ही उन्होने ऊची कूद का अभ्यास शुरू कर दिया, लेकिन 1956 और 1957 तक उनकी प्रगति बहुत धीमी रही। लेकिन 18 साल की उम्र मे (यानी 1960 मे) उन्होने 7 फुट 2 75 इच ऊचा कूदकर नया युरोपियन रिकार्ड स्थापित किया। उसी वर्ष रोम म हुए ओलम्पिक खेलो मे उन्होंने रजत पदक प्राप्त किया।

उसके बाद उन्होंने 1964 मे तोक्यो मे हुए ओलम्पिक खेलो मे स्वर्ण पदक प्राप्त किया। मुकाबला शुरू होने से पहले सभी ने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि विजय रूस के खिलाडी की ही होगी। आशा के अनुरूप अन्त मे मुकाबला केवल रूस के ब्रूमेल और अमेरिका के जान टामस मे रह गया। अमेरिका के ही जान राम्बो केवल तीसरा स्थान पाने मे सफल हुए। जान राम्बो के निकल जाने के बाद ब्रूमेल और टामस मे स्वर्ण और रजत पद के लिए मुकाबला हुआ। उल्लेखनीय बात यह थी कि चार वर्ष पहले रोम मे भी टामस के स्वर्ण पदक जीतने की पूरी सम्भावना थी लेकिन ब्रूमेल के ही साथी, परिचित और मित्र रूस के राबर्ट शावलाकाडेज ने ऊची कूद की प्रतियोगिता जीतकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया था।

ब्रूमेल ने तब 7 फुट 1 75 इच ऊचाई आसानी से पार कर ली। टामस का भी यह ऊचाई पार करने मे सफलता मिली। तब ऊचाई 7 फुट 2 75 इच कर दी गई। दोनो ही एथलिट इसे पार न कर सके, परन्तु ब्रूमेल को पिछली कुदानो मे कम गलतियो के कारण स्वर्ण पदक मिला। 1963 म उन्होंने 7 फुट 5 75 इच का विश्व कीर्तिमान स्थापित किया था।

जब ब्रूमेल 16 वर्ष के थे तभी उन्होंने एक बार 6 फुट 6 75 इच यानी 2 मीटर ऊची कूद दिखाई थी। कहने वालो ने तभी यह कह दिया था कि वह एक-न-एक दिन सोवियत सघ का नाम अवश्य ऊचा करेंगे। ब्रूमेल ने स्वय भी एक बार कहा था कि मेरा उद्देश्य ऊची कूद में ऐसा कीर्तिमान स्थापित करना है जो वर्षों तक कायम रहे। उनका कहना था कि मैं अपने जीवन-

काल मे 7 फुट 6 625 इच (2 30 मीटर) का रिकाड स्थापित करूगा। जिसे तोडने में अमेरिकावासियो को काफी सालो तक साधना करनी पडेगी।

मगर इसान सोचता कुछ है और होता कुछ है। 5 अक्तूबर, 1965 को एक मोटर साइकिल दुघटना म ब्रूमेल की दाए पर की हड्डी टूट गई। इसके बाद ब्रूमेल काफी दिनो तक अस्पताल मे पडे रहे।

ब्रूमेल का पूरा नाम वालेरी निकोलाएविच ब्रूमेल है। वैसे अब उनकी टाग बिलकुल ठीक हो गई है और कहा जाता है कि वह अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे अपना कमाल दिखाने की स्थिति म पहुच गए हैं।

विक्तोर सानेयेव—विक्तोर सानेयेव सोवियत सघ के अत्यधिक विशिष्ट ट्रैक तथा फील्ड एथलीटो म से हैं। वह तीन बार 1968, 1972 तथा 1976 म ओलम्पिक चैम्पियन बने और तिहरी कूद मे विश्व रिकाड होल्डर हैं।

यद्यपि विक्तोर की आयु 35 वर्ष की है, लेकिन वह खेलो को छोडना नहीं चाहते। वे कहते हैं कि उनका 1980 म मास्को के ओलम्पिक खेलो म भाग लेने का इरादा है। यद्यपि इस समय तक वह 35 वष के हो चुके हैं और उनके लिए मुकाबला करना सरल नही होगा, फिर भी उन्होने अपनी असाधारण योग्यताओ का बार-बार प्रदर्शन किया है। मैक्सिको मे जीतने से पहले, उन्हें दो विश्व रिकाड स्थापित करने पडे। म्यूनिख मे विजय के लिए एक ही प्रयास काफी था। और वह जब 31 वष के थे, तीसरी बार ओलम्पिक चम्पियन बने।

विक्तोर सानेयेव काकेशियाई काला सागर-तट स्थित स्वायत्त जनतत्र आब्खाजिया मे रहते हैं। जब वह माट्रियल के ओलम्पिक खेलो से लौटे, उनके सुखुमी नगर के निवासियो ने उन्हें पके फलो वाली सन्तरे की टहनियो से बनी एक माला भेंट की, क्योकि व्यवसाय से विक्तोर एक कृषि विज्ञानी हैं और सन्तरा उत्पादन मे वह विशिष्टता प्राप्त कर रहे है।

प्रत्येक वष 17 अक्तूबर को, जिस दिन विक्तोर ने मैक्सिको के ओलम्पिक खेलो म अपना पहला स्वण-पदक प्राप्त किया था, सुखुमी मे एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस प्रतियोगिता म पूरे देश के ट्रैक तथा फील्ड एथलीट भाग लेते हैं जो सानेयेव के नाम पर सस्थापित पुरस्कार के लिए मुकाबला करते हैं।

विजय मजरेकर—विजय मजरेकर का भारतीय क्रिकेट मे महत्त्वपूण स्थान है। कुछ ही साल पहले उन्होने क्रिकेट के टेस्ट मैचो से रिटायर हो जाने की घोपणा की। मजरेकर ने क्रिकेट से सयास लेते समय कहा था—"1951-52 म लीड्स मे इग्लड के खिलाफ मैंने जो शतक बनाया था, वही मेरे जीवन का सवश्रेष्ठ खेल था। अपने देखे हुए खिलाडियो मे इग्लैंड

व पीटर मे को सवश्रेष्ठ बल्लवाज, इग्लड के हॉ एलेक बेडसर को सवश्रेष्ठ गेददाज और पाकिस्तान के कारदर को सबसे अच्छा कप्तान मानता हू। भारनाय खिलाडियो मे सुभाप गुप्ते स्पिनर के, विजय हजारे बल्लेवाज़ के, नरेन तम्हाणे विकेटकीपर के और वीनू माकड हरफनमौला के रूप म मुझे हमेशा याद रहेग। नये खिलाडियो मे दिलीप सरदेसाई और हनुमन्त सिह मे मुझे वडी आशाए हैं। 1953 मे विजय हजारे जो टीम वेस्टइडीज ल गए थ मेरे ख्याल से वह भारत की सबसे तगडी टीम थी।"

मजरेकर ने इग्लड, पाकिस्तान, वेस्टइडीज, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलड के खिलाफ 55 टेम्ट मैचो मे 39 13 के औसत से कुल मिलाकर 3209 रन बनाए। 1961-62 मे इग्लड के खिलाफ 189 उनका सर्वाधिक स्कोर था। रणजो ट्राफी प्रतियोगिता मे उनकी सवश्रेष्ठ रन सख्या 186 थी। टेस्ट मैचो म उन्होने सात शतक और 15 अधशतक पूरे किए। 1961-62 म इग्लैड के विरुद्ध टेस्ट शृखला मे उन्होने 83 71 की औसत से कुल 586 रन बनाए जो किसी एक टेस्ट शृखला म व्यक्तिगत रन सख्या के लिए तब तक भारतीय कीर्तिमान माना जाता था। प्रथम श्रेणी की क्रिकेट मे उन्होंने 45 22 की औसत से 9587 रन बनाए।

विजय मर्चेट—भारत के सुप्रसिद्ध सलामी बल्लेबाज तथा चयन समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष विजय मर्चेट का जन्म 12 अक्तूबर, 1911 को थाकरसे परिवार मे हुआ।

जार्डिन की कप्तानी मे 1933 34 मे भारत के दौरे पर आई इग्लड की टीम के विरुद्ध विजय को पहली बार टेस्ट कैप मिली। 1936 के अपने पहले इग्लैड के दौरे मे विजय ने उत्कृष्ट बल्लेबाजी से क्रिकेट समीक्षको को प्रभावित कर डाला। मानचेस्टर मे खेले गए दूसरे टेस्ट मैच मे उसके शतक ने क्रिकेट समीक्षको के बेताज बादशाह स्वर्गीय नेविल काडस को निम्न टिप्पणी के लिए विवश कर डाला—'अगले वर्ष हमारी टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर जाएगी। क्यो न हम विजय मर्चेट को गोरा बनाकर अपनी टीम म शामिल कर लें। इससे बेहतरीन सलामी बल्लेबाज मिलना कठिन है।'

रणजी ट्राफी प्रतियोगिता मे खेली 47 पारियो मे औसतन 98 35 रन प्रति पारी के हिसाब से कुल 3659 रन बनाने का उनका कीर्तिमान अभी तक कायम है।

विजय के समय म रणजी ट्राफी लीग पद्धति पर नही होती थी। खिलाडियो को बल्लेबाजी के सीमित अवसर मिलते थे। उसने रणजी ट्राफी म 16 शतक ठोके। रणजी ट्राफी मे 1943 मे महाराष्ट्र के विरुद्ध बनाए 359 अविजित रन उसका सर्वाधिक स्कोर है। इसके अतिरिक्त उसने तीन

बार बम्बई की ओर से होलकर (1944), सिन्ध (1945), वेस्टर्न इंडिया (1944) के विरुद्ध क्रमश 278, 234 अविजित तथा 217 रन बनाकर दुहरे शतक बनाने का श्रेय पाया। विजय ने रणजी ट्राफी म लगातार चार मैचो मे शतकीय प्रहार करने का भी श्रेय पाया है। तीसरे विकेट तथा छठे विकेट की साझेदारी मे रूसी मोदी के साथ 373 तथा 371 क्रमश रन बनाकर स्थापित किए मर्चेन्ट के रिकार्ड अभी तक कायम हैं।

भारत व इग्लैंड के मध्य टेस्ट शृखलाओ मे प्रथम विकेट की साझेदारी मे मुश्ताक अली के साथ मर्चेन्ट के 1936 म बनाए 203 रन कीर्तिमान के रूप मे अभी भी कायम है। मर्चेन्ट ने अपने टेस्ट जीवन के 10 मैचो मे ठोके तीनो शतक 114 (1936), 128 (1946) तथा 154 (1951) भी इग्लैंड के विरुद्ध थे। उसने टेस्ट मैचो मे खेली 18 पारियो म 47 71 रन प्रतिपारी की औसत पर 859 रन बनाए।

विजय मर्चेन्ट के रन बनाने की गति को देखत हुए कई समीक्षक उनको भारतीय ब्रैडमैन कहकर पुकारने लगे। उसकी पेंटागुलर क्रिकेट प्रतियोगिता मे रन ठोकने की कमाल की धाक थी। उसने युरोपियन टीम के विरुद्ध 192 (1939), पारसियो के विरुद्ध 221 (1941), 221 अविजित (1944), मोहम्मडन टीम के विरुद्ध 243 अविजित (1941) तथा शेष एकादश के विरुद्ध 250 अविजित (1943) रन बनाकर अपनी बल्लेबाजी के झण्डे गाड दिए।

विश्व क्रिकेट के वार्षिक अनुशीलन ग्रन्थ म मर्चेन्ट को 1936 मे विश्व के पांच सवश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाडियो को शामिल किया गया। यह सम्मान मिलने पर नेविल काडस ने 1937 मे लिखा था—"मर्चेन्ट क्रिकेट का पूण खिलाडी है। हर स्ट्रोक खेलने मे वह पूणरूप से नियन्त्रित रहता है। विश्व के महान क्रिकेट खिलाडियो मे उसका अपना स्थान है।"

आकाशवाणी से क्रिकेट मैचो का आखो देखा हाल सुनाने मे विजय ने बडी लोकप्रियता प्राप्त की है।

विजय हजारे—विजय सेमुअल हजारे भारत के एक नामी क्रिकेट खिलाडी माने जाते हैं। वह ऐसे अकेले भारतीय क्रिकेट खिलाडी हैं जिन्हें एक टेस्ट की दोनो पारियो म शतक बनाने का गौरव प्राप्त है। 1947-48 मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध एडीलेड मे टेस्ट शृखला का चौथा टेस्ट खेलते हुए उन्होने 116 और 145 रन बनाए। इस टेस्ट म हजारे का प्रदशन इतना शानदार रहा कि भारतीयो ने एडीलेड टेस्ट को 'हजारे टेस्ट' का नाम दे दिया।

एडीलेड टेस्ट समाप्त हो जाने के बाद फिंगलटन ने हजारे के खेल से प्रभावित होकर कहा—"भारत के पास भी एक चोटी का बल्लेबाज है

जिसकी तुलना विश्व के सवश्रेष्ठ बल्लेबाजो से की जा सकती है। एग्लैंड टेस्ट को भारतीय हमेशा हजारे टेस्ट' के नाम से याद रखेंगे। उन्होने बडे शानदार तरीके से पहली पारी शुरू की और 116 रन बना डाले। पहली पारी समाप्त होने के कुछ ही समय बाद भारतीय खिलाडियो को दूसरी पारी शुरू करनी पडी। दसरी पारी म भी हजारे ने 145 रन बनाए। वह ऐसा पहला भारतीय खिलाडी था जिसे एक टेस्ट की दोनो पारियो म शतक बनाने का गौरव प्राप्त हुआ।"

उस समय आस्ट्रेलिया के पास लिडवाल और मिलर दो तेज और खतरनाक गेंददाज थे। इन गेंददाजो के सामने अच्छे अच्छे बल्लेबाजो के पसीने छूट जाते थे, परन्तु हजारे इनसे बिलकुल भी नही घबराए क्योकि हजारे की सबसे बडी विशेषता यह थी कि वह बचाव और आक्रमण दोनो तरह का खेल खेलना जानते थे।

उन्होने कुल 48 टेस्ट मैच खेले और 47 65 की औसत से 2,192 रन बनाए। उनकी सवश्रेष्ठ रन सख्या 164 और आउट नही रहो। रणजी ट्राफी प्रतियोगिताओ म वह बडौदा की ओर से खेले और 103 पारियो म 69 36 की औसत से 6,312 रन बना चुके हैं। वह पहले ऐसे खिलाडी थे जिन्होने रणजी प्रतियोगिता म सबसे अधिक रन बनाए।

विजय हजारे का जन्म 11 माच, 1915 को हुआ। 18 साल की उम्र म ही उन्होने प्रथम श्रेणी के क्रिकेट मैचो मे हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। बल्लेबाजी, गेंददाजी और क्षेत्र रक्षण तीनो दायित्वो को वह समान रूप से सभालते थे। 1937 मे सी० के० नायडू ने हजारे के बारे म अपने विचार प्रकट करते हुए कहा था कि एक श्रेष्ठ क्रिकेट खिलाडी के लिए जितने गुणो की आवश्यकता है वे सब हजारे मे विद्यमान हैं। 1958 मे हजारे के नतृत्व म भारतीय क्रिकेट टीम वेस्टइण्डीज़ के दौरे पर गई थी और उस टेस्ट-श्रृखला के बाद ही उन्होंने टेस्ट क्रिकेट से सन्यास ले लेने की घोषणा कर दी थी। उन्होने 25 वर्षों तक भारतीय क्रिकेट को सेवा की। 1960 मे भारत सरकार न उन्हें पद्मश्री की उपाधि से अलकृत किया।

इग्लड के किसी क्रिकेट प्रेमी ने उनके खेल से प्रभावित होकर एक बार कहा था—"जो स्थान आस्ट्रेलिया की क्रिकेट मे ब्रडमैन को प्राप्त है, इग्लैंड की क्रिकेट म प्रेस को प्राप्त है वही स्थान भारतीय क्रिकेट मे हजारे को मिलना चाहिए।"

विज़ी' (महाराज कुमार विजय आनन्द)—विजयनगरम् के महाराज कुमार डा० विजय आनन्द केवल भारत म ही नहीं बल्कि पूरे ससार म विज़ी' के नाम से ही जाने और पुकारे जाते थे। यदि यह कहा जाए कि

भारतीय क्रिकेट को इस शिखर पर पहुचाने का श्रेय विज्ञी को ही है तो कोई अत्युक्ति नही होगी।

डा० विजय आनन्द का जन्म 1905 मे हुआ। अजमेर के प्रिंसेस कालेज मे उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की और 14 वर्ष की उम्र मे ही क्रिकेट और टेनिस के क्षेत्र मे काफी ख्याति प्राप्ति कर ली। 1930 मे उन्हे इग्लैंड म ब्रैडमैन से क्रिकेट सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 1932 मे जब भारतीय क्रिकेट टीम का इग्लड का दौरा घनाभाव के कारण रद्द होता दिखाई दिया तो उन्होने खर्चे का सारा बोझ खुद उठाकर इग्लैंड का दौरा पूरा किया। इसके लिए उन्हे 50,000 रुपये की धनराशि खच करनी पडी। इसी बात से इसका अन्दाजा लगाया जा सकता है कि 'विज्ञी' को क्रिकेट के साथ कितना प्यार था। सच तो यह है क्रिकेट उनकी जान थी और वह इस खेल को अपनी जान से ज्यादा प्यार करते थे।

1938 मे जिस भारतीय टीम ने इग्लैंड का दौरा किया 'विज्ञी' उस टीम के कप्तान नियुक्त किए गए। 1932 से 1937 तक सेंट्रल एसेम्बली के सदस्य रहे। इन्हे 'सर' की उपाधि से भी अलकृत किया गया था, पर इस स्वदेशाभिमानी खिलाडी ने 14 जुलाई, 1947 को उस उपाधि को ठुकरा दिया था। 1960 मे वह लोक सभा के सदस्य बने। 1954 से 1956 तक वह भारतीय क्रिकेट कण्ट्रोल बोड के अध्यक्ष रहे और 1954 और 1958 मे उन्होने इम्पीरियल क्रिकेट कान्फ्रेंस मे भारत का प्रतिनिधित्व किया।

'विज्ञी' अपने जमाने के मशहूर क्रिकेट खिलाडी होने के साथ-साथ क्रिकेट के खेल पर लाजवाब कमेंटरी भी करते थे। 1959 मे क्रिकेट की कमेंटरी करने के लिए इन्हे बी० बी० सी० द्वारा विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया। यह मशहूर खिलाडी होने के साथ-साथ चोटी के शिकारी भी थे। 1958 मे इन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण की उपाधि से अलकृत किया गया। सच तो यह है कि जब तक 'विज्ञी' म दमखम रहा वह खुद क्रिकेट खेलते रहे और जब थक गए तब भी उन्होने क्रिकेट से मोह नही छोडा और क्रिकेट-कमेंटरी करनी शुरू कर दी। कमेंटरी करने के अपने निराले अन्दाज से उन्होने देश विदेश के लाखा क्रिकेट-प्रेमियो का मन मोह लिया था और क्रिकेट-समीक्षक के रूप मे जगत-विख्यात हो गए थे। विज्ञी आज हमारे बीच नही हैं, परन्तु भारत का कोई भी क्रिकेट प्रेमी उन्हें भुला नहीं पाएगा।

विम्बलडन सर्वजेता

पुरुष एकल—1877 1979

1877	एम० डब्ल्यू गारे	1908	ए० डब्ल्यू गोट
1878	पी० एफ० हैडो	1909	ए० डब्ल्यू गोट
1879	जे० टी० हाटले	1910	ए० एफ० वीन्डिग
1880	जे० टी० हाटले	1911	ए० एफ० वीन्डिग
1881	डब्ल्यू रेनशॉ	1912	ए० एफ० वीलिडग
1882	डब्ल्यू रेनशा	1913	ए० एफ० वीलिडग
1883	डब्ल्यू रेनशॉ	1914	एन० ई० ब्रुक्स
1884	डब्ल्यू रेनशा	1915 से 1918 तक	
1885	डब्ल्यू रेनशा	प्रतियोगिता नही हुई।	
1886	डब्ल्यू रेनशॉ	1919	जी० एन० पीटरसन
1887	एच० एफ० लाफोड	1920	डब्ल्यू टी० टिल्डन
1888	ई० रेनशॉ	1921	डब्ल्यू टी० टिल्डन
1889	डब्ल्यू रेनशॉ	1922	जी० एन० पीटरसन
1890	डब्ल्यू जे० हैमिल्टन	1923	डब्ल्यू एम० जासटन
1891	डब्ल्यू बेडले	1924	जे० बोरोत्रा
1892	डब्ल्यू बेडले	1925	आर० लाकोस्ट
1893	जे० पिम	1926	जे० बोरोत्रा
1894	जे० पिम	1927	एच० कोचेट
1895	डब्ल्यू बेडले	1928	आर० लाकोस्ट
1896	आर० एस० मोहनी	1929	एच० कोचेट
1897	आर० एफ० दोहर्ती	1930	डब्ल्यू टी० टिल्डन
1898	आर० एफ० दोहर्ती	1931	एस० बी० वुड
1899	आर० एफ० दोहर्ती	1932	एच० ई० वाइन्स
1900	आर० एफ० दोहर्ती	1933	जे० एच० काफोड
1901	ए० डब्ल्यू गोटे	1934	एफ० जे० परी
1902	एच० एल० दोहर्ती	1935	एफ० ज० पेरी
1903	एच० एल० दोहर्ती	1936	एफ० जे० पेरी
1904	एच० एल० दोहर्ती	1937	जे० डी० बज
1905	एच० एल० दोहर्ती	1938	जे० डी० बज
1906	एच० एल० दोहर्ती	1939	आर० एल० रिग्स
1907	एन० ई० ब्रुक्स	1940 से 1945 तक प्रतियोगिता नही हुई।	

1946	युवान पेट्रा	1963	चुक मैककिनले
1947	जैक क्रेमर	1964	रॉयएमरसन
1948	फाकनबग	1965	रॉयएमरसन
1949	एफ० आर० श्रारोडर	1966	मैनुअल सन्ताना
1950	बुज पैटी	1967	जॉन न्यूकम्ब
1951	आर० सेविट	1968	रॉड लेवर
1952	फ्रैंक सैजमैन	1969	रॉड लेवर
1953	विक सीक्सास	1970	जॉन न्यूकॉम्ब
1954	जारोस्लाव ड्रोबनी	1971	जॉन न्यूकॉम्ब
1955	एम० एट्रेवट	1972	स्टेन स्मिथ
1956	ल्यू होड	1973	यान कोदेस
1957	ल्यू होड	1974	जिमी कोनार्स
1958	एशले कूपर	1975	आथर एश
1959	एलेक्स ऑलमेडो	1976	जोन बग
1960	नील फेज़र	1977	जोन बग
1961	रॉड लेवर	1978	जोन बर्ग
1962	रॉड लेवर	1979	जोन बग

महिला एकल—1884 1979

1884	एम वाटसन	1900	जी० डब्ल्यू हिल्याड
1885	एम वाटसन	1901	ए० स्टेरी
1886	बी बिग्ले	1902	एम० ई हॉब-
1887	एल डॉड	1903	डी० के० डगलस
1888	एल डॉड	1904	डी० के० डगलस
1889	जी० डब्ल्यू हिल्याड	1905	एम० स्युटन
1890	एल राइस	1906	डी० के० डगलस
1891	एल डॉड	1907	एम० स्युटन
1892	एल डॉड	1908	ए० स्टेरी
1893	एल डॉड	1909	डी० पी० बूथबी
1894	जी० डब्ल्यू हिल्याड	1910	श्रीमती लबर्ट चैंबर्स
1895	सी० कूपर	1911	श्रीमती लैंबर्ट चैंबर्स
1896	सी० कूपर	1912	डी० आर० लारकोंब
1897	जी० डब्ल्यू हिल्याड	1913	श्रीमती लैबर्ट चैंबर्स
1898	सी० कूपर	1914	श्रीमती लैंबर्ट चैंबर्स
1899	जी० डब्ल्यू हिल्याड	1915 से 1918 तक प्रतियोगिता नहीं।	

1919	एस लेंग्लेन	1952	मेरीन कौनोली
1920	एस लेंग्लेन	1953	मेरीन कौनोली
1921	एस लेंग्लेन	1954	मेरीन कौनोली
1922	एस लेंग्लेन	1955	लुइस ब्रो
1923	एस लेंग्लेन	1956	शिरले फ्राई
1924	के नक्काने	1957	एलथिया गिबसन
1925	एस लेंग्लेन	1958	एलथिया गिबसन
1926	एल० ए० गॉडफी	1959	मारिया ब्यूनो
1927	एच० विल्स	1960	मारिया ब्यूनो
1928	एच० विल्स	1961	एजिला मोर्टिनर
1929	एच० विल्स	1962	जे० आर० सुसमन
1930	एफ० एस० मूडी	1963	मारगरेट स्मिथ
1931	सी० आॅसेम	1964	मारिया ब्यूनो
1932	एफ० एस० मूडी	1965	मारगरेट स्मिथ
933	एफ० एस० मूडी	1966	बिली जीन किंग
934	डी० ई० राउन्ड	1967	बिली जीन किंग
1935	एफ० एस० मूडी	1968	बिली जीन किंग
1936	एच० एस० जकब्स	1969	पी० एफ० जोन्स
1937	डी० ई० राउन्ड	1970	मारगरेट कोर्ट
1938	एफ० एस० मूडी	1971	एवोने गुलागोंग
1939	ए० मावल	1972	बिली जीन किंग
1940 से 1945 तक प्रतियोगिता नही।		1973	बिली जीन किंग
1946	पालिन बेट्स	1974	कुमारी क्रिस एवट
1947	मारगरेट ओसबान	1975	बिली जीन किंग
1948	लुइस ब्रो	1976	कुमारी क्रिस एवट
1949	लुइस ब्रो	1977	विरजीनिया वाडे
1950	लुइस ब्रो	1978	मार्टिना नवारति लोवा
1951	डोरिस हार्ट	1979	मार्टिना नवारति लोवा

विम्बलडन—विम्बलडन प्रतियोगिता लान टेनिस की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतियोगिता मानी जाती है। इसे लान टेनिस का तीर्थ-स्थल भी कहा जाता है। लान टेनिस के हर खिलाडी की यह इच्छा होती है कि वह एक न एक दिन अवश्य इस तीर्थ-स्थान के दर्शन करे। ससार के कोने-कोने से लान टेनिस के चोटी के खिलाडी हर साल इस प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए विम्बलडन पहुचते हैं। विम्बलडन के मेले की भव्यता का अनुमान

तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रतियोगिता शुरू होने से हफ्तो पहले हजारो खेल प्रेमी रात रात भर लाइनो मे खडे होकर टिकटें खरीदते हैं। इसपर भी सभी को टिकटें नही मिल पाती और अधिकाश को निराश होकर ही लौटना पडता है।

लान टेनिस का खेल जितना दिलचस्प है उससे भी ज्यादा दिलचस्प विम्बलडन का इतिहास है। व्हिटमोर जोन्स और हेनरी जोन्स दो चचेरे भाई थे। दोनो की अपनी-अपनी प्रेमिकाए थी। परन्तु दोना को ही अपनी प्रेमिकाओ से मिलने के लिए काफी मुसीबतें उठानी पडती थी। आखिर काफी सोच-विचार के बाद दोनो ने अपनी समस्या का हल ढूढ लिया। उन दिनो इग्लैंड म क्राकेट नाम का खेल बहुत लोकप्रिय था। इस खेल म महिलाए भी हिस्सा ले सकती थीं। बस फिर क्या था, दोनो ने मिलकर एक क्राकेट क्लब खोल दिया। 1869 मे पाच सदस्यो की एक समिति ने विम्ब-लडन मे चार एकड भूमि प्राप्त की। 1870 म यहा पहली बार क्राकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शुरू-शुरू मे इस क्लब का नाम 'दि आल इग्लैंड क्लब' रखा गया। 1875 मे हेनरी जोन्स ने इस क्लब मे लान टेनिस और बैडमिटन शुरू करने का प्रस्ताव भी रखा। बाद मे इसका नाम 'दि आल इग्लैंड क्राकेट एण्ड लान टेनिस क्लब' कर दिया गया। 1877 मे पहली बार विम्बलडन मे लान टेनिस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता मे कुल 22 खिलाडियो ने भाग लिया।

1979 मे हुई विम्बलडन प्रतियोगिता मे स्वीडन के जोर्न बग का नाम विम्बलडन के अमर खिलाडियों की सूची म जुड गया। उन्होने लगातार चार बार विम्बलडन जीतने का गौरव प्राप्त किया।

विल्मा ग्लोडीन रूडोल्फ—अमेरिकी नीग्रो जैसी ओवन्स को यदि एक ओलम्पिक खेल मे चार स्वण पदक जीतने का गौरव प्राप्त है तो अमेरिका ही को एक नीग्रो तूफानी लडकी विल्मा ग्लोडीन रूडोल्फ (जिन्हे ससार की सबसे तेज दौडने वाली लडकी भी कहा जाता है) को रोम ओलम्पिक खेलो (1960) मे एक साथ तीन स्वर्ण पदक जीतने का गौरव प्राप्त हुआ।

20 वर्षीय विल्मा ने रोम ओलम्पिक म 100 मीटर की दौड मे अपना ही कीर्त्तिमान भग करने के बाद 200 मीटर फासले की दौड जीती और उसके बाद महिलाओ की 400 मीटर रिले में नया विश्व रिकाड स्थापित किया।

विल्मा जब केवल चार वष की ही थी तो उन्हें भयकर निमोनिया हो गया था। जिसके कारण उनकी एक टाग ने काम करना ही छोड दिया था। कहते हैं कि लगातार दो वष तक सप्ताह मे एक बार विल्मा की माता अपनी बीमार बच्ची को कम्बल मे लपेटकर इलाज के लिए अस्पताल ले जाती और

दो वर्ष बाद एक खास तरह का जूता पहनाकर विल्मा को थोडा-थोडा चलने योग्य बनाया गया। विल्मा को लगडा कर चलते देखकर कोई इसकी कल्पना भी नही कर सकता था कि बडी होकर विल्मा दुनिया की सबसे तेज दौडने वाली लडकी के रूप मे प्रसिद्ध होगी।

ग्यारह वर्ष की उम्र म विल्मा ने 'बास्केट बाल' खेलना शुरू किया। इसकी फुर्ती और चुस्ती और तेजी देखकर सब दशक दातो तले उगली दबाने लगे। देखते ही देखते वह राज्य मे 'बास्केट बाल' की सबसे विख्यात खिलाडिन बन गई।

उसके बाद विल्मा दौड प्रतियोगिताओ मे हिस्सा लेने लगी। भाग-दौड के क्षेत्र मे उन्हें प्रकाश मे लाने का श्रेय एडवड टैम्पल नामक प्रशिक्षक को है।

विल्मा अपने माता पिता की आठ सन्तानों मे से पाचवी सन्तान है। शुरू-शुरू म विल्मा के परिवार को बडी आर्थिक कठिनाइयो का सामना करना पडा। लेकिन इन सब कठिनाइयो के बावजूद उसके माता-पिता अपने बच्चों के लिए पढाई लिखाई की व्यवस्था करते रहे। कालेज की पढाई करने के साथ-साथ विल्मा प्रतिदिन दो घंटे दौडने का अभ्यास करती। इतना ही नही कालेज से छुट्टी पाकर वह कुछ घटो के लिए एक दफ्तर मे काम भी करती, ताकि सारे खच का बोझ स्वय उठा सके।

विलसन जोन्स—एग्लो-इडियन विलसन जोन्स का जन्म आज से 54 वष पूव, पूना म हुआ था। बिलियर्ड्स का शौक उन्हें 12-13 वप की उम्र म लगा जब वे अपने चाचा ओसी मासे को, जो अपने काल के पूना के अच्छे हावी खिलाडियो मे भी थे, घर के निकट स्थित बिलियर्ड्स सलून मे रोज जाते देखा करते थे। धीरे-धीरे यह शौक बढता गया और 16 17 वर्ष की उम्र मे उन्होने खुद भी बिलियर्ड्स खेलना शुरू कर दिया। वसे उनका मत है कि बिलियर्ड्स मे दक्ष बनने के लिए उसका अभ्यास 10-12 वप की उम्र से ही आरम्भ कर देना चाहिए न कि 18-20 वप की उम्र से, जसा साधारणतया नवोदित भारतीय खिलाडी करते हैं।

अपने खिलाडी जीवन के आरभ मे जोन्स बिलियर्ड्स से अधिक 'स्नूकर' के शौकीन थे। 'स्नूकर' मे उन्होने कुछ ही दिनो मे इतनी प्रवीणता प्राप्त कर ली थी कि पूना मे कोई खिलाडी उनके मुकाबले खेल नही सकता था। 1945 म उन्होंने 'ईवनिंग न्यूज आफ इडिया' द्वारा आयोजित 'स्नूकर' प्रतियोगिता मे भाग लिया और सवप्रथम आए। इस सफलता से प्रेरित होकर वे तीन वप बाद 'स्नूकर' की राष्ट्रीय प्रतियोगिता म सम्मिलित हुए और उसे भी बडी आसानी से जीत लिया। बिलियर्ड्स-प्रजेता से भी पहले वे 1948

में 'स्नूकर' के राष्ट्रीय प्रजेता के रूप में विख्यात हुए।

1950 में सारा देश यह जानकर दंग रह गया कि जोन्स 'स्नूकर'-प्रजेता होने के अलावा बिलियर्ड्स-प्रजेता भी हैं। 1951 में भी वे बिलियर्ड्स के राष्ट्रीय प्रजेता रहे और 1952 में तो 'स्नूकर' और बिलियर्ड्स दोनों के राष्ट्रीय प्रजेता घोषित किए गए।

अन्तरराष्ट्रीय एमेच्योर बिलियर्ड्स प्रतियोगिता में सबसे पहले भाग लेने का अवसर जोन्स को 1951 में मिला। यह प्रतियोगिता महायुद्ध के बाद पहली बार लंदन में आयोजित हुई थी और इसमें आस्ट्रेलिया के टाम कैरी और मार्शल और इग्लैंड के फ्रैंक एडवर्ड जैसे शीर्षस्थ खिलाडियों ने भाग लिया था। इन तथा अन्य श्रेष्ठ खिलाडियों के मुकाबले में खेलकर निरानुभवी जोन्स छह गेम्स में से एक ही जीत पाए।

अगले वर्ष इस प्रतियोगिता का आयोजन कलकत्ता में हुआ और इस बार भी जोन्स को पांच गेम्स में से एक में ही विजय मिल सकी। 1954 में बड़ी आशाओं और पूरी तैयारियों के साथ वे फिर इस प्रतियोगिता में उतरे, जो सिडनी में आयोजित हुई थी, पर दुर्भाग्य से इस बार भी उन्हें कोई उल्लेखनीय सफलता नहीं मिल पाई।

पर विश्व प्रजेता बनने की सभी योग्यताएं उनमें मौजूद थीं और उन्हें पूरा विश्वास था कि एक-न-एक दिन वे विश्व बिलियर्ड्स में प्रथम स्थान पाकर ही रहेंगे। उन्होंने हिम्मत न हारी और पूरी मेहनत से अपनी कमजोरियों को दूर करने की कोशिश वे करते रहे।

1958 में उनकी मेहनत रंग लाई। कलकत्ता में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय एमेच्योर बिलियर्ड्स प्रतियोगिता में बिलियर्ड्स का विश्व प्रजेता पद जीतकर उन्होंने भारत को एक अपूर्व गौरव दिलाया।

आठ घंटे के इस मैच में उन्होंने स्वदेशवासी चन्द्र हीरजी को 4655 प्वाइंट्स के मुकाबले 2887 प्वाइंट्स से पराजित कर शानदार विजय प्राप्त की।

1962 में भारत सरकार ने उन्हें अर्जुन-पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

विश्वनाथ (गुडप्पा)—जन्म 12 फरवरी, 1949। मध्य क्रम के स्थापित बल्लेबाज विश्वनाथ ने अपने जीवन के पहले ही टेस्ट में शतक बनाकर जोरदार शुरुआत की। भारतीय क्रिकेट टीम के 'लिटिल मास्टर' विश्वनाथ अपने दर्शनीय फुटवर्क के कारण जोरदार स्ट्रोक्स लगाने में माहिर हैं। स्लिप में कैच पकड़ने में वे दक्ष हैं। सम्प्रति वह स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की बंगलौर शाखा में कार्यरत।

कुल टेस्ट 45, पारी 85, अपराजित 7, रन 3402, शतक 7, अर्द्धशतक 22 अधिकतम रन 179 वेस्टइडीज के विरुद्ध । कैच 32 ।

1979 मे कानपुर मे वेस्टइडीज के विरुद्ध खेले गए छठे और अतिम टेस्ट मे उन्होंने 179 रन बनाए थे ।

विस्डन' से सम्मानित भारतीय खिलाडी—किसी भी खिलाडी को जितने भी सम्मान दिए जा सकते हैं उनमे सम्भवत अत्यत दुलभ और दुष्प्राप्य सम्मान 'विस्डन' का है जिसके क्रिकेट अलमनेक (विवरणिका) मे वप के दुनिया के पाच सवश्रेष्ठ क्रिकेट खिलाडियो के नाम दिए जाते हैं। यह एक ऐसा सम्मान है जिसे पाने के लिए प्राय हर खिलाडी लालायित रहता है । 'विस्डन' पहल पहल सन 1864 मे इग्लड मे प्रकाशित होना शुरू हुआ । तब से इसकी सम्मान सूची मे क्रिकेट जगत के महानतम खिलाडियो के नाम अकित हो चुके हैं। सच पूछो तो यह क्रिकेट के इतिहास का अग ही बन गया है। कहना न होगा कि 'विस्डन' की सूची मे सम्मान पाना बहुत ही कठिन है । अब तक जिन भारतीय क्रिकेट खिलाडियो को यह सम्मान प्राप्त हुआ है उनके नाम इस प्रकार हैं

नाम	सन्
महाराजा रणजीत सिंह	1896
राजकुमार दिलीप सिंह	1929
पटौदी के नवाब (इफ्तेखार अली खा)	1932
सी० के० नायडू	1933
विजय मर्चेंट	1937
वीनू माकड	1947
नबाब पटौदी (मसूर अली खा)	1968

वीनू माकड—वीनू मूलवतराय माकड का जन्म 12 अप्रल, 1917 को जामनगर (सौराष्ट्र) मे हुआ। 1937 38 मे जब लाड टेनिसन की टीम के विरुद्ध 'अन आफिशिअल टेस्ट' खेलते हुए बल्लेबाजी और गेंददाजी मे सवश्रेष्ठ प्रदशन किया तब उनकी अवस्था केवल 20 वप की थी, लेकिन दूसरे विश्व युद्ध के कारण उन्हे पहली बार टेस्ट मैच म 1946 मे शामिल किया गया और उन्होने उसीम 1000 रन और 100 विकेट लेने का अनूठा कीर्तिमान स्थापित किया। उनके इसी प्रदशन के आधार पर उन्हें विश्व का सवश्रेष्ठ खब्बू स्पिनर मान लिया गया और 1947 म ही उन्हें विस्डन म विश्व के श्रेष्ट पाच खिलाडियो म स्थान और सम्मान प्राप्त हुआ ।

उसके बाद उन्ह आस्ट्रेलिया का दौरा करने वाली भारतीय टीम में

सवश्रेष्ठ आल राउडर (हरफनमौला खिलाड़ी) के रूप में शामिल किया गया। वहा पर वह गेंददाज के रूप में तो ज्यादा सफल नही हुए, पर लिडवाल और मिलर जसे तेज गेंददाजो की जोडी के सामने खडे होकर दो बार शतक बनाने में जरूर सफल हो गए। 1948-49 में वेस्टइडीज के विरुद्ध उनका प्रदशन कोई विशेष उत्साहवद्धक नही रहा, लेकिन 1951 52 की टेस्ट श्रृखला मे उन्होने जो कीत्तिमान स्थापित किए उसकी बराबरी करने में भारतीय खिलाडियो को 21 साल लग गए। पाच टेस्ट मैचो की इस श्रृखला के दौरान उन्होने 34 विकेट लिए। लाड् स मे खेले गए टेस्ट में उन्होंने 72 और 184 रन बनाए, यानी दोनो पारियो मे बल्लेबाजी के क्रम में उनका स्थान प्रथम रहा और इसके साथ ही केवल 73 ओवर फेककर वह पाच विकेट लेने में सफल हो गए। केवल एक पारी मे शतक बनाने के साथ-साथ उसी पारी में पाच विकेट लेने वाल वह प्रथम भारतीय थे। उसके बाद पाली उमरीगर ने भी यह गौरव प्राप्त किया था। लाड् स टेस्ट मे उनके शानदार प्रदशन से प्रभावित होकर अग्रेजी के कुछ क्रिकेट समीक्षको ने अपने समाचार पत्रो में 'मांकड बनाम इग्लैंड' जैसे शीषको से अपनी विशिष्ट टिप्पणिया प्रकाशित की।

1952-53 मे जब पाकिस्तान की टीम ने भारत का दौरा किया तो चार टेस्ट मैचो की श्रृखला के दौरान उन्होंने 25 विकेट लिए। दिल्ली में खेले गए टेस्ट में उन्हें 13 विकेट लेने का गौरव प्राप्त हुआ। केवल 23 टेस्टो मे उन्होने 1000 रन बनाए व 100 विकेट लिए। उनके द्वारा स्थापित रिकाड अभी तक ज्यो का त्यो बरकरार है। वसे तो माकड के खिलाडी जीवन म भी कई उतार-चढाव आते रहे, लेकिन यदि वह एक श्रृखला म असफल रहे तो दूसरी मे फिर पहले वाले फाम मे आ गए। 1956 मे मद्रास म न्यूजीलैंड के विरुद्ध खेलते हुए पहली विकेट की साझेदारी मे उन्होने पकज राय के साथ मिलकर 413 (इसमें 173 रन पकज राय ने बनाए) बनाकर जो विश्व रिकाड कायम किया था, वह आज भी ज्यो का त्यो बरकरार है।

माकड ने कुल मिलाकर छह टेस्टा मे भारतीय टीम का नेतृत्व किया। 1954-55 मे पाकिस्तान के विरुद्ध पूरी श्रृखला का और 1958 59 म वेस्टइडीज के विरुद्ध केवल एक टेस्ट (मद्रास)। उन्होने 44 टेस्ट मैचो मे कुल 2109 रन (औसत 31 47) और 162 विकेट (औसत 32 31) लिए।

162 विकेट लेने का उनका रिकाड भी 17 साल तक कायम रहा और 1976 मे जाकर फिर प्रसन्ना को यह गौरव प्राप्त हुआ। उन्होने 33 कैच भी लिए—अधिकाश अपनी ही गेंद पर और क्लोज इन पोजीशन पर।

जिस समय उन्होंने खेल से सन्यास लिया उस समय तक केवल विल्फ्रेड

रोड्स, कीथ मिलर और ट्रिवोर बैली को 2,000 रन बनाने और 100 विकेट लेने का गौरव प्राप्त हुआ था।

प्रथम श्रेणी के मैचो म माकड ने 10,000 रन बनाए और 700 विकट लिए। वह वेस्टन इडियन, नवानगर, महाराष्ट्र, गुजरात, बगाल, बम्बई और राजस्थान की ओर से रणजी ट्राफी के मुकाबलो म (1935 से 1962 तक) खेलते रहे। भारतीय क्रिकेट म अनेका ऐसी बाते हैं जिनपर मतभेद की गुजाइश हो सकती है, लेकिन वीनू माकड देश के सवश्रेष्ठ हरफनमौला खिलाडी थे, इस बारे मे दो राय नही हो सकती। यो मतभेद तो इस बात पर भी हो सकता है कि आप उनकी बल्लेबाजी को ज्यादा पसद करते हैं या गेंददाजी को। कुछ लोगो का कहना है कि वह गेंददाज क रूप मे ज्यादा याद किए जाएगे, तो कुछ उनकी बात को काटते हुए कहते हैं कि नही। या मूलत वह मध्य क्रम के बल्लेबाज थे, लेकिन जब उनको प्रारभिक बल्लबाजी करने के लिए सबसे पहले मदान मे उतार दिया गया तब भी उन्होंने उस दायित्व को निभाकर दिखा दिया।

यदि आप क्रिकेट के टेस्ट इतिहास पर निगाह डाले तो आपको लगेगा कि कुछ टेस्ट मैचो मे तो माकड का प्रदशन इतना विलक्षण रहा कि उस टेस्ट को विशेषण तक 'माकड टेस्ट' का मिल गया था। 1951-52 के लाड स टेस्ट को आज भी 'माकड टेस्ट' के नाम से पुकारा जाता है, क्योकि उसम उन्होंने पहली पारी मे 172 रन और दूसरी पारी मे 51 रन (और आउट नही) बनाए थे।

जीवन के अतिम दिना म वीनू माकड काफी अस्वस्थ रहने लगे थे और अस्वस्थता के उसी क्रम म 21 अगस्त, 1978 को उनकी मत्यु हो गई। उस समय उनकी उम्र 62 वप की थी।

वेंगसरकर, दिलीप—जन्म 6 अप्रल, 1956। मूल रूप से मध्य-क्रम के बल्लेबाज और युवा खिलाडी दिलीप वेंगसरकर कलात्मक क्रिकेट के धनी हैं। आत्म विश्वास की दृढ़ता उनके भावी जीवन के लिए बहुमूल्य सिद्ध होगी। दिलीप बम्बई विश्वविद्यालय के छात्र हैं।

1978-79 मे वेस्टइडीज के विरुद्ध दिल्ली मे खेल गए पाचवें टेस्ट में उन्होंने 109 रन बनाए थे। 6 टेस्ट शृखलाओ मे वह दो शतक बना चुके हैं। 20 टेस्टो मे हिस्सा लेते हुए उन्होंने 1,077 रन बनाए (औसत 34 74) जिसम दो शतक भी शामिल हैं। उनका एक पारी का सवश्रेष्ठ स्कोर 157 रन (नाट आउट) है। शाट लेग स्थान के अच्छे क्षेत्ररक्षक हैं और 20 कच ले चुके हैं।

वेंकट राघवन—जन्म 21 अप्रल 1945। तमिलनाडु के वक्ट इससे पहल दो बार भारतीय टीम की कप्तानी कर चुके हैं। 1975 म प्रूडेंशियल विश्व कप म और 1974-75 मे दिल्ली म खेले गए वेस्टइडीज के

विरुद्ध दूसरे टेस्ट मे। अब तक 43 टेस्ट खेल चुके हैं। 32 26 रनो की औसत से 133 विकेट ले चुके हैं। 60 पारियो मे 686 रन बना चुके है। क्षेत्ररक्षक के रूप मे 23 कैच ले चुके हैं।

व्लादिमीर कुटस—मैक्सिको ओलम्पिक प्रतियोगिताओ (1968) के अवसर पर दुनिया के जिन चोटी के 12 महान ओलम्पिक खिलाडिया को सम्मानित अतिथि के रूप मे आमन्त्रित किया गया था, उनमे सोवियत सघ के व्लादिमीर कुट्स भी एक थे। उनके बारे म कहा जाता है वह शारीरिक और मानसिक दृष्टि से बडे दृढ निश्चयी दौडाक रहे। व्लादिमीर कुट्स को एमिल जातोपेक का समकालीन दौडाक भी माना जाता। उन्होने 1956 के मेलबोन ओलम्पिक खेलो मे एक साथ दो स्वण पदक (एक 5,000 मीटर म और दूसरा 10,000 मीटर मे) प्राप्त किए।

नवम्बर 1956 मे जब वह ओलम्पिक खेलो मे भाग लेने के लिए मेलबोन गए तो उस समय वह खेल-जगत में काफी चर्चित खिलाडी हो चुके थे। मेलबोर्न के मैदान में उपस्थित दर्शक यह बात अच्छी तरह से जानते थे कि कुट्स सोवियत सघ के एक मशहूर खिलाडी हैं और 10,000 मीटर की दौड म विश्व रिकार्ड स्थापित कर चुके हैं।

कुट्स उस समय आशा और आशका की मन स्थिति में थे। उन्हे इग्लैंड के गोरडन पिरे से काफी डर था। खेल-समीक्षको ने यह भविष्यवाणी कर दी थी कि 10,000 मीटर में स्वण पदक या तो कुट्स को प्राप्त होगा या फिर पिरे को। कारण यह कि इसी वप के शुरू में इन दोनो दौडाको ने 5,000 मीटर की दौड में बेरगेन (नार्वे) में भाग लिया था। वहा पर पिरे ने न केवल यह प्रतियोगिता जीती थी, बल्कि इस फासले की दौड मे विश्व कीर्तिमान भी स्थापित किया। कुट्स की हार का यह दूसरा अवसर था। बाद में कुट्स ने अपनी हार का आत्म विश्लेषण करते हुए कहा कि असल में मैं लम्बी यात्रा के दौरान काफी थक गया था। लेकिन इस हार का उन्हें सबसे बडा फायदा यह हुआ कि उन्होंने उसी समय मन ही मन मेलबोन ओलम्पिक में स्वण पदक जीतने का सकल्प कर लिया।

16 वर्ष की उम्र में कुट्स सेना में भरती हो गए। पहले वह सेना में टैंक चालक थे, लेकिन काम मे उनकी निष्ठा, लगन और उत्साह को देखते हुए उन्हें नौ-सेना में शामिल कर लिया गया, क्योंकि उस समय युद्ध के कारण नौ-सेना मे काफी तगडे और निडर व्यक्ति की आवश्यकता थी। नौकरी के दौरान भी उन्होंने अपने भागने-दौडने का अभ्यास और प्रशिक्षण का सिलसिला जारी रखा।

जब कुट्स केवल 24 वर्ष के थे तो वह एथलेटिक जगत में काफी नाम पैदा कर चुके थे। 1951 में आयोजित एक 3,000 मीटर की क्रासकट्री दौड़ में

उन्होंने विजय प्राप्त की। इस प्रतियोगिता में कुल 25 धावको ने भाग लिया था जिनमे से 24 सैनिक थे।

1952 में जब एमिल जातोपेक ने हेलसिंकी ओलम्पिक खेलो में एक साथ तीन स्वण पदक प्राप्त किए तभी कुट्स ने जातोपेक को पीछे छोडने का सकल्प कर लिया था। उसके वाद 1953 मे 5,000 मीटर के फासले की दौड मे कुट्स और जातोपेक का मुकाबला हुआ। उस समय कुट्स कुछ इस भाव से मैदान में पहुचे जैसे कोई कमाडर मोर्चे पर जा रहा हो। लेकिन तब भी जातोपेक उससे थोडा आगे निकल गया और उसके बाद 1954 की युरोपीय प्रतियोगिताओ मे आखिरकार जातोपेक को पीछे छोडने की कुटस की मुराद पूरी हो गई।

1956 के मेलबोन ओलम्पिक खेलो मे कुट्स ने एक साथ दो स्वण पदक प्राप्त कर ओलम्पिक खेलो के इतिहास में अपने नाम का एक नया अध्याय जोड दिया। उन्होने कहा कि 10,000 मीटर की दौड मे स्वण पदक प्राप्त करने के लिए जब मैं विजय मच पर खडा हुआ उस समय मैं खुशी से फूला नही समा रहा था। कुट्स ने इस फासले को 28 मिनट 45 6 सकिंड मे पूरा कर न केवल स्वण पदक प्राप्त किया, बल्कि एक नया ओलम्पिक रिकार्ड भी स्थापित किया।

तीन दिन बाद 5,000 मीटर का मुकाबला हुआ और उसमे भी कुटस ने पिरे और छाटावे जैसे खिलाडियो को पीछे छोड दिया। इस फासल को कुट्स ने 13 मिनट 35 6 सकिंड में पूरा कर नया ओलम्पिक और विश्व-ओलम्पिक रिकाड स्थापित किया।

और सबसे दिलचस्प बात तो यह कि मेलबोन मे 10,000 मीटर का मुकाबला शुरू होने से कुछ ही दिन पहले कुट्स एक कार दुर्घटना में घायल हो गए थे। तेज़ रफ्तार से कार चलाने के कारण उनकी एक आस्ट्रेलियाई कार एक बिजली के खम्भे से टकरा गई थी। कारण वही रफ्तार और रफ्तार का रोमास। वह कार भी उसी जोश के साथ चलाते थे जिस जोश के साथ दौडते थे।

17 अगस्त, 1975 को हृदय गति रुक जाने से उनका देहान्त हो गया। उस समय वह 49 वप के थे।

व्लादीमिर याश्चेन्को—18 वर्षीय सावियत छात्र व्लादीमिर याश्चेन्को ने ऊची कूद में 233 सेंटीमीटर का नया विश्व रिकाड स्थापित किया। वह रिचमड (अमेरिका) में सोवियत सघ और अमेरिका के बीच आयोजित जूनियर अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग ले रहे थे। उन्होंने ड्वाइट स्टोन्स (अमेरीका) के पिछले विश्व रिकाड को एक सेंटीमीटर से ध्वस्त किया। ब्रूमेल के बाद ऊची कूद में विश्व रिकार्ड पुन हासिल करने मे सोवियत खिलाडियो को 14 वप लगे।

जापोरोजये नगर के दस वर्षीय माध्यमिक स्कूल न० 59 के छात्र ब्लादीमिर याश्चेंको ने दावी श्रेणी के वालेरी ब्रूमेल के जूनियर रिकार्ड को भग किया, जो 16 वर्षों तक कायम रहा।

17 वष की आयु में ऊंची कूद के अन्य किसी खिलाड़ी ने ऐसे परिणाम प्रदर्शित नहीं किए थे। यही वह समय था जब विशेषज्ञों ने ब्रूमेल के उत्तराधिकारी के रूप में ब्लादीमिर का नाम लेना शुरू किया था।

ब्लादीमिर इस समय किएव शारीरिक व्यायाम सस्थान म प्रथम वष के छात्र हैं। चम्पियन का कद 192 सेंटीमीटर तथा वजन 78 किलोग्राम है।

श

शतरंज—शतरज का खेल अन्तरराष्ट्रीय खेल है। इस खेल का आविष्कार सबसे पहले किस देश मे हुआ इस बारे मे अलग-अलग व्यक्तियो की अलग अलग धारणाए हैं। वसे बहुमत इसी पक्ष मे है कि सवप्रथम इस खेल का प्रचलन भारत और श्रीलंका मे ईसा से 3 हजार वष पूव हुआ। जिसका अथ हुआ कि लोकप्रियता की दृष्टि से सबसे अधिक लोकप्रिय और प्राचीनता की दृष्टि से इस खेल को प्राचीनतम माना जा सकता है। घर के अन्दर खेले जाने खेलो (इन-डोर गेम्स) मे शतरज का महत्त्वपूण स्थान है। इस खेल को दिमागी खेल कहा जाता है। यह खेल एक चौकोर बिसात पर, जिसमे 64 घर बने होते हैं, काठ की खूबसूरत गोटियो—बादशाह, वजीर, फील, घोडे, प्यादे और ऊटो की सहायता से खेला जाता है। इस बिसात पर दोनो तरफ 16-16 गोटिया (आठ-आठ प्यादे, दो-दो फील, दो-दो घोडे, दो-दो ऊट, एक-एक बादशाह और एक-एक वजीर) रखे रहते हैं। इस खेल को दिमागी खेल माना जाता है यानी एक एक चाल को चलने के लिए घटो सोचना पडता है। कहते हैं कि कई-कई खिलाडी तो एक-एक बाजी को महीनो चलाते हैं। इस खेल मे भी, ताश के खेल की तरह खिलाडी खाना पीना सब भूल जाता है। कहते हैं मुगल राजाओ को यह खेल बहुत पसन्द था। नेपोलियन को भी शतरज का बहुत शौक था। वह तो युद्ध स्थल म भी अपने साथ शतरज रखता था। कई लोग इस खेल पर बाजी भी लगा लेते हैं। दुनिया के कई प्रसिद्ध खिलाडियो ने तो शतरज को अपनी जीविका का मुख्य साधन बना लिया है।

इस खेल मे अभी तक केवल दो ही भारतीय खिलाडियो (सुल्तान खां

और मैनुअल आरों) ने अन्तरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। पश्चिमी पजाब के निवासी सुल्तान खा, जो अग्रेजी भाषा भी नहीं जानते थे, 1929 म इग्लड चम्पियनशिप प्रतियोगिता मे हिस्सा लेने पहुचे। परन्तु ऐन मौके पर वह अस्वस्थ हो गए और डाक्टरो ने उन्हें प्रतियोगिता मे भाग न लेने की सलाह दी परन्तु उन्होंने डाक्टरो की सलाह को अनसुनी करते हुए उस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और प्रतियोगिता जीती। दूसरी बार 1932 मे और तीसरी बार 1933 म प्रतियोगिता जीतकर उन्होंने शतरज की दुनिया म अपनी धाक जमा दी। दूसरे अन्तरराष्ट्रीय भारतीय खिलाडी हैं मद्रास के मैनुअल आरों, जिन्हें इस वष की राष्ट्रीय प्रतियोगिता मे भी दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है। 1960 मे लिपजिगी मे उन्होंने भूतपूव विश्व चैम्पियन डा० यूव को हराकर सबको चकित कर दिया। 1962 मे जब भारत सरकार की ओर से श्रेष्ठ खिलाडियो को अर्जुन पुरस्कार देने की व्यवस्था की गई तब जिन 14 खिलाडियो को पुरस्कार से विभूषित किया गया उनमे आरों भी एक थे।

बुद्धि के खेलो का सरताज शतरज विश्व को भारत की अनुपम देन है। दुर्भाग्यवश, अपने ही खेल मे भारत अब इतना पिछड गया है कि विश्व शतरज मे उसका नगण्य स्थान है। भारत मे सदियो पूव शतरज की शुरुआत हुई थी। तब इसे चतुरग अर्थात् सेना का खेल कहा जाता था। सुबधु की वासवदत्ता (सातवी शताब्दी) और बाणभट्ट के हर्षचरित म इसका पहला लिखित उल्लेख है। भारत से इस खेल का प्रचार-प्रसार पहले चीन और पश्चिम एशियाई देशो मे हुआ और फिर दसवीं शताब्दी म इग्लड तथा युरोपीय देशो मे इसका प्रचार हुआ। अभी काफी अरसे से रूस विश्व शतरज मे चोटी पर है। वहा स्कूलो, कालेजो, क्लबो और सेना मे शतरज एक प्रकार से अनिवाय खेल बन गया है।

शतरज म भारत की मौजूदा दुदशा का प्रमुख कारण यह है कि स्कूलो, कालजो तथा राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओ मे इसे बिल्कुल उपेक्षित रखा गया है। दूसरे खेलने की कोई समान प्रामाणिक प्रणाली नही। विभिन्न क्षेत्रो म अलग-अलग तौर-तरीके हैं। अपनी-अपनी ढफली, अपना-अपना राग का नतीजा आखो के सामने है। भारत के गाव-गाव और शहर-शहर म बढ़िया खिलाड़ियो की कमी नही, आवश्यकता सिफ उनके सही मागदशन की है। अगर भारत को शतरज म पुन अपना प्राचीन गौरव प्राप्त करना है तो सबसे पहले सारे देश मे खेल की अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली समान रूप से लागू करना और उसका प्रचार प्रसार करना निहायत जरूरी है।

भारत के राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता मे अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली से ही यह खेल खेला जाता है। भारत की देसी प्रणालियों और

अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली म मामूली अन्तर है। मोहरे वही हैं, उनकी चालें भी लगभग समान हैं। अलबत्ता विभिन्न देशो म मोहरो के नाम बदले हैं लेकिन इससे खेल पर कोई असर नही पडता।

क्योकि हमारे देश मे अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के मैचो की रपट म मोहरो के केवल अग्रेजी नाम और प्रतीको (सिंबल) का उल्लेख रहता है, इसलिए जिज्ञासु होनहार खिलाडियो के लिए इसकी जानकारी लाभदायक होगी।

अग्रेजी मे बादशाह को किंग, मत्री को फरजी अथवा वजीर को क्वीन, ऊट या फील को बिशप, घोडे को नाइट, हाथी को रुख और प्यादे को पौन कहा जाता है।

शतरज की एक बडी खूबी इसकी नोटेशन प्रणाली है, जिसके अनुसार खिलाडियो की चालें दर्ज की जाती हैं। नोटेशन इस प्रकार है किंग—के, क्वीन—क्यू, बिशप—बी, नाइट—केटी, रुख—आर और पौन—पी। किलाबन्दी बादशाह की ओर 0-0, किलाबन्दी वजीर की ओर 0-0-0, मोहरा मारना या पीटना ×, शह+बाजी बराबर =।

किसी मोहरे के सामने खडी कतार के आठ घर उस मोहरे के नाम पर होते हैं—जैसे बादशाह की कतार के घर या खाने के 1, के 2, के 3 के 8 कहे जाते हैं। खिलाडियों की चालें इस प्रकार दर्ज होती हैं। मसलन, यदि बादशाह के आगे का प्यादा एक घर बढे तो इस प्रकार लिखा जाएगा पी—के 3। बादशाह की ओर के ऊट, घोडे और हाथी को क्रमश के बी, के टी और के आर और वजीर की ओर क्रमश क्यू बी, क्यू टी और क्यू आर लिखा जाता है। अब मान लीजिए कि बादशाह की ओर के ऊट का आगे का प्यादा एक घर बढे तो इसे पी—के बी 3 लिखा जाएगा। यदि वजीर विपक्षी प्यादे को मारे तो उसे क्यू×पी लिखा जाएगा।

भारतीय देसी प्रणालियो और अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली मे मुख्य अन्तर इस प्रकार हैं भारतीय तरीके से प्यादा सिर्फ एक घर बढ सकता है लेकिन अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली के अनुसार प्यादा पहली चाल मे इच्छानुसार एक या दो घर आगे बढ़ सकता है।

अन्तरराष्ट्रीय प्रणाली के अनुसार किलाबन्दी (कैसलिंग) एक चाल मे हो सकती है, बशर्ते हाथी और बादशाह के बीच मे अन्य कोई मोहरा न हो और उस समय उनके बीच के घरो अथवा बादशाह के नये घर पर किसी विपक्षी मोहरे की शह न पड रही हो। बादशाह पर पहले की चालो मे लगी शह के बावजूद किलाबन्दी हो सकती है। किलाबन्दी करने मे बादशाह सुविधानुसार दाए या बाए दो घर खिसकेगा और साथ ही हाथी बादशाह को पार करके उसके बगल के घर मे रखा जाना चाहिए। यदि पहले की किसी चाल

म वादशाह् या हाथी अपने घर से हटे हो तो किलाबन्दी नही हो सकती।

देसी प्रणाली म प्यादा बढते बढते जब दूसरी ओर के आखिरी घर म पहुचता है, तो उसी घर का मोहरा बन जाता है, लेकिन अ तरराष्ट्रीय प्रणाली के अनुसार इस स्थिति म प्यादे को इच्छानुसार किसी भी मोहरे म परिणत किया जा सकता है, भले ही खिलाडी के पास वह मोहरा मौजूद हो। मसलन इस प्रकार खिलाडी दो, तीन या ज्यादा वजीर भी बना सकता है।

अ तरराष्ट्रीय प्रणाली मे बुद या चौमोहरी नाम की कोई स्थिति नही। यदि विपक्षी खिलाडी के पास अकेला बादशाह ही रह जाए, तो भी उसे मात किया जा सकता है। अ तरराष्ट्रीय नियमो के अनुसार बाजी बराबरी पर तब खत्म होती है जब (1) दोनो खिलाडी इसके लिए राजी हो, (2) या विपक्षी खिलाडी पर शह न होते हुए भी उसके मोहरे बिल्कुल बन्द हो जाए और वह कोई भी चाल चलने म असमथ हो और (3) जब कोई और चाल न होने पर एक ही चाल बार-बार दोहराई जाए।

इनके अलावा अ तरराष्ट्रीय प्रणाली के कुछ खास नियम इस प्रकार हैं विसात अथवा पट्टा इस प्रकार रखा जाना चाहिए कि खिलाडी की दाइ ओर का आखिरी घर सफेद हो। खेल निर्धारित समय पर शुरू होने पर यदि कोई खिलाडी एक घटे बाद पहुचे तो उसकी हार समझी जाती है। काले और सफेद मोहरो के चयन के लिए 'टॉस' होता है। सफेद मोहरे वाले खिलाडी की पहली चाल होती है।

बादशाह और वजीर रखने का यह तरीका है कि बादशाह की बगल म काले रग का वजीर काले खाने मे, सफेद रग का वजीर सफेद खाने म रखा जाना चाहिए। खिलाडियो को समय का ध्यान भी रखना पडता है। ढाई घटे म औसतन 40 चाल चलना अनिवाय है, वरना पराजय समझी जाएगी। चाल चलत समय खिलाडी अपने जिस मोहरे को छुएगा, वही चलना पडेगा।

प्रतियोगिताओ म आमतौर पर एक बठक पाच घटे की होती है और खिलाडियो के समय का हिसाब स्टाप वाच' के जरिए रखा जाता है। यदि खेल दूसरे दिन के लिए स्थगित करना पडे तो नोटेशनों के जरिए विसात का नक्शा बनाया जाता है और अगले दिन फिर अधूरे खेल को उसीके अनुसार शुरू किया जाता है।

खेल के आरम्भ म यह विकट समस्या रहती है कि पहली चाल क्या चली जाए। अनुभव से सिद्ध हुआ है कि पहले क्रमश बादशाह और वजीर के प्यादों को दो-दो घर बढ़ाकर फिर घोडे को ऊट की कतार के तीसरे घर म रखना बेहतर है। इससे ऊंट और घोडे का रास्ता खुल जाता है और

शतरज के पुराने विश्व-विजेता

वर्ष	विजेता	आयु	प्रतिद्वन्द्वी	आयु	विजेता की बाजियों का ब्योरा
1886	वी० स्टीनिडा (आस्ट्रिया)	50	जुकटाट	44	+10—5= 5
1894	ई० लस्कर (जर्मनी)	26	वी० स्टीनिडा	58	+10—5= 4
1921	जे० आर० कपाब्लाका	33	ई० लस्कर	53	+ 4 =10
1927	ए० अलेकिन (फ्रास)	35	जे० आर० कैपाब्लाक	39	+ 6—3=25
1935	एम० यू० (हालड)	34	ए० अलेकिन	43	+ 9—8=13
1937	ए० अलेकिन (फ्रास)	45	एम० यू०	36	+11—6=13
1948	एम० बाटविनिक (रूस)	37	(1946 में अलेकिन का देहात हो गया और 1948 में फीडे ने पाच खिलाडियो—केरेस, बाटविनिक, स्मिस्लाव, यू और रेशेव्स्की को मैच खिलवाया)		
1957	वी० स्मिस्लाव (रूस)	36	एम० बाटविनिक	46	+ 6—3=13
1958	एम० बाटविनिक (रूस)	47	वी० स्मिस्लाव	37	+ 7—5=11
1960	एम० टाल (रूस)	24	एम० बाटविनिक	49	+ 6—2=13
1961	एम० बाटविनिक	50	एम० टाल	25	+10—5= 6
1963	टी० पेट्रोसियान (रूस)	34	एम० बाटविनिक	52	+ 5—2=15
1969	बोरिस स्पास्की (रूस)	32	टी० पेट्रोसियान	40	+ 6—4=13
1972	आर० फिशर (अमेरिका)	29	बो० स्पास्की	35	+ 7—3=11
1975	अनातोले कार्पोव (रूस)	24	फिशर ने मच ही नही खेला		

किलाबन्दी आसान हो जाती है। तीन वर्ष में एक बार होने वाली विश्व प्रतियोगिता का द्वितीय महायुद्ध के बाद 1948 में पहला विजेता रूस का मिखाइल बोतविनिक था।

श्रीराम सिंह—श्रीराम सिंह आज देश के सवश्रेष्ठ दौडाक माने जाते हैं। 800 मीटर के एशियाई रिकार्ड बनाने वाले श्रीराम सिंह भारत के एकमात्र खिलाडी थे जिन्होंने पिछले ओलम्पिक (मांट्रियल-1976) म भारत का नाम ऊंचा किया। मांट्रियल म श्रीराम सिंह ने इस दूरी को 1 मिनट 45 77 सैकिड मे पूरा करके सातवा स्थान प्राप्त किया। माट्रियल मे यह दौड क्यूबा के *अल्बर्टो जुआनतोरीना ने 1 मिनट 43 5 सकिंड म जीत कर* नया विश्व रिकार्ड स्थापित किया था। दौड जीतने के बाद जुआनतोरीना ने यह स्वीकार किया था कि मुझे सबसे ज्यादा डर श्रीराम सिंह से था और उन्हींकी बदौलत मैं तेज दौडा और नया विश्व रिकार्ड बनाने मे सफल हो गया।

माट्रियल ओलम्पिक से पहले यदि श्रीराम सिंह को कुछ अन्तरराष्ट्रीय दौडो का अनुभव प्राप्त हो जाता तो वह बेहतर प्रदर्शन करने म सफल हो जाते। श्रीराम जयपुर जिले की कोटपूतली तहसील के ग्राम बडनगर के रहने वाले हैं और एसियाई टीम की ओर से डूसलडोफ (पश्चिम जर्मनी) में हुई पहली विश्व कप (एथलेटिक) प्रतियोगिता मे भाग ले चुके हैं, इस समय वह राजपूताना राइफल्स मे नायब सूबेदार के पद पर हैं।

1966 मे जब वह सेना मे भरती हुए तो उन्होंने इस बात की शायद कल्पना भी नही की थी कि एक दिन वह लोकप्रियता के इस शिखर पर पहुच जाएगे। स्कूली जीवन मे वह फुटबाल खेला करते थे, फिर उन्होंने लबी कूद म हिस्सा लेना शुरू कर दिया। 1967 मे वह अपनी यूनिट (राजपूताना राइफल्स सेंटर) के साथियो के साथ राजधानी में प्रति सप्ताह होने वाली पेल्टजर क्रास कट्री रेस में हिस्सा लेने लगे। उनके दौडने के ढग से देश के मशहूर प्रशिक्षक इलियास बाबर बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उन्हें अपनी देख रेख में प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया। दो ही साल के अन्दर वह सेना के और राष्ट्रीय चैम्पियन हो गए। 1970 में दिल्ली मे हुई एक प्रतियोगिता मे उन्होंने एशियाई चम्पियन बी० एस० बरुआ को हराया। उसी वर्ष उन्होंने बैंकाक मे हुए एशियाई खेलो मे भाग लिया लेकिन अपने सवश्रेष्ठ प्रदशन (1 मिनट 48 4 सकिंड) के बावजूद वह बर्मा के जिमी क्राम्प्टन को हराने मे सफल नही हो सके।

1972 मे उन्होंने म्यूनिख ओलम्पिक मे हिस्सा लिया। वहा पर उन्होंने 800 मीटर की दूरी को 1 मिनट 47 9 सकिंड मे पूरा किया लेकिन वह

सेमी-फाइनल तक नही पहुच पाए। 1973 मे सिओल म हुई दूसरी एथलेटिक प्रतियोगिता मे उन्होने तीन स्वण पदक प्राप्त किए यानी 400 और 800 मीटर के अतिरिक्त उन्होने 4×400 मीटर रिले मे भी भारत को विजय दिलाने म महत्त्वपूण भूमिका निभाई। 1974 मे तेहरान मे हुए एशियाई खेलो मे उन्होने 800 मीटर को 1 मिनट 47 6 सैकिंड मे पूरा करके स्वण पदक प्राप्त किया।

उनका सवश्रेष्ठ प्रदशन माट्रियल ओलम्पिक का था जहा वह फाइनल तक पहुचे लेकिन नया रिकाड स्थापित करने के बावजूद उनको सातवा स्थान ही प्राप्त हो सका। फाइनल में पहुचने वाले वह भारत के तीसरे एथलीट थे। इससे पहले मिल्खा सिंह और गुरवचन सिंह को फाइनल तक पहुचने का गौरव हो चुका है। माट्रियल ओलिम्पक में क्यूबा के अल्बर्टो जुआनतोरीना को पहला और बेल्जियम के इवो वनडामे को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ था।

स

सन्तोष ट्राफी—सन्तोष ट्राफी भारत की प्रमुख फुटवाल खेल प्रतियोगिता मानी जाती है। इस ट्राफी की कहानी ज्यादा पुरानी नही है। आज से लगभग तीस साल पहले जब यह खेल भारत में बहुत लोकप्रिय हुआ तो यह जरूरी समझा गया कि इस खेल की देखभाल एक केन्द्रीय सस्था द्वारा हो। 27 माच, 1937 को दिल्ली मे अखिल भारतीय फुटवाल सघ का जन्म हुआ। सघ ने भारतीय फुटबाल सस्था के अध्यक्ष सन्तोष के महाराजा के नाम पर एक ट्राफी अखिल भारतीय फुटबाल सघ को भेंट की और कहा कि यह ट्राफी उस राज्य को दी जानी चाहिए जो अन्तर-राज्यीय फुटवाल प्रतियोगिता में पहले स्थान पर आए।

इस प्रतियोगिता का आयोजन हर साल किया जाता है। सन्तोष ट्राफी को सबसे ज्यादा बगाल ने जीता है। बगाल के अलावा बम्बई, मसूर, दिल्ली और हैदराबाद की टीमें भी इस प्रतियोगिता मे ऊचा स्थान पा चुकी हैं।

राष्ट्रीय फुटबाल प्रतियोगिता (सतोष ट्राफी) का आयोजन सन् 1941 से शुरू किया था। 1941 से लेकर अब तक विजेताओ और रनस-अप के नाम इस प्रकार हैं

संतोष ट्राफी रिकार्ड

वर्ष	विजेता	रनर्स अप
1941	बंगाल	दिल्ली
1944	दिल्ली	बंगाल
1945	बंगाल	बम्बई
1946	मैसूर	बंगाल
1947	बंगाल	बम्बई
1949	बंगाल	हैदराबाद
1950	बंगाल	हैदराबाद
1951	बंगाल	बम्बई
1952	मैसूर	बंगाल
1953	बंगाल	मैसूर
1954	बम्बई	सेना
1955	बंगाल	मैसूर
1956	हैदराबाद	बम्बई
1957	हैदराबाद	बम्बई
1958	बंगाल	सेना
1959	बंगाल	बम्बई
1960	सेना	बंगाल
1961	रेलवे	महाराष्ट्र
1962	बंगाल	मैसूर
1963	बम्बई	मद्रास
1964	रेलवे	बंगाल
1965	आंध्र	बंगाल
1966	रेलवे	सेना
1967	मैसूर	बंगाल
1968	मैसूर	बंगाल
1969	बंगाल	सेना
1970	पंजाब	मैसूर
1971	बंगाल	रेलवे
1973	केरल	रेलवे
1974	पंजाब	बंगाल
1975	प० बंगाल	कर्नाटक
1976	प० बंगाल	महाराष्ट्र

वर्ष	विजेता	रनर्स-अप
1977	प० बगाल	पजाब
1978	प० बगाल	गोआ
1979	प० बगाल	पजाब

सटक्लिफ हरबर्ट—हरबट सटक्लिफ का जन्म 24 नवम्बर, 1894 को हुआ था। उन्होने 26 साल की उम्र मे 1919 मे याकशायर को ओर से काउटी मे कदम रखा और 1945 तक खेलते रहे। उन्होने 24 क्रिकेट सत्रो मे एक हजार से अधिक रन बनाए। इनमे उन्होने तीन बार 3 हजार से अधिक रन बनाए और बारह बार 2 हजार से अधिक रन बनाए। 1932 के क्रिकेट सत्र मे उन्होने 14 शतक बनाए। 1928 और 1931 के सत्रो मे उन्होनें 13 13 शतक बनाए। चार बार उन्होने एक मैच की दोनो पारियो मे शतक बनाए।

हरबट सटक्लिफ के जीवन का सबसे सफल वष 1932 था। इसी वर्ष उन्होने 14 शतको के जरिए 3336 रन बनाए, जिनमे उनका उच्चतम स्कोर, 313 रन, भी शामिल है। इसी वष उन्होने अपने 100 शतक पूरे किए। इसी वष उन्होंने याकशायर के लिए पर्सी होम्ज के साथ पहले विकेट की भागेदारी मे ससेक्स के विरुद्ध ˢ55 रन बनाए। इसम होम्ज का योग 224 रन (आउट नही) और सटक्लिफ का 313 रन था। 555 रन की यह पहले विकेट की भागेदारी पूरे 45 वष विश्व रिकाड रही।

हरबट सटक्लिफ ने अपने सम्पूण क्रिकेट जीवन मे 149 शतको की सहायता से कुल 50,135 रन बनाए (प्रति पारी और औसत 52 रन)। टेस्ट क्रिकेट मे सटक्लिफ ने 54 टेस्ट मैचो मे 16 शतको और 23 अद्ध शतको के जरिए प्रति पारी 60 73 रन की औसत से कुल 4,555 रन बनाए। उनका उच्चतम टेस्ट स्कोर 194 रन था, जो उन्होने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध 1932 33 की श्रृखला क सिडनी टेस्ट मे बनाया था। सटक्लिफ ने अपने 54 टेस्ट मैचो मे से 27 इग्लैंड के विरुद्ध खेले थे और इनम 8 शतको की सहायता से 2741 रन बनाए थे। दो बार उन्होने एक टेस्ट की दोनो पारियो मे शतक बनाए।

सटक्लिफ बाए हाथ के बडे आकर्षक और भरोसे के बल्लेबाज थे। क्रिकेट को उनकी सबसे बडी देन लेन हटन है, जिसकी प्रतिभा को पहचानने और सवारने मे उनका जबदस्त योग रहा। जब तक क्रिकेट खेली जाएगी हरबट सटक्लिफ का नाम अमर रहेगा।

83 वष की उम्र मे उनका देहान्त हो गया। उनकी गिनती आज भी दुनिया के चोटी के बाए हाथ के बल्लेबाजो म की जाती है।

सतपाल—सतपाल का जन्म 10 दिसम्बर, 1956 को हुआ। कद 5 फुट 11 इंच, वजन 95 किलो।

भारतीय ढग की कुश्ती में जितनी सफलता सतपाल को प्राप्त हुई उतनी शायद ही किसी और पहलवान को प्राप्त हुई हो। जामा मस्जिद के दगल मे 9 पहलवानो को पछाड कर नौशेरवा का खिताब लेने वाला यह प्रथम हिन्दू पहलवान है। जब उसने 'भारत कुमार' का खिताब जीता तो उसका वजन केवल 70 किलो था। उसे सफलता पर सफलता मिलती गई और पिछले तीन महीने के भीतर उसने 'भारत केसरी' तथा 'रुस्तमे भारत' का खिताब जीत कर यह दिखा दिया कि भारत में अब उसकी टक्कर का कोई दूसरा पहलवान नही है।

जोरदार प्रशिक्षण और लगन इस पहलवान की सफलता का राज है। सतपाल रोज सवेरे चार बजे उठ जाता है। नित्य कर्म से निवृत्त होकर वह चार मील की दौड लगाता और उसके बाद डेढ घटे तक रियाज और जोर करता है। 30 फुट लम्बे मोटे रस्से पर उसे हर रोज 50 बार चढ़ना और उतरना पडता है। तभी तो उसकी कलाइयो और पजे मे इतनी ताकत है कि वह दादु चौगुले जैसे भारी-भरकम पहलवाल को भी टाग पकडकर मनमाने ढग से अखाडे मे घुमा सकता है। वह विशुद्ध शाकाहारी है। बादाम का शरबत, दूध, फल और शाकाहारी भोजन उसकी खुराक है। वह हर रोज 4 किलो दूध तथा आधा किलो घी लेता है।

सतपाल स्वभाव से विनम्र और मितभाषी है। घमड तो उसे छू तक नहीं गया है। कोल्हापुर मे अभी हाल मे सम्पन्न दगल को जब आयोजक एक दिन के लिए बढाना चाहते थे, तो उसने उनकी समस्या का हल करने के लिए विनम्र कि तु दृढ शब्दो म कहा था कि वह एक ही दिन म तीन-तीन कुश्तिया लडने को तयार है। यह बात उसने अभिमानपूर्वक नही, वरन सहज रूप मे कही थी। वह 1974 मे लुधियाना म एक ही लगोट पर चार चार कुश्तिया मारकर अपनी दिलेरी और दमखम का परिचय दे चुका है।

सरदेसाई, दिलीप—1971 म किंग्स्टन मे खेला गया भारत वेस्टइडीज टेस्ट शृखला का पहला टेस्ट यो तो हार-जीत के फैसले के बिना समाप्त हो गया था लेकिन निर्विवाद रूप मे दिलीप सरदेसाई को उस टेस्ट का हीरा माना गया। सरदेसाई ने सोल्कर के साथ विकेट की भागीदारी मे 137 रन का नया रिकाड तो स्थापित किया ही उसके बाद नौवें विकेट की भागीदारी मे प्रसन्ना के साथ 122 रन का दूसरा नया रिकाड स्थापित किया। सरदेसाई वेस्टइडीज के विरुद्ध दोहरा शतक साथ ही सबसे अधिक व्यक्तिगत स्कोर बनाने वाले प्रथम भारतीय बन गए। उन्होने 1962 के उमरीगर के 172 के रिकाड को भी भग कर दिया।

सरदेसाई का जन्म 8 अगस्त, 1940 को गोवा म हुआ था और उच्च

शिक्षा के लिए उन्हे बम्बई आना पडा। बम्बई मे शिक्षा के साथ साथ उन्होंने एम० एस० नाईक के मार्गदर्शन मे क्रिकेट का अभ्यास शुरू किया। 1959 60 म जब सरदेसाई ने रोहिंटन बारिया ट्राफी मे शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए शतक बनाया तो लोगो का ध्यान पहली बार उनकी ओर आकर्षित हुआ। 1960 मे उन्हे विश्वविद्यालयो की सयुक्त टीम के लिए चुना गया, लेकिन सबसे पहले टेस्ट म खेलने का मौका उन्हे 1961 62 मे (इग्लड के विरुद्ध) मिला। यद्यपि कानपुर टेस्ट म उनका खेल बहुत बुरा नही था, फिर भी उन्हें बाद के तीनो टेस्टो में शामिल नही किया गया। 1962 में वेस्टइडीज के दौरे मे उनके खेल-प्रदर्शन की सभी ने सराहना की।

1971 में वेस्टइडीज का दौरा करने वाली भारतीय क्रिकेट टीम में बल्लेबाजी में वह दूसरे स्थान पर रहे। उन्होने 8 पारियो मे 642 रन बनाए, जिसमें दो बार उन्होंने शतक बनाए। न्यूजीलैंड के विरुद्ध 1965 शृखला के नई दिल्ली टेस्ट मे 127 मिनट में 104 रन। 30 टेस्टो मे 2001 रन।

साड से लडाई (बुल फाइटिंग)—इसान जगल की दुनिया से दूर इस्पात और ककरीट की दुनिया में आ बसा है, लेकिन बाहुबल की बानगी दिखाने की भावना उसमे आज भी बनी हुई है। जोर आजमाने के लिए और तो और मशीनें भी चल निकली हैं, जिनकी बेसुरी आवाज हाट बाजार और मेले ठेले मे अक्सर सुनाई पडती है। अगले ज़माने के लोग मशीनो के कायल नही थे, वे ज़ोर आजमाइश करते थे, बबर शेरो, रीछो और साडो से। साड से भिडने के खेल दुनिया के कई हिस्सो म प्रचलित थे, कही कही आज भी हैं। हमारे यहा, तमिलनाडु के गावो मे मकर सक्रांति के दूसरे दिन माट्टू पोगल (मवेशी त्योहार) मनाया जाता है, जिसका प्रमुख आकर्षण होता है 'जल्लिकट्टू' यानी साड से सघर्ष। एक बडी रकम, रेशमी धोती मे लपेटकर गाव के सबसे अडियल साड के सीगो से बाध दी जाती है कि हिम्मत हो तो साड से भिडो और रकम ले लो। प्राचीन काल मे 'जल्लिकटट' का विजेता ही गाव के मुखिया की बेटी का वरण कर सकता था।

प्राचीन काल की बात छोडिए, स्पेन और इस्पहानी अमेरिका मे साड से लडने वाले मातादोर (मैटाडोर) आज भी लोकप्रियता की 'सबसे ऊची पायदान' के अधिकारी समझे जाते हैं। तारोमाकी (साड सघर्ष) इन दोनो प्रदेशो का राष्ट्रीय खेल है। इस खेल की शुरुआत हुई थी, प्राचीन रोम और थेस्सालो म। उत्तर अफ्रीका के मूर योद्धाओ ने इसे अपनाया। स्पेन का आन्दालुसिया प्रदेश जीतने के बाद उन्होने वहा भी इसे चलाया। मूर आए और गए, मगर तॉरोमाकी स्पेन मे चलता ही रहा। सत्रहवी शताब्दी म सामन्तो ने अपना यह खेल पेशेवर खिलाडियो को सौंपकर स्वय सरक्षक का पद ग्रहण किया।

इसी जमाने मे प्रसिद्धि पाई मातादोर फासिया रोमरो ने, जिनका तॉरोमाकी म वही स्थान है जो हाकी म ध्यानचन्द का था। रामेरो न तारोमाकी को वही रूप दिया जिस रूप मे वह आज तक प्रचलित है।

स्पेन और इस्पहानी अमेरिका के सभी बड़े नगरो म साड-सघष के लिए विशेष क्रीडागन बने हुए हैं, जिन्हें प्लाज़ा द तोरो (साड-अखाडा) कहते हैं। स्पेन की राजधानी मेड्रिड म इस तरह का सबसे बडा प्लाज़ा है जिसमें बारह हज़ार दशक बैठ सकते हैं।

तॉरोमाकी के लिए साड, विशेष के द्रा म पाले जाते हैं जि हें 'वसाद' कहते हैं। कोशिश यह रहती है कि साड ज्यादा से ज्यादा कद्दावर, अडियल और खूखार बने। अच्छे साड हज़ार डेढ हज़ार रुपये तक मे बिकते हैं। साडो से लडने वाले, तारोमाकी के शाही स्कूल में दीक्षा पाते है। कष्टसाध्य प्रशिक्षण और कठिन परीक्षा के बाद ही उन्हें लाइसेंस दिया जाता है। तारोमाकी के कायक्रम कोरिदा' म चार तरह के खिलाडी हिस्सा लेते हैं— एस्पादा (खडगधारी), जिन्हें मातादोर (वध हन्ता) भी कहते है, बादेरिलो (बर्छीधारी), पिकादोर (कुदालधारी) और चुलो (सहायक)।

तीसरे पहर प्लाज़ा दशको से खचाखच भर जाता है। कोई लब्धप्रतिष्ठ व्यक्ति कोरिदा के अध्यक्ष का आसन ग्रहण करता है। बिगुल बज उठते हैं, खिली धूप में चटकीली सजधज का जलूस निकलता है। आगे आग परम्परागत पोशाके पहने नगरपालिका अधिकारी उनके पीछे एस्पादा और बादेरिलो, जिनकी साटन की पोशाको पर चादी और सोने के तार से बेल-बूटे बने होते हैं, उनके पीछे घुडसवार पिकादोर, जो पीली पोशाक और फौलादी जुर्राब पहने होते हैं और सबसे पीछे चुलो और वे खच्चर आते है जो मरे हुए घोडो और साडो को प्लाज़ा से घसीटकर ले जाते हैं। अध्यक्ष महोदय साडो के बाडे की कुजी मुख्य नगरपालिका अधिकारी की ओर फेंक देत हैं। बाडा खुलता है, एक अडियल साड मैदान मे आ धमकता है। उसके कन्धे पर लोहे की कील स मालिक का भण्डा गडा हुआ होता है। कील की चुभन साड को बावरा बना देती है।

घुडसवार पिकादोर प्लाज़ा की दीवार के पास हाथो म कुदाल लिए तैनात रहत हैं। घोडो की आखो पर पट्टी बधी रहती है ताकि व साडो को देख न पाए। क्रोधित साड आता है और अपने सीगो स घोडे का पट फाड डालता है। ठीक तभी, पिकादोर एक झटके से उसकी पीठ पर कुदाल गाड देता है। अक्सर साड का क्रोध घोडे और घुडसवार दोनो को धर पटकता है। ऐसे मौको पर चूलो अपना लाल लबादा लहराकर साड का ध्यान बटा देते हैं और पिकादोर को बचा लेते हैं। अगर उनम चूक हो जाए तो घोडे की तरह घुडसवार की भी अतडिया बाहर निकल आती है।

एक घोडा मर जाए, तो पिकादोर झट दूसरे घोडे पर सवार होकर साड के सामने आ जाता है। फिर वही घोडे की वन्द आखें और निकली आतें, पिकादोर की खून पसीने से सनी थकन और साड की पीठ पर कुदाल की चुभन। साड को कोचने, सताने, थकाने और इसी बहाने कितने ही घोडो को यम की भेट चढाने का यह दौर कई दशको को भयानक रूप से घिनौना मालूम होता है।

कमजोर दिल वालो को इसे देखकर मतली आने लगती है, अक्सर वे बेहोश हो जाते हैं। लेकिन यह दौर जरूरी है, क्योकि इससे साड को थकाया और भडकाया जा सकता है और साथ ही उसकी बलिष्ठता का सिक्का जमाया जा सकता है। साड जितने ज्यादा घोडे मारता है उसे उतना ही खूखार समझा जाता है। साड को मारने वाले की कीर्ति साड की क्रूरता से निर्दिष्ट होती है।

तारोमाकी के दूसरे दौर म हिस्सा लेते है बादेरिलो। दोनो हाथो मे डेढ़ डेढ फुट लम्बी और रगीन कागज म लिपटी बर्छिया लेकर बादेरिलो साड से बीस-तीस गज के फासले पर जा खडा होता है। फिर वह अपना पाव जमीन पर पटककर साड को ललकारता है। शब्दश वही कहता है कि 'आ साड, मुझे मार !' साड सीग ताने झपटता है। बादेरिलो उसे अपने बिल्कुल करीब आने देता है। ऐन मौके पर पतरा बदलकर वह दोनो बर्छिया साड की गदन म घोप देता है। अगर साड 'अहिंसावादी' साबित हो तो उसे उत्तेजित करने के लिए बर्छिया की जगह सुलगते पटाखे उसकी गदन पर रख दिए जाते है। बादेरिलो बडे साहसी जीव होते हैं। वे अपने लाल लबादे को लहराकर साड को आकर्षित करते हैं और ज्यो ही वह पास आता है, लबादा दाए या बाए घुमाकर साड का रुख बदल देते हैं। कभी कभी वे लबादे को घुमाकर साड को अपनी पूरी परिक्रमा करवा देते हैं। अक्सर व सीग पकडकर उसकी पीठ पर जा सवार होते है और फिर कलाबाजी खाकर दूसरी ओर कूद जाते हैं।

बिगुल बजता है और सांड से सघप का तीसरा और अन्तिम दौर शुरू होता है। खडगधारी मातादोर, अध्यक्ष की गद्दी के सामने आ खडा होता है। उसके बाए हाथ म खडग और एक छोटी सी लाल रेशमी झण्डी (मुलेता) होती है और दाए हाथ मे टोपी। वह विधिवत, बहुत धब्दाडम्बर के साथ, साड की वलि किसी विशिष्ट व्यक्ति को समर्पित करता है। फिर अपनी टोपी दर्शको की ओर फेंककर साड से मुखातिब होता है और वे तमाम पतरे दिखाता है जो बादेरिलो ने दिखाए थे। जहा बादेरिलो के पास साड के सीग का रुख मोडने के लिए लाल लबादा होता है वहां इसके पास लाल

झण्डी। बादेरिलो के मुकाबले म मातादोर की हिम्मत उतनी ही ज्यादा होती है जितनी कि झण्डी आकार म लबादे से छोटी होती है। पाव पटककर एत्तोरो (ओ साड) की ललकार बुलन्द करके मातादोर साड का ध्यान आकर्षित करता है। जब साड के सीग उसको छूने को होते हैं, वह उन्हे लाल झण्डा दिखा देता है।

मातादोर के साहसी करतब देखते ही बनते हैं। अक्सर वह साड के सामने एक घुटना टेककर बैठ जाता है। बचाव के लिए उसके पास लाल झण्डी के अलावा और कुछ नही होता। साड उसकी ओर झपटता है, दर्शक दम साध लेते हैं। झण्डी फहराकर बदन लचकाकर, वह साड के सीगो से बच जाता है और क्रीडागन तालियो की गडगडाहट से गूज उठता है। साड को काफी छकाने के बाद मातादोर उसकी बलि चढ़ाता है। बलि चढाने के दो पतरे हैं। पहले म मातादोर खडे हुए साड की ओर झपटकर एक कदम बढाता है और उसकी बगल म आकर अपनी खडग एक ही वार म सिर से सीने के पार कर देता है। दूसरे पैंतरे म मातादोर साड को अपने पास आने देता है और ऐन मौके पर परे हटकर वार करता है। खून के फौवारे-से फूट पडते हैं।

साड की लाश को खच्चर खीचकर प्लाजा से बाहर ले जाते हैं। दूसरा साड मैदान मे छोडा जाता है और तीन अको वाला वही दुखान्त नाटक नये सिरे से शुरू होता है। एक कोरिदा मे पाच छह साडो की बलि चढती है। साड मरता है, मातादोर सीना तानकर दर्शकों से मुखातिब होता है, जयघोष उठता है टोपिया उछलती हैं और फूल बरसते हैं। कभी-कभी मरने की बारी साड को बजाय मातादोर की भी होती है। मौत का आगमन प्लाजा मे तीसरे पहर होता है, जो कभी साड को चुनती है और कभी मातादोर को। साड और मातादोर, जीवन और मृत्यु की मध्यरेखा पर एक दूसरे का मुकाबला करते हैं और दोनो जानते हैं कि भाग्य देवता का कोई भरोसा नही है। तॉरोमाकी मे सभी कुछ है, वभव-विलास (वेशभूषा और शोभा-यात्रा मे), कमकाण्ड (बलि के अनुष्ठान मे), नृत्य की चपलता (पतरेबाजी मे) और नाटक की गम्भीरता (मृत्यु से साक्षात मे)। यही वजह है कि यह खेल, पराक्रम की सनातन गरिमा का प्रतीक बन गया है। महान साहित्य-कार अर्नेस्ट हैमिग्व ने अपनी कई रचनाओ मे 'बुल फाईटिंग' को पृष्ठभूमि के रूप म उभारा है।

सानी लिस्टन—मुक्केबाजी के इतिहास म सानी लिस्टन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। 1962 म जब लिस्टन ने पहले ही राउण्ड म विश्व चैम्पियन फ्लायड पैटसन को हराकर विश्व विजेता का पद प्राप्त किया तो मुक्केबाजी

की दुनिया मे एक हलचल सी मच गई। लेकिन वह केवल दो वर्ष तक ही विश्व-विजेता के पद को बरकरार रख सके और उसके बाद कैसियत क्ले (मोहम्मद अली) से हार गए। पैटसन को हराने पर उन्हे जितनी लोकप्रियता प्राप्त हुई, क्ले से हारने पर उतनी ही मायूसी भी हुई। कारण यह कि क्ले ने उन्हे एक ही मिनट मे ढेर कर दिया था।

लिस्टन को मुक्केबाज़ी का शौक बचपन से ही था। वह बाल्यावस्था मे अक्सर मारधाड के अपराध मे जेल चले जाते। उन्होने जेल मे ही मुक्केबाज़ी का अभ्यास किया। उनका जन्म 8 मई, 1932 को हुआ। उनके पिता ने दो बार विवाह किया। लिस्टन के 25 भाई-बहन थे, इसलिए उन्हे बचपन से ही काफी सघर्ष करना पडा। 13 साल की उम्र मे वह अपना घर-बार छोडकर भाग गए। किसी अपराध मे पकडे गए और पाच साल की सज़ा हो गई और अपने जेल जीवन म ही मुक्केबाज़ी के उस्ताद बनकर बाहर निकले। 1953 तक वह शौकिया मुक्केबाज़ थे, बाद मे वह पेशेवर बन गए। अखाडे मे वह मतवाले रीछ की तरह लडते और जख्मी हो जाने के बावजूद लडाई जारी रखते। कसियस क्ले से हार जाने के बावजूद दुनिया के समाचार पत्रो म मोटी मोटी सुर्खिया मे उनके समाचार छपते रहे। 1969 मे उन्हे दुनिया का तीसरे नम्बर का मुक्केबाज़ कहा गया। उन्होने एक बार कहा था कि मैं 1978 मे मुक्केबाज़ी से सन्यास ले लूगा, लेकिन तब तक मेरा पौत्र मुक्केबाज़ी मे काफी नाम पैदा कर लेगा। आखिरी दिनो मे वह बडे आराम की जिन्दगी बसर कर रहे थे। 50 हजार डालर के शानदार बगले मे रहते और दादागिरी करते। उन्होने कहा था कि अब मैं आराम करना चाहता हू। किसी बडे मुक्केबाज़ को चुनौती देकर अपना चेहरा ज़ख्मी करना नही चाहता।

लेकिन सन् 1978 का साल देखने का मौका उन्हे नही मिला और 38 साल की उम्र मे, ठीक दो साल बाद 1971 मे, वह अपने कमरे मे मृत पाए गए।

सी० के० नायडू—'सी० के०' का पूरा नाम क्या था और वह कब पैदा हुए थे, यह शायद बहुत कम लोग जानते हो, मगर 'सी० के०' कौन थ यह हर कोई जानता है। उनका पूरा नाम कोट्टारी कन्कैया नायडू था और उनका जन्म 31 अक्तूबर, 1895 को हुआ था। उनका कद छह फुट था। शुरू-शुरू म वह बहुत अच्छे एथलीट थे। कहा जाता है कि जब 'सी० के०' के हाथ मे बल्ला होता तो वह छक्का लगाते थे और जब उनके हाथ मे गेंद होती थी तो वह विकेट लेते। क्रिकेट के अतिरिक्त उन्हे टेनिस, हाकी, निशानेबाज़ी, ब्रिज और बिलियर्ड का भी बेहद शौक था।

यदि नायडू के भक्तो और दीवानो से (जिन्होने नायडू को देखा है) नायडू की चर्चा की जाए तो वे अक्सर उनके किस्से सुनाने लगते हैं। सी० के० ने 1916 से ही क्रिकेट के बड़े मैचो म हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। उन्होने पहला मैच 1916 म खेला और आखिरी मैच 30 नवम्बर, 1953 को, यानी 58 वष की उम्र म।

1932 मे नायडू ने इग्लड का दौरा किया। उस समय उन्ह इस दौरे का सवश्रेष्ठ खिलाडी माना गया। वहा उन्होने प्रति घण्टा 40 रनो की औसत से 11,618 रन बनाए और 68 विकट लिए।

1926-27 की बात है। एम० सी० सी० की टीम भारत के दौरे पर आई हुई थी। बम्बई म मैच हो रहा था। उस समय नायडू ने एक पारी में 100 मिनट म 153 रन बनाकर क्रिकेट जगत म एक हलचल सी पदा कर दी। इसम उन्होने 11 छक्के और 13 चौके लगाए। बडे बडे गेंददाज जाज गिरी मोरिस टेट और एस्टिल गेंददाजी का ढग भूलते नजर आने लगे। हर गेंद पर चौक्का, हर गेंद पर छक्का। तभी से उन्हे छक्को का उस्ताद कहा जाने लगा। कहा जाता है कि अधिकतर खिलाडी शतक पूरा करते समय बहुत सावधान हो जाते हैं, पर नायडू शतक के करीब आकर और भी लापरवाही से खेलते और अक्सर छक्का मारकर ही अपना शतक पूरा करते। दूसरे शब्दो म यह कि वह छक्का मारने म काफी सिद्धहस्त थे। उन्होने अपने जीवन-काल मे 73 प्रथम श्रेणी के मैच खेले और 2,567 रन बनाए। उनकी सर्वाधिक रन सख्या 200 थी। किसी समीक्षक ने ठीक ही कहा है कि आकडो के आधार पर खिलाडियो का मूल्याकन करने वाले को ऐसे बहुत से खिलाडी मिल जाएगे जिन्होने नायडू से भी ज्यादा रन बनाए हो या उनसे ज्यादा चौके और छक्के लगाए हो। पद्मभूषण प्राप्त करने वाले भी बहुतरे खिलाडी मिल जाएगे, मगर भारतीय क्रिकेट को नायडू जसा खिलाडी फिर कभी नहीं मिल सकता।

1932 मे विस्डन ने 37 वर्षीय नायडू का चित्र सहित परिचय प्रकाशित करते हुए लिखा था—'सुगठित और ऊचे कद के सी० के० नायडू एक श्रेष्ठ क्रिकेट खिलाडी हैं। भारतीय टीम के लिए उन्होने इग्लड मे जो कुछ किया वह उनके स्वदेश के शानदार खेल प्रदशनो की पुष्टि ही करता है।"

सुब्रत मुखर्जी प्रतियोगिता (छोटी डूरण्ड)—1960 से, डूरैण्ड प्रतियोगिता शुरू होने से पहले, 'सुब्रत मुखर्जी प्रतियोगिता' यानी 'छोटी डूरैण्ड' प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। सुब्रत मुखर्जी प्रतियोगिता मे केवल स्कूली बच्चो की टीमे ही भाग ले सकती हैं। खिलाडियो की उम्र 17 वर्ष स कम ही होती है। इस प्रतियोगिता को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य स्कूली बच्चो मे

फुटवाल के खेल को अधिक से अधिक लोकप्रिय वनाना है। पहले इस प्रति योगिता को 'छोटी डूरेंण्ड' कहा जाता था बाद म इसका नाम 'सुब्रत मुखर्जी प्रतियोगिता' कर दिया गया। इस प्रतियोगिता का शुरू करने का श्रेय स्वर्गीय सुब्रत मुखर्जी को है।

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भी इस प्रतियोगिता का बहुत महत्त्व है। कार-निकोबार और लक्षद्वीव मिनिकाय जस छोटे छोटे द्वीपो की टीमो को राजधानी म बुलाना और उनका देश के दूसरे भागा के बच्चो से खेलना अपने आप मे बहुत महत्त्वपूण है।

सुब्रत कप प्रतियोगिता के साथ गवनमट स्कूल कार-निकोबार का गहरा सम्बन्ध है। 10 वर्षों के इतिहास म कार निकोबार की टीम ने ढाई वप तक इस कप पर अपना अधिकार जमाया। 1969 म कार निकोबार और गोरखा की टीम को सयुक्त विजेता घोषित किया गया था। उससे पहले 1966 और 1967 म लगातार दो वार कार निकोबार की टीम ने यह कप जीता था।

सुभाष गुप्ते—सन 1971 मे भारतीय क्रिकेट के इतिहास मे एक और स्वर्णिम अध्याय जुड गया। इस वप अजीत वाडेकर के नेतत्व म भारतीय क्रिकेट टीम ने पहले वेस्टइडीज को और फिर इग्लैड को हराया था। वेस्टइडीज के दौरे में हमारे खिलाडियो को घरेलू वातावरण उपलब्ध कराने तथा उनकी सुख-सुविधा का पूरा ख्याल करने का सारा श्रेय इस दौरे के लिए नियुक्त जन सम्पक अधिकारी को ही था। इस अधिकारी का नाम था सुभाष गुप्ते।

सुभाप गुप्ते, जिन्होने दस वप तक अपनी स्पिन गेंददाजी से विश्व के बल्लेबाजो को चकाचौध किए रखा, 1959 में भारतीय क्रिकेट तथा भारत में अपनी आर्थिक स्थिति स परेशान होकर वेस्टइडीज मे ही बस गए। कुछ समय पहले एम० सी० सी० ने उन्हे आजीवन सदस्य बनाकर सम्मानित किया।

अपने सात वप के छोटे से टेस्ट जीवन मे 36 टेस्टो में 149 विकेट लेने वाले इस लेग-स्पिनर का जन्म बम्बई मे 11 दिसम्बर, 1929 को हुआ था। कद बुत मे छोटा होने के कारण उन्होने अपनी नियति धीमी गेददाजी के साथ बाध ली। उन्हीं दिनो बम्बई के क्रिकेट क्लब आफ इण्डिया' ने उभरती प्रतिभाओ को प्रोत्साहित करने हेतु एक योजना शुरू की। सुभाप गुप्ते तथा मजरेकर को इस योजना मे सवप्रथम प्रशिक्षण प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। 1948 में वेस्टइडीज टीम के दौरे तक सुभाप गुप्ते का नाम लोगो की जुबान पर चढ़ने लगा। इसी वप उन्होने रणजी ट्राफी प्रतियोगिता में अपना खाता खोला। बम्बई बगाल तथा राजस्थान के लिए 1962 63 तक खेलते

हुए सुभाष ने 18 71 के औसत से 121 विकेटें उखाड डाली।

1951 की बात है। भाग्य ने पलटा खाया। 1952 में भारत की टीम को इग्लड जाना था। भारतीय चयनकर्त्ता होनहार खिलाडियो की तलाश में थे। हर चर्चित नाम को उन दिनो भारत का दौरा कर रही एम० सी० सी० टीम के विरुद्ध आजमाया जा रहा था। सुभाष गुप्ते का भी नम्बर आया। कलकत्ता में तीसरे टेस्ट मे सुभाष को गेंद मिली पर 18 ओवरो म 37 रन व्यय करके भी उन्हे कोई सफलता न मिली। लेकिन होनहार खिलाडी को कब तक उपेक्षित रखा जाता। 1952 में पाक के विरुद्ध 2 टेस्टो में 5 विकेट लेकर उन्होने भारतीय क्रिकेट जगत को यह विश्वास दिलाया कि वह एक विश्वसनीय गेंददाज है।

1953 में भारतीय टीम के वेस्टइडीज के दौरे ने सुभाष गुप्ते को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुचा दिया। 5 टेस्टो में 27 विकेट और विकेट भी मामूली बल्लेबाजो के नही बल्कि वारेल, वीक्स व वाल्काट जसे दिग्गजो के विकेट। प्रतिद्वन्द्वी टीम के सभी बल्लेबाज और दशक एक स्वर से कह उठे कि सुभाष गुप्त समकालीन क्रिकेट मे सवश्रेष्ठ लेग स्पिन व गुगली गेंददाज हैं। इस दौरे के दौरान उन्होने न केवल क्रिकेट प्रेमी दशको का दिल जीता, बल्कि एक क्रिकेट प्रेमी लडकी का भी दिल जीत लिया। बाद में यही उनकी पत्नी बनी।

सुरेश गोयल—उनका जन्म 20 जून, 1943 को हुआ। वह इलाहाबाद की ओर से खेलने लगे और पहली बार 1957 में हैदराबाद में हुई जूनियर बडमिंटन प्रतियोगिता जीती। 1958 में गोहाटी में हुई जूनियर प्रतियोगिता म भी वह विजयी रहे। 19 अक्तूबर, 1960 म वह विश्व विजेता हरलड कोप्स को हराने मे सफल रहे।

1962 से 1964 तक और उसके बाद 1967 और 1970 में उन्होने राष्ट्रीय चम्पियन का गौरव प्राप्त किया। 1970 मे टामस कप म भाग लेने वाली भारतीय टीम का नेतृत्व किया। 1967 मे कैनाडा की अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिता और अमेरिकी राष्ट्रीय प्रतियोगिता मे वह उप विजेता रहे। इसी वष उन्हें अजुन पुरस्कार से भी अलकृत किया गया। 1972 मे म्यूनिख ओलम्पिक म विश्व के कुछ चोटी के खिलाडियो को आमत्रित किया गया, उनम एक नाम सुरेश गोयल का भी था।

1963 मे वह रेलवे म भरती हो गए और उसके बाद से राष्ट्रीय प्रतियोगिताओ मे वह रेलवे का प्रतिनिधित्व करने लगे। 1977 मे गोआ मे हुई राष्ट्रीय प्रतियोगिता म भी उन्होने भाग लिया था। 1971 में उन्हें रेल मत्री का विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त हुआ था। किन्तु इसे नियति के चक्र के अतिरिक्त भला क्या कहा जाएगा कि जब वह एक के बाद एक सफलता के

सोपान तय करते जा रहे थे कि 19 अप्रल, 1979 को 35 वष की कच्ची उम्र मे दिल का दौरा पडने से वाराणसी मे आकस्मिक रूप से देहान्त हो गया।

सुरेश बाबू—1978 म क्विलोन मे हुई 16वी अन्तर राज्य एथलेटिक प्रतियोगिता मे सवश्रेष्ठ खिलाडी की ट्राफी सुरेश बाबू को प्रदान की गई। उन्होने ऊची कूद 2 07 मीटर (नया मीट रिकाड) डिकेथलन मे 7,380 अक (नया मीट, नेशनल और एशियाई रिकाड) और त्रिकूद मे 15 70 मीटर का रिकाड कायम किया।

सुरेश बाबू को जब म्यूनिख ओलम्पिक खेलो मे भारतीय दल में शामिल किया गया था उस समय उनकी अवस्था केवल 19 वष की थी। 1973 मे मास्को मे हुई विश्व विश्वविद्यालय खेलो में उन्हे भारतीय टीम का कप्तान नियुक्त किया गया था। उस समय उनकी अवस्था 20 साल की थी। सिओल (1975) मे हुए एशियाई एथलेटिक खेलो मे उन्होने डिकेथलन में विजय प्राप्त की थी।

लेकिन अच्छे प्रदशन के बावजूद उन्हे 1976 के माट्रियल ओलम्पिक खेलो में शामिल नही किया जा सका। मई 1972 मे पटियाला में हुए प्रशिक्षण शिविर मे जब उन्होने ऊची कूद म 2 06 मीटर कूदा तो उन्हे म्यूनिख जाने वाले भारतीय एथलेटिक दल में शामिल कर लिया गया, लेकिन 9 सितम्बर, 1972 को जब असली शक्ति परीक्षा हुई तो वह केवल 2 00 मीटर ही ऊचा कूद सके। उनका कहना है कि वह मेरा दुर्भाग्य ही था, वरना इतनी ऊची कूद लगाना तो मेरे बाए हाथ का खेल है।

सैंडो, युजीन—युजीन सैंडो की कहानी अभी पुरानी नही हुई है। आज भी सैंडो को 'आधुनिक युरोप का हरकुलीस' कहा जाता है। इतना ही नही 'सैंडो' शब्द शक्ति का पर्याय बन गया है। सैंडो बनियान से तो सभी परिचित हैं ही।

सैंडो (पूरा नाम फेडरिक विलियम्स युजीन सैंडो) का जन्म कीनिंगसबग (जमनी) मे 1867 मे हुआ। बचपन मे ही वह बहुत नाजुक और कमजोर थे। जब उनकी उम्र केवल 10 वष की थी तब वह एक बार अपने पिता के साथ रोम गए। वहा पर उन्होने रग बिरगे पत्थरो और धातुओ की बनी विशालकाय मूर्तियो को देखा। उन मूर्तियो को देखने के बाद उन्होंने अपने पिता से पूछा कि क्या पुराने जमाने के लोग सचमुच इतने तगडे और मजबूत होते थे? उनके पिता ने उन्हे समझाते हुए बताया कि कुछ समय पहले तक सचमुच लोग अपने शरीर की साधना किया करते थे।

पिता की बात सैंडो के दिल मे समा गई। उन्होने उसी दिन से दुनिया का सबके ताकतवर इन्सान बनने का सकल्प किया और रोज कसरत करनी शुरू कर दी। भारी से भारी चीज को उठाना, मुगदर हिलाना, डड-बैठक

करना, सास रोककर दौडना, पहाडो पर चढना उनका प्रतिदिन का नियम बन गया। 18 वष की उम्र म ही उनका शरीर इस्पात का-सा बन गया। वह शक्ति का एक विराट पुज बन गए। यद्यपि उनका वजन केवल 81 65 किलोग्राम ही था और ऊचाई केवल 1 74 मीटर, लेकिन इसपर भी उनम जितनी शक्ति थी उसकी कल्पना तक नही की जा सकती। वह एक विरले पुट्ठेबाज थे। उनकी मासपेशिया इतनी कसी हुई थी कि उन्ह देखते ही शक्ति के प्रवाह का आभास होता था।

उन्होने कभी किसी भी तरह के खाने से परहेज नही किया और न ही किसी एक ही तरह के पौष्टिक आहार का सेवन किया। उनका सिद्धान्त था कि किसी चीज को खाने म अति नही करनी चाहिए। उन्होने कसरत करने के अपने नये तरीके खोजे। स्प्रिंग वाला डम्बल उन्हीकी देन माना जाता है। 20 वष की उम्र म ही दुनिया म उनके नाम का डका बजने लगा। युरोप और अमेरिका की यात्रा के दौरान उनकी दुनिया भर के नामी पहलवानो से भेंट हुई। उन्होने समसन की चुनौती भी स्वीकार की। 1901 मे वह भारत भी आए। यहा पर उनका भव्य स्वागत किया गया। बम्बई के 'एक्सेलसियर थियेटर' म उन्होने अपन एक प्रदशन से दशको को आश्चय-चकित कर दिया। वहा उन्होने मजबूत कागज की बनी एक ताश की गड्डी के पहले दो टुकडे किए और फिर 4 टुकडे। दूसरी ताश की गड्डी का भी यही हस्र हुआ। उसके बाद उन्होन फटे कागज के टुकडो को अपनी दोनो मुट्ठियो से इतनी जोर से दबाया कि वे टुकडे एक सख्त पदाथ जस हो गए। उसके बाद उन्होने उनको भीड पर फेंक दिया। वे इतने सख्त हो गए थे कि किसीके लिए उन कागज के टुकडो को अलग कर पाना सम्भव नही था। कभी वह अपने सीने पर लकडी का एक मजबूत और भारी तख्ता रख लेते और उसपर से दो पहियोवाली घोडागाडी, दो सवारियो और ढेर सारे सामान से लदी आराम से गुजर जाती।

उनके हाथो मे कितनी शक्ति थी इसके बहुतेरे किस्से मशहूर है। ब्रिटेन के अजायबघर मे आज भी पेंस का वह सिक्का मौजूद है जिसे उन्होने बीच से फाड दिया था। एक बार वह अमेरिका गए। उन्होने देखा कि वहा पर एक बडे तमाशे का आयोजन हो रहा है—भालू और शेर की लडाई। उसी समय उनके मन म विचार आया कि क्यो न मैं भालू का स्थान ले लू। उसी समय उन्होने शेर के साथ निहत्थे लडने की घोषणा की। आगे का किस्सा उन्हीके शब्दो म सुनिए— जब मैं अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान फ्रांसिस्को पहुचा तो देखा कि वहा पर शीतकालीन मेले का आयोजन हो रहा है। वहा पर केवल शेर सामने एक व्यक्ति से मेरी भेंट हुई जो वहा

पर सिंह और भालू की लडाई का आयोजन कर रहा था। यह लडाई तब तक जारी रहने वाली थी जब तक दोनो भीमकाय जानवरो मे से एक की मृत्यु न हो जाए। 20 हजार से अधिक उत्साही दर्शक टिकटें खरीद चुके थे, लेकिन उसके बाद पुलिस ने उस लडाई पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उसी क्षण मुझे ख्याल आया कि क्यो न मैं भालू का स्थान ग्रहण कर लू और लोगो को अपनी शक्ति का परिचय, प्रदर्शन और जलवा दिखा दू। मेरे मन मे तरह तरह के विचार आने लगे। सिंह से लडने म तो मुझे कोई भय नही था लेकिन उसके छुरे जैसे पैने दात और नखो को देखकर ही आधी जान निकल जाती थी फिर उस सिंह के बारे मे यह भी मशहूर था कि बहुत ही खूखार जानवर है। मैं चाहता था कि मुझे कोई छोटा मोटा चाकू या छुरे जसा कोई हथियार दे दिया जाता, लेकिन बाद मे मुझे पता चला कि अमेरिका और इग्लैंड मे इस प्रकार की लडाइयो मे ऐसे हथियारो के प्रयोग की अनुमति नही दी जाती। सिंह से लडने का एकमात्र तरीका यही था कि मैं उसके सामने निहत्था जाऊ।

"कर्नल बोन और मेरे दूसरे मित्रो ने इस बात पर बल दिया कि सिंह और मेरे बीच लडाई का आयोजन इस प्रकार से होना चाहिए कि मरने-मारने वाली लडाई न होकर पाशविक तथा मानवीय शक्ति के बीच एक सघर्ष हो, यानी सिंह के पजो पर चमडे के दस्ताने पहना दिए जाए। फिर किसीने मुझसे यह कहा कि सिंह मे इतनी शक्ति है कि वह केवल एक थाप में ही आदमी की गर्दन तोड देता है। खैर लड़ाई की सारी योजना बन जाने के बाद 'सडो की खूखार सिंह से लडाई' के बडे-बडे विज्ञापन और पोस्टर सारे शहर म लगा दिए गए। यह खबर आग की तरह शहर मे और शहर से सैकडो मील दूर तक फैल गई। मैंने सिंह के साथ लडाई का रिहर्सल करने का निश्चय किया। रिहर्सल की तैयारी हो जाने पर सिंह के पजो पर दस्ताने और मुह पर जाली चढ़ा दी गई। सिंह के पजो पर दस्ताने चढाने में काफी दिक्कत हुई और बीसियो लोग जजीरो और पिंजरा से कई घटो तक जूझते रहे। फिर 70 गज लम्बा और लगभग इतना ही चौडा एक कठघरा लाया गया। मेरे मित्रो और साथियो ने अब भी मुझे काफी समझाने-बुझाने की कोशिश की, लेकिन मैं तो सिंह से लडने का निश्चय कर ही चुका था। हा, कभी कभी यह विचार जरूर आता था कि कहीं मेरी यह लडाई आखिरी लडाई न बन जाए। आखिरकार मैं कठघरे म घुस गया। कमर तक मैं नगा था, फिर मेरे पास कोई हथियार भी नही था। सिंह की आखो म खून उतर आया। वह मुझपर झपटा, मैं फुर्ती से एक ओर हट गया। उसका वार खाली गया। इससे पहले कि वह मुडे मैंने जल्दी से उसकी गर्दन बाई बाजू

से और उसकी कमर दाईं बाजू से जकड़ ली। उस शेर का वजन 530 पौंड के लगभग था। मैंने उसे कंधों तक उठा लिया और उसे दो-तीन बार ज़ोर-ज़ोर से झटके देकर ज़मीन पर पटका। इसपर शेर मेरे हाथों से निकल गया और अब और भी तेज़ी के साथ मेरे ऊपर झपटा। हालांकि उसके पंजों पर दस्ताने चढ़े हुए थे, फिर भी उसने मुझे जख्मी तो कर ही दिया था। मेरे शरीर के कई हिस्सों पर खरोंचें आईं और खून बहने लग गया था। कभी वह मेरे ऊपर झपटता और कभी मैं उसकी पीठ पर सवार हो जाता। आखिरकार कर्नल ब्रोन ने दो गोलियां चलाईं, जिससे शेर एक ओर हट गया। उसके बाद मुझे कठघरे से बाहर आने को कहा गया। मुझे इस बात का पूरा यकीन हो गया था कि मुझे असली मुकाबले में शेर का नीचा दिखाने में कोई दिक्कत नहीं होगी फिर यह तो रिहर्सल मात्र था।

"आखिर असली लड़ाई का दिन भी आ गया। पंडाल में तिल धरने को भी जगह नहीं थी। जिस समय शेर के पंजों पर दस्ताने चढ़ाए जा रहे थे, उस समय क्रोध में आकर शेर ने लोहे की दो सलाखें भी तोड़ दी थीं। सब लोग स्तब्ध थे, लेकिन मैं आश्वस्त था।"

लेकिन यह क्या! शेर जैसे ही सैंडो के सामने आया उसने अपने घुटने टेक दिए। मानो वह लड़ने से पहले ही अपनी हार स्वीकार कर रहा हो। सैंडो ने शेर को पालतू बिल्ली की तरह अपने कंधों पर उठा लिया और तमाशबीनों के सामने चारों ओर चक्कर लगाया। उस समय तालियों की गड़गड़ाहट से पंडाल फटा जा रहा था। 'वाह वाह' की ऊंची आवाज़ से सारा आकाश गूंज उठा।

इसके बाद सैंडो का नाम अमर हो गया। वह जहां-जहां भी गए उन्होंने लोगों को स्वस्थ रहने का उपदेश दिया। जगह जगह अखाड़े खोले, बहुत-सी किताबें भी लिखीं। सैंडो में शक्ति और बुद्धि का अच्छा समन्वय था। वह केवल पहलवान ही नहीं एक बहुत बड़े विद्वान भी थे। उनकी लिखी पुस्तकों से बहुत-से लोग स्वास्थ्य शिक्षा का लाभ उठा चुके हैं।

उन्होंने दुनिया भर के सभी पहलवानों को चुनौती दी, लेकिन भारत के राममूर्ति की चुनौती को स्वीकार नहीं कर सके। कहा जाता है कि लड़ाई के पहले दोनों महाबलियों में वजन उठाने की होड़ लगी थी, जिसमें राममूर्ति ने सैंडो से कहीं ज्यादा वजन उठा लिया था। उसके बाद सैंडो ने राममूर्ति के साथ कुश्ती लड़ने से मना कर दिया था।

1911 में उन्हें किंग जार्ज पंचम ने 'शारीरिक शिक्षा के प्रशिक्षण का प्रोफेसर' की उपाधि से अलंकृत किया। अमेरिका के राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने अमेरिकी सैनिकों को और स्वस्थ बनाने के उद्देश्य से उनके साथ विचार-

विमर्श किया। वाद मे वह ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया की सरकारो के शारीरिक शिक्षा के सलाहकार भी नियुक्त किए गए। मई 1925 मे उनकी मृत्यु हो गई। कुछ लोगो का कहना है कि चूकि वह मेहनत के साथ-साथ कुछ दिमागी काम भी किया करते थे इसलिए वह इतनी जल्दी मर गए। लेकिन वह तो आज भी अमर हैं। *लोग आज भी उनके किस्से-कहानियो को बडे चाव से* सुनते और उनसे शक्ति की प्रेरणा प्राप्त करते है।

सोबर्स, गारफील्ड—दुनिया का सवश्रेष्ठ हरफनमौला (आल राउडर) क्रिकेट खिलाडी कौन है? यह प्रश्न आप कही और किसी भी क्रिकेट प्रेमी से पूछें तो उत्तर एक ही होगा—गारफील्ड सोबस। वह बाए हाथ का सवश्रेष्ठ बल्लेबाज, सवश्रेष्ठ क्षेत्ररक्षक, सवश्रेष्ठ गेंददाज और सवश्रेष्ठ कप्तान एक साथ हैं। इसलिए जब भी कभी विश्व एकादश (विश्व के चुने हुए खिलाडियो की टीम) की टीम का चयन किया जाता है सोबर्स को सव-सम्मति से उसका कप्तान नियुक्त कर दिया जाता है। 1971 मे इग्लड का दौरा करने वाली और उसके बाद आस्ट्रेलिया का दौरा करने वाली विश्व एकादश टीम का नेतृत्व सोबस ने ही किया था। वसे उनके साथी उन्ह गरी के नाम से पुकारते है।

सोबर्स का जन्म 28 जुलाई, 1936 को ब्रिजटाउन मे हुआ। यह वष क्रिकेट के इतिहास मे *महत्त्वपूण स्थान रखता है।* इसी वष सर डोनाल्ड ब्रैडमैन ने दोहरा शतक बनाकर इग्लड से भस्मी (एशेज) प्राप्त की थी।

बाए हाथ से गेंददाजी करने वाले सोबस ने 16 वष की उम्र म ही काफी ख्याति अर्जित कर ली थी। वह बाए हाथ से धीमी गेंददाजी करते हैं। वेस्टइडीज की क्रिकेट टीम के भूतपूव कप्तान वीक्स ने बहुत पहले ही सोवस का खेल देखकर यह भविष्यवाणी कर दी थी कि गैरी एक दिन महान खिलाडी बनेगा। वह एक दिन न केवल वेस्टइडीज का सवश्रेष्ठ हरफन-मौला खिलाडी बनेगा, बल्कि 30 वष से कम उम्र मे ही वेस्टइडीज की टीम का नेतृत्व भी करने लगेगा।

छोटी-सी उम्र मे ही सोबस ने चोटी के खेल का प्रदर्शन करना शुरू *कर दिया था। उनके खेल से प्रभावित होकर एक दिन वीक्स* ने बडे साफ शब्दो मे यह कहा था कि वह बाल को जितनी तेजी स मारता है उतनी तेजी से वारेल, वालकाट और मैं भी नही मार सकता। 1952, 53 और 54 के दौरान सोबस जहा जहा भी खेलने गए वही-वही उनके प्रशसको और भक्तो की सख्या बढने लगी।

1953 मे जब आस्ट्रेलिया ने वेस्टइडीज का दौरा किया उस समय आस्ट्रेलिया की टीम म कीथ मिलर जसे तेज गेंददाज थे। कीथ मिलर न

उस जमाने म दुनिया का सवश्रेष्ठ तेज गेंददाज माना जाता था। ब्रिजटाउन मे खेले गए इस टेस्ट शृखला के चौथे टेस्ट म आस्ट्रेलिया ने 668 रन बना लिए थे। इसम कीथ मिलर और रे लिंडवाल ने शतक बनाए थ। उसके बाद वेस्टइडीज के सामने एक भारी सकट पदा हो गया। उस समय वेस्टइडीज की टीम का नेतृत्व डेनिस एटकिंसन कर रहे थे। कप्तान बडी उलझन म थे। काफी सोच विचार के बाद उन्होने सोवस को जान हाल्ट क साथ पारी शुरू करने के लिए भेजा। उससे पहले सोवस को मध्य म या आखिर म ही भेजा जाता था।

नई गेंद लेकर कीथ मिलर कुछ अति आत्मविश्वास के भाव स सोबर्स के सामने खडे हुए, लेकिन यह क्या! मिलर के एक ओवर म फेंकी गई छह गेंदो मे से पाच पर सोवस ने चौका मारा। मिलर के हाथ-पांव फूलने लगे। वेस्टइडीज के खिलाडियो का मनोबल ऊचा हो गया और आस्ट्रेलिया के 668 रनो के जवाब में वेस्टइडीज की टीम ने 510 रन बना लिए।

सोबर्स के व्यक्तित्व और खेलने की अदा के आगे विकेट लेने और रन बटोरने के सभी आकडे फीके पड जाते हैं। वेस्टइडीज के क्रिकेट अधिकारी जब यह सोचने लगे कि वोरेल के बाद वेस्टइडीज की टीम का नेतृत्व कौन करेगा तो उन्ह कोई ज्यादा सोच विचार करने की जरूरत महसूस नही हुई। फ्रक वारेल ने अपने उत्तराधिकारी का स्वय ही चुनाव किया। वारेल की सिफारिश पर ही सोवस को वेस्टइडीज का कप्तान नियुक्त किया गया।

सोवस अब तक कुल कितने टेस्ट खेल चुके हैं या कुल कितन विकेट ले चुके हैं या कितने रन बटोर चुके हैं आदि आकडो के आधार पर उनके व्यक्तित्व का मूल्याकन नही किया जा सकता। लेकिन वह क्रिकेट जगत में इतने नये कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं कि दुनिया का दूसरा खिलाडी उनके आसपास तक नही पहुच सकता। वह ऐसे पहले वेस्टइडीज के खिलाडी है, जिन्होने इग्लड के विरुद्ध खेलते हुए 50 विकेट लिए और 2,000 से अधिक रन बनाए। और 30 साल की उम्र तक पहुचते ही उन्होने 100 विकेट और 5,000 रनो का कीर्तिमान स्थापित किया। उनकी श्रेष्ठ रन सख्या 365 (और आउट नही) रही और केवल टेस्ट मैचो मे ही 80 से ज्यादा कच ले चुके हैं।

1957 58 में वेस्टइडीज मे पाकिस्तान के विरुद्ध खेलते हुए उन्होने 5 टेस्टो में 824 रन वनाए। उसके बाद 1958 59 म उन्होने वेस्टइडीज की टीम के साथ भारत और पाकिस्तान का दौरा किया, जिसमे उन्होने 8 टेस्ट मैचो म (5 भारत के विरुद्ध और 3 पाकिस्तान के विरुद्ध) 557 भारत के विरुद्ध खेलते हुए बनाए और 160 पाकिस्तान के विरुद्ध खेलते हुए बनाए।

इससे पहले जब उन्होंने किंग्स्टन में पाकिस्तान के विरुद्ध खेलते हुए 365 (और आउट नहीं) का विश्व रिकार्ड स्थापित किया तो कई क्रिकेट-समीक्षकों ने उनके इस रिकार्ड को विशेष महत्त्व नहीं दिया। तब यह कहा जाने लगा कि गरी का यह रिकार्ड एक साधारण टीम के विरुद्ध था, जबकि इंग्लैंड के भूतपूर्व कप्तान सर लेन हटन ने 364 रनों का रिकार्ड आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेलते हुए बनाया था। लेकिन गरी ने इस तरह के विवाद में पड़ना मुनासिब नहीं समझा उन्होंने सारा ध्यान क्रिकेट के खेल पर ही केन्द्रित करना शुरू किया।

पहले सोबर्स ने अपने आपको विश्व के सर्वश्रेष्ठ बाएं हाथ के बल्लेबाज के रूप में प्रतिष्ठित किया, उसके बाद अपनी बाएं हाथ की घुमावदार स्पिन गेंदबाजी से अच्छे से अच्छे बल्लेबाजों को चक्कर में डाला, फिर क्षेत्ररक्षण में भी सिद्धहस्त हो गए। 1963 में सोबर्स को वेस्टइंडीज की टीम का कप्तान नियुक्त किया गया। इस दायित्व को भी उन्होंने इतनी जिम्मेदारी से निभाया कि उन्हें निर्विवाद रूप से दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कप्तान माना जाने लगा।

लोकप्रियता के क्षेत्र में भी सोबर्स ने अपना कीर्तिमान स्थापित कर रखा है। 11 सितम्बर, 1969 को सोबर्स ने आस्ट्रेलिया की 22 वर्षीया सुन्दरी प्रूडेंस किर्बी से विवाह कर लिया।

संक्षेप में सोबर्स क्रिकेट इतिहास का महानतम आल राउंडर है। खेल के प्रत्येक क्षेत्र पर अपनी शानदार दखलंदाजी के कारण हरफनमौला खिलाड़ी के रूप में लोकप्रिय है। पाकिस्तान के विरुद्ध 365 रन (अविजित) बनाकर एक पारी में सर्वोच्च रहा। एक ओवर की सभी गेंदों (छह) पर छक्का उड़ाने वाला वह अब तक का एकमात्र बल्लेबाज है। 6,000 रन से अधिक रन बनाने वाला और 200 से अधिक विकेटें लेने वाला सोबर्स एकमात्र बल्लेबाज है। 1954 से 1971 तक लगातार 85 टेस्टों में खेला और 39 लगातार टेस्टों में नेतृत्व किया। 93 टेस्टों में 8,032 रन (57 78) और 235 विकेटें।

स्टेनले मैथ्यूस—फुटबाल के इतिहास में इंग्लैंड के मशहूर खिलाड़ी स्टेनले मैथ्यूस का एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार ध्यानचंद को हाकी का जादूगर और ब्रडमैन को क्रिकेट का जादूगर कहा जाता है उसी प्रकार स्टेनले मैथ्यूस को फुटबाल का जादूगर कहा जाता है। 50 वर्ष की उम्र में जब उन्हें 'सर' की उपाधि से विभूषित किया गया तब महारानी एलिजाबेथ ने उनसे पूछा— क्या अब भी आपको फुटबाल खेलने में आनन्द आता है।" तब पचास वर्षीय मैथ्यूस ने मुस्कराकर जवाब दिया था— जी हां, बहुत।" यह ऐसा पहला अवसर था जब इंग्लैंड में किसी फुटबाल

खिलाडी को 'सर' की उपाधि से अलङ्कृत किया गया।

फुटबाल के मैदान म सर स्टेनले मैथ्यूस ने पहली वार पन्द्रह वर्ष की उम्र म ही अपने कमाल और करतब दिखाने शुरू कर दिए थे। फुटबाल के मैदान म सर स्टेनले की चुस्ती और फुर्ती, उनका अद्भुत गेंद नियन्त्रण आज भी देखते ही बनता है। हिन्दी चित्रपट अशोक कुमार की तरह सर स्टेनले की गणना भी चिरयुवाओ म की जाती है। फुटबाल के इस जादूगर का देखकर दर्शक अक्सर कह उठते हैं—"मैथ्यूस क्या पचासी साल का हो जाए तब भी वह गेंद को गोल की ओर पहुचाता ही नजर आएगा।"

युरोप म एफ० ए० कप प्रतियोगिता का एक विशेष महत्त्व है। 2 मई, 1953 की बात है। मैथ्यूस ब्लकपूल की ओर से खेल रहे थे। ब्लैकपूल की टीम फाइनल मे पहुच चुकी थी। फाइनल म उसका मुकाबला बाल्टन से था। 55 मिनट के बाद बाल्टन क्लब की टीम 3—1 से आगे थी। 18 मिनट का खेल बाकी था और ब्लैकपूल की टीम 2 गोल से पीछे थी। बस फिर क्या था। मैथ्यूस ने मन ही मन कुछ कर दिखाने का सकल्प किया। दर्शक मैथ्यूस का खेल देखकर दग रह गए। उस क्षण मैथ्यूस मे न जाने कौन सी दैवी शक्ति आ गई। मैथ्यूस ने एक गोल किया। लेकिन खेल खत्म होने मे केवल दो मिनट बाकी रह गए थे और मैथ्यूस की टीम अभी एक गोल से पिछड रही थी। प्रतिद्वन्द्वी टीम ने बचाव का खेल शुरू कर दिया। मगर मैथ्यूस ने देखते ही देखते एक गोल और कर दिया। खेल खत्म होने मे अब केवल एक मिनट रह गया था। दोनो टीमे 3 3 से बराबर थी। मैदान मे बठे दर्शको का ध्यान घडियो की सुइयो पर जाने लगा। ऐसा लग रहा था कि हार जीत के फसले के लिए अतिरिक्त समय दिए जाने की घोषणा की जाएगी। लेकिन यह क्या मथ्यूस अकेला गेंद लिए गोल की ओर बढने लगा। मैथ्यूस ने जोर से किक लगाई। प्रतिद्वन्द्वी टीम का गोली देखता ही रहा। इधर गेंद गोल मे घुसी और उधर खेल खत्म होने की सीटी बजी। स्टेनले मैथ्यूस ऐसा पहला फुटबाल खिलाडी है जिसे वेम्बली कप के फाइनल मे एक साथ लगातार तीन गोल करने का श्रेय प्राप्त हुआ। और उसी दिन से उसे फुटबाल का जादूगर कहा जाने लगा।

आज 55 साल की उम्र मे भी उनका फुटबाल से गहरा सम्बन्ध है। नवयुवको को फुटबाल का प्रशिक्षण देने मे उ हे काफी सुख और सतोष प्राप्त होता है पन्द्रह सोलह साल के किशोर उनसे फुटबाल के लटके-झटके सीखने के लिए आते हैं। उनका कहना है कि आज के जमाने मे अच्छे शिष्य मिलने भी मुश्किल हैं। खिलाडियो म लगन और सकल्प की काफी कमी है। उनका कहना है कि खिलाडी के सबसे बडे गुरु हैं—अभ्यास और साधना।

फुरसत के समय वह अपने छोटे पुत्र के भी गुरु बन जाते हैं। उनका लड़का फेनिक्स अभी से अपने से दुगनी उम्र वाले खिलाडियो को पछाड देता है और स्वय स्टेनले मैथ्यूस अब भी अपने से आधी उम्र के नौजवानो को खेल मे पछाड देते हैं, उनका 8 वर्षीय बालक सिर से फुटबाल टकराने मे जितना दक्ष है बूटो के तस्मे बाधने मे उतना ही लापरवाह।

स्पिक्स, लिओन—जब भी कोई नया खिलाडी विश्व चम्पियन के पद पर आसीन होता है तो लाग उसके बारे मे अधिक से अधिक जानने को लालायित रहते हैं। मोहम्मद अली के बारे मे लोग जितना ज्यादा जानते हैं उसको हराने वाले लिओन स्पिक्स के बारे मे उतना ही कम। 16 फरवरी, 1978 को उन्होंने मोहम्मद अली को हराकर विश्व-विजेता का पद प्राप्त किया था। हा, लोग इतना जरूर कहते कि अली का कुछ भरोसा नहीं, हो सकता है कि वह कल फिर विश्व विजेता के सिंहासन पर विराजमान हो जाए और स्पिक्स का भी वही हाल हो जो कि फ्रेजियर का हुआ था।

लेकिन 214 दिन विश्व-विजेता का खिताब रखने के बाद 15 सितम्बर 1978 को अको के आधार पर अली ने स्पिक्स को हरा दिया। इस प्रकार स्पिक्स शायद मुक्केबाजी का सबसे कम समय का विश्व चैम्पियन रहा।

लियोन स्पिक्स का जन्म 11 जुलाई, 1953 को सेंट लुईस अमेरिका मे हुआ। एक निधन परिवार मे जन्मा लियोन स्पिक्स सात भाई-बहनो मे सबसे बडा है। करीब 13 साल पहले लियोन स्पिक्स के पिता अपनी पत्नी और बच्चा को छोडकर अलग हो गए। धार्मिक विचारो वाली माता ने दिन रात मेहनत कर इतने बडे परिवार का पालन-पोषण किया। जिस निधन इलाके मे वे रहते थे, वहा का रिवाज था जिसकी लाठी भस उसी-की। लियोन भी गलियो मे लडता-झगडता, पिटता-पीटता। ममतामयी मा ने बेटे की रक्षा के लिए उसे बाक्सिग सिखाने भेजा। कितनी बडी कुर्बानी की होगी उस गरीब मा ने पुत्र के लिए, यह सोचकर दिल श्रद्धा से भर उठता है।

15 साल की उम्र से उसने एमेच्योर टूर्नामेंटो मे भाग लेना शुरू कर दिया। छोटा भाई माइकेल उसका अभ्यास का साथी था। जसे-जसे उम्र बढ़ती गई वह जबर्दस्त लडाका बनता गया। साथ ही लोग उसे झगडालू कहते। लियोन स्पिक्स की पढाई दसवी कक्षा तक ही हुई। उसके बाद वह मैराइन कोर म शामिल हो गया, जहा झगडालू होने के कारण वह दडित भी हुआ। लियोन स्पिक्स के जीवन की पहली सबसे बडी उपलब्धि माट्रियल मे रही जहा उसने लाइट हैवी वेट श्रेणी मे क्यूबा के सिक्स्टो सोरिया को हराकर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। छोटे भाई माइकेल स्पिक्स ने सोवियत सघ के

रूफत रिस्कीव को हराकर मिडिल वेट का स्वण पदक जीता।

अपने अभावग्रस्त बचपन की याद करते हुए लियोन स्पिक्स का कहना ह कि वे बड़े गरीबी के दिन थे। पिता के हाथो अक्सर होने वाली पिटाई की उस अभी याद है। स्पिक्स का कहना है कि मेरे पिता हमेशा कहते कि म निकम्मा हू और जिन्दगी मे कभी कुछ न बन पाऊगा। उनकी यही बात मुझे कचोटती और मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती। लियोन अपनी सफलता का श्रेय अपनी माता के स्पिक्स को देता है, जिसके आशीर्वाद से वह पहले आलम्पिक और अब विश्व चम्पियन बना।

लियोन स्पिक्स हाल के वर्षों म सबसे कम अनुभव वाला विश्व हैवी वेट चम्पियन बना। ओलम्पिक स्वण पदक जीतने के बाद वह पेशेवर बन गया। बाब एरम उसका प्रोमोटर है। पेशेवर बनने के बाद उसने ब्रुकलिन के मुक्केबाज बाब स्मिथ को हराया। चार अन्य मुक्केबाजो को नाक-आउट कर स्पिक्स का मुकाबला स्काट लेडोज से हुआ। इसमें भी वह विजयी रहा। मुहम्मद अली से भिडने से पूव उसका सातवा मुकाबला इटली के एल्फियो रिगेटी से हुआ, जो बराबर छूटा।

स्वेदलिंग कप स्थानक्रम

1975	1973
1 चीन	1 स्वीडन
2 यूगोस्लाविया	2 चीन
3 स्वीडन	3 जापान
4 चेकोस्लोवाकिया	4 सोवियत सघ
5 हगरी	5 चेकोस्लोवाकिया
6 जापान	6 यूगोस्लाविया
7 सोवियत सघ	7 हगरी
8 पश्चिम जमनी	8 दक्षिण कोरिया
9 फ्रास	9 पश्चिम जमनी
10 दक्षिण कोरिया	10 इगलड
11 रूमानिया	11 इडोनेशिया
11 इग्लड	12 फ्रास
13 इडोनेशिया	13 आस्ट्रिया
14 डेनमाक	14 भारत
15 भारत	15 रूमानिया
16 आस्ट्रिया	16 डेनमाक

ह

हटन, सर लेनार्ड—इग्लैंड के सर लेनार्ड हटन को एक सम्पूर्ण खिलाडी माना जाता है। हटन ने 1934 मे याकशायर काउटी के लिए अपना पहला मैच खेला और उसी वर्ष वारसेस्टरशायर के विरुद्ध वारसेस्टर मे उन्होंने 196 रन बनाए। उस पारी को जिसने देखा उसने एक स्वर मे माना कि क्रिकेट मे एक ऐसे उज्ज्वल नक्षत्र का उदय हो चुका है, जो आगे आने वाले समय मे विश्व-क्रिकेट मे तेजी से जगमगाएगा।

अपने पहले ही टेस्ट-मैच मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध लार्ड्स मे 1937 मे वह अपनी दोनो पारियो मे शून्य और एक रन ही बना सके। इस प्रदर्शन के बाद हटन का टेस्ट जीवन समाप्त हो जाना चाहिए था। लेकिन यह शायद उनके पूर्ण आत्मविश्वास का ही परिणाम था कि 1938 मे आस्ट्रेलिया के विरुद्ध उन्हे इग्लैंड की टीम मे सम्मिलित कर लिया गया। वही एक ऐसा वर्ष था जिसमे हटन ने एक विस्फोटक बल्लेबाज के रूप मे अपनी एक नई पहचान कायम की। इस शृखला के ओवल मे खेले गए अतिम टेस्ट मैच में इग्लैंड ने अपनी पहली पारी में 7 विकेट पर 903 रन का विश्व रिकार्ड बनाया। इसमें हटन के 364 शानदार रनो का योग भी था।

प्रथम श्रेणी के मैचो में हटन ने 55 51 की औसत से 4040 रन बनाए। उनके क्रिकेट से अवकाश लेने के बाद उन द्वारा लगाए गए आकर्षक कवर ड्राइव आज कल्पना की चीज बन गए हैं। 19 वर्ष बाद 1953 में इग्लैंड के के लिए 'एरोज' वापस लाकर तो हटन तमाम इग्लैंड के क्रिकेट प्रेमियों की श्रद्धा और सम्मान के पात्र बन गए।

हनीफ मोहम्मद—जन्म 21 दिसम्बर, 1934। विश्व-प्रसिद्ध 'मोहम्मद बन्धुओं' में से एक। लम्बी पारियो के लिए मशहूर। 1967 के लार्ड्स टेस्ट में 542 मिनट मे अविजित 187 रन। 1957-58 के बारबडोस टेस्ट में 999 मिनट में 337 रन (टेस्ट मैचो की सबसे लम्बी पारी)। 55 टेस्टो में 3915 रन।

हनुमत सिंह—नाटे कद के हनुमत सिंह ने राजस्थान की ओर से हाल ही में खेलते हुए अपने रणजी ट्राफी के 6000 रन पूरे किए। क्रिकेट आकडो का खेल है। आकडो से उलझने वाले मुनीम भी अपने अपने खातो से खीझ जाते होंगे, लेकिन क्रिकेट के आकडो को देखकर या सुनकर उन्हें भी इसमें

रस आने लगता है।

1934 में आरंभ हुई रणजी ट्राफी में सर्वाधिक स्कोर करने का गौरव विजय हजारे को प्राप्त हुआ है। जिन्होंने कुल 6312 रन बनाए हैं। लेकिन मध्य प्रदेश के विरुद्ध खेलते हुए हनुमत सिंह ने अपने 6000 रन पूरे कर लिए। 6000 रन रणजी ट्राफी म विजय हजारे के बाद हनुमत ने पूरे किए हैं। आज जो खिलाडी रणजी ट्राफी खेल रहे हैं उनमें कोई भी खिलाड़ी एसा नहीं है जिसने 5000 रन भी पूरे किए हो।

जय सिंह जिन्होंने गत वर्ष ही प्रथम श्रेणी से स यास लिया 5227 रन ही बनाकर थक गए। मौजूदा खिलाडियो में अभी सर्वाधिक स्कोर 4343 रन (गत वष तक के आकडो के अनुसार) बिहार के रमेश सक्सेना का रहा है।

सयोग समझिए कि हनुमत सिंह को रणजी ट्राफी में 6000 रन उसी टीम के विरुद्ध करने का अवसर मिला जिससे पहले उन्होंने रणजी ट्राफी खेली थी। हनुमत सिंह जब इदौर के डेली कालेज म विद्यार्थी थे तब 1956 57 में मध्य भारत कहलाए जाने वाले मध्य प्रदेश से पहली बार वह रणजी ट्राफी में खेले थे।

लेकिन अगले ही वष हनुमत सिंह अपने राज्य राजस्थान से खेलने लगे। हनुमत सिंह की अब इच्छा हजारे द्वारा स्थापित रणजी म बनाए गए सर्वाधिक 6312 रन को तोडने की है। आज हनुमत सिंह की क्रिकेट इसी रन सख्या को पार करने के प्रयास म है।

विजय हजारे ने 6312 रन बनाने के लिए 203 पारिया खेली जिसम 12 बार वह अविजित रहे। महाराष्ट्र की ओर से बडौदा के विरुद्ध खेलते हुए उन्हाने सर्वाधिक 316 रन 1939 म बनाए थे। हजारे फिर बडौदा से खेलने लगे और रणजी ट्राफी म 22 शतक 69 36 के औसत से बनाए।

हनुमत ने दूसरी ओर 143 पारियो मे 27 बार अविजित रहकर 603L रन बनाए हैं और उनका सर्वाधिक स्कोर बम्बई के विरुद्ध 1966 म 213 अविजित रहा है। हनुमत का औसत 51 98 रहा है।

इस तरह हनुमत ने नये जमाने के खिलाडियो म एक महान उपलब्धि हासिल की है।

हरनेक सिंह हवलदार—सेना के हवलदार हरनेक सिंह जिनका जन्म 29 नवम्बर, 1935 को हुआ था, एक सर्वोत्कृष्ट खिलाडी हैं। उन्होने 1969 म हुई अन्तर-राज्य दौडकूद प्रतियोगिता म प्रथम स्थान प्राप्त किया और मैराथन दौड म राष्ट्रीय रिकाड तोडा (समय 2 घटे 20 मिनट 26 4 सकिंड) और अन्तर सेना दौडकूद प्रतियोगिता 1969 मे भी प्रथम स्थान प्राप्त किया

तथा पुन मराथन दौड का राष्ट्रीय रिकाड तोडा (समय 2 घटे 18 मिनट और 58 6 सकिंड) । उ होने दिसम्बर 1969 म हागकाग म हुई अ तरराष्ट्रीय मैराथन दौड मे कास्य पदक प्राप्त किया। उन्होने, 1964 और 1965 म हुई पश्चिमी कमान दौडकूद प्रतियोगिता म 5 000 और 10 000 मीटर की दौड मे तथा मैराथन दौड म भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। वह 1968 में राष्ट्रीय दौडकूद प्रतियोगिता (मैराथन दौड) मे प्रथम रहे।

हरिदत्त हवलदार—हवलदार हरिदत्त, जिनका ज म 13 अक्तूबर 1945 को हुआ था नवम्बर 1969 में बैंकाक मे हुई पाचवी एशियाई बास्केट बाल चैम्पियनशिप में भारत की ओर से खेले। वह सेना की उस टीम के सबसे अधिक अक प्राप्त करने वाले खिलाडी थे जिसने 1969 मे राष्ट्रीय टाइटल पुन प्राप्त किया। वह सेना की टीम में भी खेले जो 1957 से 1967 तक और फिर 1969 मे राष्ट्रीय चम्पियन थी। वह 1967 से एक आल स्टार खिलाडी हैं।

हवा सिंह—1970 मे बैंकाक में हुए छठे एशियाई खेलो में हैवी वेट वर्ग मे स्वर्ण पदक प्राप्त कर भारतीय मुक्केबाज हवा सिंह ने यह सिद्ध कर दिया कि वह इस वग म एशिया के सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज हैं।

हवा सिंह का ज म सन 1945 में ग्राम उमरवास, जिला महेन्द्रगढ (हरियाणा) मे एक सम्पन्न जाट परिवार मे हुआ। इनके पिता चौधरी किनका राम अपने जमाने के अच्छे पहलवान थे। इनके बडे भाई सज्जन सिंह ने कुश्ती मे काफी नाम पैदा किया। हवा सिंह ने 16 वप की उम्र मे ही गाड बटालियन मे प्रवेश किया। शुरू-शुरू मे उन्होने लाइट हैवी वेट वग म सभी दावेदारो को पीछे छोडना शुरू किया। 1962 मे वह इस वग के राष्ट्रीय चैम्पियन बने। उनका कहना है कि 1964 म मैंने हैवी वेट म प्रवश किया और राष्ट्रीय विजेता बनकर दिसम्बर 1966 मे बैंकाक मे हुए पाचवे एशियाई खेलो म स्वण पदक जीतने मे सफल रहा। पहले तो वहा पाकिस्तानी मुक्केबाज अब्दुल रहमान की बडी चर्चा थी, लेकिन वहा की रोमाचकारी टक्कर मे तीसरे चक्कर म मुझे विजय घोपित किया गया। जिस समय स्वण पदक मेरे गले मे पहनाया जा रहा था उस समय मैं खुशी स फूला नही समा रहा था।

भारतीय मुक्केबाजो मे डिसूजा और पद्मबहादुर मल्ल के पश्चात तीसरा अजुन पुरस्कार हवा सिंह को दिया गया। हवा सिंह 100 किलो (210 पौंड) के हैवी वेट बाक्सर हैं। कद 6 फुट 3 इच और छाती 46 इच हैं। हवा सिंह का कहना है कि मैं प्रात उठकर तीन मील की दौड लगाता हू। अभी मैं 10-12 साल तक मुक्केबाजी के मुकाबलो म भाग लेता रहूगा और विश्व

में भारत का नाम रोशन करूंगा। वह मुक्केबाजी को खतरनाक खेल नहीं मानते।

1970 के छठे एशियाई खेलों में हवा सिंह ने पहले चक्र में दक्षिण कोरिया के सांग यान किम को अंकों पर पराजित किया और बाद में ईरान के ओमरान सतावी को तीसरे दौर में हराकर भारत के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

हाकी—हाकी का खेल कब और कहां शुरू हुआ इस बारे में इस खेल के जानकार एकमत नहीं है। वैसे हाकी का खेल दुनिया के सबसे पुराने खेलों में से है। इस खेल की कल्पना आदि काल से ही की जा सकती है। तब से जब किसी आदमी ने किसी पेड़ के तने को तोड़कर जमीन पर पड़े किसी कंकर या किसी अन्य वस्तु को एक तरफ से दूसरी तरफ धकेला होगा। बस इसी आदत ने ही बढ़कर हाकी के खेल का रूप धारण कर लिया होगा।

कहते हैं कि ईसा के जन्म से 2,000 वर्ष पूर्व फारस में हाकी से मिलता-जुलता एक खेल खेला जाता था। वहीं से यह खेल अन्य देशों में भी फैला। फारस के बाद, सबसे पहले यूनान ने इस खेल को अपनाया। कुछ साल पहले वहां ईसा से 300 वर्ष पूर्व का चित्र पाया गया था, जिसमें दो खिलाड़ी हाकी की बुली की मुद्रा में दिखाए गए हैं। उनके हाथ में जो स्टिक थी वह आजकल की हाकी की स्टिक से काफी मिलती-जुलती है। मध्य युग में फ्रांस में हाकी से मिलता-जुलता एक खेल खेला जाता था जिसे हाके' कहा जाता था। फ्रांस में 'हाके' शब्द का अर्थ है 'गडरिया की छड़ी'। स्काटलैंड में इस खेल का नाम 'शान्टी' था और आयरलैंड में 'हर्ले'। वहां यह खेल आज से 800-900 वर्ष पूर्व खेला जाता था।

जिस ढंग से अब हाकी खेली जाती है, वह ढंग उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में इंगलैंड में शुरू किया गया था। हमारे देश में अन्य खेलों की तरह यह खेल भी सीधा इंग्लैंड से ही आया। शुरू शुरू में इस खेल में फारवर्ड पंक्ति में आठ-आठ खिलाड़ी खेला करते थे। इनमें चार को 'इनसाइड फारवर्ड' और चार को 'विन्गस' कहा जाता था। उस जमाने में इस खेल के नियम और उप-नियम भी बहुत अधूरे थे। हर खिलाड़ी का अपना निराला ही ढंग होता था और इसका नतीजा यह होता था कि जिस टीम में ज्यादा ताकतवर खिलाड़ी होते, अक्सर वही टीम जीत जाती।

धीरे-धीरे फारवर्ड की संख्या आठ से घटाकर छह कर दी गई। 1889 में सर्वप्रथम यह तय किया गया कि फारवर्ड लाइन पर 5, फुलबैक 2, हाफबैक 3 और एक गोली होना चाहिए। आजकल हाकी के खेल में यही क्रम रखा जाता है। इस प्रकार हाकी का खेल केवल ताकत का नहीं बल्कि तरीके का

खेल बन गया जिसका नतीजा यह हुआ कि धीरे धीरे महिलाओं ने भी इस खेल में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। यहां यह बता देना उचित ही होगा कि इंग्लैंड में यह महिलाओं का राष्ट्रीय खेल माना जाता है। वहां तो भारतीय महिलाओं में भी यह खेल काफी लोकप्रिय हो रहा है मगर पुरुषों के मुकाबले इस खेल में महिला हाकी का खेल ज्यादा लोकप्रिय नहीं है। इसके कई कारण हैं। भारत के कुछ परम्परा प्रेमी परिवार लड़कियों को खेलकूद में हिस्सा लेने की अनुमति नहीं देते और खेल के समय पहनी जाने वाली चुस्त पोशाक पर आपत्ति करते हैं।

हाकी से मिलता जुलता एक और खेल भी होता है जो बर्फ पर खेला जाता है। इसे बर्फ पर हाकी यानी 'आइस हाकी' कहा जाता है। भारत में इस खेल का इतना प्रचलन नहीं है लेकिन दुनिया के कुछ देशों में तो यह खेल बहुत ही लोकप्रिय है।

जहां तक हाकी खेल के नियमों और उप-नियमों का सवाल है संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि हाकी और फुटबाल के खेल में कोई ज्यादा फर्क नहीं है। हाकी और फुटबाल के खेल में इतना ही अंतर होता है कि फुटबाल में आप मैदान के किसी भी हिस्से से गोल कर सकते हैं और हाकी में केवल 'डी' के अन्दर से गोल किया जा सकता है।

1885 में कलकत्ता में सबसे पहले भारतीय हाकी क्लब की स्थापना हुई। कुछ साल के अन्दर ही बेटन कप और आगा खां प्रतियोगिताओं के कारण यह खेल सारे भारत में लोकप्रिय हो गया। पंजाब में यह खेल बहुत जल्द ही लोकप्रिय हो गया। भारतीय हाकी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हम लम्बे-लम्बे हिट नहीं लगाते बल्कि छोटे छोटे पास देते हैं। ओलम्पिक खेलों में भारत ने 1928 में पहली बार हाकी के खेल में भाग लिया और इस खेल में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। हाकी के खेल में भारत के मशहूर खिलाड़ी ध्यानचन्द को दुनिया का सबसे बड़ा खिलाड़ी माना जाता है। सच तो यह है कि क्रिकेट में जो स्थान आस्ट्रेलिया के ब्रैडमैन का है हाकी में वही स्थान भारत के ध्यानचन्द का है। 1936 में जब भारतीय हाकी टीम बर्लिन ओलम्पिक खेलों में भाग लेने के लिए गई तो वहां के दर्शक इस खिलाड़ी के चमत्कार को देखकर दंग रह गए। दर्शकों और अधिकारियों को यह शक होने लगा कि कहीं इस खिलाड़ी ने अपनी स्टिक के साथ कोई चुम्बकीय शक्ति तो नहीं लगा रखी है जो गेंद हमेशा उसकी स्टिक के साथ ही चिपकी रहती है। बात इस हद तक बढ़ गई कि उसे अपनी स्टिक से नहीं बल्कि दूसरी स्टिक से खेलने को कहा गया, परन्तु जब ध्यानचन्द ने दूसरी स्टिक से भी दनादन गोल करने शुरू कर दिए तो दर्शकों ने एक साथ कहा कि यह

'खिलाडी तो हाकी का जादूगर है।'

कहने को तो भारत म हाकी का खेल इग्लैंड से आया मगर कुछ ही समय म भारतीय खिलाडी इस खेल में दुनिया के सब देशों से आगे निकल गए। आज बहुत से लोग हाकी के खेल को भारत का राष्ट्रीय खेल स्वीकार करने लग गए हैं। किसी भी खेल को राष्ट्रीय खेल की सज्ञा देने से पहले अक्सर उसे निम्न कसौटियो पर कसा जा सकता है, जैसे—(क) उस खेल विशेष म हम कितनी राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय ख्याति, सफलता या कीर्तिश्री प्राप्त है, (ख) वह खेल विशेष अपने देश म कितना लोकप्रिय है, (ग) उस खेल म हिस्सा लेने वाले खिलाडिया की सख्या कितनी है और (घ) जनता को उस खेल विशेष मे कितना उत्साह है। कहना होगा कि हाकी का खेल उक्त सब कसौटियो पर खरा उतरता है। अत 'हाकी' का खेल ही सही अर्थों म भारत का राष्ट्रीय खेल है।

ओलम्पिक खेलो के इतिहास म भारत को आज जो स्थान और सम्मान प्राप्त है उसका श्रेय हाकी के खेल को ही है। हाकी को छोडकर हम आज तक अ य किसी प्रतियोगिता मे कोई पदक प्राप्त करने मे सफल नही हो सके। हाकी के खेल म आज भी भारत को विश्व विजेता होने का गौरव प्राप्त है।

1928 के ओलम्पिक खेल एम्स्टडम (हालैंड) मे हुए थे। उस समय भारतीय टीम ने पाच मैच बडी आसानी से जीत लिए। किसी भी देश की टीम भारत पर कोई गोल नही कर सकी। उस समय भारत ने आस्ट्रिया को 6-0 से बल्जियम को 9-0 से, डेनमाक को 5-0 से स्विट्जरलैंड को 6-0 से और हालड को 3 0 से हराया। लोग भारतीय खिलाडियों का खेल देखकर हैरान हो गए। उस समय हाकी के खेल मे बडी मार-धाड होती थी। लम्बे चौडे शरीर वाले खिलाडी लम्बी-लम्बी हिट लगाते थे। मगर भारतीय खिलाडियो ने यह सिद्ध कर दिया कि हाकी के खेल का सम्ब ध हाकी और गेंद के तालमेल से है। भारतीय सिपाही ध्यानचन्द ने जब हाकी और गेंद के चमत्कार दिखाने शुरू किए तो दुनिया के लोग हैरान हो गए।

चार साल बाद 1932 म लास एजेल्स (अमेरिका) म ओलम्पिक खेल हुए। भारतीय खिलाडी पहली बार अमेरिका की धरती पर गए। इस बार भी जब भारत ने स्वण पदक जीत लिया तो दुनिया के देश बडी गहरी सोच म पड गए। यहा यह बता देना उचित होगा कि 1932 के ओलम्पिक खेलो म भारतीय टीम का नेतृत्व एक मुसलमान खिलाडी ने किया था। उस खिलाडी का नाम लाल शाह बुखारी था। यह बडे महत्त्व की बात है कि हाकी के खेल मे भारत को आज जो गौरवपूण स्थान प्राप्त है उसका श्रेय

हिंदू, सिख, मुसलमान और एंग्लो इंडियन आदि सभी जातियों के खिलाडियों को है। स्वाधीनता से पहले भारतीय खिलाडियों को ब्रिटिश पताका के अधीन खेलना पड़ता था। उस समय सभी जातियों और धर्मों के खिलाडी बिना किसी भेदभाव के एक सच्चे खिलाडी की भावना से एक साथ मिल कर खेला करते थे।

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण 1940 और 1944 का ओलम्पिक प्रतियोगिताओं का आयोजन नही हो सका। उसके बाद 1948 मे लदन (इग्लैंड) में बडी धूमधाम से ओलम्पिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। अब भारत स्वाधीन हो चुका था। 1948 मे भारत ने स्वतंत्र देश के रूप में ओलम्पिक खेलो में हिस्सा लिया। उधर पाकिस्तान ने भी 1948 से ओलम्पिक खेलो में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। लेकिन लदन ओलम्पिक खेलो मे भारत और पाकिस्तान का आमना सामना नही हुआ। कारण यह कि पाकिस्तान ब्रिटेन से ही हार गया था। इतना ही नही हालैंड ने पाकिस्तान को हराकर उससे तीसरा स्थान भी छीन लिया था। भारत ने इस बार भी हाकी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। भारत ने आस्ट्रिया को 8-0 से, अर्जेंटीना को 9-1 से, स्पेन को 2-0 से, हालैंड को 2-1 से और ग्रेट ब्रिटेन को 4-0 से हराया। इस बार भारत को पहला, ग्रेट ब्रिटेन को दूसरा, हालैंड को तीसरा और पाकिस्तान को चौथा स्थान प्राप्त हुआ। इन खेलो में भारतीय टीम का नेतृत्व किशनलाल ने किया था।

1952 की ओलम्पिक प्रतियोगिताएं हेलसिंकी मे हुई। इस बार के० डी० सिंह बाबू भारतीय टीम के कप्तान थे। पाकिस्तान की टीम फाइनल तक भी नही पहुंच सकी और भारत ने लगातार पांचवी बार ओलम्पिक खेलो मे स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

अब तक हाकी के क्षेत्र मे भारत की धूम मच चुकी थी। उधर पाकिस्तान दिन-रात एक करके अपनी हाकी टीम को मजबूत बनाने पर तुला हुआ था। यहां यह बता देना भी उचित होगा कि पाकिस्तान की टीम में भी लगभग वही खिलाडी थे जिन्होंने भारत में ही प्रशिक्षण और अनुभव प्राप्त किया था। हाकी के खेल मे पंजाब के खिलाडी सबसे आगे रहे। लेकिन भारत विभाजन के समय जब पंजाब दो हिस्सो में बंट गया तो बहुत से अच्छे खिलाडी पाकिस्तान चले गए।

चार साल बाद 1956 में मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में ओलम्पिक खेल हुए। इस बार भारतीय दल के कप्तान बलबीर सिंह थे। इस बार फाइनल में भारत और पाकिस्तान का मुकाबला हुआ। मुकाबला काफी सख्त था। भारत ने पाकिस्तान को एक गोल से हराकर फिर स्वर्ण पदक प्राप्त किया

और अपनी शानदार परम्परा को कायम रखा। अब तक पाकिस्तान ने भी हाकी के खेल में काफी प्रगति कर ली थी। पाकिस्तान हार तो जरूर गया मगर उसने और ज्यादा जोश से अभ्यास शुरू कर दिया।

इसके दो साल बाद ही 1958 म जब तोक्यो में एशियाई खेल हुए तो पाकिस्तानी खिलाड़ी मार धाड़ पर उतर आए। खेल के मदान मे एक अच्छा खासा दगा हो गया। फाइनल मच के कुछ समय पूव यह घोषणा की गई कि मैच बराबर होने की स्थिति मे हार-जीत का फसला अन्य मचो मे किए गए गोल औसत के आधार पर किया जाएगा। भारत न इसका विरोध किया। फाइनल मैच बराबर रहा और गोल औसत के आधार पर पाकिस्तान को स्वर्ण पदक और भारत को रजत पदक प्राप्त हुआ।

1860 मे ओलम्पिक खेलो का आयोजन रोम मे किया गया। अब तक दुनिया के और भी बहुत से देश हाकी के खेल में भारत और पाकिस्तान के नजदीक आ गए थे। स्पेन, जमनी, हालड, केनिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और ब्रिटेन आदि कई देशो ने अपने हाकी के खेल मे बहुत सुधार कर लिया था। 9 सितम्बर, 1960 का दिन भारत के लिए बडे दुख का दिन था। ओलम्पिक खेलो में भारत की पहली बार हाकी के खेल मे हार हुई। फाइनल मे पाकिस्तान ने भारत को एक गोल से हरा दिया। इस प्रकार 32 वर्षों से चली आ रही हमारी गौरवपूण परम्परा मे हमे पहली बार निराशा हुई।

रोम ओलम्पिक में हम खेल में जरूर हारे मगर हमने हिम्मत नहीं हारी। भारतीय खिलाडियो ने दिन-रात एक करके अपनी तैयारी फिर शुरू कर दी। यह तैयारी हमने बदले की भावना से नही बल्कि खेल की भावना से की। क्योकि हमारे स्वर्गीय प्रधानमत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने भारत के ही नही बल्कि विश्व के खिलाडियो को एक अमर सन्देश यह दिया था कि खेल को हमेशा खेल की भावना से खेलो।

1964 की ओलम्पिक प्रतियोगिताओ का आयोजन तोक्यो में हुआ। भारत और पाकिस्तान की टीमे फिर फाइनल मे पहुच गई। 23 अक्तूबर 1964 को 11 बजे हर भारतीय खेल प्रेमी रेडियो के पास आकर बठ गया। लाखो लोग भारत की जीत के लिए भगवान से प्राथना करने लगे। उधर पृथीपाल, हरबिन्दर सिंह, हरिपाल, जोगिन्दर, और पीटर शेर की तरह पाकिस्तान की रक्षा पक्ति पर टूट पडे। लक्ष्मण भारत का सजग प्रहरी के रूप में भारतीय गाल की रक्षा करने लगा। गुरबख्श और मोहिन्दर दीवार की तरह खडे थे। भारतीय खिलाडियो ने काफी समय तक पाकिस्तानी खिलाडियो को दबाए रखा। और आखिर मोहिन्दर लाल ने गोल कर ही दिया। सारा स्टेडियम तालियो की गडगडाहट से गूज उठा। लोग उठकर

नाचने लगे। भारत को एक बार फिर विश्व विजयी होने का गौरव प्राप्त हुआ। भारत ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा फिर प्राप्त कर ली।

अगले ओलम्पिक 1968 मे मैक्सिको मे हुए, जहा भारत पहली बार फाइनल म पहुच न सका। सबसे बडा धक्का तो उस समय लगा, जब भारतीय टीम पहले ही ग्रुप मैच मे न्यूजीलैंड से 1 2 से हार गई। इस बार टीम के दो कप्तान थे—पृथीपाल सिह और गुरबख्श सिह, जो भारतीय हाकी के इतिहास म पहली बार हुआ। न्यूजीलैंड से हारने के बाद भारत ने अपने अगले मैचो म पश्चिम जमनी को 2 1 से मक्सिको को 8 0 से, स्पेन को 2 0 से, बेल्जियम को 2 1 से जापान को 5 0 से और पूर्वी जमनी को 2 0 से हराया। सेमी-फाइनल म भारत का मुकाबला आस्ट्रेलिया से हुआ और इसम वह 1 2 पराजित हो गया। ओलम्पिक हाकी मे पहला अवसर था कि जब भारत पाकिस्तान के अलावा अन्य देशो से पराजित हुआ हो। सयोग की बात है कि भारत इस बार उन देशो से पराजित हुआ, जहा स्वतन्त्रता के बाद हमारे आग्ल भारतीय हाकी खिलाडी जाकर बस गए थे, यानी आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड। तीसरे स्थान के लिए भारत ने पश्चिम जमनी को 2 1 से हराकर कास्य पदक प्राप्त किया।

1972 मे म्यूनिख मे हुए ओलम्पिक खेलो मे भी भारतीय हाकी टीम का अपनी खोई प्रतिष्ठा पुन अर्जित करने का प्रयास विफल रहा। इस बार टीम का कप्तान मशहूर लेफ्ट हाफ हरमीक सिह था। भारत ने अपने ग्रुप मे पहला स्थान पाया। भारत का हालैंड के विरुद्ध पहला ग्रुप मैच 1 1 से बराबर छूटा, दूसरे मे भारत ने ब्रिटेन को 5-0 से और तीसरे मे आस्ट्रेलिया को 3 2 से हराया लेकिन उसका चौथा मैच पोलैंड की लगभग अज्ञात टीम स 2-2 से बराबर छूटा। केनिया को भी भारत अगले मैच मे बामुश्किल 3-2 से हरा पाया। छठे मैच म भारत ने मैक्सिको को 8-0 से पराजित किया। अपने अन्तिम ग्रुप मैच मे भारत न्यूजीलैंड को किसी तरह 3-2 से हरा पाया। सेमी फाइनल म पिछले चम्पियन पाकिस्तान ने भारत को 2-0 से हरा दिया। जहा फाइनल मे पश्चिम जमनी ने पाकिस्तान को 1 0 से हराया, वहा भारत ने कास्य पदक के लिए हालैंड को 2 1 से पराजित किया।

1976 मे माट्रियल ओलम्पिक खेलो म भारत का प्रदर्शन बहुत ही निराशाजनक रहा। इसमे भारत को सातवा स्थान प्राप्त हुआ। विभिन्न देशो की स्थिति इस प्रकार रही

1 न्यूजीलैंड, 2 आस्ट्रेलिया 3 पाकिस्तान, 4 हालैंड 5 पश्चिम जमनी, 6 स्पेन, 7 भारत 8 मलयेसिया, 9 बेल्जियम, 10 अर्जेन्टीना और 11 कनाडा।

भारतीय हाकी और ओलम्पिक खेल

वर्ष	स्थान	विजेता
1928	एम्स्टडम	भारत
1932	लास एंजेल्स	भारत
1936	बर्लिन	भारत
1948	लन्दन	भारत
1952	हेलसिंकी	भारत
1956	मेलबोर्न	भारत
1960	रोम	पाकिस्तान
1964	तोक्यो	भारत
1968	मैक्सिको	पाकिस्तान
1972	म्यूनिख	पश्चिम जर्मनी
1976	मान्ट्रियल	न्यूजीलैंड

भारत के हाकी कप्तान

वर्ष	कप्तान	वर्ष	कप्तान
1928	जयपाल सिंह	1960	लेजली क्लाडियस
1932	लाल शाह बुखारी	1964	चरजीत सिंह
1936	ध्यानचन्द	1968	पृथीपाल सिंह } संयुक्त
1948	किशनलाल		गुरबख्श सिंह } संयुक्त
1952	कुंवर दिग्विजयसिंह बाबू	1972	हरमीक सिंह
1956	बलबीर सिंह	1976	अजीतपाल सिंह

हाबुल दादा—भारतीय हाकी के इतिहास में ऐसे बहुत कम प्रशिक्षक हैं जिन्हें हाबुल मुखर्जी जितना सम्मान और यश मिला हो। उनका पूरा नाम एन० एन० मुखर्जी था पर लोग उन्हें हाबुल दादा ही कहकर पुकारते थे। हाबुल मुखर्जी 1952 (हेलसिंकी), 1956 (मेलबोर्न) और 1964 (तोक्यो) में विश्व विजेता का पद जीतने वाली भारतीय टीमों के मुख्य प्रशिक्षक थे। 30 साल तक वह भारत के बहुत अच्छे खिलाड़ी रहे और फारवर्ड खिलाड़ी के रूप में उनकी गिनती ध्यानचन्द और रूपसिंह जैसे खिलाड़ियों के साथ की जाती थी। 30 वर्ष तक खेलने के बाद जब वह यह अनुभव करने लगे कि अब उनकी शारीरिक चुस्ती और फुर्ती कम होने लगी है तब उन्होंने नये-नये खिलाड़ियों को हाकी सिखाना शुरू कर दिया। हाबुल मुखर्जी अपनी धुन के पक्के थे। 1960 की ओलम्पिक प्रतियोगिता में जब भारत हार गया

तब कुछ लोगो ने उनसे यह कहना शुरू कर दिया कि हमें रोवस्ट या डायरेक्ट हाकी का खेल अपना लेना चाहिए। परन्तु उन्होने किसीकी एक न सुनी और कहा कि इस खेल की खूबी स्टिक और गेंद के ताल मेल में ही है और स्वयं चुपचाप खिलाडियो को पुराना तरीका सिखाते रहे। 1964 मे तोक्यो ओलम्पिक प्रतियोगिताओ में भारत ने अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन प्राप्त कर लिया।

26 अक्तूबर, 1966 को 72 वर्ष की उम्र मे उनका देहान्त हुआ।

हेमू अधिकारी—"जब जब भारतीय टीम सकट मे हुई वह हमेशा काम आए लेकिन सामान्य स्थिति मे उन्होने अपने आपको हमेशा टीम मे फालतू ही समझा।" केवल इन्ही शब्दो से प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाडी हेमू अधिकारी को सच्ची श्रद्धाजलि दी जा सकती है। अपने अल्प टेस्ट जीवन मे उन्होने न केवल बल्लेबाज के रूप मे बल्कि एक सुदृढ क्षेत्ररक्षक के रूप में भी भारी ख्याति अर्जित की।

1936 की बात है। उस समय हेमू अधिकारी की उम्र केवल 17 वर्ष की रही होगी। उन्होने बडौदा की ओर से गुजरात के विरुद्ध पहला रणजी मैच खेला। दोनो पारियो मे सर्वाधिक स्कोर 26 और 30। उसके बाद कुछ वर्ष अभ्यास मे बीते। 1941 मे उन्होने अपनी क्षमता का अच्छा परिचय दिया। श्रीलका के विरुद्ध 91 मुस्लिम्स के विरुद्ध 98 और गुजरात के खिलाफ खेलते हुए 88 और 106। उनके खेल प्रदर्शन को देखते हुए सभी ने उन्हे टेस्ट मैचो मे शामिल करने की सिफारिश की। 1947-48 में आस्ट्रेलिया जाने वाली भारतीय टीम मे उनका नाम था। उस समय वह प्रसिद्धि के शिखर पर थे। इससे एक वर्ष पहले रणजी प्रतियोगिता के पूरे सीजन मे 555 रन जुटाकर उन्होने टेस्ट मैचो के लिए अपना स्थाई स्थान बना लिया था।

जैसा कि कहा गया है कि चलते सूर्य की गर्मी जरा वक्त बीतने पर ही महसूस होती है। कगारुओ के देश मे पहली बार पारियो मे हेमू ने केवल 50 रन बनाए। आठवी पारी मे एक बार लिडवाल भयकर हो चला था। भारत के 6 विकेट 139 रन पर ही गिर गए थे। हजारे का एक साथी चाहिए था। हेमू ने वक्त में तकाज को समझा और साझेदारी मे 142 रन जुटा लिये। उनके बेशकीमती 51 रनो ने उन्हे नम्बर 3 पर पहुँचा दिया। पाचवे टेस्ट मे निरन्तर गिर भारी पड़ा। सारे दूसरे ही आउट मे भाग ना गए। भारत ने हेमू के कधे पर हाथ रखा और उनकी ओर आशा भरी दृष्टि से देखना रहा। उस समय की स्थिति मे हेमू फिर काम आए। उनका योग भले ही 38 रन का रहा लेकिन पारी ढहने से बच गई।

इस प्रकार आस्ट्रेलिया मे कमाया सिक्का भारत मे भुनाया गया। वेस्टइडीज ने दिल्ली मे खेले गए टेस्ट मे 631 रनो का अम्बार लगा दिया। भारत के पाच बल्लेबाज किसी तरह 249 तक गाडी खीच ले आए। हेमू पर फिर सारा उत्तरदायित्व आन पडा। उन्होने भी 4 घटो मे सकडा पार कर लिया। यह बात दूसरी थी कि भारत फालो आन से नही बच सका। ठीक यही कहानी दूसरी पारी मे भी दोहराई गई। उसके बाद से तो उन्हे मैच रक्षक का खिताब मिल गया। जब तक हेमू अधिकारी खेले तब तक वह मैच-रक्षक की हैसियत से ही खेले। उन्होने कुल 21 टेस्ट खेले और 872 रन बनाए।

रक्षात्मक रुख के कारण उनकी बल्लेबाजी मे वह तडक भडक नही आ सकी, लेकिन दायित्व की उच्च भावना के कारण उन्होंने भारतीय क्रिकेट मे महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। टेस्ट जीवन से सन्यास लेने के बाद कर्नल हेमू अधिकारी ने इग्लड और आस्ट्रेलिया का दौरा करने वाली भारतीय स्कूली टीमो का मार्गदर्शन किया। 1971 मे हेमू अधिकारी को इग्लड का दौरा करने वाली भारतीय टीम का मैनेजर नियुक्त किया गया था। उन्होने अनुशासन प्रिय अधिकारी के रूप मे काफी ख्याति अर्जित की।

हेमू अधिकारी का जन्म 12 अगस्त, 1919 को पूना मे हुआ। 1958 59 मे दिल्ली म खेले गए भारत-वेस्टइडीज टेस्ट श्रृखला के आखिरी टेस्ट मे (जो उनके जीवन का आखिरी टेस्ट था) भारतीय टीम का नेतृत्व भी किया।

मुद्रक —जुपीटर आफसेट प्रेस
शाहदरा, दिल्ली ११००३२ 21280

High Pass — ऊंचा पास
Holding — पकड़, पकड़ना, थामना
Hurdles — बाधा दौड़
Inning — पारी
Interference — हस्तक्षेप
Interval — मध्यान्तर
Inter Zone — अन्तरक्षेत्रीय
Javelion Throw — भाला फेंकना
Kick — किक
Long Distance Runner — लम्बे फासले का दौड़ाक
Mountaineering — पर्वतारोहण
National Championships — राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं
Net — जाल
Olympic Games — ओलम्पिक खेल
Opponent — विरोधी
Organisers — प्रबंधक, आयोजक
Organising Committee — आयोजन समिति
Partnership — साझेदारी
Performance — प्रदर्शन
Physical Fitness — शारीरिक क्षमता
Pole Vault — बांस कूद
Prestige — प्रतिष्ठा
Proposal — प्रस्ताव
Referee — रेफरी, निर्णायक
Runner — दौड़ाक, धावक
Series — शृंखला
Skill — कौशल
Shotput — गोला फेंकना
Soccer — फुटबाल
Spectators — दर्शक
Sportsmanship — खेल भावना
Sprints — छोटे फासले की दौड़
Statistics — आंकड़े
Swimmer — तैराक
Team — टीम, दल
Toss — टास करना, सिक्का उछालना
Tournament — प्रतियोगिता
Tradition — परम्परा
Umpire — अम्पायर, निर्णायक
Weightlifting — भारोत्तोलन
Wizard — जादूगर
World Cup — विश्व कप
World Record — विश्व रिकार्ड
Wrestling — कुश्ती

खेल साहित्य के लोकप्रिय लेखक योगराज थानी का जन्म 15 दिसम्बर, 1933 को हुआ। आपने शिक्षा और नौकरी दोनों साथ-साथ करते हुए 1960 में पंजाब विश्वविद्यालय में एम० ए० (हिन्दी) की परीक्षा पास की। आपने बाल साहित्य की भी तीस से अधिक पुस्तकें लिखी हैं और उस क्षेत्र के मान्य लेखक हैं।

खेल साहित्य में श्री थानी ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। पत्र पत्रिकाओं में नियमित रूप से खेलों पर आपकी समीक्षाएं प्रकाशित होती रहती हैं। बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'पराग' में आप 'जवाब थानी के' नामक स्तंभ पिछले कई वर्षों से नियमित रूप से लिखते आ रहे हैं।

खेलों पर आपकी कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें ये हैं—'भारत के प्रसिद्ध खिलाडी', 'लोकप्रिय खेल हाकी', 'लोकप्रिय खेल क्रिकेट', 'एशियाई खेल—और भारत' तथा 'खिलाडियों की कहानी उन्हीं की जुबानी'।